А. Фадеев

МОЛОДАЯ ГВАРДИЯ

Роман

ЧАСТЬ ВТОРАЯ

ИЗДАТЕЛЬСТВО ЛИТЕРАТУРЫ
НА ИНОСТРАННЫХ ЯЗЫКАХ
Москва

अ॰ फ़देयेव

तरुण गार्ड

उपन्यास

भाग १

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह
मास्को

अनुवादक – ओकारनाथ पचालर
चित्रकार – फ० ग्लेबोव और व० नोस्कोव

अध्याय १

"मै, ओलेग काशेवोई, 'तरुण गाड' दल में भरती होने के समय अपने साथियो, चिरसतप्त अपनी मातृभूमि और अपने सारे जन-समाज के समक्ष पूरी निष्ठा के साथ शपथ लेता हू। मै शपथ लेता हू कि मै बिना किसी आनाकानी के उन सभी कार्यो को सपन्न करूगा, जो सघटन मुझे सौपेगा, उन सभी बातो को गुप्त रखूगा जिनका सबध तरुण गाड में मेरे कार्यों से होगा। मै शपथ लेता हू कि मै पूरी निममता के साथ, अपने फूके और लूटे गये नगरो और गावो का, अपनी जनता के खून का और खाना मे शहीद हुए अपने बहादुरो की मौत का बदला लूगा। और यदि इस बदले के लिए मुझे अपने प्राणो की भी आहुति देनी पडे तो मैं एक क्षण के लिए भी सकोच किये विना उसके लिए तैयार रहूगा। यदि जुल्म या बुजदिली के कारण मै इस पवित्र शपथ का अतिक्रमण करू तो सारे भविष्य के लिए मेरे और मेरे स्वजनो के नाम पर धब्बा लगे और मेरे साथी मुझे कठोर से कठोर दड दें। खून का बदला खून। मौत का बदला मौत!"

"मै, उल्याना ग्रोमोवा, 'तरुण गाड' दल में भरती होने के समय अपने साथियो, चिरसतप्त अपनी मातृभूमि और अपने सारे जन-समाज के समक्ष पूरी निष्ठा के साथ शपथ लेती हू..."

"म, इवान तुर्केनिच 'तरुण गार्ड' दल में भरती होने के समय अपने साथियो, चिरसतप्त अपनी मातृभूमि और अपने सारे जन-समाज के समक्ष पूरी निष्ठा के साथ शपथ लेता हू "

"मैं, इवान जेम्नुखोव, पूरी निष्ठा के साथ शपथ लेता हू "

"मैं, सेर्गेई त्युलेनिन, पूरी निष्ठा के साथ शपथ लेता हू "

'म, ल्युबाव शेव्त्सोवा, पूरी निष्ठा के साथ शपथ लेती हू "

जिस समय पहली बार सेर्गेई लेवाशोव, ल्यूबा के पास आया और उसने खिडकी खटखटायी, और ल्यूबा दौडती हुई उसके पास बाहर आयी और दोनो रात भर बैठे हुए बाते करते रहे, तो सर्गेइ लेवाशोव कुछ भी न समझ सका। न जाने वह कैसी कैसी कल्पनाए करता रहा!

किन्तु इस यात्रा में पहली कठिनाई यही स्वय सेर्गेई लेवाशाव की खडी की हुई थी। दानो पुराने साथी थे और ल्यूबा पहले उसे बताये बिना कही जा नही सकती थी। वह हमेशा अपनी गली में छोटे छोटे छोकरो के बीच बडी लोकप्रिय रही थी, क्योकि वह खुद लडको की तरह शरारती स्वभाव की थी। इसी लिए उसे शीघ्र ही एक ऐसा लडका मिल गया जिसने उसका सदेश सेर्गेई लेवाशोव के पास खुशी खुशी पहुचा दिया था। चाचा अन्द्रेई ने अपनी गिरफ्तारी से पहले सेर्गेई लेवाशोव को सलाह दी थी कि वह अगामन के गरेज में लारी ड्राइवर का काम कर ले।

सेर्गेई काम पर से शाम को देर से लौटा था। वह वही कपडे पहने था जो उसने स्तालिनो से आने के दिन पहने थे। जमन किसी को भी—खान मजदूरो तक को—काम वाले कपडे नही देते थे। वह बडा गन्दा, क्लात और उदास हो रहा था।

ल्यूबा स उसके सफर अथवा उसकी मजिल के सबध में सवाल करना मुनासिब न था किन्तु यह जाहिर था कि उसके दिमाग मे और कोई बात नही घम रही थी। सारी शाम वह मुह लटकाये गुप-चुप बैठा रहा। इससे वह तग आ गयी। आखिर उससे अधिक सहन न हुआ और वह उसपर बरस पडी। आखिर वह उसे समझता क्या है—पत्नी या प्रेयसी? सेर्गेई को मनमानी बातो की कल्पना नही करनी चाहिए थी, इससे ल्यूबा को व्यथा ही होती थी। जीवन ल्यूबा के सामने तरह तरह की मागें प्रस्तुत कर रहा था, अतएव उसमें प्रेम विषयक विचारो के लिए कोई गुजाइश न रह गयी थी। वे सिफ साथी थे और वह उसे अपने बारे में सब कुछ बताने के लिए मजबूर न थी। वह वही जा रही थी जहा उसे जाना था—घरेलू काम स।

ल्यूबा ने यह भाप लिया था कि सेर्गेई ने उसका पूरा पूरा विश्वास न किया, कि वह ईर्ष्यालु था। ल्यूबा को इससे कुछ सतोप ही हुआ।

ल्यबा रात भर खूब आराम करना चाहती थी कितु वह था कि जमा बैठा था। हिलने का नाम भी न लेता था। वह अडियल किस्म का आदमी था और कौन जाने रात भर वहा बैठा ही रहता। आखिर ल्यूबा ने उसे धकेलकर बाहर निकाला। बेशक उसकी अनुपस्थिति में सेर्गेई खोया-खाया-सा रहेगा, यह सोचकर ल्यूबा को उसपर दया भी आयी। वह उस बगीचे से होती हुई फाटक तक पहुचा आयी और एक क्षण के लिए उसकी बाह पकडकर उससे सटकर भी खडी रही। फिर वह दौडी दौडी घर आयी, कपडे उतारे और अपनी मा की बगल में पलग पर पड रही।

बेशक, उसकी मा भी एक समस्या थी। ल्यूबा जानती थी कि अकेली रहना मा के लिए कितनी बडी मुसीबत है, इसलिए कि कष्टो

के आगे वह असहाय सी बन जाती थी। परन्तु मा को धोखा देना बहुत आसान था। ल्यूबा मा के पास पड रही और उसे तरह तरह की मन गढन्त बात सुनाती रही, पर मा को कोई सदेह नही हुआ। अन्तत ल्यूबा मा के पलग पर सो गयी।

उस दिन वह भोर होते ही उठी और धीरे धीरे गुनगुनाती हुई अपनी यात्रा की तैयारियां करने लगी। अपनी सर्वोत्तम पोशाक बचाये रखने की दृष्टि से उसने साधारण कपडे पहनने का निश्चय किया जो भडकीले तो थे ही, साथ ही लोगों का ध्यान भी अपनी ओर आकृष्ट करते थे। उसकी सबसे अच्छी पोशाक नीले रग की चीनी क्रेप की थी। उसने यह पोशाक, हल्के नीले रग के जूते, लेस के भीतरी कपडे और लम्बे रेशमी मोजे एक छोटे-से बक्स मे रख लिये। फिर वह हल्के वस्त्र पहने, और धीमे धीमे गुनगुनाती हुई दो मामूली-से दर्पणों के बीच खडी होकर पूरे दो घण्टे तक बालो में घुघर डालती रही। आइना में अपना सिर चारो ओर से देखने के लिए उसे तरह तरह से सिर टेढा करना और घुमाना पडता था। सुस्ताने के लिए वह अपने शरीर का सारा बोझ कभी एक पैर पर डाल देती, कभी दूसरे पैर पर। फिर उसने पेटी बाधी, अपने गुलाबी तलवों पर हाथ फेरा, त्वचा के रग के सिल्क के मोजे पहने, हल्के पीले रग के जूते पैरों में डाले और अतत बूटियों और चेरी की छाप वाली शीतल और सरसराती हुई फ्राक पहन ली। इसके अलावा उसपर और भी कई रगों के छींटे थे। वस्त्र पहनते समय वह बराबर कुछ न कुछ खाती और गुनगुनाती जा रही थी।

वह कुछ घबरायी-सी थी, लेकिन इससे हताश होने के बजाय उसकी हिम्मत और भी बढ रही थी। वह खुश थी क्योंकि अन्तत क्रियाशील होने का समय आ गया था। अब उसे व्यर्थ ही अपना श्रम विफल न करना होगा।

दो दिन पहले, सुबह के समय शेव्त्सोव परिवार के घर के बाहर एक छोटी सी हरी लारी आकर खडी हुई थी। लारी में जमन उच्चाधिकारियों के लिए वोरोशीलोवग्राद से खाने का सामान आया था। लारी का ड्राइवर सशस्त्र पुलिस का एक जमन सिपाही था। उसने अपने पास बैठे हुए एक सैनिक से, जिसके घुटनो पर एक टामी-गन रखी थी, कुछ कहा और कूदकर घर में घुस गया। ल्यूबा यह देखने भीतर आयी थी कि उस ड्राइवर को किस चीज़ की जरूरत है, पर उसने देखा कि वह खाने के कमरे में पहले से ही इधर उधर ताक रहा है। ड्राइवर घूमकर ल्यूबा के सामने खडा हुआ और इसके पहले कि वह अपना मुह खोले, ल्यूबा ने उसकी शक्ल सूरत और चाल-ढाल से ही समझ लिया कि वह रूसी है। और सचमुच उसने शुद्ध रूसी में कहा भी—

"मुझे कार के लिए कुछ पानी मिल सकता है?"

जमन सशस्त्र पुलिस की वर्दी में रूसी! इस घर में घुसने से अधिक बुरी हरकत वह कर भी क्या सकता था! "निकल जाओ यहा से! सुन रहे हो?" ल्यूबा ने उत्तर दिया। उसकी गोल गोल नीली आखें वडी स्थिरता से सीधे उसी की ओर लगी थी।

जमनो की सैनिक वर्दी पहने हुए इस रूसी से क्या कहना चाहिए, यह उसने बिना क्षण भर सोचे विचारे भी समझ लिया था। यदि इस आदमी ने उसे जरा भी नुक्सान पहुचाने का प्रयत्न किया तो वह चीखती-चिल्लाती बाहर सडक पर चली जायेगी और यह कहकर सारा मोहल्ला जगा देगी कि मैंने तो सिपाही से इतना भर कहा कि पानी सोत से ले ले और उसने मुझे मारना-पीटना शुरू कर दिया। किन्तु यह विचित्र सैनिक ड्राइवर चुपचाप खडा खडा मुस्कराता रहा और आखिर बोला—

"तुम अपना काम बहुत अच्छी तरह नही कर रही हो। इससे तुम मुसीबत में फस सकती हो।' उसने यह देखने के लिए कि कोई उसके

पीछे लगा तो नहीं है, अपने इर्द गिर्द एक निगाह डाली और फिर संक्षेप में बोला 'वारवारा नौमोव्ना ने मुझसे कहलाया है कि वह तुम्हें बहुत याद करती है!"

ल्यूबा का चेहरा पीला पड़ गया और वह जैसे अन्त प्रेरणा से उसकी ओर बढ़ गयी किन्तु ड्राइवर ने जैसे उसके प्रश्न की पूर्व कल्पना कर ली थी, अत उसने अपनी पतली-सी तर्जनी अपने होंठों पर रख ली।

वह उसके पीछे पीछे गलियारे में आया। वह वहीं, दोनों हाथों में एक बाल्टी लिये, खड़ी खड़ी उसकी आंखों में कुछ पढ़ने लगी। फिर ड्राइवर ने, उसकी ओर बिना देखे बाल्टी उठायी और कार के पास चला आया।

ल्यूबा जान-बूझकर जहां की तहां खड़ी रह गयी थी। वह उसे दरवाजे की दरार में से देखती रही। उसने आशा की थी कि बाल्टी लेकर लौट आने पर वह उससे कुछ पूछेगी, कुछ टोह लगायेगी। किन्तु रेडियेटर में पानी डालने के बाद ड्राइवर ने बाल्टी सामने के बगीचे में फेंकी, जल्दी से अपनी जगह पर बैठा फट्ट से दरवाजा बंद किया और मोटरकार चला दी।

इस प्रकार ल्यूबा का वोरोशीलोवग्राद जाना जरूरी हो गया। किन्तु अब वह 'तरुण गार्ड' दल के अनुशासन के अधीन थी और वह बिना ओलेग को बताये कहीं भी जा न सकती थी। बेशक, कुछ समय पूर्व उसने यह संकेत जरूर कर दिया था कि वह वोरोशीलोवग्राद में लोगों को जानती है, जो किसी न किसी काम के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। अब उसने ओलेग को यह भी बता दिया कि उनसे मिलने का यह बहुत अच्छा मौका है। पर ओलेग ने उसे तुरन्त जाने की अनुमति न देकर कुछ इन्तजार करने को कहा था।

हां, उस समय उसके आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा जब ओलेग

वातचीत करने के दो घंटे बाद ही नीना इवात्सोवा ने उसके घर आकर उसे बताया कि उसे जाने की अनुमति मिल गयी है। हां, नीना ने यह जरूर कहा था—

"वहां पहुंचकर हमारे लोगों की मौत के बारे में और उनके जिन्दा ही पार्क में गाड़े जाने के बारे में पूरी पूरी रिपोर्ट दे देना। साथ ही उनके नाम भी बताना। फिर उनसे कहना कि इन सब अत्याचारों के होते हुए भी यहां काम कायदे से चल रहा है। ऐसा कहने का अनुरोध वे लोग तुमसे कर रहे हैं जिनके हाथ में यहां के काम की बागडोर है। और रहे 'तरुण गार्ड' दल के बारे में भी बताना।"

ल्यूबा अपने पर नियन्त्रण न रख सकी और बोली—

"कशूक को यह कैसे मालूम है कि जहां मैं जा रही हूं, वहां इन के बारे में बातचीत करना ठीक होगा?"

स्तालिनो में गुप्तिया काम करते समय नीना ने फूंक फूंककर कदम रखना अच्छी तरह सीख लिया था। इसलिये उसने केवल अपने कन्धे उचका दिये। पर उसे यह ध्यान भी आया कि जिस प्रकार रिपोर्ट देने के लिए ल्यूबा से अनुरोध किया गया है, सम्भवत रिपोर्ट देने में उसे संकोच हो। इसी लिए नीना ने लापरवाही से यह भी जोड़ दिया—

"बुजुर्ग साथी शायद जानते हैं, तुम किसके पास जा रही हो।"

ल्यूबा को आश्चर्य हो रहा था कि यह छोटी-सी बात पहले उसकी समझ में क्यों नहीं आयी।

वोलोद्या ओस्मूखिन को छोड़कर 'तरुण गार्ड' दल के अन्य सदस्यों की भांति ल्यूबा शेव्त्सोवा को भी इस बात का कोई पता न था—और उसने पता चलाने की कोई कोशिश ही की थी—कि क्रास्नोदोन के गुप्त या संघटन के प्रौढ़ सदस्यों में से ओलेग कोशेवोई का सम्पर्क किसके साथ था। किन्तु फिलोप्प पेत्रोविच को यह बात अच्छी तरह मालूम थी

कि ल्यूबा का किस उद्देश्य से शास्तोदान में रखा गया है और वोरोशीलोवग्राद में ल्यूबा का सम्पर्क किनके साथ है।

उस दिन सर्दी थी और बादल स्तपी पर बहुत नीचे उतरकर मडरा रहे थे। सद हवा के कारण ल्यूबा के गाल लाल हो उठे थे और उमकी चमचमाती हुई फ्राक उड रही थी। किन्तु वह इन सबसे बेखबर, वोरोशीलोवग्राद भाग पर खडी थी, जहा हवा से बचकर खडे होने की कोई जगह न थी। उसके एक हाथ में उसका छोटा-सा सूटकेस और दूसरे हाथ में एक हल्का ओवरकोट था।

उसके सामने से लारियो पर लारिया निकलती जा रही थी जिनमे से जमन सिपाही और कारपोरल चिल्ला चिल्लाकर उसे अपने पास आने का निमत्रण देते, ठहाके मारकर हसते और बेहूदे इशारे करते। वह घृणा से अपनी आखें मिचकाती और उनकी ओर कोई ध्यान न देती। पर जब उसने एक लम्बी, नीची हल्के रग की कार अपनी ओर आते देखी तो उसने चुपचाप अपना हाथ उठा दिया। कार में अगली सीट पर, ड्राइवर के पास ही एक जमन अफसर बैठा था।

फीके रग की सैनिक जैकेट पहने हुए अफसर तुरत घमकर पिछली सीट की ओर देखने लगा, जिसपर शायद कोई उससे भी बडा अफसर बैठा था। तभी, चर से कार का ब्रेक लगा और कार रुक गयी।

Setzen Sie sich! Schneller!"* अफसर ने थोडा दरवाजा खोलते हुए कहा और उसके मुह के कोने एक मुस्कराहट के रूप में मुड गये। फिर उसने तुरन्त दरवाजा बद किया और कुछ पीछे झुककर पिछला दरवाजा खोल दिया।

ल्यूबा ने अपना छोटा-सा सूटकेस और कोट सामने किया और सिर

---

*बठिये! जल्दी कीजिये!

अदर कर तत्काल कार में घुस गयी। दरवाजा बद हो गया और कार हवा से बाते करने लगी।

ल्यूबा एक दुबले पतले, सूखे से कनल की बगल में बैठी थी। उसका चेहरा पीला पडा था, दाढी सफाचट थी, गाल लटक रहे थे। उसके सिर पर एक ऊची और धूसर-सी सैनिक टोपी लगी थी। दोनो ने एक दूसरे की आखो में आखें डालकर देखा। दोनो की आखो से झलकनेवाली धृष्ठता एक जैसी न थी। कनल में धृष्ठता थी इसलिए कि उसके पास शक्ति थी, और ल्यूबा में इसलिए कि उसे अपने पर विश्वास न जम रहा था। अगली सीट पर बैठा हुआ युवक अफसर घूमा और उसकी ओर देखने लगा।

"Wohin befehlen Sie zu fahren?"* कर्नल ने पूछा और उसके होठो पर आदिवासी वहशिया की मुस्कान बिखर गयी।

"तुम क्या कह रहे हो, मेरी समझ में नही आता," बनावटी रूप से मुस्कराते हुए ल्यूबा ने कहा। "या तो रूसी बोलो, या अच्छा हो कि बात ही न करो।"

"कहा कहा !" कनल ने रूसी में पूछा और हाथ आगे कर, जैसे दूरी का सकेत करने लगा।

"भगवान का शुक्र है अब वह तुक की बात तो कर रहा है!" ल्यूबा बोली, "वोरोशीलोवग्राद लुगास्क, मेरा मतलब है, वेशक ferstehte?** हा, हा!"

जसे ही ल्यूबा ने बोलना शुरू किया कि उसका डर दूर हो गया और तुरत अपनी स्वाभाविक स्थिति में आ गयी जिससे सभी को, जर्मन

---

*आपको कहां जाना है?
**समझे न?

कनल तक का, मन ही मन यह स्वीकार करना पडा कि वह जो कुछ कह या कर रही है वह बिलकुल स्वाभाविक है।

"जरा वक्त तो बताना? वक्त, वक्त! उल्लू के पट्ठे!" ल्यूबा बोली और अपनी कलाई पटपटाने लगी।

कनल ने अपनी बाह आगे की ओर की और यनवत् केहुनी झुका दी। उसकी पतली-सी कलाई पर राख के से रग के रोओं के बीच एक चौकोर घडी बधी थी। ल्यूबा ने समय देख लिया।

बेशक बिना भाषा जाने हुए भी आदमी अपनी बात दूसरा को समझा सकता है, अगर वैसा करने की उसकी इच्छा हो तो!

और वह कौन है? अभिनेत्री। नही, किसी थियेटर से उसका कोई सबध नही। वह नाच सकती है, गा सकती है! बेशक, वारोशीलोवग्राद में उसके ठहरने की बहुत-सी जगहे है। एक प्रसिद्ध उद्योगपति, गोर्लोव्का खान मालिक की बेटी होने के कारण, वहा के कई सभ्रान्त लोगो से उसकी जान-पहचान है। सोवियत शासन ने उसके बदकिस्मत बाप का सब कुछ छीन लिया। उसके पिता की साइबेरिया में मृत्यु हुई। वे अपने पीछे अपनी पत्नी और चार बच्चे छोड गये ह—सभी लडकिया है और बडी सुन्दर। हा, वही सबसे छोटी है। नही, वह उसका आतिथ्य स्वीकार न करेगी, इससे उसके नाम पर कलक लग जायेगा। वह उस किस्म की लडकी नही है। उसका पता? निश्चय ही वह उसे जरूर बता देगी पर इस समय वह कहा ठहरेगी, यह वह खुद ही निश्चयपूर्वक नही जानती। कनल की अनुमति से वह उसके लेफ्टिनट से तय कर लेगी कि वे दुबारा कैसे मिल सकेगे!

तुम्हारी किस्मत मुझसे ज्यादा अच्छी जान पडती है, रुडाल्फ!"

"तब तो, हर मोनेस्ट, म उससे आपकी भी सिफारिश कर दूगा!"

क्या मोर्चा बहुत दूर है? मार्चे पर सारी बातें उस स्थिति तक

भी कर सकता हैं! कितनी मिट्टी उड रही है! ओह एक नौजवान लडकी पियेगी नही, यह स्वाभाविक है। पर यह तो फ्रेंच शराब है! "रुडोल्फ कार रोको!"

कार एक बड से कज्जाक गाव के कोई दो सौ गज दूर ही रुक गयी। यह गाव सडक के दोनों ओर फैला था। सभी लोग कार से बाहर निकल आये। यहा से एक धूलभरी सडक, एक सकरी खड्ड के किनारे किनारे जाती थी। खड्ड के ढलान के तल में वेदवृक्षा की भरमार थी। खुद ढलान पर धूप से झुलसी हुई गन्धिन घास उग रही थी। लेफ्टिनेंट ने कार को खड्ड से लगी हुई सडक पर लाने को कहा और ल्यूबा अफसरो से आगे आगे दौडती हुई कार के पीछे चलती रही। हवा उसकी फ्राक मे खेल रही थी और वह फ्राक दोनो हाथो से कसकर पकडे थी। उसके जूते सूखी मिट्टी में धस धस जाते थे। शीघ्र ही उनमें ढेरा मिट्टी भर गयी।

ल्यूबा ने लेफ्टिनेंट का चेहरा नही देखा था क्योकि वह कार में अगली सीट पर इस ढग से बैठा था कि ल्यूबा के सामने उसकी वर्दी की धूमिल पिछाडी ही दिखाई पडती थी। लेफ्टिनेंट ने, ड्राइवर के साथ मिलकर, कार में से एक मुलायम चमडे का सूटकेस और बढ़िया बुनी हुई भारी-सी टोकरी निकाली।

सभी लोग ढलान पर एक छायादार जगह में सूखी, घनी घास पर बैठ गये। हालाकि इन अफसरो ने शराब पीने के लिए ल्यूबा पर काफी जोर दिया, फिर भी उसने न पी। उसके सामने बिछे हुए मेजपोश पर इतनी बढ़िया बढ़िया चीजें लगी थी कि यदि वह उनकी ओर न भी मुंह करती तो अभिनेत्री और उद्योगपति की बेटी होने के नाते यह उसकी सिरी मुखता ही सिद्ध होती। अतएव उसने वहां मजपट खाया।

जूतो में मिट्टी भर जाने से उसे बडी परेशानी हो रही थी। वह

यह सोच रही थी कि किसी उद्योगपति की बेटी अपने जूते उतारकर उनमें से धूल झाडेगी या नहीं या लम्बे मोजे पहने हुए अपने पैरो के तलवे पोछेगी या नहीं। आखिर उसने यह सब किया और पैरो को आराम देने के लिए मोजे पहने बैठी रही। यह बिलकुल ठीक था—लग रहा था कि जर्मन अफसर ऐसा ही समझ रहे है।

वह यह जानने के लिए बडी उत्सुक थी कि क्रास्नोदोन से बिलकुल समीप और रोस्तोव क्षेत्र के उत्तरी भाग से लगे लगे जो मोर्चा चल रहा था, वहा वास्तव में काफी डिवीजन थे या नही। उसके घर में जो जर्मन अफसर रह रहे थे उनसे पता चला था कि रोस्तोव क्षेत्र का एक भाग अभी तक सोवियत अधिकार में था। इस समय कर्नल को व्यावहारिक वातो की अपेक्षा अपने मनोरजन की अधिक चिन्ता थी। फिर भी वह कहे जा रही थी कि यदि उस स्थान का मोर्चा टूट गया तो वह एक बार फिर बाल्शेविको की गुलाम बन जायेगी। कर्नल को यह बुरा लगा।

अन्तत जर्मन शक्ति मे उसके विश्वास की इतनी कमी देखकर वह जैसे बौखला गया—

Verdammt noch mal!* और उसने उसकी उत्सुकता का समाधान कर दिया।

जिस समय वे इस प्रकार वातो में उलझे थे, उसी समय उन्हे पैरो की कुछ छिटपुट आहटें सुनाई दी। ये आहटें कज्जाक गाव की दिशा से आती हुई बराबर निकट आती जा रही थी। पहले जब उन्होने यह पदचाप कुछ दूर से सुनी तो उधर कोई ध्यान न दिया किन्तु उसकी गमक बराबर बढती ही गयी। अब ऐसा लग रहा था मानो ये आवाजे लोगो की लम्बी कतार से सुनाई पड रही है। शीघ्र ही ये आवाजें सारे पास

---

*लानत है।

पडास में गूजन लगी। सडक पर धल के घने वादल दिखाई देने लगे थे। हवा इन वादलो का इस गति से वहा रही थी कि टट्टू के ढलान पर बैठे हुए ये लाग तक उन्ह आसानी से देख सकते थे। फिर छिट-पुट आवाज़े भी शीघ्र ही समझ में आने लगी—मरदो की रूखी आवाजें, औरतो के करुण स्वर जिनसे लग रहा था कि वे मतका के लिए शोक प्रगट कर रही थी।

कनल, लेफ्टिनेंट और ल्यूवा खडे होकर टान के किनारे देखने लगे। रूमानियन सैनिको और अफसरो के पहरे में सोवियत युद्ध-बन्दी अनत कतार में उक्त कज्जाक गाव की दिशा से चौडी सडक पर माच करते हुए चले आ रहे थे। सभी अवस्थाओ की कज्जाक लडकिया और औरते चीखती चिल्लाती उस कतार के बगल में दौड रही थी। कभी कभी वे, रूमानियन सैनिका का पहरा तोडकर, अपने सामने पडते हुए बन्दियो के दुवले पतले हाथो मे राटी का टुकडा, कुछ टमाटर, अडे या पूरी की पूरी डबल राटी अथवा कोई पोटली पकडा देती थी।

बदियो के शरीर पर पतलून या फौजी कोट मावृत न थे और उन पर कीचड और धूल की मोटी तह जम गयी थी। अधिकाश लाग नगे पैर थे या छाल के जूता में जा इतने पुराने पड गये थे कि जूते, जसे लगते ही न थे। उनकी दाढी बढ गयी थी। वे लोग इतने दुवल हो गये थे कि उनके शरीर के कपड ऐसे लगते थे मानो जीवित ककालो पर लटके हुए हो। वदियो के पास दौडती और सैनिका के मुक्का और बदूको के कुदा से खदेडी जाती हुई चीखती चिल्लाती औरता की आर घूमे हुए चेहरा पर आशापूर्ण मुस्कान भी वडी भयानक दीखती थी।

ल्यूवा का ढलान पर आये हुए केवल एक ही क्षण बीता होगा, फिर भी पलक मारते, उसने जैसे अनजाने किन्तु स्वत, मेज़पोश पर से जल्दी जल्दी सफेद रोटिया और खाने की चीजें उठायी और फिर जैसे

सभी ओर से बेखबर, जैसी खडी थी वैसी ही, ऊचे ऊचे मोजे पहने, धूलभरी सडक पर, घेरा तोडती हुई, बदियो के निकट जा पहुची। उसने अपने सामने फैले हुए गदे हाथो में खाने की चीजें थमा दी। एक रूमानियन सर्जेंट-मेजर ने उसे पकडने की भी कोशिश की किन्तु वह उसकी पकड से बाहर हो गयी। फिर उसपर भारी भारी मुक्को की बौछार पडने लगी किन्तु वह झुककर पहले एक केहुनी से, फिर दूसरी से, अपना सिर बचाने लगी।

"कोई बात नही, मारे जाओ, मारे जाओ, बदमाशो," वह चीखी, "जहा चाहो, सिर को छोडकर!"

शक्तिशाली हाथो ने शीघ्र ही उसे कैदियो के समूह से ठेलकर बाहर कर दिया। सहसा वह सडक के किनारे आकर खडी हो गयी और उसने देखा कि जर्मन लेफ्टिनेंट उल्टे हाथो रूमानियन सर्जेंट-मेजर के मुह पर तमाचे जड रहा है और क्रोध से लाल कर्नल के आगे, जो गुर्राते हुए सीकिया कुत्ते की तरह लग रहा था, रूमानियन अधिकरण सेना की हल्के हरे रग की वर्दी पहने एक फौजी अफ़सर एटेंशन की मुद्रा में खडा खडा आदिम रोमना की भाषा में कुछ बडबडा रहा है।

जब ल्यूबा अपने हल्के पीले रग के जूते पहनकर तैयार हुई उस समय तक वह पूरी तरह स्वस्थ हो चुकी थी। अब जर्मन अफसरा की कार उसे वोरोशीलोवग्राद की ओर लिये जा रही थी। सबसे आश्चर्यजनक बात यह थी कि जर्मनो ने ल्यूबा की इस हरकत को भी दुनिया में सबसे कुदरती चीज़ समझ रखा था।

वे बिना किसी बाधा के जर्मन कट्रोल पोस्ट पार करके नगर में आ गये।

लेफ्टिनेंट ने घूमकर ल्यूबा से पूछा कि वह कहा उतरना चाहेगी। और अपने को पूरी तरह सभालते हुए उसने सीधे सडक की ओर इशारा

कर दिया। फिर उसने उन मकानों के एक दरवाजे के पास कार खड़ी करने को कहा जो उस कारमालिक की पुत्री के लिए उपयुक्त लग रहा था।

वह कार पर नोट रखे एक बिलकुल ही अपरिचित इमारत के प्रवेश द्वार पर आ गयी। उसके साथ उसका छोटा-सा सूटकेस लिये जर्मन लेफ्टिनेंट भी था। क्षण भर के लिए उसने मन ही मन तय किया कि वह पहले लफ्टिनेंट से पीछा छुड़ाये या उसी की मौजूदगी में उस फ्लैट का दरवाज़ा खटखटाये जो सब से पहले उसके सामने आये। उसने कुछ सकुचाते हुए लेफ्टिनेंट की ओर देखा किन्तु लेफ्टिनेंट ने उसका गलत अर्थ समझा और अपना खाली हाथ उसकी कमर में डालकर उसे अपनी ओर खींच लिया। तब वाह्यत बिना किसी प्रकार का क्रोध प्रगट किये हुए उसने उसके गुलाबी गाल पर कसकर एक तमाचा जड़ा और मकान की सीढ़ियाँ चढ़ गयी। लेफ्टिनेंट ने इस तमाचे को भी नियामत समझा और खिसियाकर मुस्कराते हुए ल्यूबा का छोटा-सा सूटकेस ऊपर ले आया।

दूसरी मंजिल पर पहुँचकर उसने अपनी छोटी-सी मुट्ठी सबसे निकट के द्वार पर कुछ इस ढंग से बजानी शुरू की मानो वह दीर्घकालीन अनुपस्थिति के पश्चात घर लौटी हो। एक लम्बी और दुबली-पतली औरत ने दरवाज़ा खोल दिया। उसके चेहरे पर गर्व तथा वेदना का भाव झलक रहा था और यदि भूतपूर्व सौन्दर्य के नहीं तो इस बात के चिह्न ज़रूर दिखाई पड़ रहे थे कि वह अपनी सूरत शक्ल का खास ध्यान रखती है। ल्यूबा की किस्मत निश्चय ही अच्छी थी।

"Danke schohn Herr Leutnant"* उसने बड़े साहस से कहा और भयानक उच्चारण के साथ अपनी सारी जर्मन शब्दावली का भंडार

---

*"आपको हार्दिक धन्यवाद हेर लेफ्टिनेंट,"

खाली कर दिया। और सूटकेस लेने के लिए अपना हाथ आगे बढा दिया।

जिस औरत ने दरवाजा खोला था उसने जमन लेफ्टिनेंट और रंगीन फ्राक पहने हुए जमन लडकी को भयभीत दृष्टि से देखा।

"एक मिनट।" लेफ्टिनेंट ने सूटकेस जमीन पर रखा, अपने कंधे से लटकते हुए एक थैले से एक कापी निकाली, उसपर पैंसिल से कुछ लिखा और कागज़ ल्यूबा को थमा दिया।

उसपर पता लिखा था किन्तु वह पता पढने और यह समझने का उसके पास अवकाश न था कि उसके स्थान पर खान मालिक की पुत्री किस प्रकार व्यवहार करती। उसने जल्दी जल्दी कागज़ अपनी ब्लाउज़ के नीचे रखा, लेफ्टिनेंट को देखकर सिर हिलाया, लेफ्टिनेंट ने फौजी सलाम दागी, और ल्यूबा फ्लैट की ड्योढी में घुस गयी। फिर ल्यूबा ने सुना—गृहस्वामिनी कई तालो बोल्टो और जजीरो से मकान का दरवाजा बद कर रही थी।

"मा कौन था?" दूसरे कमरे से एक लडकी की आवाज सुनाई दी।

"चुप रहो! एक मिनट ठहरो," औरत बोली।

तब एक हाथ में सूटकेस और दूसरे में कोट लिये ल्यूबा कमरे मे चली आयी।

"मुझे यहा रहने के लिए भेजा गया है। तुम्हे कोई आपत्ति तो नही?' वह उस लडकी पर मैत्रीपूण दृष्टि डालती हुई बोली और कमरे में चारो ओर देखने लगी। कमरा बडा और सुसज्जित था किन्तु था कुछ कुछ उपेक्षित-सा। शायद यह किसी डाक्टर, इजीनियर या प्रोफेसर का मकान था किन्तु प्रत्यक्षत यही लग रहा था कि जिसके लिए मकान में इतनी साज-सज्जा जुटायी गयी है वह अब वहा नही रह रहा है।

"यह जानना रुचिकर होगा कि तुम्हें भेजा किसने," साश्चर्य लड़की ने पूछा, "जमनों ने या किसने?"

प्रत्यक्षत लडकी स्वय अभी अभी आयी थी। वह अभी तक अपना भूरे रग की ऊनी टोपी पहने थी और सद हवा से उसके गाल लाल हो रहे थे। लडकी गोल और मोटी थी। उम्र कोई चौदह साल। गना और गात मोट, वदन मजबूत और कुकुरमुत्ते जैसा जिसमें माना किसी ने दो सजीव और भूरे रग की आखें जड दी थी।

"प्यारी नमारा!" औरत ने सख्ती से कहा, "इससे हमारा कोई मतलब नही।'

'लेकिन क्यो नही, मा, अगर उसे हमारे साथ रहने के लिए ही भेजा गया है। तो मैं तो यू ही पूछ रही थी।"

"माफ करना तुम जमन हो?" उस औरत ने कुछ घबराकर पूछा।

'नही। मैं रूसी हू अभिनेत्री," ल्यूबा ने उत्तर दिया। उसे स्वय अपने पर पूरा पूरा विश्वास न था।

फिर कुछ क्षणा तक सभी चुप रहे। इस बीच उस लडकी ने ल्यूबा के बारे में अपना निश्चय कर लिया था।

"सारी रूसी अभिनेत्रिया बहुत पहले ही जा चुकी है," वह बोली और क्रोध दिखाती हुई कमरे से बाहर हो गयी।

ल्यूबा को लगा कि उसे आदि से अन्त तक वह कडवा घूट पीना पडेगा जो अधिकृत प्रदेश में विजेता के रहने वसने के आनद को विषाक्त कर देता है। फिर भी ल्यूबा ने इस मकान में उसी रूप में कदम जमाने में अपना लाभ समझा जिस रूप में मकान में रहनेवालो ने उसे स्वीकार किया था।

"मैं यहा ज्यादा नही ठहरूगी। मैं अपने लिए कोई स्थायी जगह ढूढ लूगी," वह बोली। फिर भी वह चाहती थी कि घर के लोग उसके

इन चीज व कागजात उस यह विश्वास था कि अगर कभी जमनो के हाथो म न पडगा और वह किसी काम आ सकेगी।

स्वान पयात्ताराविच ने अपनी पत्नी की सलाह से माशा शूविना क गाम जान का निश्चय किया। वह इस निश्चय पर उस रात को पहुचा था जब वह और उसकी पत्नी मार्फा कानियेंको के तहखाने में छिप थ। पत्नी उसके साथ इसलिए नही जा सकती थी कि दोनो न ग्रागानारावग्राम मे इतने वर्षो तक काम किया था कि अब यदि उन्हे लोग साथ साथ देख लेते तो पति पत्नी उनकी आखो में चढ जाते। सभी बातो पर सोच विचार करने क बाद यही उचित समझा गया कि येकतेरीना पा-ला-ना वहीं रह जाये तथा छापेमार दलो और उस इलाके के खुफिया सघटन स सपक बनाये रखे। तहखाने में रहते समय ही दोनो ने निश्चय कर लिया था कि येकतरीना पाव्लोव्ना एक सबधी के रूप में मार्फा के ही घर रहगी और यदि सभव हुआ तो पास-पडोस के किसी गाव में अध्यापिका का काम करने लगेगी।

अब जब उन्होने पक्का निश्चय कर लिया था तो उन्हें महसूस हुआ कि व जीवन में पहली बार एक दूसरे से बिछुडने के लिए विवश हो रह है और ऐसे समय जब कौन जाने, वे फिर कभी एक दूसरे से मिल सकेंगे या नहीं।

बहुत समय तक दोनो एक दूसरे की कमर में हाथ डाले चुपचाप बैठ रहे। उन्हें लगा कि इस अधेरे और सीलभरे तहखाने में एक दूसरे के इतनी समीप बैठे रहना उनके लिए कितना सुखद है। उनका पारस्परिक सबध अब ऐसा न रह गया था जिसके लिए अनुभूतियो के बाह्य प्रदर्शन की आवश्यकता होती। उनका सबध तो उन अनगिनत सबधो जैसा था जिनका आधार इसलिए ठोस और स्थायी होता है कि परिस्थितियों की एक अभी सिया होती है उन्हें अपना अपना काम पस

होता है, तथा वे मिलकर बच्चा की देख भाल करते हैं। उनकी अनुभूतिया, राख में छिपी हुई गर्मी की ही तरह, उनके अन्तस् में छिपी हुई थी। हा, सकट के क्षणो मे, जब उन्होंने साथ साथ दुख, सदमे और सुख का अनुभव किया था, उस समय उनकी अनुभूतिया जरूर सतह पर आती थी। उन्हें उन दिनो की याद अब भी बनी हुई थी जब वे लुगास्क के बगीचा में पहली बार मिले थे, जब नगर भर में बबूल की मादक गध फैली हुई थी, जब उनके यौवन में गुदगुदी पैदा करनेवाला तारा जडा आकाश उनका स्वागत करता था, जब वे जवानी के मोहक सपने देखते थे, जब उन्होंने प्रथम ससग के सुख का अनुभव किया था, जब पहला बच्चा होने पर वे खुशी से नाच उठे थे। बेशक उनको अपने स्वभाव की असगति के पहले खट्टे फलो का स्वाद लेना पडा था। किन्तु ये फल कितने आश्चयजनक थे! सिफ अस्थिर प्रकृति के लोग ये फल खाने के कारण विचलित हो सकते हैं जिनकी प्रकृति दृढ होती है उनके दिल हमेशा के लिए जुड जाते हैं।

प्रेम के लिए जीवन की सकटकालीन परीक्षाओ की, और साथ ही प्रेम के उदभव की स्मृतियो की अपक्षा होती है। परीक्षाए दम्पति को परस्पर आबद्ध करती हैं और स्मृतिया उन्हें सदा जवान रखती हैं। जब पति या पत्नी इस प्रश्न के उत्तर मे कि "याद है तुम्हे?" हामी भरते हुए सिर हिलाते ह तो जैसे वे एक लक्ष्य की शक्ति से बध जाते ह। जिस लक्ष्य को दोनो ने अपने जीवन का ध्येय बनाया हुआ है। वस्तुत यह प्रश्न स्मति का नही। यह तो यौवन का शाश्वत प्रकाश है और जीवन माग पर चलकर भविष्य में प्रवेश करने का आह्वान। वह व्यक्ति भाग्यशाली है जिसने इस प्रकाश को अपने हृदय में जीवित रखा है।

मार्फा कानियेंको के तहखाने के अधेरे में बैठे बैठे इवान फ्योदोरोविच

और कात्या के हृदय में इसी प्रकार की सुखद अनुभूतियां उठ रही थी। वे चुप थे किन्तु उनके अन्तर में ये शब्द गूंज रहे थे—

"याद है? तुम्हें याद है?"

एक दिन की बात तो उन्हें विशेष रूप से याद थी। उस दिन उन्होंने अन्तिम निश्चय किया था। वे पिछले कई महीनों से एक-दूसरे से मिल रहे थे। मामला कहां तक पहुंच गया था यह कात्या अच्छी तरह जानती थी। उसने यह सब जाना था उसके साहसी कार्यों और शब्दों से, किन्तु उसने उसे अपने प्रेम की घोषणा न करने दी और न स्वयं ही कोई वादा किया।

एक दिन शाम को प्रोत्सेंको ने उससे आग्रह किया कि वह अगले दिन उससे होस्टल के अहाते में मिले। वह प्रादेशिक पार्टी स्कूल में किसी क्लास में पढ़ रहा था। अकेली यही बात कि कात्या उससे अहाते में मिलने को राजी हो गयी थी, उसकी महान विजय थी। इसका मतलब था कि अब वह उसके मित्रों की उपस्थिति में भी नहीं घबराती थी, क्योंकि उस समय अर्थात् लेक्चर के तुरन्त बाद, अहाता हमेशा विद्यार्थियों से भरा रहता था।

जब वह अहाते में पहुंची, उस समय वहां 'गोरोदकी'* खेल चल रहा था। अहाते में बड़ी भीड़ थी प्रोत्सेंको भी खेल में हिस्सा ले रहा था। वह बहुत खुश था। उस समय वह एक उक्रइनी कमीज़ पहने था, कॉलर का बटन खुला था, और कमर पर पेटी नहीं थी, जिस कारण कमीज़ ग्रुली लटक सी रही थी। वह उससे मिलने के लिए उसके पास दौड़ता हुआ आया था और उसने कहा था, "कुछ इन्तज़ार करोगी—

---

*नौ पिनावाले खेल की तरह का एक खेल, जो उससे अधिक जटिल होता है। यह खेल गेंद की जगह एक लम्बी और भारी छड़ी से खेला जाता है।

खेल ज्यादा देर तक न चलेगा"। सभी विद्यार्थी उन्ही की ओर देखने लगे थे। कुछ लोगों ने तो कात्या को आगे आकर खेल देखने की भी जगह दे दी थी। परन्तु उसकी आखें बराबर प्रोत्सेको पर ही लगी रही।

प्रोत्सेका नाटा था, इसलिए उसे हमेशा ही कुछ न कुछ निराशा हुई थी। किन्तु अब, पहली बार, कात्या को उसका सर्वांगीण परिचय मिला था और पहली बार कात्या ने देखा था कि वह कितना बहादुर और कितनी होशियारी और सूझ-बूझ से खेल रहा था। वह छडी के एक ही प्रहार से पेचीदा से पेचीदा आकार ढाह सकता था। कात्या को लगा कि यह काम वह उसकी उपस्थिति से प्रेरित होकर ही कर रहा है। सारा वक्त वह हसता चहकता रहा और अपने विरोधियों का मजाक उडाता रहा, लेकिन किसी बुरी भावना से नही।

लेकिन मार्ग को पहली बार अस्फाल्ट से पक्का किया गया था। उस दिन बडी गर्मी थी और वे बडी देर तक नरम नरम अस्फाल्ट पर चलते रहे थे। वे बहुत सुखी थे वह अभी तक अपनी उनइनी कमीज पहने था किन्तु अब उसका डोरा उसकी कमर पर बधा था और उसके सुनहरे बाल उसके सिर पर लहरा रहे थे। वह बराबर बात करता रहा। उसने एक सांचे वाले से कुछ सूखे खजूर खरीदे और अखबार के एक टुकडे पर रख लिये। खजूर गम गम और मीठे थे। उन्हे सिर्फ कात्या ने खाया इसलिए कि वह तो बातो में उलझा था। इस समय उसे यह बात साफ साफ याद आ रही थी कि उन दिनो उस पक्की सडक पर कही भी कूडे की एक भी बाल्टी न थी ताकि वह खजूर की गुठलिया उनमें डालती। वह इन गुठलियो को बराबर अपने मुह में ही रखे रही इस आशा से कि यदि वे किसी एकान्त गली में मुडेंगे तो वह गुठलिया वही थूक देगी।

सहसा उसने बात करना बन्द कर दिया था और उसपर आखें गडा दी थी, इतनी कि वह शम से लाल पड गयी थी, और कहने लगा था—

मै अभी अभी तुम्ह अपनी बाहो में भरकर यही सडक पर सबके सामने चूमूगा!

और वह सहसा रुखी हो गयी थी और उसपर अपनी बरौनिया क नीचे से सलज्ज दृष्टि डालती हुई बाल उठी थी—

'कोशिश कर दखो न! सारी गुठलिया तुम्हारे मुह पर न थूक दू ता कहना!

बहुत सी गुठलिया है मुह में?" उसने बडी गभीरता से पूछा था।

"कोई एक दजन होगी।'

'ता चलो बगीचे म चले। चलो दौड चले," इसके पहले कि वह सोचने क लिए कुछ रुके, प्रास्तका चिल्ला पडा था और उसका हाथ पकड कर और राह चलता की चिन्ता न करता हुआ उसे बगीचे में खीच ले गया था।

'याद है! बगीचे की वह रात याद है तुम्ह? तारो की छाव में लुगास्क के बगीच में कात्या ने पूरे विश्वास के साथ अपना गम गम चहरा उसके मजबत कधे और गरदन के बीच डाल दिया था। अब अधेर तहखाने में भी उसने वैसा ही किया। उसके गाल अपने पति की मुलायम दाढी का स्पश करते रहे। प्रभात हो गयी फिर भी दोनो उसी तरह बडे रहे। क्षण भर के लिए भी उन्ह नीद नही आयी थी। कुछ दर के लिए प्रास्तका ने कात्या का और भी जोर से अपने साथ चिपटाये रखा, फिर धीरे-से सिर उठाकर बाला

'समय हो गया है, प्रिये उठो मेरी प्यारी!"

किन्तु उसने फिर भी उसक कधे पर से अपना सिर नहीं उठाया। दोनो वही बैठ रहे यहा तक कि बाहर दिन का प्रकाश फैल गया।

इवान फ्योदोराविच ने कार्नेई तीखोनोविच और उसके पोते को यह देखने के लिए मित्याकिन्स्काया के अड्डे पर भेज दिया कि दस्ते का क्या हुआ। वह बहुत समय तक बूढे कार्नेई तीखोनोविच को यह निर्देश भी देता रहा कि छोटे छोटे समूहो में किस प्रकार सघर्ष की कायवाहिया करनी चाहिए और किसाना, कज्जाको और गावा में बस गये भूतपूव सैनिको को किस प्रकार नये नये छापेमार दला में सगठित करना चाहिए।

जिस समय मार्फा उन्ह खाना दे रही थी, उसी समय उसका एक दूर का बूढा रिश्तेदार किसी प्रकार बच्चो का मोर्चा तोडकर खाने के साथ ही साथ मेज़ पर आ धमका। हमेशा ही उत्सुक रहनेवाला इवान फ्योदोरोविच यह जानने के लिए तत्काल ही उसपर झपटा कि सीधा-सादा बूढा देहाती वस्तुस्थिति को किस दृष्टि से देखता है। यह वही व्यवहार-कुशल बूढा था जिसने कोशेवोई और उसके सबधियो के लिए गाडीवान का काम किया था। आखिर, उधर से गुज़रते हुए जमन क्वाटरमास्टरो ने उससे उसका हल्के पीले रग का घोडा छीन लिया था और दादा गाव में अपने लागो के पास लौट आया था। उसने एक ही दृष्टि में देख लिया था कि प्रोत्सको साधारण आदमी से कही बढ चढकर है और उसने टेढे-मेढे रास्ते से जाना शुरू कर दिया था।

"अच्छी बात है, देखो यह इस प्रकार है उनकी पलटन तीन हफ्ते से अधिक से माच कर रही थी। यहा माच करनेवाली ये सचमुच बहुत बडी पलटनें थी। अब लाल सैनिक नही लौटेंगे नही। बात यह है कि वोल्गा के उस ओर, कुइबिशेव में लडाई शुरु हो गयी है। मास्को के इर्द-गिद घेरा डाल दिया गया है और लेनिनग्राद पर कब्ज़ा हो गया है। हिटलर का कहना है कि वह मास्कावासिया को भूखा मारकर मास्का पर कब्ज़ा करेगा।"

'तुम मुझे इस बात का विश्वास कभी नही दिला सकते कि तुम

इन वाहियात सचगो के शिकार हो चुके हो।" इवान फ्योदाराविच ने कहा और उसकी आखो में शरारत झलक उठी। "मेरे दास्त इधर देखो। मैं और तुम एक ही कद के हैं—तुम मुझे कुछ कपडे और जूते दोगे? जो कुछ मैं पहने हू वह तुम्हे दे दूगा।"

'अच्छा तो यह बात है?' दादा तुरत बात समझकर बोला, 'मैं तुरन्त कपडे ले आऊगा।"

तो इस प्रकार इवान फ्योदोराविच ने वोरोशीलोवग्राद में कामेन्नी ब्राद मे, बढे के कपडे पहनकर माशा शूबिना के कमरे में प्रवेश किया। उसकी बढी हुई दाढी के कारण उसकी शक्ल-सूरत, जिसपर बुढापे का साया न पडा था, छिप गयी थी। उसकी पीठ पर एक थैला लटक रहा था।

जब वह इस प्रकार वेश बदले अपने ही जन्मस्थान की सडको से होकर गुजर रहा था तो उसे एक विचित्र अनुभूति का आभास हुआ। वह वोरोशीलोवग्राद मे सिर्फ पैदा ही न हुआ था, बल्कि वहा बरसो काम भी कर चुका था। उसके जमाने में दफ्तरो की ढेरो इमारते, सस्थाए, क्लब और आवासगृह बने थे। कुछ भवन तो एकमात्र उसी के प्रयासों के फलस्वरूप बने थे। उसे याद आ रहा था—जिस चौक से होकर वह इस समय गुजर रहा था, उसकी योजना नगर सोवियत के अध्यक्षमडल की बैठको मे बनायी गयी थी और स्वय उसी ने उसका नक्शा तयार कराया था और वहा पेड-पौधे लगाने के कार्यों की देख-रेख की थी। अपने इस नगर की सावजनिक सेवाओ का सघटन करने से सबद्ध उसके समस्त व्यक्तिगत प्रयासो के होते हुए भी नगर पार्टी कमिटी में बराबर इस बात की आलोचना होती रही कि सडको और अहातो में काफी सफाई की व्यवस्था नही है। और यह आलोचना उचित भी थी।

अब बमो ने कई इमारतें नष्ट कर दी थी, पर प्रतिरक्षा के लिए लडी जानेवाली लडाइयो की सरगर्मी के बीच, नगर का विध्वस अधिक

प्रयत्न न दिखता था। पर बात तो यह भी न थी। पिछले कुछ हफ्ता में नगर की इतनी उपेक्षा की गयी थी कि लगता था जैसे नये मालिका का स्वय यह विश्वास न था कि वे वहा हमेशा के लिए बस पायेंगे। सडका की न तो सफाई ही की गयी थी न उनपर पानी का छिडकाव ही। चौका में लगे हुए फूल मुरझा गये थे, क्यारी में घास-पात उग आयी थी और सिगरेटा के अधजले टुकडे और कागज लाल लाल धूल में जहा तहा पडे थे।

नगर एक प्रमत्त कायता क्षेत्र समझा जाता था। पुराने दिना में, देश के अन्य बहुतेरे जिला की तुलना में इस नगर में तरह तरह के सामान आया करते थ। सडका पर अच्छे अच्छे कपडे पहने हुए खुशहाल लोगा की चहल पहल रहती थी। आदमी देखते ही समझ लेता था कि यह दक्षिणी नगर है। यहा हमेशा ढेरा फल फूल मिल सकते थे। कबूतरा के तो झुण्ड के झुण्ड रहा करते थे यहा। अब भीड कम हो गयी थी और उनमें सादगी और फूहडपन के आसार झलकने लगे थे। अब यहा लोग अपने कपडे-लत्ता की ओर से लापरवाह हो गये थे। उनके वस्त्रा को देखकर लगता था कि लोग उनकी जान-बूझकर उपेक्षा करने लगे हैं। उन्हे देखकर लगता था कि उन्होंने नहाना धोना तक छोड दिया है। बेशक, जर्मना, इतालवियो तथा कहीं कहीं रूमानियना और हगेरियनो, अर्थात् दुश्मना की वर्दिया, कधे की पट्टिया और बिल्ला ने वहा जरूर कृत्रिम रगीनी बिखर दी थी। अब सडको पर उन्ही की आवाजें सुनाई देती और धूल के अम्बार उडाती और भापू बजाती हुई उन्ही की कारे दौड लगाया करती। आज से पहले इवान फ्योदोरोविच के मन में नगर और उसके निवासिया के प्रति इतनी सहानुभूति, इतने प्रेम की अनुभूति कभी न जगी थी। उसे लगा जैसे वह अपने घर से निकाल दिया गया था और अब वह फिर छिप-लुक कर वहा लौट आया है, किन्तु जैसे वह देख रहा था

कि नये नये किरायेदारों ने उसकी सम्पत्ति का अपहरण किया है, हर उस चीज पर हाथ साफ किया है जो उसे जान से ज्यादा प्यारी रही है और उसके नाती रिश्तदारों को बरबाद किया है। परन्तु वह उन्हें रोकने में अशक्त था वह तो टुकुर टुकुर देख भर सकता था, बस!

उसकी पत्नी की सहेली के चेहरे पर वैसी ही निराशा, वैसी ही उपेक्षा के भाव झलकते थे। वह एक पुरानी-सी काली फ्राक पहने थी। उसके सुनहरे बाल जैसे लापरवाही से उसके सिर पर बांधे हुए थे। मैले पैरों में फटे पुराने घरेलू जूते थे और यह प्रत्यक्ष लग रहा था कि वह बहुत समय से, पर धोये बिना ही, पलंग पर सोने जाती रही है।

'माशा तुममें ऐसी शिथिलता कैसे आ गयी?" इवान पयोदारोविच सहसा बोल उठा।

माशा ने जैसे बड़ी विरक्ति से अपने ऊपर एक निगाह डाली।

'मैं! सचमुच! मैंने कभी इसपर ध्यान नहीं दिया। सभी इसी तरह रहते हैं। यही बेहतर है—जमना की नजर में भी आदमी नहीं चढ़ता। और नगर में पानी भी तो नहीं है।"

वह चुप हो गयी, और तब कहीं इवान पयोदोरोविच ने इस बात पर ध्यान दिया कि वह कितनी दुबली हो गयी है और कमरा कितना खाली खाली और भयानक लगता है! उसने सोचा शायद वह भुखमरी का शिकार हो रही है और उसके पास जो कुछ भी था उसे वह बा बेच चुकी है।

"अच्छा, आओ, कुछ पेट में डाल लें एक छोटी-सी औरत ने मेरे लिए सभी तरह की अच्छी अच्छी चीजें तैयार करके दी थीं, वह छोटी-सी औरत सचमुच बड़ी होशियार थी," वह बोला और अपना थैला टटोलने लगा।

हे भगवान, लेकिन यह बात नहीं है!' माशा ने अपना चेहरा

अपने हाथों से ढाप लिया। "मुझे अपने साथ कात्या के पास ले चलो," जोश में आकर उसने कहा। "मैं पूरी शक्ति, पूरी लगन से तुम्हारे लिए काम करूँगी। मैं तुम्हारी चाकरी करने को तैयार हूँ। मैं कुछ भी करने को तैयार हूँ, कम से कम रोज रोज यह अपमान के घूट तो न पीना पडे, बिना काम के घुट घुटकर मरना तो न पडे, बिना किसी उद्देश्य के जिन्दगी का बोझ तो न ढोना पडे।"

माशा, कात्या की बचपन की सहेली थी। वह प्रोत्सेको को तब से जानती थी जब से कात्या के साथ उसका विवाह हुआ था। फिर भी वह उससे औपचारिक ढंग से ही बातचीत करती। उन पुराने दिनों में भी प्रोत्सेको को यह शका हुई थी कि वह मुझसे परिचितों की तरह बातचीत नहीं करती, इसलिए कि उसे यह ध्यान बराबर बना [illegible] कि प्रमुख पद पर होने के कारण मैं उससे अर्थात् एक [illegible] ड्राफ्टसवोमन से, काफी दूर हूँ।

इवान फ्योदोरोविच के चौडे माथे पर एक [illegible] गयी और उसकी जीवित नीली आखों में चिन्ता तथा [illegible] झलक उठा।

"मैं तुमसे साफ साफ बातें करूँगा, वे [illegible]," उसकी ओर देखे बिना प्रोत्सेको ने कहना [illegible], "[illegible], [illegible] मामला हमारा और तुम्हारा होता तो [illegible] और तुम दोनों को छिपाकर मैं खुद [illegible]," [illegible] और उसके मुँह पर कठोर-सी [illegible]। "[illegible] का सेवक हूँ और अब यह [illegible] से हमारे देश की सेवा करूँ। [illegible] इतना ही नहीं, मैं [illegible] द। मुझे साफ [illegible]

इस तरह की जिन्दगी बसर करने के बजाय म कुछ भी करने को तयार हू।

यह कोई जवाब नहीं!" इवान फ्यादोरोविच ने सख्ती से कहा, म तुम्हे अपनी आत्मा के उद्धार का रास्ता नहीं सुझा रहा हू। म सिर्फ एक बात पूछता हू–तुम अपनी जनता, अपने राज्य की सेवा करने को तैयार हो?

"तैयार हू" वह धीरे-से बोली। प्रात्सको जल्दी से मेज पर झुका और उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया।

यहा के लोगो के साथ सम्पर्क रखना मेरे लिए बहुत जरूरी है, किन्तु यहा तो गिरफ्तारिया हुई है और इस समय मुझे यकीन नहीं कि मैं किन सम्पर्कों पर भरोसा करू। तुम्हे अपने में साहस और शैतान की सी चालाकी पैदा करनी होगी। म तुम्हे कुछ सम्पर्क-पते दूगा और तुम्हें इन लोगो के बारे में पता लगाना होगा। करोगी?"

'करूगी, वह बोली।

'अगर तुमपर कोई मुसीबत आये और दुश्मन तुम्हे धीमी आच पर जलाये तुमपर अत्याचार करे तो क्या तुम हम लोगो का भेद खोल दोगी?'

उत्तर देने के पहले वह कुछ रुकी मानो अपनी अन्तरात्मा से राय ले रही हो।

'नही, वह बोली।

"तो सुनो '

और प्रात्सको दिये के मद्धिम प्रकाश में उसके और भी निकट झुक आया। अब माशा को उसकी कनपटी पर एक नये घाव का निशान नजर आया। उसने माशा को कामेन्नी ब्रोद का एक सम्पर्क-पता दिया जिसे वह दूसरो से अधिक विश्वस्त समझता था। उसे इस सम्पर्क की विशेष आवश्यकता

थी क्योंकि उसके जरिये वह उक्रइनी छापेमार हेडक्वाटर से सम्पर्क रख सकता था और यह जान सकता था कि न सिर्फ उसी प्रदेश में, बल्कि मोर्चे के सोवियत क्षेत्र में और अन्य सभी जगहों पर, क्या हो रहा है।

माशा ने तुरत ही वहा जाने की इच्छा प्रगट की। पर, उसके इस भोले आत्मत्याग और अनुभवहीनता का इवान फ्योदोरोविच पर बडा असर पडा। उसकी दोनों आखे चमक उठी थी।

"पर यह काम किया कैसे जा सकता है?" उसने उसे वाणी मे मिठास भरकर फटकारा, "यह काम बडी सफाई से होना चाहिए, जैसे फैशन स्टोर मे होता है। तुम जहा जाओगी दिन मे जाओगी, खुलेआम। मैं तुम्हे सब कुछ समझा दूगा एक बात और, मुझे अपने पीछे के बचाव का भी ध्यान रखना है। यह मकान किसका है?"

माशा ने एक छोटे-से मकान का एक कमरा किराये पर ले रखा था। मकान लोकोमोटिव कारखाने के एक पुराने कामगार का था और पत्थर का बना था। मकान के बीचोबीच से एक गलियारा जाता था जो एक ओर से एक अहाते में निकलता था और दूसरी ओर से सडक पर। अहाते के चारो ओर पत्थर की नीची दीवाल थी। गलियारे के एक तरफ एक कमरा और रसोईघर पडता था, दूसरी तरफ दो छोटे कमरे थे जिनमे से एक में माशा रहती थी। बूढे कामगार के बहुत-से बच्चे थे किन्तु अब कोई भी उसके साथ न रहता था। उसके बेटे या लाल सेना में थे या नगर से बाहर चले गये थे। विवाहित बेटिया दूसरे नगरो में रहती थी। माशा के कथनानुसार उसका मकान मालिक गम्भीर किस्म का आदमी था, किताब का कीडा, कम मिलनसार, किन्तु बहुत ईमानदार।

"मैं मकान-मालिक से कह दूगी कि तुम मेरे मामा हो और देहात से आये हो। मेरी मा भी उक्रइनी थी। मैं उससे कहूगी कि मैने ही तुम्हे आने के लिए लिखा था क्योंकि अकेले में रहना मेरे लिये मुश्किल था।"

अच्छा तो अपने मामा को अपने मकान मालिक से तो मिलाओ। जरा देखें तो वह क्या गैर मिलनसार है," इवान फ्योदोरोविच ने दाव निकालते हुए कहा।

पर जिक्र करने के काबिल यहा पर काम ही कौन-सा है, और काम भी क्या किया जाय?" वह 'गैर-मिलनसार' आदमी उदास होकर बड़बड़ाया। उसकी आग निकली हुई सी बड़ी बड़ी आखें किसी किसी वक्त इवान फ्योदोरोविच की दाढ़ी और दाहिनी कनपटी के ऊपर घाव के निशान पर टिक जाती थी। "हम दो बार फैक्ट्री का साज-सामान यहा से भेज चुके है। जर्मनो ने कई बार हमपर बम बरसाये। हमारे यहा इजन और बाद में टैंक और तोपे बनती थी। अब हम प्राइमस चूल्हा और सिगरेट लाइटरो की मरम्मत करते है। सच तो यह है कि कारखाने के कई विभागो के ढाचे बाकी पड़े है और यहा से या वहा से बहुत-से साज-सामान की तलाश की जा सकती है। किन्तु ऐसा करने के लिए योग्य कारखाना मैनेजर की जरूरत है। इस समय वहा जो मैनेजर है " उसने अपना दुबली पतली बाह हिलाते हुए कहा। 'ये सबके सब बड़े मामूली अफसर है। इसपर चोर है चोर उचक्के। तुम्हें यकीन न होगा लेकिन इस अकेली फैक्टी के लिए तीन फक्टी मालिक चक्कर लगा चुके है। क्रुप्प का प्रतिनिधि आया था क्योकि पहले कारखाने पर हाटमनो का स्वामित्व हो गया था और क्रुप्प ने उनके हिस्से खरीद लिये थे। फिर रेल प्रशासन यहा नमूदार हुआ और अन्त मे एक बिजली कम्पनी। बेशक इस कम्पनी ने बिजलीघर पर कब्जा कर लिया होता किन्तु हमारे लोगो ने नगर खाली करने के पहले ही उसे उड़ा दिया। इन तीनो मालिको ने सारे कारखाने का चक्कर लगाया और यह निश्चय किया कि वे उसे तीन भागो मे बाट लेगे। इसे देखकर हसी भी आती थी और रोना भी। सारी फैक्ट्री नष्ट हो चुकी थी और वे थे कि खूटे गाड़ गाड़कर उसे वैसे ही अलग कर रहे थे जैसे कि जार

वादशाहो के जमाने में किसान अपनी अपनी जमीनो को अलग कर लेते थे। वे तो वहा सुअरो की तरह जम गये थे और फैक्ट्री के भीतर के सवहन-मार्गों में गडढे तक खाद लिये थे उन्होंने सारी जगह बाट ली, उसपर विभाजन रेखाए खीच ली और सारी बची खुची साज-सज्जा जमनी में अपने अपने कारखानो में भेज दी। उन्हाने छाटी माटी चीजे ऐसे औने-पौने बेची मानो कवाड खाने के व्यापारी हो। हमारे श्रमिक बस हसते रहते है "अफसरा के बारे मे क्या कहे! पिछले कुछ वर्षो मे हमारे कर्मचारी तेज रफ्तार से काम करने के आदी हो गये ह और जहा तक इन मालिको के लिए काम करने का सवाल है, तो इन्हे देख लेने भर से ही आदमी को उबकाई आने लगती है। बेशक हम हस लेते हैं किन्तु सिफ इसलिए कि हम अपने आसू छिपाना चाहते ह "

धुघाती हुई मोमबत्ती के प्रकाश में चारो जने—लम्बी दाढी वाला इवान फ्योदोरोविच, माशा, जो वहुत शात हो गयी थी, 'गैर मिलनसार' आदमी और एक वूढी, जिसकी पीठ झुक गयी थी—कदरावासियो की तरह लग रहे थे। उनकी भयानक परछाइया एक दूसरे से मिलती, बिछुडती और प्राय दीवालो और छत पर चढ जाती। 'गैर मिलनसार' आदमी की उम्र सत्तर के आसपास थी। दुबला पतला बदन, नाटा-सा कद, सिर बडा, सीधे तनकर बैठना भी उसे मुश्किल लग रहा था। वह नीरस लहजे में उदासी के साथ वालता और प्राय लडखडाते हुए शब्दो को चवा जाता था। इवान फ्योदोरोविच को उससे बातचीत करने में मजा आ रहा था, इसलिए नही कि वूढा तुक की वात करता था या सच वालता था वल्कि इसलिए कि नगर का एक कामगार, इत्तिफाक से मिले एक किसान को, जमनी के अधीनस्थ एक औद्योगिक कारखाने के ब्योरे सुना रहा था। इवान फ्योदोरोविच उसके सामने अपने विचार भी प्रकट करने का लोभ सवरण न कर सका।

'मैं जिस गाव से आया हूं वहां लोग इस प्रकार सोचते हैं—दुश्मन को उपनिवेश में हमारे उद्योग का विकास करने में कोई रुचि नहीं। उनके सारे उद्योग तो जर्मनी में हैं। पर उसे तो हमारा अनाज और कोयला चाहिए बस। वह उक्रइना को अपना उपनिवेश समझता है और हम सबको अपना गुलाम।' इवान फ्योदोरोविच को लगा जैसे इस 'गैर मिलनसार' आदमी की दृष्टि में आश्चर्य का भाव झलक उठा है। वह हंसते हुए बोला 'इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि हमारे किसान इस प्रकार तर्क करते हैं। आखिर वे बच्चे नहीं हैं। अब वे सभी कुछ समझते हैं।" उसकी आंखें फिर चमक उठीं।

"हां, यह तो ठीक है,'" 'गैर मिलनसार' आदमी ने कहा। उसे इवान फ्योदोरोविच का तर्क सुनकर कोई आश्चर्य न हुआ था। "अच्छी बात है—उपनिवेश ही सही। तो इससे नतीजा यह निकलता है कि वे गांव में खेतीबारी के काम को आगे बढ़ा रहे हैं, हैं न?"

इवान फ्योदोरोविच मृदुता से हंस दिया।

"हम जाड़े का गेहूं जाड़े और वसंत के गेहूं की खूंटी लगे खेत में बोते हैं और मिट्टी खोदते हैं कुल्हाड़ी से। अब तुम खुद ही समझ लो।"

"बिलकुल ठीक," 'गैर मिलनसार' आदमी ने कहा। उसे फिर भी कोई आश्चर्य न हो रहा था। "किसी चीज का इन्तजाम कैसे किया जाता है इसका उन्हें कोई इल्म नहीं उन्हें तो लूट का पेशा इख्तियार करके जिन्दा रहने की आदत-सी पड़ गयी है। और—भगवान मुझे क्षमा करे—इस 'संस्कृति' को लेकर ये वहशी दुनिया को जीतना चाहते हैं," वह बोला किन्तु उसकी आवाज में द्वेष का पुट न था।

"ओहो, दादा, तुम मुझ जैसे किसान को सौ सौ तर्कों की छूट देकर भी मुझसे बाजी ले जा सकते हो, इवान फ्योदोरोविच ने सोचा और इस विचार से वह प्रसन्न हो उठा।

"क्या किसी ने तुम्हे अपनी भतीजी के यहा आते देखा था?" 'गैर मिलनसार' आदमी बोला। उसके लहजे में कोई परिवत्तन न आया था।

"यह तो मै नही जानता। लेकिन मै चिता क्या करु? मेरे पास अपने सब परिचय पत्र मौजूद है।"

"यह ठीक है," उसने जैसे बात टालने के ढग से कहा, "लेकिन यहा का कानून यह है कि मुझे तुम्हारे आने की खबर पुलिस मे करनी है। अगर तुम यहा बहुत समय तक न रहा तो हम इस मामले को नजरअदाज भी कर सकते है। मै तुमसे सीधी सीधी बात कर रहा हू, इवान प्योदोरोविच। मैंने तुम्हे तुरत ही पहचान लिया था क्योकि, तुम्ही देखा न, तुम अक्सर कारखाने में आया करते थे कौन जाने कोई बेतुके किस्म का आदमी तुम्हे किस बेतुके मौके पर पहचान बैठे।'

बेशक इवान प्योदोरोविच की पत्नी ठीक ही कहा करती थी कि वह शुभ मुहूत में पैदा हुआ है।

दूसरे दिन सुबह माशा एक सम्पक-पते पर गयी और एक अजनबी को साथ लिये वापस आ गयी। इवान प्योदोरोविच और माशा को यह देखकर बडा आश्चय हुआ कि इस अजनबी ने 'गैर मिलनसार' आदमी का इस ढग से अभिवादन किया मानो वे अभी एक ही दिन पहले बिछुडे हो। उसी आदमी से इवान प्योदोरोविच को मालूम हुआ कि इस 'गैर-मिलनसार' आदमी को यहा पर खुफिया काम करने के लिए रख लिया गया है। इवान प्योदोरोविच को यह भी मालूम हुआ कि जमन सैनिक देश में कहा तक घुस आये है। यह बात उस समय की है जब स्तालिनग्राद का महायुद्ध आरभ हुआ था।

अगले कुछ दिनो में इवान प्योदोरोविच ने नगर की और कुल मिलाकर प्रदेश की स्थिति जानी-समझी। उसका कुछ समय सम्पक स्थापित

करने में व्यतीत होता। फिर एक दिन, उसके क्रिया-कलाप के दौरान में वही आदमी, जिसने नगर के खुफिया सघटन के साथ उसका सम्पर्क स्थापित किया था अपने साथ अभिनेत्री ल्यूबा को लाया।

ल्यूबा ने इवान फ्यादारोविच का उन परिस्थितियो के बारे में सभी कुछ बताया जिनमें क्रास्नोदोन जेल में बद लागो ने मौत का सामना किया था। वह खिन्न चित्त सारी कहानी सुनता रहा और कुछ समय तक ता उसक मुह से एक शब्द भी न निकला। उसे मत्वेई कोस्तियेविच और वाल्का के लिए बडा ही दुख था। "कितने महान कज्जाक थे वे दोना!" उसने मन ही मन सोचा। और सहसा उसकी कल्पना के सामने उसकी पत्नी का चित्र घूम गया—वह अकेली बैठी बैठी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी, बिलकुल अकेली

"हा," उसने कहा, "हमारी यह खुफिया जिन्दगी भी कितनी कठोर है! इससे कठोर जिन्दगी का अस्तित्व ही नही रहा कभी " वह ल्यूबा से बातचीत करता हुआ वही कमरे मे चहलकदमी करता रहा किन्तु जो कुछ उसने कहा वह कुछ ऐसा लग रहा था मानो स्वय अपने से बात कर रहा हा। "लोग हमारे खुफिया सघटन की तुलना, श्वेतरक्षका के अधीनस्थ, हस्तक्षेपकाल के खुफिया सघटन से करते ह। परन्तु दोनो का मुकाबला ही क्या? इन कसाइयो ने जा आतक फैला रखा है उसकी तुलना में श्वेतरक्षक स्कूली बच्चे थे। आजकल वे लाखो लोगो का सफाया कर रहे है। किन्तु आज हमें एक लाभ भी प्राप्त है जा उस काल में न था—हमारे खुफिया लडाका और छापेमारा के साथ हमारी पार्टी, हमारा सरकार और हमारी लाल सेना की पूरी पूरी शक्ति है। हमारे छापेमार कही अधिक जागरुक हैं। उनका सघटन भी पहले से अच्छा हैं, उनकी प्राविधिक सज्जा, अर्थात शस्त्रास्त्र और सवहन आदि भी उच्च कोटि के ह। यह बात लोगो को साफ साफ बता दनी चाहिए दुश्मन का

कमजोरी यह है कि वह बुन्दजेहन है, वह हर काम कायदम के अनुसार हुक्म मिलने पर करता है। वह हमारे लोगो के बीच, अज्ञान के पूण अधकार में रहता है और कुछ भी नही समझता उसकी इस कमजोरी से फायदा उठाना चाहिए!" उसने ल्यूबा के सामने आकर रुकते हुए कहा और फिर कमरे के एक कोने से दूसरे कोने तक चहलकदमी करने लगा—"ये सारी बात लोगो को समझायी जानी चाहिए ताकि वे दुश्मन से डरना छोडें और उसे धोखा देना सीख ले। लोगो को सगठित किया जाना चाहिए। फिर उनमें से स्वय लडनेवाले लोग निकलेंगे। हर जगह ऐसे छोटे छोटे खुफिया दल बनने चाहिए जो खाना और गावो मे, अर्थात् सभी जगह काम कर सके। लोगो को जगलो में छिपने नही जाना चाहिए। हह! अरे हम रहते है दानवास में। हमें खानो, गावो और जर्मन सस्थाओ तक में घुसना चाहिए, मसलन् श्रम केन्द्र, नगर परिषद, प्रशासन, गाव कमाडाटुर दफ्तरो, पुलिस और गेस्टापो तक में। हमें अन्दर ही अन्दर तोड फोड, अराजकता और आतक फैलाकर दुश्मन की सारी व्यवस्था पलट देनी चाहिए। स्थानीय श्रमिको, ग्रामीणो और युवको तक के, पाच पाच लोगो के छोटे छोटे दल बनाने चाहिए ताकि जर्मनो के दात हमारे भय से कटकटा उठें।" उसने ये सारी बात जैसे बदले की भावना से कही और यह भावना इतनी सक्रामक सिद्ध हुई कि स्वय ल्यूबा तक की सास भारी हो गयी। फिर इवान फ्योदोरोविच को वह बात भी याद आयी जो ल्यूबा ने 'पुराने साथियो के निर्देशो के सबध में' उसे बतायी थी।

"तो इसके माने है कि तुम लोगो का काम ठीक चल रहा है। यही बात दूसरी जगहो पर भी है। फिर ऐसे मामलो में तो लोग हतोत्साह होते ही है तुम्हारा नाम क्या है?" उसने पूछा और एक बार फिर उसके सामने आकर रुक गया। "ल्यूबा? हा, तुम्हारी जैसी भली लडकी का ऐसा ही नाम होना चाहिए! तो ल्यूबा है तुम्हारा नाम!" उसकी

आखें चमक उठी "अच्छा तो दोनों, तुम्हें और किस चीज़ की ज़रूरत है?"

और तुरन्त ल्यूबा की कल्पना की आखों के सामने उस कमरे का दृश्य घूम गया जहा वे मानो एक पंक्ति में खड़े थे। खिड़की के बाहर नीचे नीचे गहरे बादल आकाश में दौड़े जा रहे थे। जैसे जैसे प्रत्येक आगे बढ़ता था उसके गालों का रंग उड़ने लगता था और शपथ लेती हुई आवाज इतनी ऊंची हो जाती थी कि उसकी थरथराहट तक उसी में छिप जाती थी। शपथ का मसविदा ओलेग और वान्या जेम्नुखाव ने तैयार किया था और सभी ने उसका अनुमोदन किया था, किन्तु जब उन्होंने शपथ ली थी तो वह शपथ उन्हें जैसे अपने से बाहर की और अपने से ऊपर की चीज लगी थी तथा अधिक अटल और कानून से भी अधिक अनुल्लंघनीय जान पड़ी थी। ल्यूबा को ये सारी बातें याद आने लगी और वह फिर उत्तेजित हो उठी, उसका चेहरा फिर पीला पड़ गया। और सामान्यतः उसकी बाल-सुलभ नीली आखों में इस्पात जैसी कठोर चमक दिखाई देने लगी थी।

हमें सलाह मशविरे और मदद की जरूरत है," वह बोली।

हमें' से क्या मतलब? किसे?"

"तरुण गार्ड' दल को। हमारा कमाडर लाल सेना का एक लेफ्टिनेंट इवान तुर्केनिच है जो अपनी यूनिट से उस समय कट गया था जब वह घायल हुआ था। हमारा कमीसार गार्की स्कूल का विद्यार्थी ओलेग काशेवोई है। हममें से तीस लोगों ने निष्ठा और देशभक्ति की शपथ ली है। जैसा तुमने कहा है, हम पाच पाच के दलों में ही संघटित हुए हैं। यह सुझाव था ओलेग का।

"ऐसा करने की सलाह उस कायर और साथियों ने ही दी होगी,' ल्यान प्रोकोफ़ेविच ने कहा। वह पहले से ही सब कुछ समझ गया था, "जो भी हो तुम्हारा मामला है बड़ा पेचीला'।

इस समय इवान पयोदोरोविच में असाधारण उत्साह आ गया था। वह तड से मेज़ पर जम गया और अपने ठीक सामने ल्यूबा का बिठाते हुए उससे 'तरुण गाड' दल के हडक्वाटर के सारे सदस्यो के नाम और प्रत्येक की कुछ न कुछ विशषताए बताने का अनुरोध करने लगा।

जब ल्यूबा ने स्तखाविच की चर्चा शुरू की तो उसकी' भौंह रोष से चढ गयी।

"एक मिनट ठहरो," उसने ल्यूबा का हाथ छूते हुए पूछा, "उसका पहला नाम क्या है?"

"येव्गेनी।"

"वह बराबर तुम्ही लोगो के साथ रहा है या कही बाहर से आया है?"

वह क्रास्नादोन मे किस प्रकार आया था और उसने अपने बारे में क्या क्या बाते कही थी, यह सब कुछ ल्यूबा ने उसे बताया।

"जब तुम इस छोकरे से कोई काम लेना तो होशियारी बरतना। उसके पिछले कामा की थोडी बहुत जाच भी कर लेना।" इवान पयोदोरोविच ने ल्यूबा को बताया कि स्तखोविच किन विचित्र परिस्थितिया में दस्त से गायब हुआ था? "अगर वह जमनो के हाथ में नही पडा है " प्रोत्सेको ने धीरे-से इतना और कह दिया।

ल्यूबा का चेहरा उतर गया। उसकी चिता बढ गयी क्योकि वह स्तखोविच को अधिक पसद नही करती थी। कुछ क्षणा तक वह चुप रहकर इवान पयोदोरोविच को ताकती रही फिर उसकी आखें चमकी और वह शात स्वर में बोली—

"नही, ऐसा नही हो सकता। शायद वह कुछ डर गया था और भाग आया, बस।"

"तुम ऐसा क्या सोचती हो?'

हमारे साथी उसे बहुत दिनों से जानते हैं। वह कामसोमोल-सदस्य है। बेशक वह अपने को बहुत कुछ समझता है, किन्तु वह ऐसा कोई काम न करेगा। उसके परिवार के सब लोग भले हैं—पिता एक पुराना खान मजदूर है, भाई लोग पार्टी के सदस्य हैं और अब सेना में हैं नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।"

इवान फ्योदोरोविच को उसके इस असाधारण और स्पष्ट तर्क पर आश्चर्य हुआ।

"तुम बड़ी चतुर हो" वह बोला किन्तु उसकी आंखों में उदासी का भाव देखकर वह घबरा-सी गयी, "एक जमाना था जब हम भी उसी दिशा में सोचते थे। देखो न, बात यह है," उसने वैसे ही सीधे-सादे ढंग से अपनी बात शुरू की जैसे कोई बच्चे से कहता है, "दुनिया में अब भी ढेरों ऐसे लोग पड़े हैं जो अपने विचार ठीक उसी तरह बदल डालते हैं जिस तरह वे कपड़े बदलते हैं। कभी कभी तो वे इन विचारों से आवरण का काम लेते हैं। फासिस्ट लोग दुनिया भर में ऐसे लाखों लोगों को ट्रेनिंग दे रहे हैं। फिर ऐसे बहुत-से लोग हैं जो दिल के कमजोर हैं और जिन्हें आसानी से तोड़ा जा सकता है"

"नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता," ल्यूबा बोली। उसके दिमाग में स्नगोविच घूम रहा था।

भगवान करे तुम्हारी बात सच हो! पर जब एक बार उसने बुजदिली दिखायी है तो फिर वैसा कर सकता है!"

मैं इसके बारे में आलेग से बात करूंगी," उसने संक्षेप में कहा।

तो मैंने जो कुछ तुमसे कहा है, वह सब तुम समझ गयी न?"

ल्यूबा ने हामी भरी।

"तब इसी के अनुसार काम करो क्या तुम उस आदमी से सम्पर्क बनाये हुए हो जो तुम्हें यहां लाया था? उसे हाथ से निकलने न देना।"

"धन्यवाद," ल्यूबा बोली। उसकी आखो में फिर पहले जैसी चमक आ चुकी थी।

दोनो उठ खडे हुए।

"हमारी बोल्शेविक शुभकामनाए 'तरुण गार्ड' दल के साथियो के पास पहुचा देना," उसने बडे स्नेह से ल्यूबा का सिर अपने दोनो हाथों में पकडा और पहले एक आख, फिर दूसरी आख चूम ली। तब धीरे-से उसे छोडते हुए बोला, "अब जाओ!"

अध्याय ३

ल्यूबा थोडे ही दिनो तक वोरोशीलोवग्राद में रहा, किन्तु इन [illegible] वह उसी व्यक्ति के आदेशो के अनुसार चलती रही [illegible] पयादोरोविच से मिलाने ले आया था। इस व्यक्ति [illegible] काम की लगीं कि ल्यूबा की दोस्ती एक जर्मन [illegible] उसके ऐडजुटेंट से हो गयी है और उसने रहने [illegible] में हो गया है जहा लोग उसे वह व्यक्ति [illegible] थी नहीं।

रहना चाहिए और यदा-कदा वारारोलोवग्राद तथा दूसरी जगहों में भी जाना चाहिए। अभी तक उनका सम्पर्क जिन लोगों से हो चुका था उनसे बनाये रखने के अलावा उसे जर्मनी, रुमानिया, इटली और हंगरी के शत्रु अफसरों से भी नया सम्बन्ध पैदा करना चाहिए।

ल्यूबा जिस घर में रह रही थी, उसके निवासियों से भी उसने यह समझौता कर लिया था कि जब कभी वह वारोशीलोवग्राद आयेगी, उन्हीं के साथ रहेगी क्योंकि उसे जिन दूसरी जगहों में रहने का सुझाव दिया गया था वे उसे पसंद न थीं। बेशक कुकुरमुत्ते की शक्ल वाली लड़की ल्यूबा के साथ बड़ी ही घृणा का व्यवहार करती रही किन्तु मां ने समझ लिया था कि घर में जर्मनों को रखने की अपेक्षा ल्यूबा कम कष्टकर है।

अब ल्यूबा का एक बार फिर गुजरती हुई किसी जर्मन कार का सहारा लेना अनिवार्य हो गया था। किन्तु इस बार उसने पास आती हुई कारों का इशारा नहीं किया। उसे अब दिलचस्पी थी सैनिकवाली लारियों में। सैनिक अधिक आमोदप्रिय और कम उत्सुक होते हैं। इस बार उसके सूटकेस में निजी चीजों के अलावा एक छोटा-सा यंत्र भी था।

आखिर उसे अस्पताल की एक सर्विस गाड़ी पर चढ़ा लिया गया। उसने देखा कि उसपर मेडिकल दस्ते के पांच-छः व्यक्तियों के अलावा एक सीनियर और कुछ जूनियर मेडिकल अफसर भी थे किन्तु वे सभी पिये हुए थे और ल्यूबा को बहुत पहले ही पता चल गया था कि शराब में मस्त अफसरों को बेवकूफ बनाना अधिक आसान होता है।

उसे पता चला कि वे लोग मोर्चे के एक अस्पताल के लिए बड़े बड़े चपटे डब्बों में स्पिरिट लिये जा रहे हैं और बहुत अधिक मात्रा में। सहसा ल्यूबा के मस्तिष्क में यह विचार कौंध गया कि थोड़ी-सी स्पिरिट भी उसके लिए बड़े काम की सिद्ध होगी क्योंकि उससे सभी ताले और सभी दरवाजे खुल सकते हैं और उसके बदले कुछ भी प्राप्त किया जा सकता है।

आखिर ल्यूबा ने सीनियर मेडीकल अफ्सर को समझा-बुझा कर इस बात के लिए राजी कर लिया था कि वह इतनी बडी और भारी गाडी रात के घने अंधकार में न ले जाये बल्कि रात भर के लिए उसे क्रास्नोदोन में उसकी एक सहेली के घर के सामने खडी कर दे, जहा वह किसी दौरे पर जा रही है। और जब वह, रात मे, नशे मे धुत्त जर्मन अफसरो और सिपाहियो के साथ अपने मकान में घुसी तो उसकी मा सहमकर रह गयी। उसे आज जैसा भय ज़िन्दगी में कभी न हुआ था।

जर्मन रात भर पीते रहे और चूंकि ल्यूबा ने अपने को अभिनेत्री कहा था इसलिए उसे उनके लिए नाचना भी पडा। वह जैसे तलवार की धार पर नाचती रही और अफसरों तथा दूसरे सैनिकों के साथ, बिना किसी प्रकार का भेदभाव रख, हसी मजाक किया और सभी को बेवकूफ बनाया। अफसर ल्यूबा के आगे प्रेम की घोषणा करने लगे, ईर्ष्यालु सैनिकों ने हस्तक्षेप किया और अततः सीनियर मेडिकल अफसर ने अस्पताल के एक अर्दली के पेट में एक लात जमायी।

इधर वे इस प्रकार नाच-रग मे मस्त थे उधर ल्यूबा को सहसा सडक पर पुलिस की सीटी सुनाई दी। सीटी बराबर बजती जा रही थी। कोई पुलिस का सिपाही गार्की क्लब के आस पास कहीं सीटी बजा रहा था। वह पूरी शक्ति से सीटी बजा रहा था और एक क्षण के लिए भी उसे आठो से अलग नहीं कर रहा था।

ल्यूबा को तुरत तो यह न मालूम हो सका कि यह खतरे की सीटी है किन्तु सीटी बराबर तेज होती गयी और उसके मकान के पास आती गयी। फिर सहसा खिडकी की ओर किसी के भागकर आते हुए बोझल कदमो की आहट सुनाई दी जो तुरत ही बन्द हो गयी। कोई सडक पार होता हुआ 'लघु शायाई' की ओर दौड रहा था जिसके मकान सडक के किनारे किनारे बने हुए थे। उसी के कुछ बाद, भागे जाते नगारर

सीटी बजानेवाले सिपाही के भारी बूटों की आवाज़ भी खिड़की के पास से गुज़र गयी।

ल्यूबा और वे जर्मन जो अब भी अपने पैरों पर सीधे खड़े हो सकते थे ड्योढ़ी पर निकल आये। रात अंधेरी, शांत और गर्म थी। सीटी की भेदती हुई आवाज कहीं दूर जाकर मद्धिम पड़ गयी थी। सामने जलते हुए टार्च के अस्थिर प्रकाश से ही यह पता चलता था कि पुलिस वाला सड़क पर दौड़ता चला जा रहा है। और जैसे जवाब में कई स्थानों से सीटी की आवाजें सुनाई दे रही थीं—बाज़ार से, खड्ड के उस पार के खुले मैदान से सशस्त्र पुलिस के कार्यालय से, और उनसे बहुत ही दूर दूसरे लेवल क्रासिंग पर से।

जर्मन फौज के मेडिकल कर्मचारी इतनी अधिक पी गये थे कि उनके लिए सीधा खड़ा रहना एक प्रकार से असंभव हो रहा था, फिर भी वे चुपचाप और कुछ समय तक, लड़खड़ाते हुए, ड्योढ़ी पर बने रहे। फिर सीनियर अफसर ने अपने एक अर्दली से टार्च मंगायी और उसकी रोशनी सामने के बगीचे पर फेंकने लगा, जहां फूलों की क्यारियां उपेक्षित दशा में पड़ी थीं, बाड़े के टूटे फूटे अवशेष ज़मीन चाट रहे थे और बकाईन की विकृत झाड़ियां धराशायी हो गयी थीं। तब उसने अहाते में खड़ी लारी पर रोशनी फेंकी और सभी लोग अन्दर चले गये।

ठीक इसी समय पर ओलेग ने, जिसने अपना पीछा करनेवाले को बहुत ही पीछे छोड़ दिया था, जर्मन सशस्त्र पुलिस के कार्यालय से निकलकर खड्ड के उस पार के खुले मैदान से होते हुए भागकर आनेवाले कुछ पुलिस वालों की जलती हुई टार्चें देखीं। वे उसका रास्ता रोकने के लिए सशस्त्र पुलिस के कार्यालय की ओर से आ रहे थे। उसने तुरन्त यह बात समझ ली थी कि वह 'लघु शांघाई' में छिपकर अपने को न बचा सकेगा क्योंकि वहां के स्थानीय कुत्ते गद्दारी करेंगे और भौंक भौंककर

उसे पुलिस के हाथों में सौंप देंगे। ये कुत्ते इस क्षेत्र में इसी लिए जिन्दा थे कि कोई भी जमन बच्चे घरो में न रहना चाहता था। जैसे ही यह विचार उसके दिमाग में आया कि वह दाहिनी ओर घूमकर वोस्मीदामिकी जिले में घुस गया और जो भी मकान पहले मिला उसी की दीवाल से सटकर खडा हो गया। कोई एक ही मिनट बाद उसका पीछा करनेवाला पुलिस का सिपाही उसके इतना पास आ गया कि उसकी सीटी ने जैसे ओलेग के कानो के परदे ही फाड दिये।

आलग कुछ देर तक खडा रहा और इस बात का ध्यान रखे रहा कि उसकी उपस्थिति का पता दूसरा का न चलने पाये। आखिर वह उसी सडक पर, जिससे होकर आया था, मकानो के पिछवाडे से घूमकर नगर के उस ऊचे भाग की ओर लौटा जिसकी ओर वह सबसे पहले रवाना हुआ था।

बेशक जब उसने क्लब की ड्याढी पर एक पुलिस वाले को देखा था उस समय वह बहुत उत्तेजित हो उठा था। और जब वह उससे बचने के लिए सडक पर भागने लगा था तो उसकी यह उत्तेजना एक प्रकार से प्रसन्नता में बदल गयी थी। परन्तु अब उसे खतरे का अनुभव होने लगा था। ओलेग ने बाजार के आस-पास, जमन सशस्त्र पुलिस के कार्यालय में और दूसरे लेवल-क्रॉसिग पर भी सीटियो की आवाजें सुनी और यह जान लिया कि उसकी लापरवाही ने न सिर्फ अपने आपको बल्कि सेर्गेई को, जो वाल्या के साथ था और स्त्योपा सफोनोव को भी जो तोस्या माश्चेंको के साथ था, बडी कठिन और खतरनाक स्थिति मे डाल दिया है।

ओलेग और वान्या ने जो परचे लिखे थे उन्हे बाटने का यह उनका पहला प्रयास था और जनता को 'तरुण गाड' दल के अस्तित्व की सूचना देने के लिए उठाया गया यह उनका पहला कदम था।

स्तखोविच ने ही यह प्रस्ताव रखा था कि एक ही रात में नगर

भर में इन पर्चों को चिपकाना पूरी तरह संभव था। इससे लोगों पर एक ही बार में बड़ा जबरदस्त असर पड़ सकता था। उसके साथियों को इस प्रस्ताव को रद्द करने के लिए बहुत जोर लगाना पड़ा था। ओलेग अब उसे ज्यादा अच्छी तरह जानता था। उसे उसके ध्येय की निष्ठा के प्रति कोई संदेह न रह गया था, किन्तु आखिर स्तखोविच यह क्यों नहीं समझता कि एक काम को करने के लिए जितने ही अधिक आदमी आयेंगे, विफलता का खतरा उतना ही बढ़ेगा। और बेशक यह बात क्रोध भड़कानेवाली भी थी कि हमेशा की भांति, सेर्गेई त्युलेनिन चरम कार्यवाहियां ही पसंद करता था। तुर्केनिच और वान्या जम्नुखोव, ओलेग के इस प्रस्ताव से सहमत हो गये थे कि परचे पहले एक जिले में, फिर कुछ दिनों बाद दूसरे में और उसके और भी बाद तीसरे जिले में चिपकाये जायें और इस प्रकार हर बार पुलिस को चकमा दिया जाये।

ओलेग का सुझाव था कि उनके लिए जोड़ों के रूप में काम करना बहुत जरूरी था। एक आदमी परचों की गड्डी पकड़े रहे और उन्हें अलग करता जाये और दूसरा उसपर लेई लगाये, एक परचा चिपकाये और दूसरा परचा और लेई का बरतन छिपाये रहे। फिर एक लड़का और एक लड़की साथ साथ जायें ताकि कर्फ्यू के बाद कोई पुलिस वाला उन्हें पकड़े तो वे यह बहाना रख सकें कि उनके इस बेवक्त घूमने का कारण और कुछ नहीं, आपसी मुहब्बत है।

परचे चिपकाने के लिए मैंदे की लेई इस्तेमाल करने के बजाय उन्होंने शहद से काम लेने का निश्चय किया। मैंदे की लेई कहीं न कहीं पकानी पड़ती जिससे पुलिस को कुछ न कुछ सुराग मिल सकता था, फिर मैंदे की लेई का निशान कपड़ों पर भी पड़ सकता था। इसके अलावा मैंदे की लेई के लिए ब्रश और बरतनों की जरूरत पड़ती जिनको उठाये फिरना बड़ा बेतुका लगता। शहद, काग लगी बोतल में ले जाया जा

सकता था और उसे बोतल में से थोडा थाडा उडेलकर परचे की पुश्त पर डाला और परचे को चिपकाया जा सकता था।

ओलेग ने दिन में, भीड भाड की जगहो पर—जैसे सिनेमाघर, बाजार या श्रम-केन्द्र में—परचे बाटने की एक और बहुत आसान योजना बना ली थी।

रात की अपनी पहली कारवाइयो के लिए उन्होने, खान १-बीस के आस-पास का जिला, उसके पडोस का वोस्मीदोमिकी जिला और बाजार-स्थल चुना था। सेर्गेई और वाल्या को बाजार में काम करना था, स्त्योपा और तोस्या को वोस्मीदोमिकी जिले में और ओलेग को खान १-बीस वाले जिले में।

बेशक ओलेग नीना के साथ जाना चाहता था, किन्तु फिर उसने तय किया कि वह अपनी सुन्दर मामी मरीना को ही अपने साथ रखेगा।

तय यह किया गया था कि तुर्केनिच घर पर रहेगा ताकि अपनी अनुभवहीनता के ख्याल से, हर जोडा, अपने इस प्रथम प्रयास में अपना अपना काम पूरा कर लेने के बाद, सारी सूचना कमाडर को दे दे।

पर लागो के चले जाने के बाद ओलेग ने फिर विचार किया—मुझे क्या अधिकार है कि मै एक तीन साल के बच्चे की मा को, उस बच्चे के पिता मामा कोल्या की सलाह लिये बिना, खतरे में डाल दू? बेशक उसने स्वय जो व्यवस्था की थी उसे उलट पुलट करना ठीक न था, किन्तु उस समय तक उसपर बाल-सुलभ उत्साह सवार हो चुका था और उसने अकेले ही काम करने का निश्चय कर लिया था।

शाम के समय, जब नगर में लोगो के आने-जाने पर कोई प्रतिबन्ध न था, ओलेग ने अपनी जैकेट की भीतरी जेब में कुछ परचे और पतलून की जेब में एक बोतल शहद रखा और घर से निकल गया। वह उस सडक पर चलता रहा जहा ओस्मूखिन और जेम्नुखोव रहते थे

और उस खड्ड तक पहुच गया जो ५ नबर की खान तक जानेवाली सडक के उस पार पडता था। यह वही खड्ड था जो दक्षिण की ओर बाम्मीदामिरा ज़िले को जमन सशस्त्र पुलिस के कार्यालय के मैदान स अलग करता था और दाना के बीच एक खुला मैदान पडता था। इस जगह खड्ड में कोइ रहता बसता न था। ओलेग दाहिनी ओर उसके किनार किनारे चलता रहा और 'लघु शाघाई' तक पहुचने से कुछ ही पूव, घूमकर खड्ड तक जानेवाले एक कछार स होकर गुज़रा और नगर के इस भाग में फली हुई पहाडियो की उस श्रेणी की ओर बढने लगा जिससे लगे लगे वारोशीलावग्राद मार्ग जाता था।

उसके बाद पहाडियो में लुकते छिपत वह उस जगह पहुचा जहा वोरोशीलावग्राद माग उस सडक से मिलता था जो नगर के केन्द्र से 'पर्वोमाइका' तक जाती थी। यहा वह लेट रहा और अधेरा होन की प्रतीक्षा करने लगा। यही से उसे ऊची ऊची और धूप से झुलसी हुई घास मे से सडको के चौराहो, बडी सडक के उस पार 'पेर्वोमाइका' की बाहरी सरहद विनष्ट खान १-बीस के सिरे पर मिट्टी का बडा-सा ढेर जिस सडक पर ल्यूबा शेव्त्सोवा रहती थी उसपर काफी दूर पर बना गोर्की क्लब वोरोशीलोव जिला, खुला मैदान, वोरोशीलोव स्कूल और जमन सशस्त्र पुलिस का कार्यालय दिखाई पड रहे थे।

पुलिस की गश्ती चौकी जिसका ओलेग को सबसे अधिक डर था, चौराहे पर थी और वहा दो सिपाही तैनात रहते थे। उनमें से एक हमेशा चौराहे पर रहता और यदि वह वक्त काटन के लिए थाड समय के लिए चहलकदमी भी करता तो बडी सडक पर ही टहल लेता। दूसरा, चौराहे से अपनी गश्त शुरू करता और खान १-बीस मे होकर गोर्की क्लब की ओर और जिस सडक पर ल्यूबा शेव्त्सोवा रहती थी, उसपर होता हुआ, 'लघु शाघाई' तक पहरा देता था।

उक्त गश्ती चौकी की सबसे पास की दूसरी वैसी ही चौकी बाजार क्षेत्र में थी। वहा भी दो पुलिस वाले तैनात रहते थे। एक हर समय बाजार में बना रहता और दूसरा बाजार से अपनी गश्त शुरू कर उस स्थान तक आया करता जहा 'लघु शाखाई', 'शाखाई' से मिल गया था।

रात उतर आयी थी। वह काली और इतनी नीरव थी कि हल्की-सी सरसराहट तक आसानी से सुनाई दे जाती। अब ओलेग, सिवा सुनाई पडनेवाली बातो के और किसी का भी भरोसा करने को तैयार न था।

उसका काम ग्रार १-बीस के प्रवेश माग पर और गार्की क्लब की इमारत मे कुछ परचे चिपकाना था। (उन्होने उन मकानो पर, जिनमें लोग रहते थे, परचे न लगाने का निश्चय किया था क्योकि इससे उनमें रहनेवालो पर विपत्ति आ सकती थी।) ओलेग चुपके स, पहाडियो से होता हुआ सबसे पहले पडनेवाले प्रीफैब्रिकेटेड मकान तक आया। यह मकान उस माग के सिरे पर पडता था, जहा ल्यूबा शेव्त्सोवा रहती थी। खुले मैदान के उस पार, और ओलेग के ठीक सामने ग्रान १-बीस का प्रवेशमाग था।

उसने गश्त लगानेवाले सिपाही और ड्यूटी पर तनात दूसरे सिपाही को परस्पर बात करते सुना। एक क्षण के लिए उसे उनके चेहरे भी दिखाई दे गये जब कि वे एक सिगरेट लाइटर की लौ पर झुके हुए थे। उसे मजबूरन सिपाहियो के गुजर जाने तक प्रतीक्षा करनी थी अन्यथा वह खुले मैदान में ही धर लिया जाता। किन्तु दानो पुलिस वाले धीरे धीरे बहुत देर तक बाते करते रहे।

आखिर गश्त लगानेवाला सिपाही चल पडा। उसकी टार्च समय समय पर जल उठती और सडक पर रोशनी फेकने लगती। ओलेग मकान के पीछे खडा खडा उसके पैरो की आहट सुनता रहा। किन्तु जैसे ही आहट काफी दूरी पर पहुची कि वह निकलकर सडक पर आ गया। भारी कदमो

की आवाज अब भी हल्की हल्की सुनाई पड़ रही थी। गश्त लगानेवाला सिपाही प्राय सड़क पर टार्च की रोशनी फेंकता था। ओलेग ने उसे खानों समय से गुजर जाते हुए देखा। आखिर वह आंखों से ओझल हो गया क्योंकि पेत्स्काव के घर से उस पार सड़क घूमती हुई गड्ढे तक चली जाती थी। काफी दूरी पर दिखाई पड़नेवाली प्रकाश की कौंध से पता चलता था कि सिपाही समय समय पर रोशनी जलाकर रास्ता साफ देखता था।

सेना के पलायन के समय बड़ी बड़ी खानें उड़ा दी गयी थीं। यहां दुर्गति खान १-बीस की भी हुई थी। अब वहां किसी चीज का निर्माण या उत्पादन नहीं हो रहा था। हां, लेफ्टिनेंट दबैंद के आदेशानुसार वहां एक प्रशासन-कार्यालय काम करने लगा था, जिसके कर्मचारी जर्मन खान दस्ते के सदस्य थे। प्रति दिन सुबह ऐसे बहुत-से लोग उसके 'जीर्णोद्धार' के लिए आया करते थे जो नगर से या तो भाग न सके थे, या भागने में असमर्थ रहे थे। औपचारिक कागजात में 'जीर्णोद्धार' शब्द अहाते से कूड़ा-कबाड़ साफ करने की क्रिया के लिए प्रयुक्त होता था। वस्तुतः दर्जनों लोग लकड़ी की एक बड़ी-सी ठेलागाड़ी को ढकेलते हुए ले जाते और एक स्थान का कूड़ा एकत्र करके दूसरे स्थान पर डाल देते।

उस दिन रात को सर्वत्र सन्नाटा था और खान की हर चीज अंधेरे की गोद में छिप गयी थी।

ओलेग ने एक परचा खान के अहाते की पत्थर की दीवाल पर चिपकाया, दूसरा द्वार पर बनी कोठरी पर और तीसरा परचा बोर्ड पर—सभी तरह की घोषणाओं और आदेशों के ऊपर। उसे वहां ज्यादा समय न लगा था। उसे यह खतरा न था कि बूढ़ा चौकीदार उसे पकड़ लेगा—चौकीदार रात में खर्राटे की नींद सोता था। उसे तो यह डर था कि कहीं लौटता हुआ गश्त लगानेवाला सिपाही खान की तरफ से सड़क पर न गुजरे और टार्च की रोशनी कोठरी की ओर न फेंके। अभी

तक उसके पैरो की आहट नही सुनाई पडी थी और उसकी टार्च की रोशनी का भी कोई चिह्न न दीख रहा था। सभवत वह 'लघु शाघाई' में कही अटक गया था।

ओलेग खुले मैदान को पार कर क्लब तक पहुच चुका था। क्लब की इमारत लम्बी चौडी तो थी, पर साथ ही नगर भर में सबसे ठडी और सबसे कम आरामदेह भी। वह रहने-बसने के उपयुक्त न थी, इसी लिये खाली पडी रहती थी। वह उस सडक के सामने पडती थी जिसपर लोग सारा वक्त वोस्मीदोमिकी जिले, 'पेर्वोमाइका' जिले तथा पास-पडोस के फार्मों से बाजार तक आते जाते रहते थे। वोरोशीलोवग्राद और कामेंस्क की ओर जानेवाली मोटरे, लारिया इत्यादि भी इसी सडक से जाया करती थी।

ओलेग ने इमारत के सामने वाले भाग पर परचा चिपकाना शुरू ही किया था कि उसे खड्ड से सडक पर आते हुए पुलिस वाले के पैरो की आहट सुनाई दी। वह घूमकर इमारत की आड में हो गया और पिछली दीवाल के सहारे छिप गया। पुलिस वाले के कदमो की आहट बराबर तेज़ होती गयी, फिर इमारत तक पहुची और सहसा बद हो गयी। ओलेग मूर्तिवत खडा रहा—एक मिनट गुज़रा, फिर दूसरा, और पाचवा, किन्तु पैरो की आहट न सुनाई पडी।

हा, अगर पुलिस वाले ने अपनी टार्च की रोशनी इमारत के सामने वाले भाग पर फेंकी हो और उसकी निगाह परचो पर पड गयी हो और वह खडा खडा अभी तक उन्हें पढ रहा हो, तो? फिर वह उन्हें फाडने की कोशिश करेगा और निश्चय ही उसे यह पता चल जायेगा कि वे अभी अभी चिपकाये गये हैं, फिर वह टार्च जलाकर उस इमारत का चक्कर लगायेगा, इस ख्याल से कि परचे चिपकानेवाला, सिवा इसी इमारत के पीछे के, अन्य कहीं नहीं छिप सकता।

अलेग सास रोके सुनता रहा, पर उसे सिवा अपने हृदय की धड़कन के और कुछ न सुनाई दिया। उसका मन हुआ कि दीवार छोड़कर भागना शुरू कर दे किन्तु तभी उसे लगा कि इससे तो और भी मुसीबत खड़ी होगी। नही पता यह लगाना चाहिए कि वह पुलिस वाला कर क्या रहा है।

अलेग जहा खडा था वही से उसने अपनी गदन निकाली। उसे ऐसी कोई आवाज न सुनाई दी जिससे उसका सन्देह बढता। फिर दीवाल से सटे सट वह हर कदम पर पैर काफी ऊचा उठाकर फिर बडी सतर्कता के साथ रखता हुआ धीरे धीरे सडक की ओर बढता रहा। वह कई बार कुछ सुनने के लिए रुका किन्तु वहा तो सर्वत्र शान्ति थी। वह इमारत के दूसरे कोने तक पहुच गया था। फिर उसने एक हाथ दीवाल पर रखा और दूसरे से दीवाल का कोना पकडकर गदन घुमाकर सामने देखने लगा। सहसा वर्षा से कमजोर पडा हुआ पलस्तर उसके हाथ के नीचे से टूटा और जमीन पर गिर पडा। अलेग को उसके गिरने की आवाज जैसे एक जबरदस्त धमाके की तरह लगी। हा, उसने ड्योढी की सीढियों पर जलती हुई सिगरेट की चमक जरूर देख ली थी और यह समझ लिया था कि पुलिस वाला बैठकर कुछ आराम कर रहा है और सिगरेट के कश लगा रहा है। जलती हुई सिगरेट का सिरा तुरन्त ऊपर को उठा ड्योढी की सीढियो पर से कुछ आवाज हुई और अलेग इमारत के कोने से हटकर सडक पर, खड्ड की ओर भागने लगा। तभी सीटी की सनसनाती हुई आवाज हवा में गूज गयी। फिर तेज सीटी बजने लगी और पल ही भर में उसपर टार्च की रोशनी पडने लगी। पर तभी वह उछला और प्रकाश के दायरे से बाहर हो गया।

सच बात तो यह है कि इस विकट स्थिति में उसने कोई काम उतावली में नहीं किया। उसने वोरोशीलोग्राद जिले में ही पुलिस वाले का एक ही मिनट में चक्कर में डाल दिया होता और खुद ल्यूबा या इवान्सोवा

के घर छिप गया होता, किन्तु उसने ऐसा नही किया। उसे उन्हे खतरे में डालने का कोई अधिकार न था। वह बाहुत यह भी भ्रम पैदा कर सकता था कि बाजार की तरफ भाग रहा है और सचमुच 'शाघाई' में घुस जाता जहा खुद शैतान भी उसका सुराग न लगा पाता। किन्तु इससे सेर्गेई और वाल्या खतरे में पड सकते थे। फलत ओलेग 'लघु शाघाई' की ओर भागा किन्तु चूकि परिस्थितिया ने उसे वोस्मीदोमिकी जिले में प्रवेश करने को मजबूर कर दिया था, फिर भी वह उस जिले के अन्दर बहुत दूर तक नही गया कि कही स्त्योपा सफोनोव और तोल्या पर काई आच न आ जाये। फिर वह पहाडियो की ओर लौटा, और चौराहे पर आ गया जहा उसने ड्यूटी पर तैनात सिपाही द्वारा पकडे जाने का खतरा भी उठाया।

उसे अपने मित्रा की चिन्ता थी और वह यह सोच सोचकर आतकित हो रहा था कि कही सारी कारवाई विफल न हो जाय। फिर भी जब उसने 'लघु शाघाई' में कुत्तो की भा भो सुनी ता जैसे उसे बाल-सुलभ शैतानी सूझने लगी। वह बराबर यह कल्पना करता रहा कि गश्त लगानेवाला सिपाही उसका पीछा कर रहा है, वह जमन सशस्त्र पुलिस के कार्यालय से भागकर आते हुए सिपाहियो से मिल रहा है, और वे अजनवी के निकल भागने के सबध में बहस कर रहे है और टार्चो की रोशनी से पास-पडास के सभी क्षेत्रा की छानमारी हो रही है।

बाजार में सीटी की आवाज बन्द हो चुकी थी। ओलेग एक बार फिर पहाडी के शिखर पर पहुच गया था और वहा से टार्चों की रोशनी देखकर ही बता सकता था कि जिन पुलिस वालो ने उसे रोकने की कोशिश की थी वे अब खुले मैदान का पार करते हुए सशस्त्र पुलिस के कार्यालय की ओर जा रहे थे और गश्त लगानेवाला सिपाही जो उसका पीछा करता रहा था, सडक के दूरस्थ सिरे पर खडा हुआ वहा के एक मकान पर रोशनी फेंक रहा था।

तो क्या पुलिस वाले ने क्लब की इमारत पर चिपके परचों को देख लिया था? नहीं, नहीं देखा था। अगर देखा होता तो सिगरेट पीने के लिए सीढ़ियों पर न बैठता। अब वे बेकार उसकी तलाश में बोल्मीदोमिर्स्क जिले का कोना कोना छान मारें! ढूंढें, कैसे ढूंढते हैं ओलेग को!

इस समय उसे कुछ मानसिक शान्ति मिल रही थी।'

अभी भोर भी न हुई थी कि ओलेग ने तीन बार तुर्केनिच की खिड़की खटखटायी। यह संकेत पहले से ही निश्चित कर लिया गया था। धीरे-से दरवाजा खोल दिया गया। तुर्केनिच और वह पहले रसोईघर से और तब एक ऐसे कमरे से होकर गुजरे, जहां कुछ लोग सो रहे थे। आखिर वे वान्या के कमरे में पहुंचा। इस कमरे में केवल वान्या ही रहता था। अलमारी के ऊपर, ऊंचाई पर, एक दिया टिमटिमा रहा था और यह बात स्पष्ट थी कि वान्या अभी तक सोया नहीं था। जब उसने ओलेग को देखा तो कोई खुशी नहीं प्रगट की। उसका चेहरा कठोर और पीला पड़ रहा था।

"क-कोई पकड़ा तो नहीं गया?" ओलेग ने पूछा। उसकी जबान बुरी तरह लड़खड़ा रही थी और चेहरा पीला पड़ रहा था।

'नहीं, सब ठीक है,' उससे दृष्टि बचाते हुए तुर्केनिच ने उत्तर दिया। "बैठ जाओ!' उसने एक स्टूल की ओर इशारा किया और खुद पलंग पर बैठ गया—लग रहा था कि रात भर उसने कमरे में टहलकर या बिस्तर पर बैठकर ही बितायी थी।

'तो? हमें सफलता मिली?" ओलेग ने पूछा।

'हां' तुर्केनिच बोला। उसकी आंखें अभी भी ओलेग पर न लगी थीं, "वे सब यहीं थे—सेर्गेई और वाल्या, स्त्योपा और तोल्या तो तुम अकेले ही गये थे?" तुर्केनिच ने आंखें ओलेग की ओर उठायीं और नीची कर लीं।

"तुम्ह कैसे मालूम हुआ ?" ओलेग ने पूछा। उसके चेहर पर अपराधी स्कूली बालक जैसा भाव झलक उठा था।

"हम सब को तुम्हारी चिन्ता हो रही थी," वान्या ने, जैसे बात टालने के ढग से उत्तर दिया, "आखिर मुझमे न रहा गया और निकोलाई निकोलायेविच के यहा जाकर देखा तो मरीना घर ही पर थी सभी छोकरे तुम्हारी प्रतीक्षा करना चाहते थे लेकिन मैंने उन्हें समझा-बुझाकर यहा से हटा दिया। मने उनसे कहा कि अगर तुम कही पकड लिये गये और यहा हमारे यहा छापा मारा गया, और हम सब आधी रात के समय एक ही जगह इक्ट्ठे मिले तो बात ही बिगड जायेगी। और तुम खुद जानते हो कि कन उन्हे कितना काम करना है—बाजार है, श्रम केन्द्र है "

ओलेग ने, जैसे अपने का अपराधी समझते हुए, सक्षेप में इस बात की चर्चा की कि वह खान से किस प्रकार जल्दी जल्दी क्लब की इमारत तक गया और वहा क्या घटना घटी। उस घटना की परिस्थितियो का उल्लेख करते समय वह काफी उत्तेजित भी हो उठा था।

"और आखिर जब सब कुछ ठीक हो गया, तो मुझे शरारत सूझी। मैंने फिर वोरोशीलोव स्कूल में दो परचे और चिपका दिये " उसने तुर्केनिच की ओर देखा और दात निकाल दिये।

तुर्केनिच चुपचाप उसकी बात सुनता रहा। तब उठा, जेबो मे दोनो हाथ डाले और कुछ क्षणो तक स्टूल पर बठे ओलेग को दखता रहा।

"अब मैं भी तुमसे कुछ कहूगा, बस इस बात पर क्रोध न करना," तुर्केनिच की आवाज़ शान्त बनी रही, "इस तरह का काम करने का यह तुम्हारा पहला मौका है—और यही आखिरी भी होगा। समझे ?"

"न-नही, मै नही मानता," आलेग गाया, "मुझे इस काम में सफलता मिली है। ऐसे काम आसान नहीं होते। यह सिर्फ बहादुरी भर नहीं है। यह एक लडाई है, जिसमें एक प्रतिद्वन्द्वी भी होता है।"

'यह प्रतिद्वन्द्वी की बात नहीं," तुर्केनिच ने कहा, "बात यह है कि यह मौका बच्चा जैसी शरारत करने का नहीं है। हमें या तुम्हें इस तरह की हरकत किसी दशा में नहीं करनी चाहिए। हा, अगरचे मैं तुमसे बडा हू फिर भी मै अपने को तुम्हारी ही कोटि में रखता हूं। तुम जानते हो, मै तुम्हारी इज्जत करता हू इसी लिए मै तुमसे इस तरह की बातचीत कर रहा हू। तुम अच्छे छोकरे हो और मजबूत भी, और शायद तुम मुझसे ज्यादा जानते-बूझते हो पर तुम बच्चे जैसा व्यवहार करते हो वे लोग तुम्हारी मदद के लिए जाने को तैयार थे। मैंने समझा-बुझाकर उन्हे रोका, लेकिन जान मेरी भी सूख रही थी," सूखी सी हसी हसते हुए तुर्केनिच ने कहा, "शायद तुम यह सोचते हो कि सिर्फ तुम्हारे लिए हम पाच आदमियो की जान सूली पर अटकी थी। नही, नही, हमें चिन्ता हो रही थी कि हमारा सारा किया धरा मिट्टी में न मिल जाये। मेरे दोस्त, अब वक्त आ गया है जब हम यह समझ ले कि तुम तुम नही हो और म मै नही। मैंने तुम्हे जाने दिया इसके लिए म रात भर हाथ मलता रहा। क्या हम सचमुच छोटी छोटी बातो के लिए, और अकारण, अपनी जान खतरे मे डाल सकते ह? नही मेरे दोस्त, नही, ऐसा करने का हमें कोई अधिकार नही। और भाई तुम मुझे क्षमा करना—म अपना निश्चय हेडक्वाटर म स्वीकृत कराऊगा। सक्षेप में निश्चय यह किया जायेगा कि मुझ और तुम्हे कारवाइयो में भाग लेने की मनाही की जाये, जब तक कि इसके प्रतिकूल कोई खास निर्देश न हो।"

श्रोलेग दिन निकलते ही अपने घर पहुच गया। पर, उस समय ल्यूबा, जो उससे खुद मिलने आना चाहती थी, अपने जर्मनो को विदा कर रही थी। वह रात भर नही सोयी थी, फिर भी जब लारी में नशे में धुत्त जर्मनो को बैठे देखा और लारी सडक पर दायें-बायें पतरे बदलती हुई जाने लगी, क्योकि ड्राइवर भी नशे में धुत्त हो रहा था, तो वह अपनी हंसी न रोक सकी।

ल्यूबा की मा उसपर बरस पडी किन्तु जब उसने उसे स्पिरिट के चार बडे बडे टीन दिखाये तो सीधी-सादी मा ने समझ लिया कि उसकी बेटी ने किसी उद्देश्य से ही यह सारा काम किया है। उसने यह स्पिरिट रात ही में लारी से निकाल लिया था।

अध्याय ४

"साथी देशवासियो! क्रास्नोदोन के निवासियो! खान मजदूरो! सामूहिक किसानो!

"जर्मन झूठे है। मास्को हमारा था, हमारा है और हमारा रहेगा। हिटलर झूठ बोलता है कि लडाई खतम हो रही है। लडाई तो अब भडक रही है। लाल सेना दोनबास में लौटेगी।

'हिटलर हमें जर्मनी खदेड रहा है ताकि उसके कारखानो में काम कर करके हम अपने पिता, पति, बेटो और बेटियो के हत्यारे बनें।

'अगर तुम यहाँ, अपने वतन में, अपने घर में, अपने पति, बेटे या भाई को गले लगाना चाहते हो तो जर्मनी मत जाना।

"जर्मन हमपर जुल्म करते हैं, हमारे अच्छे से अच्छे लोगो को मौत के घाट उतारते हैं ताकि हम डरकर घुटने टेक दें।

"इन दुष्ट हमलावरो का सफाया करो। गुलामी की जिन्दगी से लड़कर मरना भला!

"हमारी मातृभूमि पर सकट के बादल छाये हुए हैं। परन्तु उसमें अब भी दुश्मन को खदडने की ताक्त मौजूद है। 'तरुण गाड,' अपने परचो में आपको सच्चाई से अवगत करायेगा, भले ही वह सच्चाई उस के लिए कितनी ही कटु क्यो न हो। सत्य की विजय होगी!

"हमारे परचे पढिये, उन्हे छिपाकर रखिये, उनमें लिखी बात घर घर और गाव गाव पहुचाइये।

"जर्मन हमलावरो का नाश हो!

'तरुण गाड'।"

यह छोटा-सा परचा, स्कूली कापी के पन्ने पर लिखा गया परचा आखिर आया कहा से? और वह भी भीड भाड से भरे हुए बाजार के चौक के एक सिरे पर, उस नोटिस बोर्ड पर चिपका था जिसके दोनो ओर पहले कभी जिला समाचारपत्र, 'सोत्सिआलिस्तीचेस्काया रोदिना', चिपकाया जाता था, किन्तु जहा अब जर्मनो के पीले और काले पोस्टर लटक रहे थे।

रविवार का दिन था। दिन निकलते ही गावो और कज्जाक गावो से ढेर लोग बाजार में आने लगे थे। कुछ लोग बटुये लिये थे, कुछ के पास घर के बने सफरी थैले थे, कभी किसी औरत के पास किसी कपडे में लिपटी हुई कोई मुर्गी दीख रही थी तो कुछ, जिनकी तरकारियो की फस्ल अच्छी हुई थी अथवा जिनके पास पिछले साल की फस्ल का आटा बच रहा था, अपना अपना सामान ठेलागाडी पर लादे गाडी खीचते चले आ रहे थे। घोडो की तो बात ही क्या, खुद बैल तक कही नजर नही आते थे। जर्मनो ने घोडे और बैल सभी हर लिये थे।

और वे ठेलागाडिया — उन्हे तो हमारे लोग वर्षों याद रखेंगे। वे एक पहिये वाली वैसी गाडिया न थी जिन्हे मिट्टी लादने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। ये गाडिया दो पहियो की होती था जिनपर सभी तरह का सामान लादा जाता था। वे दोनो हाथो से ढकेल ढकेलकर खीची और चलायी जाती थी। खीचने के लिए दोनो बमो के बीच एक डडा लगा रहता था। जाडे गर्मी, बरसात अथवा धूल, कीचड या पाले मे, हर समय हजारो लोग एक छोर से दूसरे छोर तक दानवान पार करते समय उन्ही को काम में लाते थे। कभी कभी वे उनपर सामान ढोते किन्तु अधिकतर तो वह आश्रय की खोज में अथवा अपनी कब्र की ओर ही जाते समय काम में लाया करते थे।

प्रात काल से ही पास-पडोस के गावो से लोग अपनी अपनी साग सब्जी, अनाज, मुर्गिया फल और शहद बाजार में लाने लगे थे। और नगर के लोग भी सुबह से ही आ गये थे — किसी के हाथ में शाल होता था, तो किसी के हाथ में हैट, अथवा घाघरा, अथवा जूतो का जोडा, कीले, कुल्हाडी, नमक कपडे का कोई टुकडा, या फीता लगी हुई कोई पुराने फैशन की पोशाक या बाप-दादा की कोई पुरानी चीज।

ऐसे जमाने में मुनाफा कमाने की गरज से जानेवाला या तो महामूर्ख ही हो सकता था या जुआरी या बदमाश। वहा तो मुसीबते और जरूरतें ही लोगो को खीचकर लाती थी। उजडती भूमि पर जमन सिक्का ही चल रहा था लेकिन यह कौन जानता था कि वे असली सिक्के है और उनका मूल्य बना ही रहेगा, और सच बात तो यह थी कि ये सिक्के भी कितनो के पास थे। नही, हमारे बाप-दादा का खरीद फरोख्त का ढग इससे अच्छा था। सकट के समय इसी तरीके ने लोगो की सहायता की थी — मै तुम्हे यह दे दू तो बदले में तुम मुझे वह दे दो तो,

सुबह से ही बाजार में हजारों की भीड़ जमा हो गयी थी जो हजारों बार एक दूसरे के पास से होकर गुजरते, और फिर गुजरते।

और बाजार के द्वार पर पिछले कई वर्षों से लगे हुए नोटिस बोर्ड पर सभी की निगाह लगी थी। उसपर जर्मन पोस्टर ठीक से वैसे ही चिपके थे जैसे कि पिछले कई हफ्तों से चिपके थे। एक पोस्टर में पर्चे के आकार में कई फोटो एक साथ लगे थे—मास्को में जर्मन सेनाओं की परेड पीटर और पाल के किले के पास नेवा में तैरते हुए जर्मन अफसर, स्तालिनग्राद में वोल्गा के किनारे किनारे हमारी लड़कियों के हाथों में हाथ डाले जर्मन अफसर। और ठीक इसी पोस्टर के ऊपर लोगों ने एक सफेद रंग का परचा देखा जो स्याही से साफ साफ लिखा था। स्याही भी ऐसी थी जिसे मिटाया नहीं जा सकता था।

पहले-पहल उसमें सिर्फ एक ही व्यक्ति ने उत्सुकता प्रदर्शित की, फिर उसे दो साथी और मिल गये, और फिर उसके इर्द-गिर्द एक छोटा सा समूह जमा हो गया, जिसमें अधिकांश स्त्रियां, बूढ़े लोग और तरुण व्यक्ति थे। वे गर्दनें आगे निकाले परचा पढ़ रहे थे। लोगों की भीड़ सफेद कागज पर हाथ से लिखा हुआ परचा पढ़ रही थी। ऐसे में उनकी ओर ध्यान न देकर कौन निकल सकता था, और वह भी बाजार के दिन।

अब बोर्ड के इर्द गिर्द काफी बड़ी भीड़ लग गयी। सबसे आगे के लोग चुपचाप खड़े थे और बढ़ने का नाम न लेते थे, क्योंकि कोई अदम्य शक्ति उन्हें वह परचा बार बार पढ़ने को बाध्य कर रही थी। और जो लोग पीछे थे वे पास पहुंचने के लिए एक दूसरे को धकियाने का प्रयत्न कर रहे थे। वे शोर मचाने लगे थे और क्रोध में आकर लोगों से यह बताने की मांग कर रहे थे कि परचे पर लिखा क्या है। किन्तु कोई जवाब न देता था, और कोई पास भी नहीं पहुंच पाता था, फिर भी

उत्तरोत्तर बढता हुआ यह जनसमूह जानता था कि स्कूली कापी के एक पन्ने पर लिखा हुआ यह परचा उन्हें कौन-सा सन्देश दे रहा है-"यह गलत है कि जर्मन सेनाएं लाल मैदान में परेड कर रही हैं। यह गलत है कि पीटर और पाल के किले के पास जर्मन अफसर स्नान करते हैं। यह गलत है कि वे हमारी लडकियों के साथ स्तालिनग्राद की सडकों पर मटरगश्त करते हैं। यह गलत है कि लाल सेना का अस्तित्व नहीं रहा, कि सभी अगले मोर्चों पर-अंग्रेजों के भाड़े के सैनिक, मंगोल लड रहे हैं। यह सब सफेद झूठ है। सच यह है कि हमारे कुछ लोग अब भी शहर में हैं, वे सच्ची बात जानते हैं और निर्भीक रहकर जनता को वहां सारी बातें बताते हैं जो सच है।"

बाजू पर पुलिस वालों की पट्टी लगाये और चारखाने का पतलून पहने एक बेहद लंबा आदमी भी भीड में शामिल हो गया। उसके पैरों में गाय के चमडे के ऊंचे ऊंचे बूट थे जिनमें उसने अपना पतलून खोंस रखा था और शरीर पर चारखाने की एक जैकेट थी, जिसके नीचे एक मोटे पीले डोरे से पिस्तौल सहित एक भारी-सा चमडे का खोल लटक रहा था। उसके छोटे-से सिर पर एक चाबदार पुरानी टोपी थी। लोगों ने अपने अपने कंधों के पीछे देखा और उसे पहचान लिया। यह व्यक्ति इग्नात फोमीन था। उन्होंने उसके लिए रास्ता कर दिया और एक क्षण के लिए उनके चेहरे पर भय अथवा चाटुकारिता का भाव झलक गया।

सर्गेई त्युलेनिन ने अपनी टोपी इतनी नीची की कि वह आंखों पर आ गयी और लोगों के पीछे होता हुआ, ताकि फोमीन उसे पहचान न ले भीड में वास्या पिरोज्होक को खोजने लगा और जब उसकी निगाह वास्या पर पडी तो उसने आंखों से फोमीन की ओर इशारा किया। पिरोज्होक अपना काम अच्छी तरह जानता था। वह फोमीन के पीछे पीछे खुद भी नाटिंग बाड की ओर बढ रहा था।

यद्यपि पिरोज्होक और कोवल्योव जमन पुलिस दल से निकाल दिये गये थे फिर भी सभी पुलिस वाला के साथ उनकी अच्छी दोस्ती थी। जहा तक पुलिस वालो का अपना सवाल था उन्हाने स्वय पिराज्होक और कोवल्याव की हरकत को गभीर नही समझा था। फामीन ने अपने इद-गिद एक निगाह डाली, पिरोज्होक को पहचाना, लेकिन उसके साथ बात नही की। दानो नोटिस की ओर बढने लगे। फोमीन ने परचा नाखन से खरोच कर उतारने की कोशिश की पर वह ता जमन पोस्टर के साथ इतनी बुरी तरह चिपका था कि निकलने का नाम ही न ले रहा था। उसने पोस्टर में एक सूराख किया और जमन पास्टर के एक टुकडे के साथ परचे का निकालने में कामयाब हा गया और उसे मोड माडकर अपनी जैकेट की जेब में रख लिया।

"यहा क्या भीड लगाये हो तुम सब? क्या घूर रहे हो? भाग जाओ!" वह भुनभुनाया और हिजडो जैसा अपना पीला चेहरा भीड की ओर घुमा दिया। उसकी छोटी, मैली आखें झुरियो में से झाकती सी लग रही थी।

और स्वय पिरोज्होक भी फोमीन की बगल में घूमकर, काले साप की तरह चिल्ला उठा। उसकी आवाज़ बच्चा जैसी, पर ऊची थी। "सुन रहे हो? देवियो और सज्जनो, अजी चलते फिरते नजर आओ! तभी ठीक रहेगा।"

फोमीन ने अपने लम्बे लम्बे हाथ फलाये और भीड के बीचोबीच खभे की तरह जम गया। पिरोज्होक तुरन्त उसकी बगल मे आ गया। भीड छट गयी और सभी दिशाओ में भागने लगी। पिरोज्होक भी आगे आगे भागा।

फामीन, उदास मन, चमडे के भारी भारी बूट पहने बाजार में घूमता रहा। लोगो ने अपनी अपनी सौदेबाज़ी बन्द की और भय,

आश्चर्य तथा विनोद से उसकी पीठ की ओर घूरते रहे। फोमीन की पीठ पर, चारखानेदार जैकट के ऊपर, मोटे मोटे अक्षरों में छपा एक नोटिस चिपकी थी—'तुम माग के एक टुकडे के लिए, एक घूट वाद्का के लिए, सस्ते तम्बाकू के एक पैकेट के लिए हमारे लोगों को जनता के हाथ बेच रहे हो। लेकिन तुम्हे इसकी कीमत चुकानी पडेगी अपनी क्षुद्र दुष्ट जिन्दगी से! होशियार हो जाओ!"

किसी ने भी उसे नही रोका और वह बाजार पार करता हुआ थाने की ओर चलता रहा। गंभीर चेतावनी बराबर उसकी पीठ से चिपकी रही।

सेर्गेई का हल्का घुघराला और पिरोज्होव का काला सिर एक बार ऊपर उठे और फिर दाना बाजार की भीड में इधर उधर गायब होकर, अपने अपने रहस्यपूर्ण मार्गों पर घूमनेवाले पुच्छल तारों की भांति, वहीं घूमने लगे। वे अकेले नही थे—कभी कभी लोगों की चलती फिरती भीड में से तोन्या माश्चेंको का भी साफ सुन्दर चेहरा दिखाई लगता। वह एक शात लडकी थी। साफ-सुथरी पोशाक, चतुर आखें। और यदि वहा तोस्या माश्चेंको होती तो वहीं पास ही कहीं सुनहरे बालोंवाला उसका साथी स्त्योपा सफोनोव भी मडराता होता। फिर वहां कहीं सेर्गेई की चमकती हुई और पैनी आखें भीड में वोल्या लुक्यानेंको की गहरी, स्निग्ध आखो से चार होती और तुरन्त हट जाती। सुनहरी चोटियोंवाली वाल्या बोर्त्स भी दूकानों और सामान से लदी मेजों का देर से चक्कर लगा रही थी। उसके हाथ में एक टोकरी थी जिसपर मोटा-सा तौलिया रखा था किन्तु किसी ने भी यह नहीं देखा कि वह क्या बेचती थी या क्या खरीदती थी।

लोगों को अपने अपने थैलों या खाली बोरों में, किसी बेंच पर, अथवा पातगोभी या पीले या हरी धारी वाले तरबूजों के नीचे पडे कोई

न कोई परचे मिल जाते। कभी कभी वह परचा न होकर कागज़ की एक पतली-सी पट्टी होती जिसपर लिखा होता—

"हिटलर के २०० ग्राम मुर्दाबाद! सोवियत किलोग्राम ज़िन्दाबाद!" और लोगो के दिल और भी तेज़ी से धड़कने लगते।

सेर्गेई ने कई बार दूकानो के चक्कर लगाये और पुराने कपड़े बेचनेवालो की उस भीड़ में भी गया जहा चीज़ो की हाथो हाथ अदला-बदली हो रही थी। सहसा नगर अस्पताल की डाक्टर, नताल्या अलेक्सेयेव्ना से उसकी आखें चार हो गयी। वह स्वय गन्दे स्लीपर पहने, तथा अपने बच्चो जैसे गुदगुदे हाथो मे औरतो के जूतो का एक पुराना जोड़ा लिये बेचनेवालियो की कतार में खड़ी थी। सेर्गेई को पहचानते ही वह घबरा सी गयी।

"नमस्ते!" वह बोला और जैसे परेशानी की मुद्रा में अपनी टोपी उतार ली।

एक क्षण के लिए नताल्या अलेक्सेयेव्ना की आखो में वह प्रत्यक्ष, निमम और व्यावहारिक भाव दिखाई पड़ने लगा जिससे वह बहुत अच्छी तरह परिचित था। फिर अपने गुदगुदे हाथ हिलाते हुए उसने झटपट कागज़ में जूते लपेटे और बोली—

"बहुत खूब! मुझे इस वक्त तुम्हारी ही जरूरत है।"

सेर्गेई और वाल्या का साथ साथ बाज़ार से निकलकर श्रम-केन्द्र में जाना चाहिये था। वहा से युवक-युवतियो के उस पहले जत्थे को, जो जर्मनी भेजा जा रहा था, पैदल वेर्ख्नेदुवान्नाया स्टेशन तक जाना था। सहसा वाल्या ने सेर्गेई को एक गोलमटोल और नाटे कद की लड़की के साथ, बाज़ार की भीड़ से निकलते देखा। वे ली-फान ची के झोपड़ा की ओर बढ़कर उनके पीछे गायब हो गये। दूर से वह ऐसी लग रही थी मानो किसी लड़की न बड़ी उम्र की स्त्रियां जैसे बाल बना रखे हो।

वाल्या एक गर्वीली युवती थी, अत उसने उनके पीछे लगता ठीक न समझा। उसका गदराया ऊपरी आठ कुछ कुछ हिला और उसकी आखो में रक्षता का भाव झलक उठा। उसकी टोकरी में आलुओ व नीचे कुछ परचे रखे थे। ये उस जगह के लिए थे, जहा उसे अभी जाना था। अतएव वह टोकरी लेकर बडे गव के साथ श्रम-केन्द्र की ओर चल दी।

पहाडी पर, श्रम केन्द्र की सफेद इकमजिली इमारत के सामने के छोटे-से खुले मैदान में जमन सैनिको ने घेरा डाल रखा था। उस दिन जिन युवक-युवतियों का अपने वतन से दूर जाना था उनके माता पिता और अन्य सबधी सन्दूक और गठरिया लिये पहाडी की ओर, घेरे के बाहर खडे थे। उन्ही के साथ और भी ऐसे बहुत-से लोग खडे थे जो वहा केवल कुतूहल वश आ गये थे।

अन्तिम कुछ दिन बडे ही मनहूस से रहे थे। प्रात काल जो हवा चली थी वह अब अधड बनकर वर्षा के बादल बहाये लिए जा रही थी। हवा इतनी तज थी कि बादल उडे जा रहे थे और वर्षा की सम्भावना न थी। हवा पहाड की ढाल पर खडी हुई औरतो और लडकियो के रग बिरगे स्कर्टों से खेलती और जिला कार्यकारिणी कमिटी और 'पगले रईस' के घर की दिशा में गुजरती हुई सडक पर धूल के बवण्डर उडा रही थी।

स्त्रियों, लडकियो और युवको का यह समूह, निश्चेष्ट और दुखी था। यह एक करुण दृश्य था। ये लोग बाते भी या तो बहुत धीरे धीरे करते या फुसफुसाते हुए। उन्हे जोर से रोने में भी भय लगता। मा अपने आसू हाथ मे पोछ लेती और बेटी रूमाल आखो पर दबा लेती।

वाल्या भीड के एक छोर पर पहाडी की ढाल पर खडी हो गयी। वहा से वह ग्रान १-बीस के पास पडोस का भाग और रेलवे ब्राच लाइन का एक भाग देख सकती थी।

नगर के भिन्न भिन्न भागो से अधिकाधिक लोग चलते चले आ रहे थे। प्राय वे सब नौजवान भी वहा आ चुके थे जिन्होने बाजार में परचे बाटे थे। सहसा वाल्या की नजर सेर्गेई पर पडी—वह उस बाध से लगे लगे चल रहा था जिसके ऊपर रेलवे लाइन थी। वह सिर नीचा किये था ताकि हवा मे उसकी टोपी न उड जाय। एक क्षण के लिए वह आखो स आझल हुआ और फिर पहाडी के मोड पर दिखाई दिया। वह अब पहाडी के खुले हुए भाग के पास आया, उसने भीड पर एक पैनी सी दृष्टि डाली और दूर से ही वाल्या को पहचान लिया। वाल्या का गदराया ऊपरी ओंठ गव से काप रहा था। वाल्या ने उसकी ओर देखने से भी इनकार कर दिया और उससे एक भी सवाल न पूछा।

"वह नताल्या अलेक्सेयेव्ना थी," उसने धीरे से कहा। वह जानता था कि वाल्या क्या क्रुद्ध होगी। वह उसके कान के पास झुका और फुसफुसाकर बोला—

"क्रास्नोदोन की खनिक बस्ती में छोकरो का पूरा जत्था है वह अपने आप ही काम कर रहा है ओलेग से कह देना "

वाल्या 'तरुण गार्ड' के हेडक्वटर की एक सदेशवाहिका थी। उसने हामी भरते हुए सिर हिलाया। तभी उनकी नजर, वोरमीदोमिस्की से सडक पर आती हुई, ऊल्या ग्रोमोवा पर पडी। उसके साथ कोई अजनबी लडकी थी जो मुलायम ऊनी टोपी और कोट पहने थी। ऊल्या और वह लडकी एक सूट केस उठाये हुए थी। दोना जसे हवा से लड रही थी और धूल से बचने के लिए अपने चेहरे एक ओर हटाये हुए थी।

"अगर मुझे उधर जाना पडा तो तुम मेरे साथ चलोगी?" सेर्गेई फुसफुसाया। वाल्या ने हामी भरते हुए सिर हिला दिया।

आखिर श्रम-केन्द्र के डाइरेक्टर ओबर-लेफ्टिनेंट श्प्रीक को सहसा ख्याल आया कि युवक-युवतिया घेरे मे बाहर ही अपने सबधियो के साथ

खड़े रहेंगे यदि उन्हें वहां से बुलाया नहीं गया। डाइरेक्टर की दाढ़ी सफाचट थी। वह गर्मी के मौसम में दफ्तर में और सड़कों पर टहलते समय चमड़े का जाँघिया पहनता था। किन्तु इस समय उसने जाँघिया नहीं पूरी वर्दी पहन रखी थी। वह अपने सचिव को साथ लिये सायवान में आ गया और चिल्लाकर कहा कि जिन लोगों को जाना है वे अपने कागजात ले लें। क्लर्क ने ये निर्देश उक्रइनी भाषा में दुहरा दिये।

जमन सैनिकों ने माता-पिताओं, सबंधियों तथा मित्रों को घेरे के अन्दर नहीं आने दिया। विदाई शुरू हो चुकी थी। मां और बेटियां अब अपने पर जब्र न रख सकीं और जोर जोर से रोने लगीं। युवक अपने पर नियंत्रण रखे थे, किन्तु जिस समय उनकी माताएं, दादियां या बहनें उनसे चिपटी हुई थीं उस समय युवकों के चेहरे देखे तक न जाते थे। इतनी करुणा थी उनपर। उनके बूढे पिता जिन्होंने बरसों खानों में काम किया था और कई बार मौत का सामना किया था, हताश दिखाई पड़ रहे थे। उनके आंसू बह बहकर उनकी मूछों से टपकने लगे थे जिन्हें वे बार बार हाथ की हथेली से पोछ डालते।

'यही समय है' सेर्गेई ने कठोरता से कहा। वह वाल्या से अपनी उत्तेजना छिपाने का प्रयास कर रहा था।

वाल्या मुश्किल से ही अपने आंसू सभाल पा रही थी। सेर्गेई ने क्या कहा था यह भी वह ठीक से न सुन सकी थी। आखिर वह यंत्रवत भीड़ में घुसी यंत्रवत् उसने आंसुओं के नीचे टटोला, मुड़ी हुई एक नोटिस निकाला और उसे किसी की जैकेट की जेब में, तो किसी के कोट की जेब में या किसी सूट केस के हैंडिल के नीचे अथवा किसी टोकरी में डाल दिया।

घेरे के पास ही, सहसा श्रम-केन्द्र की दिशा से आता हुआ, भीड़ का एक रेला वाल्या को पीछे खदेड़ ले गया। उस भीड़ में उन युवकों, लड़कियों अथवा युवतियों की संख्या कम न थी जो किसी न किसी को

विदा करने आयी थी। इनमें से एक अपनी बहन या भाई का विदा करते समय इत्तिफ़ाक़ से घेरे में चली गयी थी और अब वहा से निकल न पा रही थी। इस घटना से जमन सिपाहिया का इतना मनबहलाव हुआ कि वे, अपने पास खडे हुए लडके-लडकिया को पकड पकडकर घेरे के भीतर घसीटने लगे। वहा चीख चिल्लाहट, रोना धोना और घिघियाना ही सुनाई पड रहा था। एक औरत का तो रोना थमता ही न था। भयभीत युवक-युवतिया घेरे से दूर भाग रहे थे।

इसी बीच वही मे सेर्गेई आ टपका। उसके चेहरे पर क्रोध और व्यथा के भाव स्पष्ट दीख पड रहे थे। उसने वाल्या का हाथ पकडा और उसे भीड से बाहर खीच लाया। सहसा उनका सामना नीना इवान्सोवा से हो गया।

"भगवान का शुक्र है। वरना इन दैत्या ने तो " उसने दोनो के हाथ अपने बडे बडे जनाने और सावले हाथो में ले लिये। "कशूक के घर। आज शाम का पाच बजे। जेम्नुखोव और स्तखोविच को भी सूचित कर देना," वह वाल्या के कान के पास फुसफुसायी। "तुमने ऊल्या का तो नही देखा?" और वह ऊल्या की तलाश में निकल गयी। वाल्या की ही भाति नीना इवान्सोवा भी हेडक्वार्टर की एक सदेशवाहिका थी।

कुछ क्षणो तक वाल्या और सेर्गेई एक दूसरे के पास पास खडे रहे। एक, दूसरे को छोडना नही चाहते थे। सेर्गेई को देखकर लग रहा था जैसे वह कोई बडी ही आवश्यक बात कहना चाहता है, फिर भी उसने कुछ नही कहा।

"अब मैं भी भागूगी," वाल्या ने धीरे-से कहा।

किन्तु कुछ क्षणो तक जहा की तहा खडी रही, फिर सेर्गेई की ओर देखकर मुस्करायी, इधर-उधर एक निगाह डाली, शर्मायी लजायी और टोकरी हाथ में लेती हुई पहाडी के नीचे दौड चली।

ऊल्या घर के बिलकुल पास खड़ी, श्रम-केन्द्र की इमारत से वाल्या फिरातोवा के पुन बाहर निकलने की प्रतीक्षा कर रही थी। जिस जमन सिपाही ने वाल्या का, मय उसके सूट-केस के, घेर में जाने दिया था वही ऊल्या का हाथ भी पकड़ने के लिए आगे बढ़ा था। पर ऊल्या ने सिपाही की ओर बड़ी रुखाई और घृणा से देखा। एक क्षण के लिए दोनों की निगाह चार हुई। ऊल्या को सैनिक की दृष्टि में मानो मानव संवेदना का भाव दिखाई दिया। सैनिक ने उसे छोड़ दिया था और सहमा, आज से एक सुनहरे बालोंवाली जवान औरत पर भौंकने लगा था जिसका सिर नगा था और जो किसी भी दशा में अपने सोलह साल के बेटे को अपने से अलग न कर पा रही थी। आखिर उसने किसी प्रकार बटे को छोड़ा और तब यही पता चला कि वस्तुत जमन उस औरत को लिये जा रहे थे, न कि उसके बेटे का। जब युवक ने मा को, हाथ में बडल लिये इमारत में घुसते और दहलीज मे अन्तिम बार मुस्कराते हुए देखा तो वह बच्चे की तरह फूट फूटकर रो पड़ा।

ऊल्या और वाल्या फिलातोव परिवार के सामने वाले छोटे कमरे मे एक दूसरे की कमर मे हाथ डाले रात भर बैठी रही थीं। कमरे में शरद के फूलों की प्रचुरता थी। प्राय वहा वाल्या की बूढ़ी मा आ जाती और या तो उनके बाल सहलाती, या उन्हें चूमती अथवा बेटी के सदूक की चीजें छाट छाटकर रखती अथवा कोने में पड़ी एक आराम-कुर्सी पर चुपचाप बैठ जाती। अब चूकि वाल्या भी उसे छोड़कर जा रही थी अतएव सिवा अकेलेपन के उसका और कोई सहारा न रह गया था।

वाल्या रो रोकर कमजोर हो गयी थी और ऊल्या के आलिंगन तक में काप उठती थी। परन्तु अब पहले से शान्त थी। आगे क्या होना था इसका ऊल्या का ज्ञान था और वह भयभीत हो उठी थी। वह अधिक

समझदार और प्रौढ थी, और जैसे बच्चा की तरह और समत्व की भावना से, धीरे धीरे वाल्या का सिर थपथपा रही थी।

दिये से निकलनेवाले प्रकाश में अधेरे कमरे में बैठी हुई दोना लडकिया और मा का चेहरा और हाथ मुश्किल से ही दिखाई पड रहे थे।

काश, यह सब कुछ वह अपनी आखा न देखती – किस प्रकार वाल्या मा से विदा हुई थी, किस प्रकार सरसराती हुई हवा में उसने सूट केस लेकर, अनन्त दूरी पैदल पार की थी और किस प्रकार जमन सिपाहिया के घेरे के पास वे अन्तिम वार एक दूसरे से गले मिली थी।

वेशक यह सभी कुछ हुआ था। और अब तो ऐसी ऐसी बात होती ही रहेगी उल्या के चेहरे पर गभीरता और शक्ति का भाव था। वह जमन सैनिको के घेरे के पास ही खडी थी और उसकी आखे श्रम केन्द्र के द्वार पर लगी थी।

सिपाहिया की कतारा से होकर जो लडके, लडकिया और जवान औरत निकलकर आयी उन्हे एक मोटे मे कारपोरल ने यह आज्ञा सुनायी कि वे अपने अपने वडल और बक्से अहात मे दीवाल के सहारे रख दें। उन्हे यह भी बताया गया कि उनकी ये सारी चीजे एक लारी पर रख दी जायेंगी। फिर वे सब अन्दर गये जहा ओबर लेफ्टिनेंट के निरीक्षण में नेम्चीनोवा ने प्रत्येक यात्री का एक एक काड दिया। यह काड उन्हे, जमन अधिकारिया के प्रतिनिधिया को दिखाकर अपना परिचय देने के लिए दिया गया था। इस काड पर न तो व्यक्ति का नाम ही था, न उसका कुलनाम। उसपर सिवा एक सख्या और एक नगर के नाम के और कुछ न लिखा था। इसके अतिरिक्त उन्ह किसी प्रकार का भी कोई परिचय-पत्र नही दिया गया। काड प्राप्त कर चुकने के बाद वे भवन म निकल आते थे और कारपोरल उन्ह खुले मदान में बनती हुई पक्तियो में उनके स्थान पर खडा कर देता था।

आखिर वाल्या फिलातोवा दरवाजे पर दिखाई दी। उसने अपनी सहेली को देखने के लिए अपने इर्द गिर्द एक दृष्टि डाली और उसकी ओर बढ़ गयी। पर कारपोरल ने उसकी बाह पकडी और उसे पक्तियो की ओर ढकेल दिया। उसे तीसरी या चौथी पक्ति में बहुत दूर एक सिरे पर खडा किया गया। अब दोनो सहेलिया एक दूसरे को देख भी न पा रही थी।

इस निरर्थक विछोह की कटुता से लोगो को मानो स्नेह प्रदर्शन का अधिकार सा मिल गया था। भीड मे खडी हुई औरतो ने, चिल्ला चिल्लाकर अपने अपने बच्चो को विदा अथवा सीख के अन्तिम शब्द सुनाते हुए घेरा तोडने की कोशिश की। किन्तु लग रहा था जैसे उन पक्तियो में खडे हुए युवक-युवतिया – जिनमें अधिकाश युवतिया थी – पहले से ही किसी दूसरी दुनिया के निवासी हो चुके है – वे धीरे धीरे जवाब देते, या चुप रह जाते या अपना रूमाल भर हिला देते। आसू उनके चेहरे पर बहा करते और आखें अपने प्रिय चेहरो पर जमी रहती।

अन्तत ओबर लेफ्टिनेंट श्प्रीक, हाथ मे एक बडा-सा पीला पकेट लिये भवन से बाहर निकला। भीड शान्त हो गयी। सारी आखे उसी की ओर घूम गयी। Still gestanden!"* ओबर लेफ्टिनेंट ने हुक्म दिया। "Still gestanden!"* भयानक आवाज मे कारपोरल ने वही हुक्म दुहराया।

सारा जत्था मूर्तिवत खडा हो गया। ओबर-लेफ्टिनेंट श्प्रीक अपने सामने खडी हुई पक्तियो से होकर गुजरने लगा। जत्थे के लोग चार चार की लाइन में खडे किये गये थे। वह चलता हुआ और अपने निकटतम व्यक्ति के शरीर में अपनी मोटी और गठीली उगलिया गडाता हुआ आगे बढने लगा। जत्थे में दो सौ से अधिक व्यक्ति थे।

---

* अटेंशन।

ओबर-लेफ्टिनेंट ने अपना पैकेट मोटे कारपोरल को थमाया और स्वय हाथ हिलाने लगा। सैनिको का एक दस्ता भीड हटाने के लिए आगे बढा—भीड के कारण सारी सडक बन्द-सी हो गयी थी। कारपोरल की आज्ञा होते ही सारा जत्था धीरे धीरे और रुक रुककर, मानो अनिच्छापूर्वक बढा और पहरे में सडक पर चलने लगा। मोटा कारपोरल आगे आगे चल रहा था। -

सैनिक जनसमूह को पीछे दबा रहे थे, फिर भी वह जत्थे के दोना ओर बढता चला जा रहा था। लोग रो रहे थे, सिसक रहे थे, चिल्ला रहे थे और उनका विलाप हवा में गूज रहा था।

ऊल्या प्राय पजो पर चलती रही। उसकी आखें जत्थे में वाल्या को ढूढती रही। आखिर उसे वाल्या दिख गयी। स्वय वाल्या की आख भी सडक के दोनो ओर अपना सहेली का ढूढ रही थी और इस अन्तिम क्षण में उसे न देख सकने के कारण वह व्यथित-सी दिखाई पड रही थी।

"मैं यह रही, यहा, प्यारी वाल्या," ऊल्या चिल्लायी, किन्तु भीड ने उसे पीछे ढकेल दिया। पर वाल्या ने न तो उसे देखा ही न उसकी आवाज ही सुनी। वह आखो में व्यथा लिये इधर-उधर देखती रही। ऊल्या, जानेवाले जत्थे से बराबर दूर पडती जा रही थी, फिर भी उसे कई बार वाल्या का चेहरा दिख गया था। अब जत्था 'पगले रईस' के घर के उस पार दूसर लेवल क्रासिग की ओर बढ रहा था। वाल्या अब ऊल्या को न दिखाई दे रही थी।

"ऊल्या!" नीना इवान्त्सोवा चिल्लायी। सहसा वह ऊल्या की बगल में आकर खडी हो गयी थी। "मैं जाने कहा कहा तुम्हारी तलाश करती रही। आज शाम को पाच बजे कशुक के घर ल्यूबा यही है।"

लग रहा था जैसे वह कुछ भी न सुन रही हो। उसकी भयग्रस्त आखें नीना का घूर रही थी।

अध्याय ५

जब ओलेग ने अपनी जैकेट की भीतरी जेब से अपनी नोटबुक निकाली और ध्यान से उसके पन्ने देखे तो उसका चेहरा उतर गया। वह मेज के पास पडी एक कुर्सी में धस गया। मेज पर वोद्का की बोतलें, कुछ गि और कुछ तश्तरिया रखी थी, पर खाने के लिए वहा कुछ न था। दूसरे लोग भी चुप हो गये और मुह पर गभीरता लिये कुछ मेज के पास और कुछ सोफे पर बैठ गये। सभी चुपचाप ओलेग को देख रहे थे।

अभी कल तक वे स्कूली साथी थे—निश्चिन्त और चहकते हुए। किन्तु जिस दिन से उन्होंने शपथ ली थी उस दिन से उन्होंने अपना पूर्वअस्तित्व खो दिया था। लग रहा था जैसे उन्होंने अपना पहले का अनुत्तरदायित्वपूर्ण मित्रता-बन्धन तोड डाला था, क्योंकि उन्हें उसके स्थान पर एक नया और अधिक उच्च सबध जोडना था, समान विचारों और सघटन पर आधारित मैत्री को जन्म देना था। इस मैत्री पर उस मन की मुहर थी जिसे अपनी मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए वहा न्न का उन्होंने सकल्प कर लिया था।

कोशेवोई के घर का बडा कमरा प्रीफैब्रिकेटेड मकानों के ही कमरों जैसा था। बिना रंगी खिडकियों के चौखटे, उनपर पडत हुए टमाटर, अगराट की लकडी का सोफा जिसपर ओलेग सोता था, पलग जिसपर येलेना निकोलायेवना सोती थी, और जालीदार कपडा से ढके सरियाये हुए तकिये अभी भी उन्हें अपने इस निश्चिन्त जीवन की याद दिला रहे थे जो उन्होंने अपने ही बाप-दादा की छत के नीचे बिताया था। फिर भी यह कमरा इस समय एक षड्यन्त्र-केन्द्र बना हुआ था।

अब ओलेग, ओलेग नहीं कन्नूक था। यह नाम उसके सौतेले पि का था जो अपनी जवानी के दिनों में एक प्रसिद्ध उक्रैनी छापामार र था और मृत्यु स वर्ष भर पहले कानेव नगर में कृषि विभाग का अध्यक्ष था।

ओलेग ने यह उपनाम इसलिए पसद किया था कि वह उसे छापेमारो के सघष की उसकी प्रथम साहसपूण कल्पनाओ और उस कठिन से कठिन ट्रेनिग से सबद्ध करता था जो उसके पिता ने उसे खेतो में काम करने के रूप में तथा शिकार करने, घोडे पालने और दनीपर में नाव खेने के रूप में दी थी।

उसने अपनी नोटबुक उस पन्ने पर खोली जहा उसने अपनी ही सकेतलिपि में कायक्रम लिखा था, और ल्यूबा शेव्त्सोवा से अनुरोध किया कि वह कुछ बोले।

ल्यूबा सोफे पर से उठी और आखें सिकोडती हुई खडी हो गयी। उसकी कल्पना के समक्ष वोरोशीलोवग्राद की उसकी हाल की यात्रा के सारे विवरण, घोर कठिनाइया, मुकाबले, खतरे और साहसिक कारनामे घम गये। इन सब का वणन करने के लिए दो शामें भी काफी न थी।

अभी कल ही वह अपना सूटकेस लिये चौराहे पर खडी थी, जो उसके लिए जरूरत से ज्यादा भारी था, और आज वह फिर यहा अपने मित्रो के बीच थी।

जैसा कि ल्यूबा और ओलेग ने पहले से ही निश्चय कर लिया था, ल्यूबा ने 'तरुण गाड' दल के हेडक्वाटर के सदस्यो को वह सब कुछ बताना शुरू किया जो इवान फ्योदोरोविच ने स्तखोविच के बारे में कहा था। हा, उसने इवान फ्योदोरोविच का नाम नही लिया हालाकि ल्यूबा ने उसे देखते ही पहचान लिया था। उसने यही कहा कि वह इत्तिफाक मे किसी ऐसे व्यक्ति से मिली थी जो स्तखोविच के दस्ते में रहा था।

ल्यूबा स्पष्टवादी और निर्भीक लडकी थी और जिसे वह नही चाहती थी उसके प्रति निममता का भी व्यवहार करने में न चूकती थी। उसने उक्त व्यक्ति का यह अदेशा भी किसी से न छिपाया कि शायद स्तखोविच जमनो के हाथो में पड गया था।

जब ल्यूबा यह सब कह रही थी उस समय 'तरुण गार्ड' दल के हेडक्वाटर के सदस्यों को स्तख़ोविच की ओर देखने का भी साहस न हो रहा था। और स्तखोविच सामने की ओर घूरता हुआ, बाहुत चुपचाप और निश्चेष्ट, मेज़ पर अपनी पतली बाहें रखे बैठा था। उसके चेहरे पर दृढता का भाव था। किन्तु जब ल्यूबा ने अपने अंतिम शब्द कहे तो उसके चेहरे पर सहसा एक परिवर्तन दिखाई पड़ने लगा।

उसके बदन में शिथिलता सी आ गयी। अब उसके हाथों और हाथ में कोई तनाव न रह गया था। उसने पूरी तरह अपनी आंखें खाली और आश्चर्य तथा क्लेश के साथ बारी बारी से अपने साथियों को देखने लगा। उस समय वह एक छोटे-से बालक जैसा दीख रहा था।

"उसने ... उसने ऐसा कहा? क्या सचमुच उसने यही सोचा था?" उसने बालसुलभ आहत भाव से सीधे ल्यूबा की आंखों में देखते हुए कई बार यही शब्द दुहराये।

सब चुप थे। स्तखोविच ने अपना चेहरा अपने ही हाथ से ढक लिया। उसके बाद उसने मुंह पर से हाथ हटाया और धीरे धीरे बोला-

"मुझपर शक किया जा रहा है और इस क़िस्म का शक कि मैं ... उसने तुम्हें यह क्यों नहीं बताया कि एक हफ्ते तक बराबर हमारा पीछा किया गया और तब हमें दलों में बंट जाने को कहा गया?" उसने ल्यूबा पर तेज़ नज़र डालते हुए कहा और तब सभी सदस्यों की ओर बारी बारी से देखा, "मैं वहां झाड़ियों में पड़ा था कि मुझे यह बात सूझ गयी-वे लोग अपनी अपनी जान बचाने के लिए घेरा तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं और यदि सब नहीं तो अधिकांश मौत के मुंह में चले जायेंगे और शायद मैं भी उन्हीं के साथ मारा जाऊंगा, पर मैं अपने को बचाकर कहीं अधिक काम का सिद्ध हो सकता हूं। उस समय मैंने यही सोचा था पर अब मैं समझ रहा हूं कि यह सिर्फ बहाना था। गालावारी इसने

अधिक थी   देखने से रोमाच हो आता था', उसने सरल भाव से कहा। "फिर भी मैं यह नही समझता कि मैंने इतना गभीर अपराध किया है। वे लोग खुद अपनी जान बचा रहे थे   अधेरा हो चुका था। मैंने सोचा—म एक अच्छा तराक हू, शायद जमना का मुख अकेले पर ध्यान न जायेगा। जब वे सब वहा से भाग गये तो मैं वहा कुछ समय तक पडा रहा। वहा गोलाबारी बन्द हो चुकी थी किन्तु दूसरी जगह काफी जोरो से गोलाबारी हो रही थी। मैंने सोचा—यही समय है और मे पानी की सतह पर चित्त होकर तरने लगा। सिफ मेरी नाक पानी से ऊपर थी। मैं अच्छा तैराक हू। पहले म सीधा नदी के बीच तक, और फिर धारा के अनुकूल तैरने लगा। इस प्रकार मने अपनी जान बचायी। लेकिन मुझपर इस तरह का शक किया जाये—क्या यह मभव है? आखिर वह आदमी भी तो बचा ही होगा। बोलो उसकी जान बची कि नही? मैंने सोचा था—चूकि म अच्छा तैराक हू, अत मुझे इस कला से लाभ उठाना चाहिए। मै चित्त तैरता रहा और मेरी जान बच गयी।"

स्तसोविच के बाल अस्त-व्यस्त हो रहे थे। वह वहा एक बालक की भाति बैठा रहा।

"अच्छा मान लिया   कि तुमने अपनी जान बचायी," वाया जेम्नुखाव बोला, "पर तुमने हमसे यह क्यो कहा कि तुम्ह यहा छापेमार दस्ते ने भेजा है?"

"इसलिए कि वे सचमुच मुझे भेजना चाहते थे   मैंने सोचा—चूकि मैं जिन्दा हू, इसलिए स्थिति में कोई परिवतन नही हुआ। जो भी हो मुझे अपनी ही चमडी तो बचानी नही थी। मैं हमलावरो से लडना चाहता था और अब भी यही चाहता हू। फिर मुझे अनुभव भी था। मैंने दस्ते की व्यवस्था करने में सहायता दी थी और लडाइयो में भाग लिया। इसी लिए मैंने यह बात कही थी।"

उन सभी का यही विचार हो रहा था, किन्तु जब उन्होने स्तखाविच का स्पष्टीकरण सुना तो उन्हें कुछ राहत मिली। फिर भी सारी कार्यवाही बड़ी अप्रिय रही। आखिर यह सब बात न हुई होतीं तो कितना अच्छा था?

उन सभी ने यह अनुभव किया था कि स्तखाविच सच बोल रहा है, किन्तु उन्हें यह भी लग रहा था कि उसका रवय्या ठीक नही रहा और अपनी रामकहानी बड़े अप्रिय ढंग से सुनायी। उसकी दास्तान पहेली जैसी लग रही थी, जिसे सुनकर क्रोध आता था। स्तखाविच के साथ क्या कारवाई की जाये यह उनकी समझ में नही आ रहा था।

बेशक स्तखाविच कोई बाहरी आदमी न था और न ही स्वार्थी अथवा अपना भविष्य बनानेवाला। वह उस तरह का युवक था जो बचपन ही मे बड़े बड़े लोगो के सम्पर्क में आया था। उसने इन लोगो के अधिकारो की ऊपर ही ऊपर नकल की थी और वह भी उस कच्ची उम्र में था जब वह लोकप्रिय अधिकार का प्रयोजन और सच्चा अर्थ तक न समझता था और न यही जानता था कि इन लोगो को यह अधिकार इसलिए मिला है कि उन्होने जी-तोड परिश्रम किया है और अपने आचरण को खरा बनाया है।

वह एक प्रतिभाशाली युवक था, जिसे हर चीज आसानी से समझ में आ जाती थी। उसके स्कूली दिनो में ही कुछ बड़े लोगो ने उसपर ध्यान देना शुरू किया था और इसलिए कि उसके कम्युनिस्ट भाई भी बड़े प्रतिष्ठित लोग थे। वह जिन्दगी भर ऐसे ही लोगो के बीच रहा था, अतएव जब कभी वह अपने स्कूली दोस्तो से उन बड़े बड़े लोगो के बारे में बातचीत करता तो लगता जैसे वह अपने बराबर वालो के बारे में बातें कर रहा हो। उसके लिए बातचीत में या लिखित रूप में दूसरो के विचारों

थो, जो उसने व्यक्त होते सुने थे, स्पष्ट रूप से रखना हमेशा सरल प्रतीत होता था। उन दिनों वह अपने विचारों को विकसित नहीं कर सकता था। उसके इन्हीं गुणों के कारण जिले के कामसामोल-नेता उसे सक्रिय कोमसोमोल-सदस्य समझते थे हालांकि उस समय तक उसने जीवन में ऐसा कोई खास काम न किया था जो उसकी इस सक्रियता को सिद्ध करता। आम कोमसोमोल-सदस्य उसे व्यक्तिगत रूप से न जानते थे। वे हमेशा उसे अपनी सभी सभाओं में मंच पर अध्यक्ष-मंडल में बैठे देखा करते और इसी लिए उसे जिले या प्रदेश का कामसामोल अधिकारी समझते। वह जिन लोगों के बीच रहता या घूमता फिरता उनके कार्यों को अवश्य ही न जानता-समझता, फिर भी वह उनके निजी और औपचारिक [illegible] के सारे ब्योरे जानता था—कौन किसका प्रतिद्वन्द्वी है और कौन [illegible] समर्थक। उसने अधिकार-उपयोग की कला के संबंध में एक [illegible] बना ली थी—उसका विश्वास था कि अधिकार जनता की [illegible] नहीं बल्कि स्वयं आगे बढ़ने के लिए दो किस्म के जनसमूहों [illegible] लिये समर्थन प्राप्त करने का साधन है।

ये लोग एक दूसरे के साथ मजाक मजाक में [illegible] बात करते थे—उसने यह आदत भी सीखी, [illegible] उनकी रूक्ष स्पष्टवादिता और आजाद-ख्याली [illegible] न समझा कि इसके पीछे ज़िन्दगी की [illegible] छिपी हुई है। वह युवकों की भांति [illegible] करने के बजाय जान-बूझकर गुपचुप [illegible] में बोलता, खास तौर से [illegible] से बातचीत करता। सामान्य [illegible] साथियों के साथ अपने [illegible] चाहिए।

इस प्रकार अपने आरंभिक वर्षों में ही वह अपने को साधारण लोगों से ऊंचा समझने का आदी हो चुका था। वह अपने को ऐसा व्यक्ति समझने लगा था जिसपर सामूहिक जीवन के सामान्य नियम लागू नहीं होते।

वह दूसरों की तरह—या उस छापेमार की तरह जिससे ल्यूबा मिली थी—अपनी जान बचाने के बजाय मौत के मुंह में क्यों जाये? और उस व्यक्ति को क्या अधिकार था कि वह आने याने स्तखोविच के प्रति दूसरों के दिलों में सन्देह पैदा करता, जब कि जिस स्थिति में दस्ता पड़ गया था उसके लिए वह स्वयं नहीं, बल्कि दूसरे ज़िम्मेदार लोग दोषी थे?

युवक लोग स्थिति के संबंध में निश्चित रूप से निर्णय न कर सकने के कारण चुपचाप बैठे थे, पर इन बहसों से स्तखोविच कुछ कुछ खुश नज़र आने लगा था। सहसा सेर्गेई की कठोर आवाज़ ने मौन भंग किया—

"दूसरी जगह फिर गोलाबारी शुरू हुई, किन्तु वह चित्त तटस्थ रहा। फिर भी गोलाबारी पुन: आरंभ हुई क्योंकि दस्ता घेरा तोड़कर भाग निकला था और उस समय प्रत्येक व्यक्ति की ज़रूरत थी। इसके माने यह हुए कि वे आगे बढ़े थे उसकी ज़िन्दगी बचाने के लिए, है न?"

कमांडर, वान्या तुर्केनिच किसी की ओर नहीं देख रहा था। वह सैनिक शिष्टता बरत रहा था। उसके चेहरे पर असाधारण सरलता और दृढ़ता का भाव झलक उठा था। उसने कहा—

"सैनिक को आज्ञा माननी चाहिए। इधर लड़ाई चल रही है उधर तुम भाग गये। लड़ाई के समय तुम भगोड़े साबित हुए। इस अपराध के लिए मोर्चे पर लोगों को गोली मार दी जाती है या उन्हें फ़ौजी सज़ा दी जाती है। लोग अपने अपराध का प्रायश्चित्त अपने खून से करते हैं।

"तुम खुद ही देख लो न, कि तुम हेडक्वाटर में नहीं रह सकते," उसने कहा।

और स्तानिच को मानना पड़ा कि यह बात उचित भी है।

"तुम्हारे लिए यह जरूरी है कि इसे तुम स्वयं समझो," भान्या कहता गया, 'बेशक हम तुम्हें जिम्मेदारी सौंपेंगे और केवल एक ही नहीं। हम तुम्हारी परीक्षा लेंगे। तुम अब भी अपने पाच के दल का नेतृत्व करोगे और तुम्हें अपने यश को पुनः प्राप्त करने के बहुत-से मौके मिलेंगे।

"वह बड़े उच्च कुल का है। पर जो कुछ उसने किया है वह बड़े शर्म की बात है!" ल्यूबा बोली।

येव्गेनी स्तखोविच को 'तरुण गार्ड' के हेडक्वाटर से निकाल दिए जाने के सवाल पर वोट लिये गये। वह अपना सिर झुकाये बैठा रहा, तब उठा और अपनी अनुभूतियो को दबाता हुआ बोला—

"इससे मुझे बहुत कष्ट हो रहा है—तुम लोग यह बात समझ सकते हो। पर मैं जानता हूं कि तुम कुछ और कर भी नहीं सकते थे। मैं इसका बुरा नही मानता। मैं कसम खाकर कहता हूं ..." उसके होंठ कांप और वह कमरे से निकल गया।

सभी सदस्य कुछ क्षणों तक चुप बैठे रहे। पहली बार अपने एक साथी के प्रति वे निराश हुए थे और इस कारण वे दुखी थे। इतना निर्मम बनना भी उनके लिए कठिन था।

ओलेग ने दात निकाले और जैसे हकलाते हुए बोला—

"व-वह ठीक हो जायेगा, म-मेरी बात याद रखना।"

वान्या तुर्केनिच ने अपनी कोमल आवाज में इस विश्वास का समर्थन किया—

"तुम्हारा ख्याल है ऐसी बाते मोर्चों पर नहीं होतीं? तरुण सैनिक पहले बुजदिली दिखाता है, पर बाद में बहादुरी के कितने ही कारनामे भी करता है।"

ल्यूबा को लगा कि इस समय उसे, इवान फ्योदारोविच से हुई अपनी मुलाक़ात के बारे में, सभी कुछ कह देना चाहिए। बेशक उसने इस बारे में कुछ नहीं कहा कि वह उससे कैसे मिली—उसके काम के संबध में कुछ ऐसी बात भी होती थी, जिन्हें प्रगट करने की उसे इजाज़त न थी। कमरे में चहलक़दमी करते हुए उसने पूरा ब्योरा देकर बताया कि किस प्रकार प्रोत्सको उससे मिला था और उसने क्या कहा था। जब ल्यूबा ने बताया कि छापेमारों के हेडक्वाटर के प्रतिनिधि ने आप लोगों की बड़ी तारीफ़ की, श्रोलेग की सराहना की और वहां से मेरे चलते समय मुझे चूमा तो सदस्य उत्तेजित हो उठे। निश्चय ही वह हम लोगों से बड़ा खुश होगा, उन्होंने सोचा।

अपने को इस नये रूप में देखकर वे उत्तेजित थे, प्रसन्न थे और कुछ कुछ चकित भी। वे परस्पर हाथ मिलाने और एक दूसरे को मुबारक देने लगे।

"ज़रा सोचो वान्या, ज़रा कल्पना करो," ओलेग ने ज़ेम्नुखोव से कहा। उसके चेहरे पर प्रसन्नता झलक रही थी। "'तरुण गार्ड' दल एक वास्तविकता है जिसे प्रदेश के नेता तक मानते हैं।"

ल्यूबा ने ऊल्या की कमर में हाथ डाला। तुर्केनिच के घर में मिलने के बाद से दोनों में गहरी दोस्ती हो गयी थी। अभी तक ल्यूबा को ऊल्या से उसका हालचाल पूछने का मौका न मिला था, अब उसने उसे बहन की तरह चूम लिया।

ओलेग ने फिर अपनी नोटबुक देखी। पिछली बैठक में वान्या जेम्नुखाव को पांच पांच के दलों का संघटनकर्ता बनाया जा चुका था। वान्या ने प्रस्ताव रखा कि पांच पांच के दूसरे दलों के लिए भी नेता नियुक्त किये जायें क्योंकि संघटन को विस्तृत करना था।

"पेर्वोमाइस्का में गुरू करें, क्या?" वान्या ने ऊल्या को प्रोफ़ेसर की तरह अपने चश्मे में से देखते हुए, प्रसन्नतापूर्वक कहा।

ऊल्या उठी और अपने दोनों हाथ लटकाकर सीधी खड़ी हो गयी। उसके नारी सौन्दर्य ने सभी उपस्थित लोगों में एक सुखद, निष्काम अनुभूति पैदा कर दी थी जो उनके चेहरों पर झलक उठी थी। जिन युवकों के मन साफ़ होते हैं, उनके मन में ऐसी ही भावनाएं उठती हैं जब वे किसी सुन्दर युवती को देखते हैं। किन्तु ऊल्या ने लोगों की इस मूक प्रशंसा पर कोई ध्यान न दिया था।

"हम लोग, यानी मैं और तोल्या पोपोव, वीत्या पेत्रोव और माया पेग्लिवानोवा का मनोनीत करते हैं," वह बोली। सहसा उसने देखा कि ल्यूबा उसे परेशान सी दृष्टि से देख रही है। "और ल्यूबा बोरमीदोमिकी जिले का काम ले ले, फिर तो हम पड़ोसी रहेंगे," उसने इतना और जोड़ दिया। उसकी गंभीर आवाज़ शान्त थी और वह बड़ी आसानी से बातें कर रही थी।

"वाह, तुम्हें भी खूब सूझी सचमुच।" ल्यूबा का चेहरा लाल हो उठा और उसने अपने छोटे छोटे हाथ हिला दिये। वह कैसी संगठन कर्ता बनेगी।

उन सभी ने ऊल्या का समर्थन किया और ल्यूबा चुप हो गयी। एक ही क्षण में ल्यूबा ने अपने को बोरमीदोमिकी जिले की संगठनकर्ता के रूप में देखा। यह विचार उसे बहुत ही पसंद आया था।

वान्या तुर्केनिच को लगा कि इसी समय उसे वह प्रस्ताव भी सामने रखना चाहिए जिसपर वह और ओलेग रात में एकमत हो गये थे। उसने बैठक में वे सारी बातें बयान की जो ओलेग के साथ हुयी थी और बताया कि यह काम न सिर्फ़ ओलेग के लिए बल्कि सारे संगठन के लिए संकट का कारण बन सकता था। उसने सुझाव दिया कि हैं

लोग यह निश्चय कर कि ओलेग का, बिना हेडक्वाटर की अनुमति के, कभी किसी भी कारवाई में भाग लेने का अधिकार न हो।

"मैं नही समझता कि इसके लिए अभी और स्पष्टीकरण की भी आवश्यकता है," उसने कहा, "बेशक यह निषेध मुझपर भी लागू होना चाहिए।"

"इनका क कहना ठी ठीक है," ओलेग बोला।

इस प्रकार यह निश्चय भी सवसम्मति से किया गया। अब सेर्गेई अपनी कुर्सी से उठा। वह परेशान-सा लग रहा था।

"मुझे यहा दो बात कहनी है," उसने उदास होकर कहा और अपने मोटे मोटे हाठा को अजीबन्से ढग से फरफराया। सभी को यह बात इतनी मजेदार लगी कि कुछ समय तक तो उन्होने उसे बोलने का भी मौका न दिया।

"पहले पहल मैं इस इग्नात फोमीन के बारे में कुछ कहना चाहता हू। क्या हम सचमुच इस सुअर की हरक्त बरदाश्त करते रहगे?" उसका चेहरा क्रोध से लाल हो रहा था। "उस बदमाश ने ओस्तप्चूक और चाचा अन्द्रेई के साथ गद्दारी की और हम अभी तक यह नही जानते कि उस नीच ने हमारे कितने सनिको का सफाया करवाया है। मेरा सुझाव है कि उसे मारकर ठिकाने लगा दिया जाये," सेर्गेई बोला, "यह काम आप लाग मेरे जिम्मे कर दें क्योकि मैं यो भी उसे जिन्दा नही रहने दूगा," उसने कहा और सभी का यह स्पष्ट हो गया कि सेर्गेई सचमुच ऐसा करने में समथ है।

ओलेग का चेहरा गभीर हो उठा। उसके माथे पर गहरी और लबी झुरिया पड गयी। हेडक्वार्टर के सभी सदस्य शात थे।

"क्या राय है? वह ठीक कहता है," वान्या तुर्केनिच ने शांत आवाज में धीरे-से कहा, "इग्नात फोमीन गद्दार है। वह हम लोगो का

अनिष्ट करता है, उसे सूली पर चढाया जाना चाहिए। और ऐसी जगह जहा लोग उसे लटका हुआ देखें। उसके गले म एक पोस्टर बधा हो जिसमें उसे फासी देने के कारण लिखे हों। यह लोगों के लिए एक सबक बने। क्या कहना है आप लोगों को इस बारे में?" उनकी आवाज़ में अप्रत्याशित निर्ममता की ध्वनि थी। "ये लोग हमपर कभी दया नही करगे। यह काम मुझे और त्युलेनिन को सौंपा जाये।"

और जब सदस्यो ने तुर्केनिच को त्युलेनिन का समथन करते सुना तो जैसे उन्ह राहत-सी मिली। यद्यपि वे गद्दारो से घृणा करते थे, फिर भी उन्हे मौत की नीद सुलाना उनके लिए कठिन था। पर, चूंकि इस मामले में लाल सेना के एक अफसर, और उनके सीनियर साथी तुर्केनिच का समथन प्राप्त हो चुका था, इसलिए वह काय करना अनिवाय-सा लग रहा था।

"बेशक इसकी अनुमति सबसे पहले हमें अपने सीनियर साथियो से लेनी होगी," ओलेग ने कहा, "और उसी दृष्टिकोण से हमें अपना सामान्य मत भी देना होगा। मैं फोमीन के बारे में त्युलेनिन के प्रस्ताव पर वोट लूगा और फिर इस सवाल पर कि यह काम किसे सौंपा जाये?"

"सवाल बिलकुल साफ है," वान्या जेम्नुखोव बोला।

"हां, सवाल साफ है, फिर भी मैं फोमीन के सवाल पर अलग से वोट लूगा," ओलेग ने जैसे हठधर्मी से कहा।

ओलेग इस बात पर क्यो जोर दे रहा था—सभी यह जानते थे। उन्होने शपथ जो ली थी। उन्ह अपनी आत्मा की आवाज सुनकर निश्चय जो करना था। सभी ने गभीर शाति के साथ फोमीन को फासी देने के पक्ष में वोट दिया और यह काम तुर्केनिच और त्युलेनिन को सौंपा गया।

'यह निश्चय बिलकुल ठीक है। इन मुखबिरों को यही सजा मिलनी चाहिए।" सेर्गेई की आखों में चमक दौड गयी, 'अब मैं अपनी दूसरी बात पर आऊगा"।

अस्पताल की डाक्टर नताल्या अलेक्सेयेव्ना ने सेर्गेई को बताया था कि क्रास्नोदान से कोई अठारह मील दूर एक बस्ती मे–इस बस्ती का नाम भी क्रास्नोदोन ही था–कुछ युवको ने एक विरोधी दल बनाया है। यह वही छोटे छोटे गुदगुद हाथोवाली नताल्या अलेक्सेयेव्ना थी, जिसकी आखो में सदा दृढता और कर्तव्यपरायणता का भाव झलका करता था। नताल्या अलेक्सेयेव्ना इस दल की सदस्या न थी किन्तु उसे इस दल का पता चला था उसकी मा की पडोसिन, अध्यापिका अन्तोनीना येलिसेयेंको से, जो वस्तुत क्रास्नादोन बस्ती में रहती थी। उसने अन्तोनीना येलिसियेको से यह वादा किया था कि वह नगर से सम्पर्क स्थापित करने में उसकी मदद करेगी।

सेर्गेई के सुझाव पर वाल्या बोर्त्स को इस दल के साथ सम्पर्क स्थापित करने का भार सौंपा गया। यह निश्चय वाल्या की गैर-मौजूदगी में किया गया था क्योकि सदेशवाहिकाए इवान्त्सोवा बहनें और वाल्या, हेडक्वाटर की बैठक में नही आयी थी। वस्तुत उस समय वे मरीना के साथ अहाते मे एक शैड के नीचे बैठी हुई हेडक्वाटर की चौकसी कर रही थी।

येलेना निकोलायेव्ना और मामा कोल्या, कुछ चीजें रोटी के बदले में बदलने के लिए, दहात में मरीना के सबधियो के पास गये थे। उनकी इस अनुपस्थिति का लाभ 'तरुण गार्ड' हेडक्वाटर के सदस्यो ने उठाया था। नानी वेरा–को मालूम था कि युवक क्या उनके घर इकट्ठे हुए है लेकिन उसने उनपर यह प्रगट नही होने दिया कि उसे मालूम है। इसी तरह व्यवहार करती रही मानो सभी दावत के लिए एकत्र हुए है। वह मामी मरीना और उसके नन्हे बेटे को लेकर पहले से ही शैड के नीचे चली गयी थी।

युवको को वाद विवाद करत करत शाम हो चुकी थी। तभी नानी वरा भी कमरे में आयी। उसके चश्मे का एक भाग टूट गया था और

वाले डारे की महायता मे वमानी स त्रधा था। उसने चश्म के ऊपर से देखते हुए तुरन्त ही यह जान लिया कि मेज़ पर रखी हुई वादका की बोतल छुई तक न गयी थी और मगो का भी कोई इस्तेमाल न किया गया था।

"शायद तुम लोग चाय पीना चाहते हो। मैंने कुछ न कुछ खाने के लिए भी बना रखा है," वह बोली जिससे षड्यन्त्रकारियों को कुछ झेंप सी हुई। "और हा, मैंने मरीना को समझा दिया है कि वह बच्चे को लेकर सायबान में सोये। वहा की हवा ताजी है।"

नानी ने वाल्या, नीना और ओलगा को बुलाया, चायदानी उठा लायी और एक दराज़ में से कुछ छिपायी हुई मिठाइया निकालकर मेज़ पर रख दी, फिर झिलमिली गिरायी, दिया जलाया और कमरे से बाहर चली गयी।

इस समय सब के सब दिये के पास बैठे थे, जिस में से धुआ निकल रहा था, और जिसकी झिलमिलाती हुई लौ कमरे के अधेरे में उनके चेहरो, कपडो और अन्य चीजो पर पडकर कुछ क्षणो के लिए उन्हे प्रकाशित कर देती थी। वे सचमुच वहा षडयन्त्रकारी-से लग रहे थे। उनकी आवाजें शात और रहस्यपूर्ण लग रही थी।

"आप लोग मास्को की बात भी सुनेंगे?" ओलेग ने धीरे-से कहा।

सभी ने इसे मज़ाक समझा। किन्तु अकेली ल्यूबा-ही कुछ हैरान सी हुई और सहसा पूछ बैठी—

"मास्को, कैसे?"

"एक शर्त पर—कोई प्रश्न न किया जाये।" ओलेग अहाते में गया और तत्काल लौट आया।

"एक क्षण धीरज रखें,' वह बोला और मामा कोल्या के कमरे के अधेरे में गायब हो गया।

के एक टुकडे के साथ जोड दिया जाता। यह तार लम्बी-सी चोब से बधा था और चोब के ऊपर एक हुक लगा था जिसके जरिये चोब खभे के पास बिजली लाइन से मिली थी।

सोवियत सूचना-केन्द्र का सवादपत्र। भले ही उन्हे कितनी ही तकलीफ और जोखिम उठाना पडे छपाई की मशीन का प्रबध तो उन्हे करना ही था।

जब वोलोद्या ग्रोस्मूविन, जारा अरुत्युयान्त्स और 'घघरक' तोल्या ने पाक में खुदाई की तो उन्हे थोडे से ही टाइप हाथ लग सके। शायद जिन लोगो ने उन टाइपो को जमीन में गाडा था, उनके पास पैकिंग का सामान न था। उन्होने टाइपो को एक गडढे में रखकर उन्हे मिट्टी से ढक दिया था। लारियो और विमानमार तोपो के लिए खोदनेवाले जर्मन सैनिको ने पहले-पहल यह जानने का प्रयत्न न किया कि यह सब था क्या और इसलिए उन्होने मिट्टी के साथ ही टाइप भी इधर-उधर फेंक दिये। पर बाद में उन्हे अपनी गलती मालूम हुई और उन्होंने इसकी सूचना उच्च अधिकारियो को दी। नतीजा यह हुआ कि शायद बहुत-से टाइप हटा लिये गये किन्तु कुछ अब भी गडढे के तल में पडे रह गये थे। छोकरो ने वहा बडे सयम के साथ कई दिनो तक खुदाई की और उन्हे नक्शे में दिखाये गये स्थान से कुछ गज के व्यासाध के दायरे में काफी छिटपुट टाइप मिल गये। इस प्रकार उन्होने एक एक अक्षर बटोरकर रख लिया। वे टाइप ल्यतिकोव की जरूरत लायक न थे इसलिए उसने 'तरुण गाड' के उद्देश्यो के लिए उसका प्रयोग करने की अनुमति वोलोद्या को दे दी थी।

जेम्नुखाव का बडा भाई अलेक्साद्र, जो अब सेना में था, कभी छपाई का व्यवसाय करता था। उसने काफी अरसे तक स्थानीय समाचारपत्र 'सात्सिआलिस्तीचेस्काया रोदिना' के छापाखाने में भी काम

किया था। वाया प्राय उससे वहा मिलने आया करता
के निरीक्षण में अब वालाद्या छापने की एक छोटी-सी म
जुट गया। वोलोद्या जिस मशीन के कारखाने में काम क
उसने छापेखाने के लिए गुप्त रूप से धातु के पुर्जे बना लिं
ने सामान रखने के लिए एक लकडी का बक्सा और :
बनाने का काम अपने ऊपर ले लिया।

जोरा का पिता वढई था। उसकी मा बडी चरित्रवा
जोरा को इस बात की आशा थी कि जमनो के अधिकार :
उसके माता पिता उनके विरुद्ध अवश्य हथियार उठायेंगे।
में से किसी ने भी इस दिशा में कदम नही उठाया। वि
इस बात में कोई सन्देह न था कि वह उन्हे धीरे धं
क्रियाकलापो में खीच लेगा। काफी सोच-विचार के बाद व
पर पहुचा था कि शुरु शुरु में पिता को ही अपने अनुकूल
होगा। मा को बाद में समझाया जा सकता था। वह तो ए
थी, जो जरूरत से ज्यादा सक्रिय थी। जोरा का पि
के कधे तक आता था। वह अधेड उम्र का, शात-स्वभाव
बेटा हर चीज में मा की नकल था—क्या आचरण, क्या
काले काले बाल। बेशक उसके पिता को यह बात ब
खुफिया काम करनेवालो ने, उसके युवा बेटे द्वारा नाजु
है, फिर भी उसने बिना अपनी पत्नी को बताये, बक्सा
बनाने का काम हाथ में ले लिया। बेशक वह यह न
जोरा और वोलाद्या, पाच पाच लोगो के ग्रुप-लीडर थे
अधिकारा के नाते स्वय महत्त्वपूण व्यक्ति थे।

इन दोनो छोकरो की दोस्ती इतनी गहरी हो गयी
बिना एक दूसरे का देखे एक दिन भी जिन्दा न रह सक

ल्यूस्या ओस्मूखिना और जोरा के सबध पहले की ही तरह औपचारिक थे। उनमें अब भी पहले-सा तनाव था।

बेशक, उनके स्वभाव और रुचिया अलग अलग थी। दोनो अच्छे-खासे पढे लिखे थे किन्तु जोरा को विज्ञान और राजनीति की बाते पसद थी और ल्यूस्या को मुख्यत उन किताबो में मजा आता जिनमें मानव-भावनाओ का उल्लेख होता। हा, यहा यह जान लेना चाहिए कि ल्यूस्या, जोरा से बडी थी। हा जब कभी जोरा अस्पष्ट भविष्य में झाकने का प्रयास करता तो उसे यह सोच सोचकर गुदगुदी-सी होने लगती कि ल्यूस्या का तीन विदेशी भाषाओ पर पूरा अधिकार रहेगा। फिर भी वह इस तरह की ट्रेनिंग काफी न समझता और उसे सिविल इजीनियर बनने के लिए आग्रह करता रहता। इसमे वह चतुराई से काम न लेता था।

जब से दोनो मिले थे, तभी से जब जब ल्यूस्या की स्वच्छ और चमचमाती हुई आखें जोरा की काली काली और सकल्परत आखो से मिलती तो जैसे दो तलवारे झनझना उठती। वे अधिकतर अलग अलग न रहकर साथ ही रहा करते और एक दूसरे पर उत्तर प्रत्युत्तरा से प्रहार करते—ल्यूस्या के प्रत्युत्तर उद्धत और दशक होते और जोरा के नियत्रित और उपदेशात्मक।

आखिर वह दिन भी आया जब जोरा ने अपने मित्रा अर्थात् वोलोद्या ओस्मूखीन, 'घपरक' तोल्या और वान्या जेम्नुखोव को अपने कमरे में जमा किया। वान्या उन सबमें बडा था, उनका नेता था। अब वह कवि न था बल्कि 'तरुण गार्ड' के अधिकाश परचा और नारो का लेखक था। इसलिए छापाखाना बनने में वान्या की सब से बडी दिलचस्पी थी। छापने की मशीन बन चुकी थी। तोल्या ओर्लोव नाक बजाता और खासता हुआ—लग रहा था जसे ये आवाजें किसी पीपे में से निकल रही है—बार बार कमरे में चहलकदमी करता हुआ यही

प्रदर्शन करता रहा कि जरूरत पडने पर अकेला एक ही आदमी सारी मशीन उठाकर अन्यत्र ले जा सकता है।

उनके पास एक चिपटा ब्रश और रोलर था ही। छाप की स्याही के स्थान पर जोरा के पिता ने जिसने जिन्दगी भर लकडी पर रंगाई और वानिश का काम किया था, 'एक मौलिक घोल' तयार कर दिया था। अब सभी मित्र अक्षरो को छाट छाटकर केसो में रखने लग और वाया जेम्नुखाव, जिसे सारे अक्षर 'o' जैसे लगते थे, —क्योकि उसकी नजर कमजोर थी—जारा के पलग पर बैठकर पूछने लगा कि इस एक 'o' से वर्णमाला के सारे अक्षर बनते कैसे है।

ठीक इसी क्षण खिडकी पर दस्तक हुई। खिडकी पर पर्दा पड़ा था। दस्तक से वे जरा भी विचलित न हुए क्योकि वस्ती के इस दूसरे कोने में कोई जमन या पुलिस वाला कभी न आया था। वस्तुत ग्रोलेग और तुर्केनिच आये थे। वे मशीन पर शीघ्र से शीघ्र कुछ छपाना चाहते थे, इसी लिए घर बैठे रहना उन्हे असम्भव लगा और वे यहा चले आये।

किन्तु बाद में पता चला कि सचमुच वे इतने मुक्त न थे। तुर्केनिच ने चुपचाप जारा को एक ओर बुलाया और दोनो साथ साथ बगीचे में चले गये। इधर ग्रोलेग, वोलाद्या और तोल्या की सहायता करने लगा, जैसे कुछ हुआ ही न हो।

तुर्केनिच और जोरा बगीचे के बाडे के अन्तिम छोर तक गये और घास पर पड रहे। बार बार बादल सूर्य को ढक लेते। शरद काल निकट था, अत धूप की अधिकाश गरमी कम हो चुकी थी। हाल की वर्षा के कारण घास और जमीन दोनो ही भीग गयी थीं। तुर्केनिच जारा के पास झुककर फुसफुसाने लगा। जारा ने उसके प्रश्न का उत्तर दृढ़ विश्वास के साथ दिया। तुर्केनिच ने इसी उत्तर की आशा भी की थी।

जोरा ने कहा–"बहुत अच्छा। यह ठीक भी है। इससे दूसरे गद्दारों को अच्छा सबक मिलेगा। बेशक, मैं राजी हूं।"

ओलेग और वान्या तुर्केनिच को गुप्त जिला पार्टी कमिटी की अनुमति मिल चुकी थी। अब उनके सामने जो काम था उसके लिए काफी चतुराई और बारीकी की जरूरत थी। फिर से युवकों की तलाश की जानी थी जो इस काम को न्याय और अनुशासन की भावना से सम्पन्न करें। इन युवकों में नैतिक कर्तव्य की भावना और इतनी संकल्प शक्ति की भी आवश्यकता थी कि उनके हाथ न कांपें।

तुर्केनिच और सेर्गेई त्युलेनिन ने पहले-पहल सेर्गेई लेवाशोव के नाम पर विचार किया था। वह लगन का पक्का और अनुभवी छोकरा था। फिर उनके सामने कोवल्योव का नाम आया था–निर्भीक, विवेकशील हृष्ट-पुष्ट। उन्हें ऐसे ही किसी व्यक्ति की जरूरत थी। त्युलेनिन ने पिरोज्होक के नाम का सुझाव दिया था, पर तुर्केनिच ने यह सुझाव न माना क्योंकि पिरोज्होक असावधानी बरत सकता था। त्युलेनिन अपने साथी, वीत्का लुक्याचेंको के नाम पर भी विचार करना नहीं चाहता था–वह उसे इस अप्रिय काम से दूर रखना चाहता था। अन्तत वे जोरा के नाम पर एक मत हो गये। उन्होंने जोरा को चुनकर कोई गलती न की थी।

'पर क्या तुमने अभी तक यह तय नहीं किया कि 'फौजी अदालत' में कौन कौन होंगे ?" जोरा ने पूछा, "लम्बी चौड़ी जांच की कोई जरूरत नहीं, पर यह जरूरी है कि फांसी देने से पहले अभियुक्त यह देख ले कि उसका विधिवत न्याय-परीक्षण हुआ है"।

"हम ही फौजी अदालत के सदस्य होंगे", तुर्केनिच बोला।

"हम जनता के नाम पर उसे सजा देंगे, क्योंकि हम यहां के लोगों के कानूनी प्रतिनिधि हैं!" जोरा की अविचलित काली आंखें चमचमा उठीं।

"दिल का मजबूत है छोकरा," तुर्केनिच न सोचा। "हमें अब भी एक व्यक्ति की और जरूरत है," उसने कहा।

जोरा ने इस प्रश्न पर विचार किया और उसकी कल्पना के आगे वोलोद्या का चित्र घूम गया। किन्तु इस काम के लिए वोलोद्या बड़ा ही भावुक और कामरा स्वभाव लड़का था।

"मेरे ग्रुप में एक युवक है–रादिक युर्किन। वह हमारे ही स्कूल का है। तुम उसे जानते हो। मेरा ख्याल है, वह ठीक रहेगा।"

'वह तो अभी बच्चा है। उसके दिल पर ज्यादा असर होगा।"

"नही, यह बात नही बच्चे ऐसी चीजो को महसूस नहीं करते। अजी महसूस ता हम जैसे प्रौढ लोग करते हैं," जोरा ने कहा, "बच्चे हमारी तरह नही होते। वे सख्तदिल होते हैं। रादिक बड़ा भयकर बच्चा है। और हमेशा खीरे जैसा ठढा रहता है।"

इस समय, जब जोरा का पिता शैड के नीचे उन लोगो के लिए कुछ बढईगीरी के काम में लगा था, जोरा ने देखा कि उसकी मा चाभी के छेद में से झाक रही है। फलत जोरा को कहना पडा कि अब वह पूरी तरह अपने पैरा पर खडा हो सकता है और उसके साथी भी इतने समझदार हैं कि अगर सब के सब कल ही अपनी शादी कर ले तो उस याने उसकी मा को आश्चर्य नही होना चाहिए।

जोरा और वान्या तुर्केनिच वक्त पर कमरे में लौटकर आये–टाइप छाटे जा चुके थे और वोलोद्या कई लाइनो के लिए टाइप बिठा रहा था। जोरा न ब्रश 'मौलिक घोल' में डुबोया और लाइनो पर लगा दिया। वोलोद्या ने लाइनो पर एक कागज रखा और रोलर चला दिया। छपे हुए लेख के चारो ओर एक गोलसूचक काली रेखा-सी बनी थी जो धातु की प्लेट के कारण बन गयी थी। वस्तुत अनुभव न होने के कारण

वालोद्या न प्लेट को कारखाने में, जहा वह काम करता था, अच्छी तरह रेता न था। इसके अतिरिक्त अक्षर भी एक आकार के न थे, पर उन्हें किसी प्रकार इन्ही से काम चलाना था। सबसे ज़रूरी बात यह थी कि उनके सामने एक छपा हुआ पन्ना था और जो कुछ वोलोद्या ने कम्पोज किया था उसे सभी पढ सकते थे–

"हमसे नाता तोडकर वाया के साथ न रहो हमें परेशान न करो हम तुम्हारे मन का भेद जानते हैं नानानाना।"

वोलोद्या ने समझाया कि ये कुछ पक्तिया उसने जोरा को समर्पित की है और वह उन्ही शब्दो के चुनाव की कोशिश करता रहा है जिसमें 'न' अक्षर अधिक हो। इसी लिए नानानाना शब्द छप गया है–इसका कारण यही था कि उनके केस में 'न' अक्षर अधिक थे। फिर विरामचिह्न न होने की वजह यह थी कि वह भूल गया था कि इन चिह्नो को भी अक्षरो की ही भाति रखा जाता है।

सहसा ओलेग उत्तेजित हो उठा।

"जानते हो 'पेर्वोमाइका' की दो लडकिया कोमसोमोल में भरती होने का अनुरोध कर रही है?" उसने बारी बारी से उनकी ओर देखते हुए कहा।

"और मेरे ग्रुप में भी एक छोकरा है जो कोमसोमोल में भरती होना चाहता है," जोरा ने कहा। यह छोकरा वही रादिक यूकिन था जो जोरा के 'पाच के ग्रुप' में तबतक अकेला सदस्य था।

"हम 'तरुण गार्ड' छापाखाने का उपयोग कोमसोमोल के अस्थायी सदस्यता-कार्ड छापने के लिए कर सकते हैं," ओलेग बोला, "जानते नही, अब जब हमारे सगठन को औपचारिक रूप से मान्यता मिल चुकी है तो हमें कोमसोमोल में सदस्य भरती करने का भी अधिकार है।'

उसकी आँखें अजगर जैसी थी—असल्य मामल झुरिया के बीच गडी हुई सी। बेशक उसका लम्बा शरीर, पुराने फैशन की चोंचदार टोपी से ढका उसका छोटा-सा सिर, और उसके हाथ-पैर हरकत कर रहे थे, फिर भी वह मुरदा ही था।

चाहे वह दिन में ड्यूटी पर हो या रात में अपने 'शिकार' पर, प्रतिशोध उसके पीछे पीछे लगा रहता था। वह उसे उस समय भी विस्मय में से घूरा करता था, जब वह अपने अन्तिम 'शिकार,' किसी परिवार से चुराये गये वस्त्राभूषण अपनी पत्नी के साथ देखता निरखता था। प्रतिशोध उसका एक एक अपराध जानता था और उनका लेखा-जोखा रखता था। यह प्रतिशोध उसका पीछा करता था एक छोकरे के वेष में, जो अभी पूरी तरह जवान भी न हुआ था और जो बिल्ली की तरह चपल था। उसकी आखा को अंधेरे में भी सूझता था। यदि फोमान को पता चल जाता कि यह प्रतिशोध—नग पैरोवाला यह छोकरा—इतना निमम है तो वह उस हरकत को भी बन्द कर देता जो बाहयत उसके जीवित होने का सकेत कर रही थी।

फार्मीन मुर्दा था क्योकि उसके काय सीधे-सादे स्वाथ और बन्द की भावना से प्रेरित न होते थे। वे अफसरी की शान और ठाटबाट के बाह्याडम्बर के पीछे लोगो के प्रति, यहा तक कि अपना के प्रति भी, तथा उस जीवन के प्रति भी सर्वांगीण घृणा से प्रेरित होते थे जो उसे व्यतीत करना पड़ता था।

इस घृणा के कारण सदा ही फार्मीन का दिमाग खराब रहा करता किन्तु यह घृणा कभी इतनी उग्र और विनाशात्मक न हुई थी, जितनी इस समय थी, यद्यपि उसके मानसिक अस्तित्व का अन्तिम अंश मानो भी पराजयी हो गया था। यद्यपि उसके बडे बडे अपराध छिप न सके थे भी उसको यह आशा हमेशा ही लगी रहती थी कि उसे इतना

प्राप्त होगा कि सभी उनसे डरेंगे और इस डर के कारण ही उसकी इज्जत करेंगे, उनके सामने सिर झुकायेंगे। फिर, पुराने जमाने के इज्जतदार लोगों की तरह ही वह मान-सम्मान के बीच रहता हुआ स्वतंत्रता और समृद्धि का जीवन व्यतीत करेगा।

किन्तु बात बिलकुल उल्टी सिद्ध हुई। वह अपनी सम्पत्ति की सुरक्षा की कोई कायदे की व्यवस्था न कर पाया और न अब इसकी कोई उम्मीद ही थी। वह जिन लोगों को गिरफ्तार करता था या मौत के घाट उतारता था उनकी सारी चीजें चुरा लेता था। और यद्यपि जर्मन उसकी इस चोरी को नजरअन्दाज कर देते थे फिर भी उनकी इन हरकतों से नफरत करते थे और उसे एक भाड़े के टट्टू, परजीवी, नीच, लुटेरे से अधिक कुछ नहीं समझते थे। वह जानता था कि जर्मनों को उसकी सेवाओं की तभी तक जरूरत रहेगी जब तक कि वह उनका शासन मजबूत बनाने में उनकी इच्छानुसार काम करता रहेगा और जब शासन मजबूत हो जायेगा और शान्ति और सुरक्षा, अर्थात् Ordnung-'नयी व्यवस्था' की स्थापना हो चुकेगी तो उसे निकाल फेंकेंगे या दुनिया से ही उसका टिकट कटा देंगे।

यह ठीक है कि बहुत-से लोग उससे डरते थे, परन्तु दूसरों ही की तरह वे भी उससे घृणा करते थे, उससे दूर रहते थे। और बिना कायदे की हैसियत और लोगों की इज्जत प्राप्त किये हुए, उसे उन सारे वस्त्राभूषणों से भी कोई सतोष न हो पाता था जो वह अपनी बीवी के लिए घर लाता था। उसकी और उसकी पत्नी की जिंदगी पशुओं से भी गयी-बीती थी—कम से कम पशुओं को अपने चारे, धूप और सन्तानोत्पत्ति से सतोष तो होता है।

इग्नात फोमीन की ड्यूटी थी—अन्य पुलिस वालों की ही तरह, सड़कों पर गश्त लगाना, दफ्तर की इमारतों की चौकसी करना

और लोगो के घरा में छापे मारना और गिरफ्तारिया करने में सहायता देना।

इस विशेष रात को वह प्रशासन में ड्यूटी पर था, जिसके लिए पार्क में, गोर्की स्कूल की इमारत इस्तेमाल की जाती थी।

वृक्षो की शाखाओ में सरसराती और पेड के पतले तना के इर्द गिर्द विलाप-सा करती हुई हवा सडका पर भीगी भीगी पत्तिया बिखर रही थी। कुहरे के बीच हल्की हल्की बूदाबादी हो रही थी। नीचे लटका हुआ सा आसमान अधकारपूर्ण और मेघाच्छन्न था। पर, कुहरे के पीछ चाद और सितारो का आभास मिल रहा था। पेडो के छोटे छोटे झुरमुट काले और भूरे धब्बो की तरह लग रहे थे। उनकी आर्द्र आकृतिया आकाश के साथ एकाकार होकर उसी में घुल रही थी।

सडक के दोना ओर एक दूसरे के सामने खडे स्कूल का पक्का भवन और लकडी का बना परित्यक्त ग्रीष्मकालीन थियेटर भवन अधेरे में विशाल चट्टानो जैसे लग रहे थे।

फोमीन इन्ही दानो इमारतो के बीच लम्बे लम्बे डग भरता हुआ सडक पर गश्त लगा रहा था। उसके शरीर पर एक लम्बा, काला ओवरकोट था, जिसका कॉलर उल्टा हुआ था। ओवरकोट बटनो से कसा था। वह कभी इमारतो के उस पार कदम भी न रखता मानो जजीर से बधा हो। वह समय समय पर पार्क के मेहराबदार फाटक के पास पत्थर स्तभ से सटकर खडा हो जाता। वह अधेरे में, सादोवाया मार्ग के मकानों की दिशा में टकटकी लगाये खडा था कि सहसा एक शक्तिशाली हाथ ने पीछे से उसका गला इस जोर से दबोचा कि उसके मुह से आह तक न निकल सकी। तब उसी हाथ ने उसे पीछे घसीटा यहा तक कि उसकी रीढ में कोई चीज चटकी और वह जमीन पर गिर पडा। उसी क्षण उसके शरीर पर और बहुत-से हाथ भी बरसने लगे। एक हाथ अभी तक

उसका गला जकडे था, दूसरा उसकी नाक लोहे की सडसी की तरह दवाये था और तीसरा मुह में डाट ठूस रहा था। किसी ने तौलिये जैसी किसी रूखी चीज़ से उसका जबडा कसकर बाध दिया था।

जब उसे कुछ होश आया तो उसने देखा कि उसके हाथ-पैर बाध दिये गये है और वह धाक के फाटक की लकडी की मेहराब के नीचे पीठ के बल पडा है। आकाश पर धुधलका छा रहा था और सिर के ऊपर लटकती हुई धुध का शामियाना-सा तना था।

उसके दोनो ओर कुछ मानव आकृतिया निश्चेष्ट खडी थी। वह उनके चेहरे नही पहचान पा रहा था। उनमें से एक छरहरी आकृति वाले ने मेहराब पर एक नज़र डाली और कहा—

"यही जगह हमारे लिए ठीक रहेगी!"

तब एक नाटा और दुबला-पतला छोकरा बडी होशियारी से अपने हाथो, केहुनियो और घुटनो के बल मेहराब पर चढ गया और कुछ समय तक उसके बीचाबीच कुछ खटपट करता रहा। तभी सहसा अपने ऊपर कुछ ऊचाई पर उसने, आकाश के झुटपुटे मे, इधर उधर हिलता-डुलता हुआ मोटे रस्से का एक फदा देखा।

"इसे दोहराकर लो," जमीन पर खडे एक छोकरे ने हुक्म दिया। उसकी टोपी की काली नोक आकाश की ओर इशारा कर रही थी।

फोमीन ने आवाज़ सुनी और सहसा उसकी निगाहो के सामने शाधाई ज़िले में, उसके रहने का मकान, कमरे मे रखे पौधा के गमले, मेज के पास बैठा हुआ, कोयले के काले दागो से भरा चेहरे वाला एक भारी-भरकम-सा आदमी और यही छोकरा घूम गये। फोमीन का लम्बा बदन, ठडी, गीली ज़मीन पर पडे हुए कीडे की भाति ज़ोर से तडपने लगा। वह सिकुडता फैलता और हिलता-डुलता हुआ उस जगह से कुछ दूर तक रेग गया किन्तु एक व्यक्ति ने अपने पैर से फिर फोमीन को उसकी पहली

ही जगह पर धकेल दिया। इस व्यक्ति के कधे बेहद चौडे थे, बाहें मजबूत थी और वह नाविको की जैकेट जैसा एक भारी-सा कोट पहने था।

फोमीन ने कावल्याव को पहचान लिया। वह उसी के साथ पुलिस दल में काम करता था, किन्तु उसे नौकरी से निकाल दिया गया था। उसी के पास खडे उसने प्रशासन के एक मोटर-ड्राइवर को भी पहचान लिया। यह भी चौडे कधोवाला एक मजबूत छोकरा था। फोमीन ने उसी दिन उसे गैरेज में देखा था। वह ड्यूटी पर जाने से पहले सिगरेट के दो चार कश लगाने गैरेज में गया था। आश्चर्य की बात यह है कि उस स्थिति में पडे हुए भी फोमीन के दिमाग में तत्काल यह विचार कौंध गया कि प्रशासन की लारिया जो रहस्यपूर्ण ढग से बार बार फेल हो जाती हैं उसकी जड में शायद यही छोकरा होगा, शायद यही मुख्य अपराधी है। जमन प्रशासन ने इस टूट फूट की शिकायत भी की थी। बेशक, इस मामले की रिपोर्ट की जानी चाहिए। ठीक इसी मौके पर उसे अपने ऊपर एक आवाज सुनाई दी, जिसका उच्चारण आर्मीनियाई जैसा था। वह बडी गभीरता के साथ कह रही थी—'सोवियत सघ के नाम पर ..."

फोमीन तुरन्त जडवत् पडा रह गया। उसने अपनी आखें ऊपर आसमान की ओर उठायी और उसे एक बार फिर धुधले भूरे आकाश की पृष्ठभूमि में, मोटे-से रस्से का एक फन्दा लटकता हुआ दिखाई दिया। वह दुबला पतला छोकरा मेहराव के सिरे पर चढा हुआ अभी तक उसको अपने पैरो से साधे नीचे की ओर टकटकी बाधे देख रहा था। तभी आर्मीनियाई उच्चारण वाली आवाज बन्द हुई। फोमीन के मन में इतना अधिक डर बैठ गया कि वह बुरी तरह कापने लगा। तभी कुछ शक्तिशाली हाथो ने उसे उठाया और उसके पैरो पर खडा कर दिया। मेहराब पर जमे हुए दुबले छोकरे ने वह तौलिया काट दिया जिससे उसका मुह बधा था और फदा उसकी गरदन में डाल दिया।

फोमीन ने अपने मुह में से डाट निकाल फेंकने का प्रयत्न किया, किन्तु उसकी एक न चली और उसका शरीर तडपता हुआ हवा में लटक गया। उसके पैर जमीन तक पहुचने में असमथ थे। उसका लम्बा काला ओवरकोट वैसे ही उसके शरीर से सटा था। वाया तुर्केनिच ने उसे घुमाकर उसका चेहरा सादोवाया माग की ओर कर दिया और एक पिन की सहायता से उसकी छाती पर एक कागज लगा दिया जिसमें उस अपराध की चर्चा थी जिसके आधार पर उसे फासी दी गयी थी।

इसके बाद सभी लोग अपने अपने घर खिसक गये। पर नन्हा रादिक यूक्नि, रात बिताने के लिए, उपनगर में स्थित जोरा के मकान में पहुचा।

"क्या हाल है तुम्हारा?" जारा ने जार ज़ोर से फुसफुसाते हुए रादिक से पूछा। उसकी काली काली आखें अधेरे में चमचमा रही थी।

रादिक काप रहा था। "मुझे नीद आ रही है, मेरी आखें भी नहीं खुल रही है   मैं जल्दी सो जाने का आदी हू," उसने उत्तर दिया और विनम्र दृष्टि से जोरा को देखने लगा।

सेर्गेई त्युलेनिन विचारो में डूबा हुआ, पाक में पेडा के नीचे खडा था। उसने फोमीन के घर में जिस हृष्ट-पुष्ट, सदय व्यक्ति को देखा था उसी के साथ फोमीन ने ग़द्दारी की थी और उसे जमना के हाथ सौंप दिया था। और जैसे ही सेर्गेई को इसकी खबर लगी थी उसने उसे ठिकाने लगाने की शपथ खा ली थी। आज वह शपथ पूरी हो चुकी थी। सेर्गेई ने इस बात पर ज़ोर ही न दिया था कि उसे फासी दी जाये बल्कि इस काम के लिए उसने अपनी समस्त शारीरिक और मानसिक शक्ति भी लगा दी थी। उसे अपने काम में सफलता मिली थी और उसे सतोप के साथ साथ उत्तेजना का अनुभव भी हो रहा था। उसने गद्दारी का बदला लिया था। अब वह बेहद थक चुका था। उसका जी कर रहा था कि वह गम पानी में नहाये धोये, किमी सीधे, सरल विषय पर मित्रा के साथ बाते

करे, जैसे पत्तियों की गुनगुनाहट, झरने की झरझर, थकी और मुंदी आंखों में पड़ता हुआ सूर्य का प्रकाश

यदि इस समय वह वाल्या के पास होता तो खुशी से नाच उठता। पर रात में उसके यहां जाना उसके लिए असंभव था, खास तौर से जब घर में उसकी मां थी, उसकी छोटी बहन थी। इसके अलावा, वाल्या नगर में थी भी तो नहीं। वह तो आस्नोदोन की छोटी-सी बस्ती में गयी हुई थी।

तो उस विचित्र और कुहरे-भरी रात में, जब लगातार बौछार पड़ रही थी, सेर्गेई ने वान्या जेम्नुख़ोव के घर की खिड़की खटखटायी। रास्ते भर वह अपनी भीगी कमीज़ में कांपता रहा था। सर्दी से उसके पैर नंगे पड़ गये थे और कीचड़ में सन चुके थे।

दोनों साथी, दिये के प्रकाश में, रसोईघर में बैठ गये। मकान की खिड़कियों पर मोटे मोटे काले परदे पड़े थे। आग चट्चट् बोल रही थी, अंगीठी पर एक बड़ी-सी केतली गर्म हो रही थी और वान्या ने अपने मित्र को गर्म पानी से नहलाने धुलाने का निश्चय कर लिया था। सेर्गेई आग के बिल्कुल पास उकड़ूं बैठा था। खिड़की पर हवा के झोंके पड़ रहे थे और पानी की बूंदें उस पर गिर रही थीं। बूंदों की पटर-पटर और हवा के दबाव से रसोईघर का दिया तक झिलमिलाने लगा था। दोनों मित्र सोच रहे थे कि ऐसे समय में स्तेपी का चक्कर लगानेवाले किसी एकाकी यात्री की कितनी दयनीय दशा होती होगी। इसके विपरीत, एक छोटे-से गर्म रसोईघर में दो मित्रों का साथ साथ रहना कितना सुखद है।

वान्या की आंखों पर चश्मा था। उसके पैर नंगे थे। उसने अपनी गहरी आवाज़ में धीरे धीरे कहना शुरू किया—

'मैं उसे अपनी कल्पना की आंखों से देखता हूं—किसान का छोटा सा घर, घर के बाहर बर्फ़ का तूफ़ान गरज रहा है और उसके पास नंग

अरीना रोदिग्रोनोव्ना के सिवा और कोई नही। बाहर तूफान है और नस चर्खा चला रही है। चर्खा भनभना रहा है, आग अगीठी मे चटक रही है। मै इस सब का अनुभव कर सकता हू। मै खुद देहात का रहनेवाला जो हू। और तुम तो जानते ही हो कि मेरी मा लिखना-पढना नही जानती। वह भी देहात ही में पल है न! तुम्हारी मा की तरह मुझे अब भी अपना छोटा-सा घर याद है, मुझे याद है कि म अगीठी के ऊपर तख्ते पर लेटा करता था। तब मेरी उम्र छ साल की थी। उस समय मेरा भाई साशा स्कूल से घर आता था और कोई कविता रटा करता था मुझे यह भी याद है कि जानवरो के झुड में से मादा भेडो का खदेडा जाता था और मै एक भेड पर चढकर अपने छाल वाले जूतो की एडिया उसकी कमर में मारता था, इसलिए कि वह आगे बढे, आगे चले, पर वह मुझे नीचे गिरा देती थी।

वाया सहसा घबराकर चुप हो गया। किन्तु कुछ ही क्षणो में फिर बोला—

"जब कभी उसका कोई मित्र उससे मिलने आता तो वह बडा खुश हो उठता मसलन् पुश्चिन उससे मिलने आता था, इसकी मुझे आज भी याद है। घोडे की घटियो की आवाज उसके कान में पडती थी और वह सोचने लगता था—वह कौन हो सकता है? क्या सशस्त्र पुलिस के सिपाही तो उसे पकडने नही आ रहे है?—पर नही, वह उसका मित्र पुश्चिन होता फिर मैं अकेले नस के साथ बैठे हुए भी उसकी कल्पना कर सकता हू। वे लोग कही बहुत दूर एक हिमावृत्त गाव में रहते थे, जिसमें कही पर भी रोशनी नही थी। उन दिनो रोशनी के लिए वे खपचियां इस्तेमाल करते थे। याद है तुम्हे—'तूफानी बादल, तूफानी बादल, गगन हो उठता श्यामल, श्यामल?' जरूर याद होगा तुम्हे। यह पक्ति तो मेरे अन्तस् तक को झकझोर देती है।"

वाया उठ खडा हुआ और किसी कारणवश सेर्गेई के सामने खडा होकर यह कविता पढने लगा—

> प्यारे, वडे पुराने साथी,
> तुमने दुख में हाथ बटाया, आओ, साथ पियें।
> प्याले भरे, डुवायें दुख को,
> जीने का बस यही ढग है, आओ, ज़रा जियें।
> आओ, गायें फुदकी के गुन—
> उसकी कथा कि कैसे वह सागर के पार गई।
> या गायें वह गीत कि जिसमें
> होते तडका पानी ले आती है भरकर
> नई नवेली, अलवेली वह नार कि जैसे
> छवि की छूट नई।"*

सेर्गेई अगीठी के पास बिलकुल शात बैठा था। उसके भरे हुए ओंठ आगे निकले हुए से थे। उसकी आखें वाया पर लगी थी और उनमें कठोरता और मदुता दोना ही झलक रही थी। अगीठी पर चढी हुई केतली का ढक्कन खडखडाने लगा। उसके पानी में बुलबुले उठ रहे थे और हिमहिसाहट की सी आवाज़ निकल रही थी।

"काफी, कविता हो चुकी।" जैसे वतमान में आखें खोलता हुआ वाया बोला, "चलो कपडे उतारो। मैं तुम्हे अव्वल दर्जे का स्नान कराऊगा," उसने प्रसन्नतापूवक कहा। "सारे कपडे उतारो, तकल्लुफ़ न करो। मेरे पास तुम्हारे लिए सीसा भी है।"

सेर्गेई कपडे उतारने लगा। इधर वाया ने अगीठी पर से केतली उतारी। फिर एक तख्त उठाकर ले आया और स्टूल पर रख दिया। ...

---

* अ० पूश्किन—'सर्दी की शाम'

पास में कपड़ धोनेवाले साबुन की एक टिकिया भी रख दी जिसमें से कुछ दुर्गन्ध-सी आ रही थी। टिकिया पहले से ही बहुत कुछ घिस चकी थी।

"तम्बोव प्रदेश में, हमारे गाव में एक बूढ़ा रहता था जो जिन्दगी भर मास्को के सन्दुनोव गुसलखाने में ही काम करता रहा," अपनी लम्बी लम्बी टागें फैलाकर, स्टूल पर बैठते हुए वान्या ने कहा, "जानते हो ऐसे गुसलखाने में काम करने के क्या मान होते है? अच्छा थोड़ी देर के लिए कल्पना करो कि तुम एक गुसलखाने में गये हो और मान लो तुम एक ठाठबाट वाले आदमी हो, या खुद अपनी सफाई करने में बड़े काहिल हो। और तुम अपने गुसल के लिए वहा काम करनेवाले एक व्यक्ति को किराये पर लेते हो। यह आदमी एक खुर्राट मुछल होता है और तुम्हारे बदन पर कसकर खीसा लगाता है। जिस आदमी को म जानता था वह यही कहा करता था कि उसने अपनी जिन्दगी में कोई पद्रह लाख व्यक्तियो को खीसा लगाया है। और जानते हो उसे अपने इस काम का बड़ा घमड था—उसने इतने लोगो को साफ-सुथरा बनाया था। हा, तुम तो खुद ही जानते हो लोग कैसे होते है। एक हफ्ते के बाद व फिर ज्यो के त्यो गदे हो गये।

सर्गेई ने दात निकाले और बदन पर से आखिरी कपड़ा उतारकर एक ओर रखा, तश्त में कुछ और गरम पानी उड़ेला और अपना रूखा और घुघराले बालोवाला सिर उसमें घुसा दिया।

"तुम्हारे कपड़े ऐसे नही है जिनपर कोई गर्व करे," गीले कपड़ो को अगीठी के ऊपर बिछाते हुए वान्या ने कहा, "मुझसे भी गये बीते हैं पर मैं समझता हू तुम कायदे कानून जानते हो यहा यह पानी इस गदी बाल्टी में डाल दो और साफ पानी ले लो। नीचे पानी गिरने की चिन्ता न करो। फर्श मैं बाद में साफ कर लूगा।"

सहसा वान्या के चेहरे पर एक फीकी-सी मुस्कान दौड गयी और

वह अपने लम्बे लम्बे और दुबले-पतले हाथ फैलाता हुआ – मानो व सहसा भारी और सुन हो गये हो – गहरी आवाज़ में बोल उठा –

"अब जरा घूम जाइये, मालिक, मैं आपकी पीठ साफ कर दू।" सेर्गेई ने, अपने मित्र को कनखियो से देखते हुए, खीसे में साबुन लगाया और दात निकाल दिये। फिर उसने खीसा वान्या को थमाया और अपना धूप से झुलसी हुई पतली और मासल पीठ वान्या की ओर कर दी। सेर्गेई की रीढ की हड्डी खूब उभरी हुई थी।

आखें कमज़ोर होने के कारण वान्या कुछ अटपटे ढग से ही सेर्गेई की पीठ मलता रहा। पर सेर्गेई सहसा हाकिमो के से लहजे में, नाराज़ होकर बोल उठा –

"क्या बात है मेरे दोस्त? कमजोर हो गये हो या काहिल? मैं तुम्हारे इस काम मे खुश नही हू"

"हुजूर, आप खुद ही देख ले न! मुझे खाने को जो कम मिलता है!" वान्या ने जैसे बडी गभीरता के साथ अपनी सफाई पेश की।

ठीक इसी समय रसोईघर का दरवाजा खुला। उस समय वान्या सींगवाले फ्रेम का चश्मा पहने और आस्तीन उठाये, और सेर्गेई नगधडग पीठ पर साबुन लगाये था। दोनो ने एक साथ दरवाज़े की ओर घूमकर देखा कि रसोई के दरवाज़े पर बनियाइन और जाघिया पहने वान्या का पिता खडा था। लम्बा-सा कद, दुबले-पतले भारी हाथ उसी प्रकार झूलते हुए जैसे वान्या अभी झुला रहा था। उसने दोनो पर थकी-सी आखें उठायी। वहा वह कुछ क्षणो तक खडा रहा, तब बिना एक भी शब्द कहे घूमा और दरवाज़ा बदकर, बाहर निकल गया। दोनो ने खाने के कमरे की ओर जाते हुए गलियारे में उसके पैरो की आहट सुनी।

"तूफान थम गया," वान्या ने शाति से कहा। किन्तु अब वह पहले जैसे उत्साह से सेर्गेई की पीठ पर सीखा नही मल रहा था। "हुज़ूर कमिश्नर

"भगवान देगा," सेर्गेई ने उत्तर दिया किन्तु उसे यह विश्वास न था कि गुसलखाने में काम करनेवाली किसी नौकर से ऐसा कहना उचित भी है या नही और ठडी सास भर दी।

"हा तुम्हारी गाडी कैसी चल रही है, यह मैं नही जानता, किन्तु हमारे माता पिता हमारा कडा विरोध करेंगे।" जिस समय साफ-सुथरा सेर्गेई एक बार फिर अगीठी के पास की छोटी मेज के निकट बैठा तो वाया ने गम्भीरता से कहा।

किन्तु सेर्गेई का इस बात का भय न था कि उसके मा-बाप उसके रास्ते में बाधक बनेंगे। उसकी आखें वाया के चेहरे पर लगी थी, लेकिन उसके विचार कही और चक्कर लगा रहे थे।

"ज़रा कागज़-पेंसिल ता देना। मैं अभी एक मिनट मे चला जाऊगा, पर पहले मुझे कुछ लिखना है," वह बोला।

और जब वाया रसोईघर साफ करने में लगा था उस समय सेर्गेई कागज़ पर लिख रहा था

"वाल्या, मैंने साचा भी न था कि तुम्हारे अकेले चले जाने पर मेरा दिल इतना बैठ जायेगा। मेरे मन में बार बार यह ख्याल उठता है कि सब कुछ ठीक ठाक भी है या नही। हमें कभी भी एक दूसरे से अलग नही होना चाहिए। जो कुछ कर मिलकर कर। वाल्या, यदि म मारा जाऊ तो तुम एक काम जरूर करना--मेरी कब्र पर आकर दा आसू बहा देना।"

और बर्फ जैसी झीसी में, वह नगे पैर, 'लघु शाखाई' से हाता हुआ चक्कर काटता हुआ अपनी राह चल पडा। वायु जैसे कराह रही थी और वह कछार और खड्डो से होकर आगे बढ रहा था। वह दिन निकलते ही अपना पुर्जा वाल्या की छोटी बहन ल्यूस्या के हाथो मे थमा देने के उद्देश्य से, पार्क से होकर देरेव्यान्नाया मार्ग पर बढता चला जा रहा था।

अध्याय ७

एक दिन प्रातःकाल वाल्या और नताल्या अलक्सेयेव्ना ने स्तपी से होकर जानेवाली सडक पकडी। नताल्या अलेक्सेयेव्ना किरमिच के जूते पहन, हमेशा की तरह, अपने कामकाजी ढग से चमचमाती हुई गीली सडक पर चल रही थी। किन्तु वाल्या के दिमाग में अपनी मा के सबध में तरह तरह के विचार उठ रहे थे इसलिए वह अन्यमनस्क और सुस्त थी।

वाल्या जो काम पहले-पहल अकेले करने जा रही थी, उसमें उसके लिए तो खतरा था ही, पर मा के लिए?

जब वाल्या ने सामान्य ढग पर मा को बताया कि वह कुछ दिन के लिए नताल्या अलेक्सेयेव्ना से मिलने जा रही थी, तो मा ने उसे किस ढग से देखा था। ऐसे वक्त, जब वाल्या के पिता के अभाव में उसकी मा को इतना अकेलापन महसूस हो रहा था, उसकी बेटी के स्वार्थ ने मा के दिल को कितना दुखाया होगा। और मान लो उसे पहले से ही कुछ पता हो गया हो तो?

"मै लोस्या येलिसेयेंको से तुम्हारा परिचय करा दूगी " नताल्या अलेक्सेयेव्ना कह रही थी, "वह एक अध्यापिका है और मेरी मा की पडोसिन है। या था रहें वह और उसकी मा, और मेरी मा, दो कमरा के एक फ्लट में एक साथ रहती है। लोस्या स्वतत्र और दृढ चरित्र की लडकी है। वह उम्र में तुमसे काफी बडी है। और यह बात मै तुम्हें साफ ह बता दू कि किसी दकियानूस गुप्तिया कार्यकर्ता के बजाय जब वह मेरे साथ एक खूबसूरत लडकी को देखेगी तो परेशान जरूर हो उठेगी!" नताल्या अलेक्सेयेव्ना जो कुछ कहती थी उसके यथार्थ अर्थों पर उसका पूरा ध्यान रहता था और उसे यह पर्वाह न रहती थी कि सुननेवाले पर

उसकी बातो का क्या असर पडेगा। "मै सेर्गेई को अच्छी तरह जानती हू। वह सचमुच बडा गभीर स्वभाव लडका है। अपने से अधिक मै उस पर भरासा करती हू। अगर सेर्गेई मुझसे यह कहता है कि तुम जिला खुफिया सघटन मे काम करती हो, तो मेरे लिए काफी है। और मै तुम्हारी मदद करना चाहती हू। अगर तोस्या तुमसे खुलकर बात नही करती तो कोल्या सुम्स्काई के पास जाओ। तोस्या काल्या के प्रति जो रुख अपनाती है उसे देखते हुए मै कह सकती हू कि कोल्या वहा का सबसे प्रमुख व्यक्ति है। तोस्या की मा और मेरी मा का यह विश्वास दिलाया जाता है कि तोस्या और कोल्या एक दूसरे से प्रेम करते है। बेशक म अन्य कामो में उलझी रहने के कारण अपने निजी मामला की ओर कोई ध्यान नही दे पायी फिर भी मै सामान्यत जवान लडके-लडकियो के मामले में बहुत कुछ जानती हू। मै जानती हू कि कोल्या सुम्स्कोई, लीदा अन्द्रोसोवा से प्यार करता है और लीदा सही माने में तितली है," नताल्या अलेक्सेयेव्ना ने न मानते हुए कहा, "लेकिन निश्चय ही लीदा भी उनके सघटन की सदस्या है," अपनी न्यायप्रियता की भावना पर स्वय ही उत्प्रेरित होती हुई वह बोल उठी, "अगर तुम इस बात की जरूरत समझो कि काल्या सुम्स्काई जिला सघटन के साथ निजी सम्पर्क स्थापित करे तो जिला श्रम-केन्द्र में मैं अपनी डाक्टर की हैसियत से उसे [illegible] के लिए बीमारी की छुट्टी दे सकती हू। वह कही किसी छोटी-[illegible] में काम करता है। ठीक ठीक कहू तो वह खान में भारी बोझ [illegible] यन्त्र पर काम करता है"

[illegible] तुम्हारे सर्टीफिकेट का विश्वास कर लेगे?" [illegible]

[illegible] अलेक्सेयेव्ना बोल उठी, "वे मेरे सर्टीफिकेटो [illegible] करते, बल्कि उन्ह तो हर उस कागज पर

अध्याय ७

एक दिन प्रातःकाल वाल्या और नताल्या अलेक्सेयेव्ना ने स्तेपी से होकर जानेवाली सड़क पकड़ी। नताल्या अलेक्सेयेव्ना किरमिच के जूते पहने, हमेशा की तरह, अपने कामकाजी ढंग से चमचमाती हुई गीली सड़क पर चल रही थी। किन्तु वाल्या के दिमाग में अपनी मा के सबंध में तरह तरह के विचार उठ रहे थे इसलिए वह अन्यमनस्क और सुस्त थी।

वाल्या जो काम पहले-पहल अकेले करने जा रही थी, उसमें उसके लिए तो खतरा था ही, पर मा के लिए?

जब वाल्या ने सामान्य ढंग पर मा को बताया कि वह कुछ दिनों के लिए नताल्या अलेक्सेयेव्ना से मिलने जा रही थी, तो मा ने उसे किस ढंग से देखा था। इस वक्त, जब वाल्या के पिता के अभाव में उसकी मा को इतना अकेलापन महसूस हो रहा था, उसकी बेटी के स्वार्थ ने मा के दिल को कितना दुखाया होगा। और मान लो उसे पहले से ही कुछ शक हो गया हो तो?

"मैं तोस्या येलिसियेंको से तुम्हारा परिचय करा दूगी " नताल्या अलेक्सेयेव्ना कह रही थी, "वह एक अध्यापिका है और मेरी मा की पड़ोसिन है। यों यों कहें वह और उसकी मा, और मेरी मा, दो कमरों के एक फ्लैट में एक साथ रहती हैं। तोस्या स्वतंत्र और दृढ़ चरित्र की लड़की है। वह उम्र में तुमसे काफी बड़ी है। और यह बात मैं तुम्हें साफ साफ बता दूं कि किसी दढ़ियल खुफिया कार्यकर्त्ता के बजाय जब वह मेरे साथ एक खूबसूरत लड़की को देखेगी तो परेशान जरूर हो उठेगी।" नताल्या अलेक्सेयेव्ना जो कुछ कहती थी उसके यथार्थ अर्थों पर उसका अधिक ध्यान रहता था और उसे यह पर्वाह न रहती थी कि सुननेवाले पर

उसकी बातो का क्या असर पडेगा। "म सेर्गेई को अच्छी तरह जानती हू। वह सचमुच वडा गभीर स्वभाव लडका है। अपने से अधिक मैं उस पर भरोसा करती हू। अगर सेर्गेई मुझसे यह कहता है कि तुम जिला खुफिया सघटन मे काम करती हो, तो मेरे लिए काफी है। और मैं तुम्हारी मदद करना चाहती हू। अगर तास्या तुमसे खुलकर बात नही करती तो कोल्या मुम्स्कोई के पास जाओ। तोस्या काल्या के प्रति जो रुख अपनाती है उसे देखते हुए मैं कह सकती हू कि कोल्या वहा का सबसे प्रमुख व्यक्ति है। तोस्या की मा और मेरी मा का यह विश्वास दिलाया जाता है कि तास्या और कोल्या एक दूसरे से प्रेम करत है। बेशक म अन्य कामो में उलझी रहने के कारण अपने निजी मामलो की आर कोई ध्यान नही दे पायी फिर भी मैं सामान्यत जवान लडके-लडकिया के मामले में बहुत कुछ जानती हू। मै जानती ह कि कोल्या सुम्स्कोई, लीदा अन्द्रोसोवा से प्यार करता है और लीदा सही मानें में तितली है," नताल्या अलेक्सेयेव्ना ने न मानते हुए कहा, "लेकिन निश्चय ही लीदा भी उनके सघटन की सदस्या है," अपनी न्यायप्रियता की भावना पर स्वय ही उत्प्रेरित होती हुई वह बोल उठी, "अगर तुम इस बात की जरूरत समझो कि कोल्या सुम्स्काई जिला सघटन के साथ निजी सम्पर्क स्थापित करे तो जिला श्रम केन्द्र में मैं अपनी डाक्टर की हैसियत से उसे दो दिन के लिए बीमारी की छुट्टी दे सकती हू। वह कही किसी छोटी-सी खान में काम करता है। ठीक ठीक कहू तो वह खान में भारी बोझ उठाने के किसी यन्त्र पर काम करता है "

"और जमन तुम्हारे सर्टीफिकेट का विश्वास कर लेगे?" काल्या ने पूछा।

"जमन!" नताल्या अलेक्सेयेव्ना बाल उठी, "वे मेरे सर्टीफिकेटो पर ही विश्वास नही करते, बल्कि उन्हे तो हर उस कागज पर

अन्धविश्वास रहता है जिसपर सरकारी मुहर लगी हो। उस खान में प्रशासन-कार्य रूसी करते हैं। अन्य दूसरी जगहा की ही तरह, वहा भी डाइरक्टर से सबद्ध टेक्नीकल दस्ते का एक सर्जेंट या कारपोरल है। लेकिन वह बिलकुल उल्लू है। उसकी निगाह में हम सारे रूसी एक दूसरे से इतना मिलते जुलते हैं कि वे लोग यह हिसाब नही रख पाते कि कौन काम पर आया है और कौन नहीं!"

आखिर हुआ वही जैसा कि नताल्या अनेवसेयेव्ना ने पहले से ही कह दिया था। क्रास्नोदोन की खनिक-बस्ती में हरियाली का नाम भी न था। वह तो एक प्रकार से खुली हुई जगह थी जहा बैरका की तरह की बडी बडी इमारत थी, खानें और मिट्टी के ढेर थे, खाना में लट्ठे गाडने के यन्त्र थे जो अब या ही वहा पडे थे। वाल्या को इस मनहूस वातावरण में दो दिन बिताने थे और उन लोगा के बीच जिन्हे मुश्किल से ही इस बात पर विश्वास दिलाया जा सकता था कि उसकी लम्बी, काली बरौनियो और सुनहरी लटो के पीछे 'तरुण गार्ड' का शक्तिशाली अधिकार विद्यमान था।

नताल्या अनेवसेयेव्ना की मा इस बस्ती के एक सबसे घने बसे हुए और पुराने भाग में रहती थी। बस्ती कई कई खेता को धीरे धीरे एक दूसरे से मिला देने के फलस्वरूप बनी थी। अब तो वहा के छोटे छोटे मकाना में छोटे छोटे बगीचे भी दिखाई देने लगे थे। पर बाग की झाडिया पहले से ही पीली पड गयी थीं। अभी हाल ही की वर्षा के कारण सडक पर करीब करीब कमर तक कीचड बिछ गया था। जाडो तक यह कीचड ऐसे ही बना रहेगा।

इन दिना एक रूमानियन दस्ता बस्ती से होकर स्तालिनग्राद की दिशा में गुजर रहा था। दस्ते की तोपें और वैगन खीचनेवाले दुबले-पतले घोडे घटो कीचड में खडे रहते जब कि ड्राइवर उन्हे रूसी में कोसा

करते और उनकी आवाजें स्तेपी की बासुरी की तरह सारी बस्ती में गूज जाती।

तोस्या येलिसेयेंको २३ वर्ष की एक मोटी-ताज़ी आकर्षक उत्तइनी लडकी थी। गठा हुआ बदन और काली आवेगपूर्ण आखें। उसने साफ साफ वाल्या से कह दिया, "मैं समझती हू कि ज़िला खुफिया केन्द्र ने ग्रास्नोदोन जैसी खनिक-बस्ती को तुच्छ समझकर भूल की है। आखिर अभी तक इस बस्ती में कोई लीडर क्यो नही आया? केन्द्र ने उनके इस अनुरोध को क्यो नही माना कि काम के सिलसिले में हिदायते देने के लिए यहा किसी जिम्मेदार व्यक्ति को भेजा जाये।"

वाल्या ने इसका यही स्पष्टीकरण देना उचित समझा कि वह केवल 'तरुण गार्ड' युवा सघटन की प्रतिनिधि है जो जिला खुफिया पार्टी कमिटी के निर्देशन में काम कर रही है।

"तो 'तरुण गार्ड' दल के हेडक्वाटर का ही कोई सदस्य हमसे क्यो नही मिलने आया?" तोस्या की आखो में विरोधियो जैसी चमक आ गयी, "जानती हो, हमारे यहा भी एक युवक सघटन है," उसने गर्व से कहा।

"मै भी हेडक्वाटर की एक अधिकृत सदेशवाहिका हू," वाल्या ने भी उतने ही गर्व से कहा और उसका ऊपरी ओठ काप उठा। "जिस सघटन के बारे मे अभी तक यह पता न चला हो कि वह कोई काम भी कर रहा है या नही, उसमे हेडक्वाटर के किसी सदस्य का भेजा जाना जल्दबाज़ी की बात होती, और यह बात साज़िश के कामो के लिए उपयुक्त न होती। अगर तुम साज़िशी काम के बारे में कुछ समझती हो तो मेरी बात समझ लोगी।"

"क्या कहा, काम का ही पता न चला," तोस्या ने क्रोध मे कहा, "मै तो कहूगी कि बडा अच्छा है हेडक्वाटर तुम्हारा जो अपने ही

सघटनो के काम के बारे में कुछ नही जानता! मैं पागल नही हू कि अपने सघटन की कारवाइयो के बारे में एक अजनबी को बताने लग जाऊ।

कौन जाने कि यदि कोल्या सुम्स्कोई की बात बीच ही में न छिड गयी होती तो ये दो गर्वीली और सुन्दर लडकिया किसी बात पर एकमत हुई ही न होती।

बेशक जब वाल्या ने कोल्या सुम्स्कोई का नाम लिया तो तोस्या ने कहा कि उसने उसके बारे में कभी कुछ नही सुना। किन्तु वाल्या ने बडी रुखाई से कहा कि 'तरुण गार्ड' दल के सदस्य यह अच्छी तरह जानते है कि सघटन में सुम्स्कोई का प्रमुख स्थान है। और यदि तोस्या उसे सुम्स्कोई के पास नही ले जायेगी तो वाल्या स्वय उसका पता चला लेगी।

"तुम खुद उसका पता लगा लोगी यह जानना कुछ कम दिलचस्प नही है," तोस्या बोली। वह कुछ आशकित हो गयी थी।

"शायद लीदा अन्द्रोसोवा की मार्फत!"

"लीदा भी तुम्हे वही कुछ समझेगी जो मैं समझ रही हू।"

"यह तो और भी बुरी बात है मैं खुद जाकर उसका पता चलाऊगी, पर चूकि मैं उसका पता ठिकाना नही जानती, अत हो सकता है कि, इत्तिफाक से, मेरे ही कारण, वह किसी मुसीबत में पड जाये।"

तोस्या येलिसेयेंका को वाल्या की बात माननी पडी।

और जब दोनो कोल्या सुम्स्कोई के पास पहुची तो सारी बाते साफ हो गयी। वह खनिक-बस्ती के छोर पर एक खुले देहाती घर में रहता था। उसके मकान के पीछे स्तेपी शुरु हो जाती थी कभी उसका पिता खान में गाडीवान का काम करता था किन्तु वे लोग हमेशा ग्रामीण ढग से ही रहना पसद करते रहे।

सुम्स्कोई का नाक बहुत बडा और चेहरा सावला था। उसपर बुद्धिमत्ता, और उसके पितामह का उक्रइनी साहस झलकता था। उसके

स्वभाव मे चातुय तथा स्पष्टवादिता के मिश्रण ने उसके व्यक्तित्व को बेहद आकषक बना दिया था। उसने आखें मिचकाई, बडे धैय से साथ वाल्या की अहकारपूण और ताम्या की उत्तेजनापूर्ण सफाई सुनी और बिना एक भी शब्द बोले चाले, उन्हें अपने घर से बाहर ले आया। तब वह दीवाल के सहारे खडी एक सीढी पर चढता हुआ एक दरबे में जा पहुचा और लडकियो से पीछे पीछे चढ आने को कहने लगा। तभी जोर जोर से पख फटफडाते हुए कुछ कबूतर दरबे से निकले और आकाश में उड गये, कुछ उसके सिर और कधो पर बैठ गये और कुछ हाथो पर बैटने का प्रयास करने लगे। आखिर उसने एक अति सुन्दर सफेद कबूतर को अपने हाथ में ले लिया।

दरबे में हट्टे-कट्टे बदन का एक युवक बैठा था। वह एक अजनबी लडकी को देखते ही जैसे बेहद घबरा गया और कोई चीज़ वही पडी घास फूस में छिपाने लगा। सुम्स्काई ने उसे इशारा किया कि सब कुछ ठीक है। युवक ने दात निकाले, घास फूस एक ओर हटायी और वाल्या को वहा एक रेडियो-सेट दिख गया।

"वालोद्या ज्दानाव अज्ञात वाल्या से मिला," बिना मुस्कराये हुए सुम्स्काई बोला, "हा, हम तीन लोग यहा ह–तोस्या, वोलोद्या और मैं यानी नक का पापी, हम अपने सघटन के 'तिगड्डे' हैं," उसने समझाया। वह गुटर-गू, गुटर-गू करते तथा पख फडफडाते हुए कबूतरो से ढक-सा गया।

वे लोग जब परस्पर इस बात पर विचार कर रहे थे कि सुम्स्कोई वाल्या के साथ नगर जा सकेगा या नही, वाल्या को लगा कि वह हट्टा-कट्टा युवक उसकी ओर देख रहा है और उसकी वह दृष्टि वाल्या को विचलित कर रही है। वह इसी प्रकार के एक और लडाके छोकरे को जानती थी। वह छोकरा था–'तरुण गार्ड' दल का सदस्य कोवल्योव,

जो अपने शक्तिशाली शरीर और सदय हृदय के कारण पास-पडोस के इलाका में 'छोटे ज़ार' के नाम से मशहूर था। किन्तु यहा बैठा हुआ व्यक्ति तो अत्यधिक रोबीला था। उसके चेहरे और शरीर की गठन इतनी शानदार थी कि किसी की भी निगाह बरबस उसकी ओर खिच जाती थी। उसकी गदन कासे में ढली लगती थी। उसके व्यक्तित्व से शात और सुदर ओजस्विता का भास होता था। फिर न जाने क्यो सहसा वाल्या को, दुबले पतले और नगे पैर, सेर्गेई त्युलेनिन की याद आ गयी, और उसके हृदय में इतना मीठा मीठा दद होने लगा कि वह चुप हो गयी।

तब चारो व्यक्ति दरखे के किनारे आ गये। तभी कोल्या सुम्स्कोई की निगाह, सहसा अपने हाथ पर बैठे सफेद बाज़ीगर कबूतर पर पडी। उसने उसे पकडा, नीचा किया और पूरी शक्ति के साथ मेघाछन्न आकाश में उडा दिया। बाकी कबूतर भी उसके कधो पर से फडफडाते हुए उड गये। अब सभी लोग छत की तिरछी खिडकी में से उस सफेद कबूतर को आकाश में उडकर भूत की तरह गायब होते हुए देख रहे थे।

तोम्या येलिसियेंको ताली बजा बजाकर उछलने-कूदने लगी और इस तरह चहकने लगी कि सभी लोग उसकी ओर देखकर हस पडे। उसका यह जोश और उसकी आखो का उत्साहपूर्ण भाव जैसे साफ साफ कह रहा था, "मैं जानती हू, तुम लोग समझते हो कि म हृदयहीन हू लेकिन आखें खोलो और देखो कि सचमुच मैं कितनी अच्छी हू।"

दूसरे दिन सुबह वाल्या और काल्या सुम्स्कोई नगर की ओर जाने के लिए स्तेपी मे होकर गुजर रहे थे। रात मे घने बादल छट गये थे। अब आकाश साफ था और सूरज निकल चुका था। उसकी गर्मी ने शीघ्र ही सभी चीजें सुखा डाली थी। उनके चारो ओर स्तेपी का विशाल प्रदेश और सिर्फ मुरझाती हुई घास थी। फिर भी वहा शरद के आरम

की, पिघले हुए ताम्बे के रग की छटा बिखर रही थी। मकडी के जाले सभी दिशाओ में फैले हुए थे। स्तालिनग्राद की दिशा में उडते हुए जमन यातायात विमानो से स्तेपी गूजने लगी। परन्तु कुछ ही देर बाद फिर नीरवता छा गयी।

करीब आधी दूरी पार कर चुकने के बाद वाल्या और सुम्स्कोई आराम करने के लिए पहाडी पर धूप में पड रहे। सुम्स्कोई ने एक सिगरेट सुलगा ली।

सहसा उन्हे स्तेपी से होकर आनेवाले गीत के स्वर सुनाई दिये। यह गीत इतना परिचित था कि उन दोनो के दिलो में गूजने लगा– 'शात पडी सोती पहाडिया'।

यह गीत दोनेत्स स्तेपी के लोगा के बीच बडा ही लोकप्रिय था। पर गीत के ये स्वर यहा, और इतने सवेरे, आ कहा से रहे ह? वाल्या और कोल्या केहुनियो के सहारे उठ बैठे और पास आते हुए गीत के शब्द मन ही मन दुहराने लगे। एक स्त्री और एक पुरुष मिलकर यह गीत गाये जा रहे थे। स्वर में यौवन था, दम था और लग रहा था जैसे वे अपने इद गिद की सारी दुनिया को ललकार रहे है–

शात पडी सोती पहाडिया–
वह प्रकाश की किरन! झाडिया–
भोर हो गई, सूरज झाका–
और, धुध को उसने आका!
जागे खेत, कुज सब जागे–
धारे हरित वसन, सुख-पागे–
जाता स्तेपी को लडका–
घने जगतो का दिल धडका!

जो अपने शक्तिशाली शरीर और सदय हृदय के कारण पास-पड़ोस के इलाका में 'छोटे जार' के नाम से मशहूर था। किन्तु यहा बैठा हुआ व्यक्ति ता अत्यधिक रोबीला था। उसके चेहरे और शरीर की गठन इतनी शानदार थी कि किसी की भी निगाह बरबस उसकी ओर खिच जाती थी। उसकी गदन कासे में ढली लगती थी। उसके व्यक्तित्व मे शात और सुन्दर ओजस्विना का भास होता था। फिर न जाने क्यो सहसा वाल्या को, दुबले पतले और नगे पैर, सेर्गेई त्युलेनिन की याद आ गयी, और उसके हृदय में इतना मीठा मीठा दद होने लगा कि वह चुप हो गयी।

तब चारा व्यक्ति दरबे के किनारे आ गये। तभी कोल्या सुम्स्कोई की निगाह, सहसा अपने हाथ पर बैठे सफेद बाजीगर कबूतर पर पडी। उसने उसे पकडा, नीचा किया और पूरी शक्ति के साथ मेघाछन्न आकाश में उडा दिया। बाकी कबूतर भी उसके कधो पर से फडफडाते हुए उड गये। अब सभी लोग छत की तिरछी खिडकी में से उस सफेद कबूतर को आकाश में उडकर भूत की तरह गायब होते हुए देख रहे थे।

तोस्या येलिसियेंको ताली बजा बजाकर उछलने-कूदने लगी और इस तरह चहकने लगी कि सभी लोग उसकी ओर देखकर हस पडे। उसका यह जोश और उसकी आखो का उत्साहपूण भाव जसे साफ साफ कह रहा था, "मैं जानती हू, तुम लोग समझते हो कि मै हृदयहीन हू लेकिन आखें खोलो और देखो कि सचमुच मै कितनी अच्छी हू।"

दूसरे दिन सुबह वाल्या और वाल्या सुम्स्काई नगर की ओर जाने के लिए स्तपी से होकर गुजर रहे थे। रात में घने बादल छट गये थे। अब आकाश साफ था और सूरज निकल चुका था। उसकी गर्मी ने शीघ्र ही सभी चीजें सुखा डाली थी। उनके चारा ओर स्तेपी का विशाल प्रदेश और सिफ झुलसी हुई घास थी। फिर भी वहा शरद के आरभ

की, पिघले हुए ताम्बे के रग की छटा बिखर रही थी। मकडी के जाले सभी दिशाओ में फैले हुए थे। स्तालिनग्राद की दिशा में उडते हुए जमन यातायात विमानो से स्तेपी गूजने लगी। परन्तु कुछ ही देर बाद फिर नीरवता छा गयी।

करीब आधी दूरी पार कर चुकने के बाद वाल्या और सुम्स्कोई आराम करने के लिए पहाडी पर धूप में पड रहे। सुम्स्कोई ने एक सिगरेट सुलगा ली।

सहसा उन्हे स्तेपी से होकर आनेवाले गीत के स्वर सुनाई दिये। यह गीत इतना परिचित था कि उन दोनो के दिलो में गूजने लगा—'शात पडी सोती पहाडिया'।

यह गीत दोनेत्स स्तेपी के लोगो के बीच बडा ही लोकप्रिय था। पर गीत के ये स्वर यहा, और इतने सवेरे, आ कहा से रहे है? वाल्या और कोल्या केहुनिया के सहारे उठ बैठे और पास आते हुए गीत के शब्द मन ही मन दुहराने लगे। एक स्त्री और एक पुरुष मिलकर यह गीत गाये जा रहे थे। स्वर में यौवन था, दम था और लग रहा था जैसे वे अपने इद गिद की सारी दुनिया को ललकार रहे है—

शात पडी सोती पहाडिया—
वह प्रकाश की किरन! झाडिया—
भोर हो गई, सूरज झाका—
और, धुध को उसने आका!
जागे खेत, कुज सब जागे—
धारे हरित वसन, सुख-पागे—
जाता स्तेपी को लडका—
घने जगलो का दिल धडका!

शीघ्र ही वाल्या सरकती हुई गयी और पहाडी की चोटी पर से छिपकर नीचे देखने लगी, फिर उठ खडी हुई और ठहाका मारकर हस पडी—सडक पर वोलोद्या ओसमूखिन अपनी बहन ल्युद्मीला के हाथ में हाथ डाले चला आ रहा था। दोनो गाने में—या या कहे, चिल्लाने में मस्त थ।

वाल्या उछल पडी और उनसे मिलने के लिए बच्चो की तरह, पहाडी के नीचे भागती हुई सडक पर आ गयी। सुम्स्कोई अधिक आश्चयचकित न हुआ था। वह भी धीरे धीरे वाल्या के पीछे पहाडी उतरने लगा।

"सवारी किधर जा रही है?"

"दादा से कुछ अनाज लेने, गाव की तरफ। वह तुम्हारे पीछे कौन लगा है?"

"बस्ती का हमारा एक साथी। कोल्या सुम्स्कोई।"

मैं तुम्हारा परिचय एक और हमदद यानी अपनी प्यारी बहन ल्युद्मीला से करा दू। उसने मुझसे अपने दिल की बात यहा, स्तेपी में, अभी अभी बतायी है," वोलोद्या बाला।

"वाल्या, तुम्ही बताओ, हैं न ये लोग गधे! सब के सब मुझे अच्छी तरह जानते है, फिर भी मेरा सगा भाई मुझसे हर बात छिपाता है। जो कुछ हो रहा है, यह सब मैं जानती हू। मैने छापेखाने का टाइप भी देख लिया, जिसे वह किसी बदबूदार घोल में धो रहा था। अभी वह सब का सब नहीं धो पाया था कि मैं पहुच गयी और आज वाल्या जानती हो, आज क्या हुआ?" वह सहसा बोल पडी और सुम्स्कोई पर एक उडती हुई नजर डाली, जो इस समय तक पास आ पहुचा था।

'एक मिनट ठहरो," वोलोद्या ने बडी गम्भीरता से बात काटी,

"कारखान के मेरे साथियों ने अपनी आखो से देखा है और उन्होने मुझे बताया है—रोज़ की तरह वे पार्क से होकर जा रहे थे कि सहसा उन्होने देखा कि फाटक पर, काला कोट पहने हुए एक व्यक्ति लटका हुआ है। उसकी छाती पर एक नोटिस भी चिपकी थी। पहले तो उन्होने सोचा कि हमारे किसी साथी को जमनो ने फासी दे दी है, पर जब वे और निकट आ गये तो देखा कि फोमीन लटका हुआ है। तुम तो जानती हो उस सुअर को, जमनो का सिपाही बना फिरता था। नोटिस में लिखा था—'जो लोग हमारे आदमियो के साथ गद्दारी करेंगे, उनके साथ हम यही सलूक करेंगे।' बस और कुछ नही सिर्फ इतना ही।" फिर फुसफुसाते हुए उसने इतना और जोड दिया, "उन्होने काम सफाई से किया है"। और सहसा ज़ोर से बोला, "वह पूरे दो घटे तक दिन के उजाले में लटका रहा। और उसे फासी तब दी गयी जब वह गश्त की ड्यूटी पर था। पास-पड़ोस में कोई और पुलिस वाला भी न था। झुड के झुड लोगो ने देखा है। सारे नगर में आज इसी की चर्चा है।"

फोमीन को फासी देने के सबध में 'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर के निश्चय से न तो वोलोद्या ही अवगत था न ल्यल्या ही और न वे इसकी कल्पना ही कर सकते थे कि इस तरह की कोई बात हो सकती है। वोलोद्या को विश्वास था कि यह काम बोल्शेविक खुफिया सघटन ने किया होगा। पर सहसा ल्यूबा के चेहरे का रग उड गया और वह पीली-सी पड गयी—वह एक ऐसे व्यक्ति को जानती थी जो यह काम कर सकता था।

"बता सकते हो, हमारी तरफ का तो कोई व्यक्ति नही पकडा गया न? सब ठीक-ठाक तो है न? कोई गिरफ्तारी तो नही हुई?" उसने पूछा। वह कापते हुए ओठो को निश्चल रखने में असमर्थ थी।

"कमाल का काम किया है!" वोलोद्या ने कहा, "कोई कुछ भी नही जानता। सब ठीक है पर मेरे घर में आफत मची हुई है मेरी मा को यकीन है कि उस कुत्ते को मैंने ही लटकाया है और अब वह भविष्यवाणी कर रही है कि मुझे भी फासी दे दी जायेगी। इसी लिए तो मने ल्युदमीला को वेहुनियाते हुए कहा था—'जानती हो, मा कुछ वहरी है, उसे बुखार भी है। और यो भी हमें दादा की खबर लेनी चाहिए'।"

"कोल्या, चलो चले," सहसा वाल्या ने सुम्स्कोई से कहा।

बाकी रास्ते वाल्या सुम्स्कोई से प्राय आगे आगे ही चलती रही। और सुम्स्कोई यह न समझ सका कि वाल्या में सहसा यह परिवर्तन क्यो आ गया। आखिर वह क्षण भी आया जब वह अपने मकान की सीढिया चढती दिखाई दी। सुम्स्कोई जैसे कुछ घबराकर उसके पीछे पीछे खाने के कमरे में चला आया।

वहा अपनी कसी हुई गहरे रग की पोशाक में भारी भरकम मरीया अन्द्रेयेव्ना और कधो तक बिखरे हुए हल्के सुनहरे बालोवाली छोटी पीली ल्यूस्या एक दूसरे के आमने-सामने बैठी थी। दोनो चुप थी, किसी औपचारिक जन्मदिवस-समारोह में आये हुए मेहमानो की तरह।

जब मरीया अन्द्रेयेव्ना की बडी बेटी ने कमरे में प्रवेश किया तो मा जल्दी से उठी, कुछ कहने को हुई परन्तु शब्द जैसे उसके गले में ही अटककर रह गये। उसने जैसे शक की नजरो से सुम्स्कोई और वाल्या की ओर देखा और फिर बेटी को जोर से चूम लिया। ठीक इसी समय वाल्या को लगा जैसे उसकी अपनी मा भी उसी तरह छटपटाती रही होगी जैसे वोलोद्या की मा। उसने यही सोचा था कि मेरी बेटी वाल्या बोर्त्स भी फोमीन को फासी देने की साजिश में शामिल थी, इसी लिए तो वह पिछले दो दिनो से गायब थी।

इस समय वाल्या जैसे यह भूल ही गयी थी कि सुम्स्कोई भी दरवाज़े पर खडा अटपटा-सा महसूस कर रहा है। उसने मा को इस दृष्टि से देखा जो यह कहती सी लग रही थी, "मा, अब मैं तुमसे क्या कहू ?"

उसी क्षण छोटी ल्यूम्या वाल्या के पास आयी और उसने एक शब्द भी कहे बिना, उसे एक पुर्ज़ा थमा दिया। वाल्या ने, अन्यमनस्कता से उसे खोला और पढने के पहले ही लिखावट पहचान ली। सडक पर चलते चलते वाल्या का चेहरा धूल से सन चुका था, धूप से पुत चुका था, पर पुर्ज़ा पढते ही खिल उठा। उसके होठो पर एक बाल सुलभ मुस्कान दौड गयी। उसने कधे के पीछे सुम्स्कोई पर एक नजर डाली और उसकी गरदन और उसके कान लाल हो उठे। उसने मा का हाथ पकडा और उसे दूसरे कमरे में ले गयी।

"मा!" वह बोली, "जो कुछ तुम सोच रही हो, वह सब बेकार है। क्या तुम यह नही देख सकती कि हम, यानी मैं और मेरे साथी किस लक्ष्य को लेकर चल रहे हैं? देखती नही कि हम किसी और ढग से रह ही नही सकते। प्यारी मा!" वाल्या बडी खुश थी, उसका चेहरा लाल था और मा के चेहरे पर निगाह गडाये थी।

प्राय मरीया अन्द्रेयेवना का चेहरा अच्छे स्वास्थ्य के कारण दमकता रहता। अब सहसा वह पीला पड गया। उसे लगा जसे उसे कोई प्रेरणा मिली हो।

"मेरी बेटी! भगवान तुम्हे लम्बी उम्र दे," मरीया अन्द्रेयेव्ना बोली। यही मरीया अन्द्रेयेव्ना जिन्दगी भर, स्कूल में और उसके बाहर, सक्रिय रूप से धर्मविरोधी शिक्षा देती रही थी। "भगवान तुम्हे लम्बी उम्र दें," वह बोली और उसकी आखो से आसू झरने लगे।

अध्याय ८

जब अपन बच्चा के विचारो और अनुभूतियो से अपरिचित माता पिता यह देखते हैं कि उनके बच्चे गुप्त, रहस्यपूर्ण और खतरनाक कार्रवाइयो में भाग लेते हैं और वे न तो अपने बच्चो के क्रियाकलाप की दुनिया में प्रवेश कर सकते है और न उन्हे रोक ही सकते है, तो उनकी स्थिति बडी क्लेशपूर्ण हो उठती है।

वाया का आनेवाले तूफान की भनक नाश्ते के समय ही लग गयी थी जब उसने अपने पिता का गभीर चेहरा देखा था। उसने यह भी समझ लिया था कि वे उसकी ओर देखेंगे भी नही। तूफान की शुरुआत उस समय हुई जब उसकी बहन नीना कुए से पानी लेकर लौटी और साथ ही, फोमीन की फासी की खबर लायी। उसने वहा यह भी बताया कि लोग उसके बारे में क्या क्या कह रहे है।

उसके पिता के चेहरे पर एक परिवर्तन दिखाई दिया। उसके दुबल-पतले गालो की मासपेशिया तन गयी।

"बात यह है कि हमें सारे मामले की सर्वाधिक अधिकृत" – उसे बड़े बड़े शब्द इस्तेमाल करना बहुत भाता था – "सूचना यही घर में ही, मिल सकती है," उसने अपने बेटे की ओर देखे बिना ही बडी कटुता से कहा। "आखिर बोलते क्यो नही? इसके बारे में हमें तो बताओ। कहना चाहिए कि तुम सब चीजो के निकट सम्पर्क में रहते हो। है न?" उसने धीरे-से कहा।

"निकट सपर्क में किसके? पुलिस के?" वाया का चेहरा पीला पड गया।

"पिछली रात को त्युलेनिन क्या आया था? कर्फ्यू के बाद?"

"कर्फ्यू का पालन कौन करता है? क्या निषिद्ध घटो में नीना

किसी से मिलने नहीं जाती ? वह यहां गप्प लडाने आया था और वह भी पहली बार नहीं।"

"झूठ मत बोलो !" पिता ने चीखते हुए मेज पर मुक्का मारा। "इसकी सज़ा है जेल। बेशक तुम चाहो तो फसाओ अपना गला लेकिन अपने मां-बाप को इसमें क्या घसीटते हो ?"

"पिता जी, आपके मन में कोई और बात है," वाया चुपचाप उठ खडा हुआ। पिता ने फिर एक बार मेज पर मुक्का मारते हुए कहा, "जो मैं कहता हू वही बात है"। पर वाया ने उधर कोई ध्यान न दिया। "आप यही जानना चाहते हैं न," वाया बोला, "कि मैं खुफिया सघटन में काम करता हू या नहीं। बोलिये यही जानना चाहते हैं न ! तो मैं कहता हू कि नहीं। और नीना ने फोमीन के बारे में जो कुछ कहा है वह म इस वक्त पहली बार सुन रहा हू। वह बदमाश इसी काबिल था। मैं यही कह सकता हू। और जो कुछ नीना कहती है उसके अनुसार दूसरे लोग भी यही सोचते हैं। आप भी वही सोचते ह। बस मैं एक बात कहूगा— मुझसे जितना बन पडता है, अपने लोगो की मदद करता हू। हम सबको उनकी मदद करनी चाहिए। मैं कोमसोमोल का सदस्य हू। इसके बारे में न तो मने आपसे ही कुछ कहा, न मा से ही, क्योकि म आपको अकारण चिन्ता में नहीं डालना चाहता था।"

"सुन रही हो, अनस्तसीया इवानोव्ना ?' आपे से बाहर होते हुए वृद्ध पिता ने अपनी निस्तेज आखें पत्नी के चेहरे पर गडा दीं। "उसकी बात सुनो—हमारी चिन्ता कर रहा है। तुम्हे शर्म नहीं आती ? मैं जिन्दगी भर खून-पसीना एक करके तुम्हारे लिए काम करता रहा भूल गये कि हम एक ही घर में बारह परिवार कैसे रहते थे—अट्ठाईस अट्ठाईस बच्चे फर्श पर रेगा करते थे ? तुम्हीं बच्चो के लिए मैंने और तुम्हारी मा ने अपने खून का आखिरी कतरा तक बहा दिया था। जरा अपनी मा

की ओर तो देखो। अनेक्सान्द्र स्कूल गया पर हमने उसे अपनी शिक्षा पूरी नहीं करने दी। यही बात नीना की शिक्षा के संबंध में भी हुई। हमने सब कुछ तुम्हारे ही लिए किया और अब तुमने अपना फंदा खुद अपने गले में फंसा लिया है। अपनी मा की ओर देखो। तुम्हारे ही लिए बेचारी रो रोकर आधी हुई जा रही है। पर तुम हो कि आखें मूंदे हो।"

'और आपका क्या सुझाव है? मुझे क्या करना चाहिए?"

"काम में लगो। नीना काम करती है, तुम भी कर सकते हो। वह एकाउंटेंट है, फिर भी मशक्कत करती है। लेकिन तुम क्या करते हो?"

"काम करूं? किसके लिए करूं? जमनो के लिए? ताकि वे हमारे लोगों को अधिक संख्या में मौत के घाट उतारें। जब लाल सेना वापस आयेगी तो सबसे पहले मैं काम पर जाऊंगा। मेरा भाई, यानी आपका अपना बेटा लाल सेना में है और फिर भी आप मुझसे यह कह रहे हैं कि जाकर जमनों की मदद करो ताकि वे उसे जल्दी ही मार डालें। नहीं तो और बात क्या है?" वाश्या ने क्रोध से कहा। इस समय तक दोनों आमने-सामने खड़े हो चुके थे।

"तो तुम्हारे लिए खाना कहां से आयेगा?" पिता चिल्ला पड़ा।

"और क्या यह ठीक होगा कि जिन लोगों की तुम्हें इतनी फिक्र है उन्हीं में से कोई तुम्हारे साथ गद्दारी करके तुम्हें जमनों के हाथ में सौंप दे। तुम हमारे मोहल्ले के लोगों के बारे में क्या जानते हो? उनके सिर में कौन-सी चक्की चल रही है? मैं तुम्हें बताऊंगा। उन्हें सिर्फ अपने स्वार्थ और अपनी चमड़ी की चिंता है। बस तुम्हारी ही कसर रह गयी है उन सबका भला करने के लिए।"

'यह बात ठीक नहीं है। जिस समय आपने सरकारी सामान मोर्चों से दूर, सुरक्षित स्थानों में भेजने में मदद दी थी, उस समय क्या आप यह काम अपने लिये कर रहे थे?"

"तुम मेरी बात छोडो।"

"क्यो छोड ? आप यह किस आधार पर समझते है कि आप दूसरो से अच्छे ह ?" वाया बोला। उसका चश्मे वाला चेहरा एक ओर को झुक गया था। वह मेज़ पर एक हाथ की उगलियो का सहारा लिये खडा था। "स्वार्थ! हर शख्स अपने ही फायदे के पीछे! मै आपसे पूछता हू—उन दिनो कैसे जब आपको काम से छुट्टी मिल गयी थी और तनख्वाह आपकी जेब में थी और आप जानते थे कि आप यहा ठहरेंगे और इससे आपको नुकसान पहुच सकता था, फिर भी बीमार होने पर भी, आप रात भर दूसरे लोगो का सामान लदवाते रहे, और उसी की चिन्ता करते रहे। इसमें आपका कौन-सा स्वार्थ था? क्या इस प्रकार का आचरण करनेवाले दुनिया में अकेले आप ही है? यह तो वैज्ञानिक तथ्यो को असत्य बताना हुआ न?"

उस दिन रविवार था। अत उसकी बहन नीना घर पर ही थी। वह जैसे इस वाद विवाद स मुह मोडे, कुढती हुई सी, पलग पर बैठी थी। उसके विचार हमेशा की भाति उसके मानस में ही उमड-घुमडकर घुट रहे थे। उसकी मा—सहृदय और दुबली-पतली समय मे पहले ही बूढी लगने लगी थी। उसने सारी जिन्दगी या तो खेतो में काम किया था या रसोईघर में। वह डर रही थी कि कही क्रोध में उसका पति वाया को शाप देकर घर से निकाल न दे। जब जब उसका पति बाते करता, तब तब वह कुछ कुछ मुस्कराकर और सिर हिलाकर जैसे उसे शान्त करने का प्रयत्न-सा करती हुई उसकी ओर देखती, पर जब बेटा कुछ कहने लगता तो वह पति की ओर ऐसी दृष्टि से ताकती मानो उससे अनुरोध कर रही हो कि वह बेटे की बात ध्यान स सुने और उसे क्षमा कर दे। बेशक दोनो—बूढा और बूढी—जानते थे कि इसमें कोई दम या तुक न था।

पिता कमरे के बीचोबीच खड़ा था। वह कई बार की धोयी हुई गंजी के ऊपर एक लम्बी-सी जकेट और नीचे एक पुराना तार-तार पतलून पहने था जिसके घुटने निकल आये थे। उसके सिकुडे ऐंठे पैरों में स्लीपर पड़े थे।

"मैं ज़िन्दगी की बात कर रहा हू, वैज्ञानिक तथ्यो की नही," वह चिल्लाया और अपनी मुट्ठी सीने से चिपकाकर निर्बला की तरह नीचे गिरा दी।

"और यदि विज्ञान ज़िन्दगी का अग नही है तो आखिर है क्या? अकेले आप ही इसाफ की माग नही कर रहे है, दूसरे भी है जो करते है," वाया बोला। उसके चेहरे पर जो रोष दिखाई पड रहा था, वह उसके लिए असामान्य था, "आपमें जो कुछ भी अच्छाई है, उसके लिए आपको शर्म आती है"।

"शर्म आने लायक मैंने कोई काम ही नही किया।"

"तब साबित कीजिये कि जो कुछ मैंने कहा है वह ग़लत है! सिर्फ चीखने चिल्लाने से ही मैं आश्वस्त नही हो सकता। यह बात दूसरी है कि मै आपके आगे सिर झुका दू और चुप हो जाऊ। पर मेरी आत्मा मुझे जो रास्ता दिखायेगी उसपर ज़रूर चलूगा।"

पिता का शरीर जैसे शिथिल पड गया। उसकी धमिल दृष्टि और भी धुधलाने लगी।

"तो यह बात है, समझी अनस्तसीया इवानोव्ना," उसने ऊची आवाज़ में कहा, "हमने अपने बेटे को शिक्षा दी है हमने उसे पढाया-लिखाया है और अब उसे हमारी कोई ज़रूरत नही रही। अलविदा!"

उसने हाथ झटकारे, मुडा और कमरे से बाहर निकल गया।

अनस्तसीया इवानोव्ना भी उसके पीछे पीछे चली गयी। नीना वैसे ही अपने बिस्तर पर बैठी रही। न बोली, न सिर उठाया।

वाया निरुद्देश्य कमरे के एक कोने से दूसरे कोने तक टहलता रहा। उसकी आत्मा तड़प रही थी और वह उसे शान्त रखने में असमर्थ था। आखिर वह भी बैठ गया। अपने भाई को कविता में पत्र लिखकर, अपने दिल का गुबार निकालने का प्रयत्न करने लगा। पहले भी वह अक्सर यही किया करता था।

सच्चा साथी, स्नेही मेरा,
साशा मेरा प्यारा भाई!

यह ठीक नही।

मेरा प्रियतम मित्र कि मेरा अपना प्यारा भाई!

नही, कविता की पंक्तिया सूझ ही नही रही थी। और लिख भी लू तो भाई के पास पत्र भेजना असम्भव है। आखिर वाया ने समझ लिया कि उसे क्या करना चाहिए—उसे नीज्नी अलेक्साद्रोव्स्की के यहा जाकर क्लावा से मिलना चाहिए।

येलेना निकोलायेव्ना कोशेवाया को बहुत अधिक चिन्ता थी क्योकि वह यह निश्चय नही कर पा रही थी कि वह ओलेग के कामो पर रोक लगाये या उनमें उसकी मदद करे। दूसरी माताओ की तरह उसे भी अपने बेटे के लिए हमेशा भय बना रहता और दिन-ब-दिन उसकी नीद हराम होती जाती। उसका दिमाग और शरीर दोनो ही शिथिल होते जा रहे थे और उसके चेहरे की झुर्रिया गहरी होती जा रही थी। कभी कभी तो उसमें पशुओ जैसा भय जाग्रत हो उठता और उसे लगता कि वह सारे बन्धन तोड डाले, चीखे-चिल्लाये और अपने बेटे को जबरदस्ती उस बदकिस्मती के पजो से छुडा ले जिसे वह गले लगाने की तैयारी कर रहा है।

येलेना निकोलायेव्ना में अपने पति, अर्थात ओलेग के सौतेले पिता, के कुछ गुण मौजूद थे। वह पति को बेहद प्यार करती थी। जीवन में येलेना निकोलायेव्ना ने केवल उसी को प्यार किया था। उनमें अपन पति की तरह ही योद्धा जैसा उत्साह था, इसलिए उसे अपने बेटे के कामो के प्रति हमदर्दी के अलावा कोई और भाव न उठ सकता था।

प्राय वह अपने बेटे के रुख से चिढ भी जाती वह हमेशा ही अपनी मा से सारी बातें साफ साफ, स्पष्ट और विनम्र भाव से कहता आया था, उसका हुक्म मानता आया था, तो अब उससे अपनी बाते क्या छिपाने लगा था! इतना चुप्पू क्या हो गया था? वह अपने को खास तौर से अपमानित समझती क्योकि उसकी अपनी मा, नानी वेरा, प्रत्यक्षत ओलेग की साजिशो में शामिल रहती और स्वय अपनी बेटी तक से सारी बाते छिपाया करती। जहा तक येलेना निकोलायेव्ना का ख्याल था, उसका भाई निकोलाई भी साजिशो में भाग लेता था। यहा तक कि पोलीना गेओर्गियेव्ना सोकोलोवा भी, जिसे कोशेवोई परिवार वाले चाची पोल्या कहकर बुलाते थे, और जिसे सापक्षतया बहुत कम जानते थे, वह भी उसकी मा की अपेक्षा ओलेग के कहीं निकट हो गयी थी। यह सब कैसे, कब और क्या हुआ?

पहले येलेना निकोलायेव्ना और चाची पोल्या एक दूसरे से इतनी अभिन्न थी कि जब कभी बातचीत में एक का जिक्र आता तो दूसरी का नाम भी तत्काल दिमाग में घूम जाता। उनकी मित्रता प्रौढ और अनुभवी स्त्रियो की मित्रता जैसी थी। एक ही काय क्षेत्र में सक्रिय होने के कारण वे एक दूसरी के अधिक निकट आ गयी थी। उनके दृष्टिकोण एक जैसे थे। किन्तु जब लडाई छिडी तो चाची पोल्या ने जैसे सभी लोगो से नाता ही तोड लिया। उसने कोशेवोई परिवार क घर जाना तक बद

कर दिया। जब कभी पुरानी दोस्ती की याद कर येलेना निकोलायेव्ना उसके पास आती तो चाची पोल्या को यह स्वीकार कर शर्म आने लगती कि उसके पास एक गाय है जिसका दूध वह बेचती है। उसे यह डर बना रहता कि कहीं येलेना निकोलायेव्ना उसे इस बात के लिए बुरा भला न कहे कि उसने अपने निजी स्वार्थों के लिए देश की भलाई की खातिर काम करने से मुह मोड लिया है। पर येलेना निकोलायेव्ना मन ही मन समझती कि पोलीना के साथ इन बातों पर बहस करने की कोई सम्भावना नहीं है। अत उनकी मित्रता जहा की तहा रुक गयी। वह आगे न बढ सकी।

पोलीना गेओर्गियेव्ना ने कोशेवोई परिवार में फिर से तब आना शुरू किया जब जर्मन उसके नगर को अपना घर समझकर वहीं बसने लगे थे। वह वहा खुले दिल से आती, और अपना दु ख सुनाने लगती। येलेना निकोलायेव्ना को फिर अब उसकी पुरानी सहेली मिल गयी थी। वे अपने मन की बातें कहने-सुनने के लिए फिर अक्सर एक दूसरे से मिलती, एक दूसरे के पास उठती-बैठती। अब भी ज्यादा बात येलेना निकोलायेव्ना ही करती और नम्र तथा शान्तचित्त चाची पोल्या अपनी थकी हुई किन्तु होशियार आखो से, चुपचाप उसे निरखा करती। चाची पोल्या की चुप्पी के बावजूद येलेना निकोलायेव्ना ने यह बात समझ ली थी कि ओलेग पोलीना की ओर पूरी तरह आकृष्ट हो चुका है। जब कभी वह आ जाती तो ओलेग उसी के पास मडराने लगता और प्राय येलेना निकोलायेव्ना उन्हें एक दूसरे के साथ आख मिलाते हुए देख लेती —कुछ वैसी ही निगाह जैसी प्राय वे लोग डालते है जिन्हें एक दूसरे से कुछ कहना होता है। और जब कभी वह दो चार मिनट के लिए कमरे से बाहर जाकर फिर लौट आती तो उसे महसूस होता जैसे उसने उनकी किसी खास बातचीत में बाधा डाली है। और जब कभी पोलीना गेओर्गियेव्ना जाने लगती और येलेना निकोलायेव्ना उसे

दरवाज़े तक पहुचाना चाहती तो वह बडी विनम्रता से कह देती—"नही, नही, प्यारी येलेना, तक्लीफ न करो। मैं खुद चली जाऊगी।" पर जब कभी ग्रोलग उसे सडक तक छोडने जाता ता वह ऐसा कभी न कहती।

यह सब हुग्रा कैसे? मा का दिल यह सब वर्दाश्त कैसे करता? दुनिया में ऐसा कौन है जो उसके बेटे को उससे ज्यादा समझता है, कौन उसके विचारा ग्रौर कार्यो को ग्रपना समझकर उनमें हाथ बटा सकता है। कुसमय में मातृ-स्नेह की शक्ति से बढकर कौन उसके बेटे की रक्षा कर सकता है? किन्तु सत्य की ग्रावाज़ ने उसे यह विश्वास दिला दिया था कि उसका बेटा जिन्दगी में पहली बार उससे ग्रपना राज़ छिपा रहा है क्याकि उसे ग्रपनी मा में विश्वास नही रह गया था।

एकलौते बेटा की सभी माताग्रो की तरह वह भी ग्रपने बेटे में गुण ही गुण देखती थी, पर वस्तुत वह उसे ग्रच्छी तरह समझती थी।

जिस समय से नगर में 'तरुण गाड' के रहस्यपूर्ण हस्ताक्षरो से परचे निकलना शुरू हो गये थे, तभी से उसे इस बात में कोई सन्देह नही रह गया था कि ग्रोलेग का उस सगठन से न सिर्फ सबध है है बल्कि वह उसमें प्रमुख भाग भी लेता है। उसे चिन्ता होती थी, कष्ट होता था ग्रौर साथ ही गर्व भी होता था, पर वह यह भी समझती थी कि कृत्रिम साधना से वह उससे कुछ भी कबुलवा नही सकती।

सिर्फ एक बार उसने उससे बातो बाता में पूछा था—

"इन दिनो तुम्हारे दोस्त कौन कौन है?"

ग्रौर कपट तथा धूर्तता के साथ, जा उसके लिए एक ग्रसामान्य बात थी, उसने ऐसा रुख ग्रपनाया मानो इस प्रश्न का सबध उस बातचीत से हो जो कभी पहले लेना पोल्निशेवा के बारे में उनके बीच हुई थी। उसने कुछ घबराकर उत्तर दिया

"म न नीना इवान्त्सोवा के साथ घूमता हू "

उसकी मा ने जिस लापरवाही का बहाना करके सवाल पूछा था उसकी वह लापरवाही कायम न रह सकी, बल्कि वह चतुराई से पूछ बैठी—

"और लेना?"

ओलेग ने एक शब्द कहे बिना, अपनी डायरी निकाली और अपनी मा को थमा दी। इसमें उसकी मा ने लेना पोज्दनिशेवा के साथ अपने बेटे के भूतपूर्व प्रेम और मोह की कहानी पढी और यह भी पढ लिया कि अब लेना के बारे में ओलेग की क्या राय है।

किन्तु जिस दिन सुबह उसने अपने पडोसियो से फामीन की फासी की खबर सुनी तो वह जारा से चीखने ही वाली थी कि उसने अपने पर जब्र किया और अपने बिस्तर पर निढाल होकर पड रही। नानी वेरा, सुरक्षित लाश की तरह मूक और रहस्यपूर्ण, उसके पास आयी और उसके माथे पर एक ठडा तौलिया रख दिया।

दूसरी माताओ की तरह उसे भी एक क्षण के लिए यह सदेह न हुआ कि सचमुच उसी के बेटे ने फामीन को फासी दी होगी। परन्तु वह ऐसी ही दुनिया में आजकल रह रहा था और उनका यह सघर्ष बडा ही भयानक और क्रूर था! उसके बेटे को कौन-सी सजा दी जायेगी? उसे इस प्रश्न का अब भी कोई उत्तर न मिल रहा था। पर अब इस तरह के रहस्य का अन्त होना चाहिए—जिन्दगी ऐसे नही चल सकती।

इस समय उसका बेटा शैड में अपने पलग पर, सिर झुकाये बैठा था। उसका एक कधा दूसरे से ऊचा था। वह हमेशा की तरह साफ-सुथरा था, बढिया कपडो में था। धूप में घूमने के कारण उसकी चमडी सवला गयी थी। उसके ठीक सामने सावला, चुस्त-बदन और लम्बी नाक वाला कोल्या सुम्स्कोई लकडी के कुन्दे पर बैठा था। दोनो शतरज खेल रहे थे।

दोना खेल में खो से गये थे। हा, कभी कभी कुछ क्षणो के लिए ये आपस में ,कुछ ऐमी वान जरूर कर लेते, जिनके कुछ अश सुनकर किसी भी कम अनुभवी व्यक्ति का यही विश्वास होने लगता कि वे दोनो पुराने और पक्के अपराधी ह।

मुस्काई – 'स्टेशन पर अनाज की गत्ती है जैसे ही उसमें पहली कटाई का अनाज भरा गया कि कोल्या मिरोनोव और पलागूता ने उसमें किलनी डाल दी, जो अनाज चाट जाती है। "

चुप्पी।

ओलेग – "तो सारा अनाज काटा जा चुका है?"

सुम्कोई – "वे हमसे कटवा रहे है बहुत-सा अनाज गट्ठरो औ टालो में बधा है और खुला हुआ भी पडा है। वहा उसकी फटकाई र लदाई का कोई प्रबध नही।

चुप्पी।

आलेग – "टालो में आग लगा देनी चाहिए। तुम्हारा रुख पिटनेवाला

चुप्पी।

आलेग – "यह भी अच्छा ही है कि तुम्हारे लोग सरकारी फार्म है। हडक्वाटर में हमने इस सबध में विचार करके यह निश्चय था कि फार्मों पर हमारे अपने दल जरूर होने चाहिए। तुम्हारे हथियार है?'

मुस्काई – "ज्यादा नही है।"

आलेग – "तो तुम्ह कुछ इकट्ठा करने की जरूरत पडेगी।"

सुम्काई – "इकट्ठा करने की, कहा से?"

आलेग – "स्तापी में। और जमनो के पास से भी चुरा सक वे लोग बड़ा ही लापरवाह हैं।"

मुस्काई – "मजे की है, अच्छा सा नह!

ओलेग –"गोट मार दी! तुम्हे इसकी कीमत चुकानी पडेगी जिस तरह हमारे हमलावरो को चुकानी पड रही है।"

सुम्स्कोई –"मै हमलावर नही हू।"

ओलेग –"लेकिन तुम भी दुमछल्ले देशो की तरह नोक-झोक कर रहे हो।"

सुम्स्कोई –"इस समय मेरी स्थिति फ्रासीसियो की सी है।" सुम्स्कोई मुस्करा दिया।

चुप्पी।

सुम्स्कोई –"अगर मेरा पूछना मुनासिब न हो तो माफ करना। मै उस आदमी के बारे में जानना चाहता हू जिसे फासी दी गयी थी। क्या उसमें लोगो का हाथ था?"

ओलेग –"कौन कह सकता है?"

"खूब," सुम्स्कोई ने सतोष के साथ कहा। "मेरा ख्याल है कि अगर उनमें से कुछ और लोगो को ठिकाने लगा दिया जाय तो बेहतर होगा, भले ही यह काम पीछे से हमला करके किया जाय। अच्छा तो यह हो कि छुटभैया के साथ साथ उनके 'अफसरो' को भी ठिकाने लगाया जाये।"

"बेशक होना तो यही चाहिए। वे है भी बडे लापरवाह!"

"मेरा विचार है कि सब कुछ छोड-छाड दू," सुम्स्कोई बोला, "खेल में मेरी स्थिति निराशाजनक है और अब समय आ गया है कि मै घर चला जाऊ"।

ओलेग ने बडी सतर्कता के साथ शतरज एक ओर हटाकर रख दिया, तब दरवाजे के पास गया, बाहर देखा और लौट आया।

"शपथ लो।"

खेल खत्म होने के कुछ ही मिनटो बाद दोनो आमने-सामने खडे हो गये। उनका कद एक जसा था किन्तु ओलेग के कधे अधिक चौडे थे।

दोनों के हाथ लटके हुए थे। उनकी आँखों में निष्ठा की स्वाभाविक झलक थी।

मुस्त्काई ने अपने जैकेट की जेब टटोली और एक पुर्जा निकाल लिया। उसका चेहरा पीला पड़ गया।

'मैं, निकोलाई मुस्त्काई," उसने नीची आवाज में कहना शुरु किया "'तरुण गार्ड' दल में भरती होने के समय अपने साथियों, चिरसतप्त अपनी मातृभूमि और अपने सारे जन-समाज के समक्ष पूरी निष्ठा के साथ शपथ लेता हूँ"—वह इतना उत्तेजित हो उठा था कि उसकी आवाज में सनसनाहट-सी सुनाई पड़ती थी। वह फिर यह सोचकर कि उसकी आवाज बाहर किसी को सुनाई न दे जाय फुसफुसाती हुई आवाज में कहता रहा। " यदि जुल्म या बुजदिली के कारण मैं इस पवित्र शपथ का अतिक्रमण करूँ तो मेरे भविष्य के लिए मेरे और मेरे स्वजनों के नाम पर कलंक लगे और मेरे साथी मुझे कठोर से कठोर दंड दें। खून का बदला खून! और मौत का बदला मौत!"

"मैं तुम्हें बधाई देता हूँ। अब से तुम्हारी जिन्दगी तुम्हारी अपनी नहीं रही। वह पार्टी की, सारी जनता की हो चुकी है," ओलेग ने उत्तेजित होकर कहा और उसका हाथ दबाया, "अब तुम्हें अपने सारे आत्मदान देने का समय दिखानी होगी"।

अब मुस्त्र शाम घर जाता और कपड़े उतारकर चुपचाप सो जाता था। उसकी माँ पहले से ही सो गयी थी या शायद सोने का बहाना कर रही थी। उस हालत में उसकी सहमी किन्तु व्यंग्य-भरी दृष्टि से भागने ... का सामना हो न होगी और न उससे सामना यह बताना पड़ेगा कि उसके जीवन में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।

[illegible] तारीख के [illegible] का [illegible] रहा होगा उसने [illegible] के [illegible] में प्रवेश किया, चुपचाप कमरे का दरवाजा खोला और [illegible] [illegible]। [illegible] खिड़की में [illegible] और [illegible] पर

काले काले परदे पडे थे। रसोईघर में चूल्हा दिन भर जलता रहा था। सारे मकान में बुरी तरह घुटन थी। एक पुराने टीन के डिब्बे में तेल की बत्ती जला रखी थी, ताकि ऊचाई पर रहने से मेज़पोश पर तेल की बूदें न गिरें। बत्ती की टिमटिमाती रोशनी में उस अधियारे कमरे में परिचित वस्तुओं का आकार और कोई कोई हिस्सा अधिक स्पष्ट नजर आने लगा था।

उसकी मा हमेशा बडी साफ-सुथरी रहती थी। इस समय न जाने क्यो वह पलग पर बैठी हुई थी। उसका कम्बल पलटा हुआ था। वह अपने कपडे अभी भी पहने हुए थी और उसके बाल सवरे हुए थे। उसके छोटे छोटे बादामी हाथ जिनके जोडो में सूजन थी, उसकी गोद में पडे थे। वह बत्ती की लौ की ओर देख रही थी।

घर में कितनी शान्ति थी! मामा कोल्या, जो अब अपना अधिकाश समय अपने साथी इजीनियर विस्त्रीनोव के साथ व्यतीत किया करता था, घर पर सो रहा था। खुद मरीना भी सो रही थी। नन्हा-सा भतीजा, जो अब भी ओठ फुलाये हुए था शायद पहले ही सो गया था। आज पहली बार नानी नीद में खर्राटे नही भर रही थी। घडी की टिक टिक तक जैसे सो रही थी। सिर्फ मा जग रही थी, प्यारी मा!

किन्तु इस समय सबसे जरूरी बात यह थी कि अपनी अनुभूतिया प्रगट न होने पाये उसे मा के पास से होकर गुज़र जाना और अपने बिस्तर पर पडकर ऐसा बहाना करना था मानो उसे नीद लग गयी हो

लम्बा कद, भारी-सा बदन। वह मा के सामने घुटना के बल पड रहा और मुह उसकी गोद में छिपा लिया। उसे लगा जैसे मा के हाथ उसके गालो पर फिरे, और उसे ऐसी स्निग्धता का अनुभव हुआ जो सिवा मा के अन्यत्र असभव है। कही दूर से आती हुई चमेली की खुशबू और

बिरायत या बैंगन की पत्तियों की तीखी तीखी-सी गंध उसकी घ्राणेंद्रिया में प्रवेश करने लगी पर इससे क्या!

"प्यारी, प्यारी मा!" वह फुसफुसाया और उसकी ओर देखने लगा। उसकी आखो म चमक दौड गयी। "प्यारी मा, तुम तो सब कुछ समझती हो, सब कुछ!"

'हा, म सब समझती हू," वह फुसफुसायी और बिना उसकी ओर देखे उसके ऊपर झुक गयी।

बेटे ने मा की आखो में आखें डालकर देखने का प्रयत्न किया किन्तु मा ने अपनी आखें उसके रेशम जैसे बालो मे छिपा ली। वह बराबर यही फुसफुसाती रही

'मैं हमेशा तुम्हारे साथ हू हर जगह! डरना मत। हिम्मत रखना, मेरे बेटे आखिरी दम तक "

"नही, मा, कुछ मत कहो अब तुम्हे सोना चाहिए " वह फुसफुसाया "तुम्हारे बालो के पिन निकाल दू?"

और जैसा वह बचपन में किया करता था, वह एक के बाद एक, सभी पिनें निकालने लगा। मा अपना चेहरा छिपाती हुई अपना सिर उसकी बाहो पर रखे रही। उसने सभी पिनें निकाल ली और उसकी चोटिया बगीचे में कोयल मेघा की तरह नीचे गिर पडी। उसके बाल इतने लम्बे थे कि उनसे उसका सारा तन ढक सकता था।

अध्याय ६

कुछ दिनो के लिए नीज्नी अनेक्सान्द्रोव्स्की जाने से पहले वान्या जेम्नुखोव को 'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर से अनुमति लेनी जरूरी थी।

"जानते हो, यह केवल मारूस से मिलने का बहाना नहीं है,"

उसने ओलेग से कहा, "मै बहुत दिनो से यह योजना बना रहा हू कि उसे कज्जाक बस्तियो में युवक-युवतियो को सघटित करने का काम सौपा जाये," उसने जैसे शर्माते हुए कहा।

किन्तु सफर के लिए वान्या के तमाम जोरदार तर्कों के बावजूद ओलेग ने इजाजत न दी।

"दो एक दिन ठहर जाओ," वह बोला, "तुम्हारे लिए कोई दूसरा काम भी निकल आ सकता है नही, यहा नही, वहा," वान्या के चेहरे पर आत्म-नियन्त्रण का भाव दिखाई पडते ही, मुस्कराते हुए ओलेग ने कहा। जब वान्या अपनी वास्तविक अनुभूतिया छिपाना चाहता, तो उसकी शक्ल ऐसी ही लगने लगती।

पिछले कुछ दिनो से पालीना गेओर्गियेव्ना ओलेग से बराबर यह अनुरोध करती रही थी कि वह सीधे ल्यूतिकोव के अधीन काम करने के लिए किसी ऐसे होशियार छोकरे की तलाश करे, जो क्रास्नोदोन और नीज्नी अलेक्साद्रोव्स्की के बीच सदेशवाहक के रूप में काम कर सके। ओलेग ने इसके लिए जेम्नुखोव का नाम सोच रखा था।

ओलेग को ल्यूतिकोव का सदेश देते हुए चाची पोल्या ने उससे जोर देकर कहा था कि इस काम के लिए साथी चुनने में यह ध्यान रखा जाये कि वह सबसे अधिक होशियार और सबसे अधिक विश्वसनीय व्यक्ति हो।

ओलेग से जेम्नुखोव के बातचीत कर लेने के दूसरे ही दिन, वान्या, स्तेपी से होकर गांव की सडक पर जाता हुआ दिखाई दिया। उसकी आखें कमजोर थी, उसके बिना मोजे के पैरो में खेलने के कैनवस जूते थे और हालाकि धूप तेज न थी फिर भी उसके सिर पर रूमाल बधा था। उसके दोनो ओर खडी फसल लहरा रही थी लेकिन फसल अच्छी नही थी।

उसके मन म, अपनी इस नयी भूमिका और उसके चरम उद्देश्य के महत्त्व के सम्बन्ध म तरह तरह के विचार उठ रहे थे। सफर के समय अपने ही विचारो मे खो जाना कमजोर दृष्टि वाले वाया की एक आदत-सी बन गयी था। वह स्तेपी से गुजरता हुआ न जाने कितने गावो से होकर निकल गया किन्तु रास्ते की किसी भी चीज पर उसका ध्यान न गया।

यदि कोई स्थिति से अनभिज्ञ व्यक्ति जमन अधिकृत किसी इलाके से गुजर रहा होता तो वह अपनी आखो के सामने पडनेवाले, असाधारण रूप से निराशाजनक और बडे ही विपरीत, दृश्य देखकर अवश्य ही विचलित हो उठता। उसने सैकडो गावो को राख के ढेर के रूप में देखा होता। उसे भतपूर्व गावो और कज्जाक बस्तियो के स्थान पर इस समय सिवा कही, किसी जली भुनी अगीठी के ढाचे, जली हुई शहतीर अथवा घास-फूस मे घिरे हुए किसी स्याह दरवाजे पर धूप में घमाती हुई बिल्ली के और कुछ न दिखाई पडता। हा कभी कभी उसकी निगाहो के सामने कज्जाको की कुछ ऐसी बस्तिया भी पड जाती जहा किसी भी जर्मन के कदम नही पडे थे, हा, उन लुटेरे सैनिको को छोडकर जो लूट-मार की तलाश में घूमते हुए कभी कभी वहा पहुच जाते थे।

और ऐसे गाव भी थे जहा जमन शासन की स्थापना हो चुकी थी और इस ढग से, जिसे जमन अपने राज्य के लिए सबसे अधिक लाभप्रद और सुविधाजनक समझते थे। वहा सैनिक लूट-पाट अर्थात् गुजरती हुई फौजो द्वारा की जानेवाली लूट मार तथा हर किस्म की निर्दयता और हिंसा बरती जाती थी। यह सब काड उतने ही बडे पैमाने पर होते थे जितने बडे पैमाने पर पहले समय में रूस पर जमन सेनाओ का अधिकार हो जाने के बाद हुआ करते थे जहा कहा जाता था कि जमन प्रशासन सबसे शुद्ध रूप में था।

नोव्नी अलेक्सान्द्रोव्स्की का कज्जाक गाव ऐसा ही एक गाव था।

वहा क्लावा कोवल्योवा और उसकी मा को, क्लावा की मा के रिश्तेदारो न आश्रय दे रखा था।

वे दोनो क्लावा के कज्जाक मामा के मकान में रहती थी। क्लावा का मामा जमनो के आने के पहले एक मामूली सामहिक किमान था जो अपने परिवार के साथ सामूहिक स्वामित्व वाले खेता में काम करता था। इस कमाई से तथा उसे अपने निजी जमीन के टुकडे से जो कुछ पैदावार या आमदनी हो जाती थी उसी पर गुजर बसर करता था। न वह फाम में ब्रिगेड-लीडर रहा था, न ही मवेशीखाने का कर्त्ता धर्त्ता।

जैसे ही जमन आये कि क्लावा के मामा, इवान निकनोराविच, तथा उसके परिवार को जिन जिन सकटो का सामना करना पडा उनका अनुभव जमन शासन काल में प्रत्येक साधारण कृषक परिवार को हुआ था। आग बढती हुई जमन सेनाओ ने उन्हें इस बुरी तरह लूटा था कि उनके मवेशी, कुक्कुट और अनाज इत्यादि सभी लुट गये थ। मतलब यह कि उन्हे अच्छी तरह लूटा गया था, पर वे उनकी चीजा का पूरा पूरा सफाया न कर सके थे। क्योकि दुनिया में रूसियो के अतिरिक्त अन्य कोई ऐसे किसान नही जो आडे वक्त के लिए अपना सामान छिपाये रखने में इतने हिकमती होते हो।

सेनाओ के निकल जाने और Ordnung – 'नयी व्यवस्था' की स्थापना हो जाने के बाद दूसरे सभी लोगो की तरह इवान निकनारोविच को भी यह सूचना दी गयी कि नीज्नी अलेक्सान्द्रोव्स्की की जो भूमि सामूहिक किसाना को स्थायी रूप से सामूहिक प्रयोग के लिए दी गयी थी, वह अन्य सारी जमीन के साथ साथ, अब जमन शासन की सम्पत्ति होगी। किन्तु कीयेव के राज्य कमीसार की मार्फत Ordnung – 'नयी व्यवस्था' ने यह फरमान निकाला था कि यह जमीन जिसे इतने परिश्रम से और सकट झेलकर एक सामूहिक फाम का रूप दिया गया था, अब फिर छोटी छोटी पट्टियो म

बाटी जायेंगी और एक एक पट्टी की जताई बुआई एक एक कज्जाक परिवार करेगा। किंतु यह कारवाइया तब तक के लिए स्थगित रहेगी जब तक सभी कज्जाको और किसानो के पास खेतीबारी के अपने अपने औजार और माल ढोने के साधन नहीं हो जाते। और जब तक उनके पास ये औजार और साधन नही हो जाते तब तक जमीन अपनी पहली ही स्थिति मे रहेगी, फर्क यही होगा कि अब वह जर्मन राज्य की सम्पत्ति बन जायगी। जमीन की खेतीबारी के निरीक्षण के लिए जर्मन अधिकारी, कज्जाक गाव मे एक मुखिया नियुक्त करेंगे, जो रूसी होगा। वस्तुत उसकी नियुक्ति पहले मे ही हो चुकी थी। कृषक परिवारो को दस दस के समूहो में बाटा जाना था और एक एक समूह के लिए जर्मनो द्वारा एक एक रूसी मुखिया की नियुक्ति होनी थी। इन मुखिया की नियुक्ति भी जर्मनो द्वारा हो चुकी थी। जमीन पर काम करने के बदले किसानो को कुछ अनाज दिये जाने की व्यवस्था थी और किसान अच्छा काम कर इसके लिए उन्हे पहले से ही बता दिया गया था कि आगे चलकर निजी इस्तेमाल के लिए जमीन का एक एक टुकडा सिर्फ उन्ही किसानो को दिया जायेगा जो इस समय अच्छा काम करेगे।

किसान अच्छा काम कर सके इस हेतु, इस बीच, जर्मन सरकार न तो उन्हे मशीनें दे सकी थी, न पेट्रोल, न घोडे। खेतो मे काम करनेवालो को अपने हल या हंसिये आदि औजारो से और अनाज की ढुलाई के लिए अपनी अपनी गायो से काम चलाना था। जो लोग अपनी गायो से काम न लेना चाहते थे, उन्हे इस बात की आशा नहीं हो सकती थी कि आगे चलकर उन्हे अपने इस्तेमाल के लिए जमीन का कोई टुकडा मिलेगा भी। इस बात के बावजूद कि इस ढग की खेतीबारी के लिए काफी श्रम शक्ति की जरूरत पडती है जर्मन अधिकारियो ने स्थानीय श्रम शक्ति को सुरक्षित रखने के बजाय सबसे स्वस्थ और योग्य स्थानीय

लोगो को जमनी भेज देने के सम्बन्ध मे सभी आवश्यक कायवाहिया कर ली थी।

चूकि जमन सरकार यह तखमीना नही लगा सकी थी कि उसे कितने गोश्त, दूध और अडा की आवश्यकता हागी अतएव उसने नीज्नी अलेक्सान्द्रोव्स्की गाव पर आरम्भ मे हर पाच परिवारो पीछे एक एक गाय तथा हर परिवार पीछे एक एक सुअर, आधा आधा हड्रेडवेट आलू, बीस बीस अडा और ७५–७५ गैलन दूध का टैक्स बाध दिया था। किन्तु चूकि अधिक की जरूरत पड सकती थी – और हमेशा पडती ही थी – अतएव कज्जाको और किसानो का अपने इस्तेमाल के लिए किसी भी मवेशी या मुग मुर्गी को बध करने का अधिकार न था। किन्तु यदि जरूरत आ ही पडे और उन्ह एक सुअर मारने की जरूरत पडे तो चार परिवार परस्पर मिलकर एक सुअर काट सकते थे, किन्तु ऐसा करने पर उन्ह जमन राज्य को तीन सुअर भेंट करने पडते थे।

इवान निकनोरोविच तथा उसके साथी ग्रामीणा के परिवारा से यह सारी चौथ वसूल करने के लिए डाइरेक्टर सोन्दरफ्यूरर साण्डेस के अधीन एक जिला कृषि कमाडाटुर की स्थापना की गयी। यह व्यवस्था दस दस परिवारो पर नियुक्त एक एक मुखिया और गाव भर के एक मुखिया की व्यवस्था के अतिरिक्त थी। यह सोन्दरफ्यूरर, आबेर्लेफ्टिनेंट श्रीक स भिन्न न था। उसे गावो की आबोहवा गम लगती थी और वह एक जाघिया और सैनिक जैकेट पहने गावा और बस्तियो का दौरा किया करता था। हा जब कभी वह कज्जाक औरतो के सामने पड जाता तो वे अपने शरीर पर सलीब का निशान बनाने और जमीन पर ऐसे थूकने लगती माना उन्हाने स्वय शैतान का देख लिया हा। यह जिला कृषि कमाडाटर क्षेत्रीय कृषि कमाडाटुर के अधीन था जिसके पास कही अधिक कमचारी थे। क्षेत्रीय कृषि कमाडाटुर का अध्यक्ष था सान्दरफ्यूरर न्यूकुर्कर जा, यह सही है,

पतलून पहनता था किन्तु खुद इतना ऊंचा था, अपने को इतना बड़ा समझता था कि गांवों का दौरा करके अपने पद का हीन न करना चाहता था। अन्तर क्षेत्रीय कृषि कमांडाटुर Landwirtschaftsgruppe लडवीतशाफ्तसग्रूप्प अथवा सक्षेप में ग्रूप्पे 'लै' के अधीन था, जिसका अध्यक्ष था मजर स्तान्दर। ग्रूप्पे 'लै' इतने ऊंचे स्तर का था कि किसी ने उसे कभी नहीं देखा। पर स्वयं ग्रूप्पे 'लै' भी Wirtschaftskommando वीतशाफ्तकोमांदो ६, अथवा सक्षेप में 'विक्दो ६' के एक विभाग से कुछ अधिक न रह गया। इसका प्रधान था डाक्टर ल्यूदे। और 'विक्दो ६' एक ओर तो वोरोशीलोवग्राद के नगर में फेल्दकमांडाटुर यानी जमन पुलिस हेडक्वाटर, के अधीनस्थ था और दूसरी ओर राइह कमीसार के अधीन काम करनेवाले सरकारी सम्पत्ति के प्रमुख प्रशासन के अधीनस्थ। इस प्रशासन का मुख्य कार्यालय कीयेव में था।

इस विस्तृत शासन-व्यवस्था के अन्तगत बड़े बड़े पदों पर आसीन इन लोफरों और डाकुओं से इवान निकनोरोविच और उसके ग्रामीण साथी अपने अनुभव से यह अच्छी तरह समझ चुके थे कि जमन फासिस्टों का शासन न सिर्फ अत्याचारी शासन है वह तो आरम्भ से ही नजर आ गया था—अपितु तुच्छ, मूढ और लुटेरा भी है। अबोध जबान बोलनेवाले, इन लुटेरों को भर पेट खाना भी चाहिए था और यह भी उसे और उसके साथियों को जुटाना था।

बेशक, इस समय तक इवान निकनोरोविच और उसके गांव के साथी तथा पास-पड़ोस के कज्जाक गांवों—गुन्दारोव्स्काया, दवीदोवो और मकारोव-यार—के निवासी जमन अधिकारियों के प्रति उसी ढंग से व्यवहार करने लगे थे, जैसे स्वाभिमानी कज्जाकों को मूख अधिकारियों के साथ करना चाहिए। वे उनकी आंखों में धूल डालने लगे थे।

अधिकारियों को धोखा देने का उनका मुख्य ढंग यह था कि रे

खेतो में सचमुच काम करने के बजाय केवल काम करने का बहाना करते थे, जो कुछ उगा लेते थे उसे नष्ट कर डालते थे और अगर मौका लग जाता था तो उसे अपने इस्तेमाल के लिए उडा लेते थे और पशु, मुर्गियां और खाद्यान्न छिपा देते थे। इस धोखेबाज़ी को आसानी से क्रियान्वित करने की दृष्टि से कज्जाक और किसान पूरी पूरी कोशिश करते थे कि दस दस परिवारो पर एक एक मुखिया के पद पर और गावो तथा बस्तियों के मुखियों के पदो पर कायदे के लोग नियुक्त किये जायें। सभी प्रकार के क्रूर शासनो की भांति जमन अधिकारियो को भी मुखियो के पद पर नियुक्त करने के लिए काफी क्रूर लोग मिल गये थे। पर जैसा कि कहते है, इन्सान अमर नही है। मुखिया एक दिन रहता था तो दूसरे दिन बिला जाता था, मानो हवा में गायब हो गया हो।

क्लावा कावल्यावा की उम्र कोई १८ साल की थी। वह इन सब कारवाइयो से दूर ही रहा करती। वह चिडचिडी हो उठी थी इसलिए कि उसके रहने-सहने के वतमान ढग पर अनेकानेक प्रतिबंध लगे थे, इसलिए कि उसके कोई मित्र न थे, इसलिए कि वह अध्ययन नही कर पाती थी, इसलिए कि वह अपने पिता के लिए चिन्तित रहती थी। वह वान्या के सपने देख देखकर अपने को खुश करती रहती और यह कल्पना किया करती कि एक दिन वह भी आयेगा जब ये सारी मुसीबते खत्म होगी, वान्या के साथ उसका ब्याह होगा, उनके बच्चे होगे और वे दोनो अपने बाल-बच्चो के साथ सुखी जीवन व्यतीत करगे। उसकी कल्पना बडी स्पष्ट और व्यावहारिक हुआ करती थी।

उसने किताबें पढ पढकर भी कुछ समय आराम से काटने का प्रयत्न किया, किन्तु नीज्नी अलेक्सान्द्रोव्स्की में तो पुस्तक मिलना आसान काम न था। अतएव जब उसे पता चला कि गाव मे उस अध्यापिका के स्थान पर, जो बाहर चली गयी थी, एक नयी अध्यापिका आ गयी है, तो उसने

निश्चय किया कि उससे पुस्तके मागने में कोई लज्जा की बात नही।
अगरचे उम अध्यापिका की नियुक्ति नये जिला अधिकारियो द्वारा हुई थी
तो भी क्या हुआ।

अध्यापिका स्कूल मे उस कमरे में रहने लगी थी जहा उससे पहले
उसी की जगह काम करनेवाली अध्यापिका रहती थी। स्थानीय गप्पिया के
अनुसार नयी अध्यापिका पुरानी अध्यापिका का फर्नीचर और उसकी
निजी चीजे भी इस्तेमाल कर रही थी। क्लावा ने दरवाजा खटखटाया
और बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये हुए अपने भारी और मजबूत हाथ से
द्वार खोल दिया। वह उस कमरे में पहुची जो इमारत की परछायी वाली
ओर पडता था जिसकी खिडकियो पर परदे पडे थे। उसने कमरे में याका
यह देखने के लिए कि अध्यापिका घर पर है भी या नही। अध्यापिका
एक ओर झुकी हुई खिडकी पर पखो के झाड से दासा साफ कर रही थी।
उसने सिर घुमाया, गनी हुई भौंह ऊपर उठायी, सहसा चौंकी और
खिडकी की सिल्ली के सहारे खडी हो गयी। फिर वह सीधी खडी हुई और
क्लावा को गौर से देखने लगी।

"शायद, तुम "

उसने अपनी बात पूरी नही की। उसके चेहरे पर अपराधिया जसी
मुस्कराहट बिखर गयी और वह क्लावा से मिलने के लिए आगे बढ आयी।
वह छरहरे बदन की और सुनहरे बालावाली स्त्री थी। वह साधारण पोशाक
पहने थी, उसके आठ पतले और खिचे हुए तथा आखें भूरी, कठोर और
सीधी थी। उसके ओठो पर प्राय मुस्कराहट बिखर जाती जिससे उसका
चेहरा बेहद आकर्षक लगने लगता।

"जिस अलमारी में स्कूली पुस्तके रखी थी उसे उसी इमारत में
रहनेवाले जमना ने नष्ट कर डाला था। पुस्तको के पन्ने गदी से गन्दी
जगहो में पडे मिले। पर कुछ किताबें अब भी साबुत बच गयी हैं। चलो

देखें," वह बोली। वह एक एक शब्द इतना तौल तौलकर, और शुद्ध बोल रही थी, जैसे प्राय एक अच्छी रूसी अध्यापिका बोलती है--"तुम यहीं रहती हो क्या?"

'हा, मेरा ख्याल तो है," कुछ सकुचाते हुए क्लावा ने जवाब दिया।

"बात छिपा क्या रही हो?"

क्लावा जैसे घबरा गयी। अध्यापिका ने सीधे उसपर एक निगाह डाली।

"आओ, बठें," वह बोली।

पर क्लावा बराबर खड़ी रही।

'मैंने तुम्हे बास्तादान में देखा है," अध्यापिका बोली।

क्लावा ने उसे कनखियों से देखा पर कोई उत्तर न दिया।

"मैंने सोचा था तुम चली गयी हो," अध्यापिका ने अपनी बात जारी रखी। उसके ओठों पर मुस्कान वैसे ही खेल रही थी।

"म कहीं नहीं गयी थी।"

'तो फिर किसी को पहचान गयी होगी!"

"तुम्हे कैसे मालूम?" क्लावा ने उसे एक बार फिर घूरकर और उत्सुकता के साथ उसे कनखियों से देखा।

"किसी तरह जानती ही हू। पर चिन्ता न करो। [illegible] सोच रही हो, मुझे यहा जमना ने [illegible] है और [illegible]

"म कुछ भी नहीं सोच रही हू।'

"नहीं सोच रही हो!" अध्यापिका [illegible] चेहरा कुछ कुछ लाल हो उठा। "तुम किसे पहचानी [illegible]?"

'अपने पिता को।"

'नहीं, वह तुम्हारे पिता [illegible]'

"पिता ही थे।"

"अच्छी बात है और तुम्हारे पिता काम क्या करते है?"

"ट्रस्ट में काम करते है," कलावा बोली और उसके बालो की जडें तक शर्म से लाल हो उठी।

'बैठ जाओ और यह शर्म-वर्म छोडो," अध्यापिका ने कलावा का स्पर्श करने के लिए लापरवाही से अपना हाथ आगे बढाया। कलावा बैठ गयी।

"तो तुम्हारा मित्र चला गया है?"

"कैसा मित्र?" कलावा का दिल जोर जोर से धडकने लगा।

"मुझसे मत छिपाओ। मैं सब जानती हू।" अब अध्यापिका की आवाज की कठोरता दूर हो गयी थी और उनमें दया और शरारत छलकने लगी थी।

"भले ही तुम मुझे मार डालो, मैं तुम्हे कुछ न बताऊगी!" सहसा उग्र होकर कलावा ने सोचा। "तुम क्या कह रही हो, मैं नही जानती। ऐसी बाते मुझे अच्छी नही लगती," उसने खुलकर कहा और खडी हो गयी।

इस समय तक अध्यापिका को अपने ऊपर कोई वश न रह गया था। वह जोर से हस पडी और धप से तपे अपने हाथ और सुनहरे बालोंवाला अपना सिर हिलाने-डुलाने लगी। सहसा वह उठी और उग्र गति से साथ कलावा के कधे के चारो ओर बाह डाल दी।

"मेरी प्यारी मुझे माफ करना। तुम्हारा दिल तो हथेली मे रहता है,' वह बोली और उसे अपने और निकट खीच लिया। "मैं तो केवल मजाक कर रही हू। तुम्हें मुझसे नही डरना चाहिए। मैं फिर भी अध्यापिका हू। हमें जोता है और यह जरूरी नहीं कि जमाना के अधीन हम केवल बुरी बात ही लोगो को सिखायें।"

दरवाजे पर जोरो की दस्तक हुई।

"शायद मार्फा है!" उसने धीरे-से, खुश होकर कहा।

चमचमाता हुआ सफेद रूमाल लपेटे एक लम्बी और मजबूत हड्डियोवाली औरत ने कमरे में प्रवेश किया। उसके नगे और धूप से तपे पैर धूल से भरे थे। उसकी बगल में कपडा का एक बडल था।

"नमस्ते!" उसने कहा और एक प्रश्नसूचक दृष्टि क्लावा पर डाली, "हम लोग काफी पास पास रहते हैं फिर भी मैं बहुत अरसे से तुमसे मिलने न आ सकी," उसने अध्यापिका से ऊची आवाज में कहा और अपने मजबूत दात निकाल दिये।

"तुम्हारा नाम क्या है?"

"क्लावा।"

"क्लावा," अध्यापिका बोली, "म तुम्हे कक्षा में ले चलूगी और वहा तुम्हे अपने लिए कुछ किताबें मिल जायेंगी। कम चली न जाना, मुझे ज्यादा देर न लगेगी," वे साथ साथ कमरे से निकल गयी।

अध्यापिका और काई नही येक्तेरीना पाव्लोव्ना प्रार्सेवो थी वह कुछ मिनटो बाद वापस आ गयी।

"क्या बात है? क्या खबर है?" उसने उत्तेजित होकर पूछा।

मार्फा बैठी थी। उसने अपना बडा और मेहनत से कठोर पडा हाथ अपनी आखो पर रखा हुआ था। उसके मुह पर अभी तक जवानी झलक रही थी, किन्तु मुह के कोनो पर परेशानी की गहरी रेखाए उभर आयी थी।

"हम, या चिल्लाऊ, मैं नही जानती," आखो पर से हाथ हटाती हुई मार्फा उफनती भाषा में बोली, "पोगारेलो गाव से एक छोकरा आया था। उसने मुझे बताया कि गोर्दई कानिर्येका को बन्दी बना लिया गया है। बताओ, बताओ क्या करू?" उसने सिर उठाया और रूखी में

कहने लगी, "पोगोरेली फोरेस्ट्री स्टेशन पर कोई साठ कैदी काम करते हैं और उनके चारो तरफ पहरा रहता है। वे सेना के लिए लकडी काटते है। मेरा गोर्देई भी वही है। वे लोग बैरको मे रहते है और उन्हे बाहर नही निकलने दिया जाता। वह भूखा मर रहा है। उसका सारा बदन सूज गया है। बताओ न, मै क्या करू? जाऊ वहा?"

"उसने तुमसे कहलाया कैसे?"

'कुछ और लोग भी वहा काम करते है जो कैदी नही है। उसे एक गाव वाले से फुसफुसाकर एक-दो बाते करने का मौका मिल गया था। जर्मन लोग यह नही जानते कि वह इसी इलाके का है।"

येक्तेरीना पाव्लोव्ना कुछ क्षणो तक चुपचाप उसे देखती रही। इस मामले में कोई सलाह नही दी जा सकती थी। मार्फा हफ्तो पोगोरेली गाव में रहकर चिन्ता करती रहे और फिर भी पति से उसकी मुलाकात न हो। ज्यादा से ज्यादा वे एक दूसरे पर निगाह भर डाल लेगें, पर इससे तो शारीरिक कष्ट से पीडित उसके पति की असह्य दिमागी परेशानी ही बढेगी। और उसके पास खाना पहुचाना भी असम्भव ही होगा—ये युद्ध बन्दियो के बैरक किस प्रकार के थे इसकी कल्पना करना कठिन न था।

"तुम्हे खुद निश्चय करना होगा।"

"तुम चलोगी?' मार्फा ने पूछा।

'हा, मै जाऊगी," आह भरते हुए येक्तेरीना पाव्लोव्ना ने कहा, "और तुम जाओगी—लेकिन कोई मतलब न निकलेगा"।

'और म भी यही कहती हू कोई मतलब न निकलेगा। इसलिए मै नही जा रही हू,' मार्फा बोली। उसने आखें अपने हाथ से ढक ली।

"क्या कोर्नेई तीखोनाविच यह बात जानता है?'

' उसका कहना है कि अगर उसे अपना दस्ता ले जाने की इजाज़त मिल जाय तो वह उसे छुडा लेगा

येकतेरीना पाव्लोव्ना के चेहरे पर परेशानी और उदासी की झलक उठी। वह जानती थी कि कोर्नेई तीखानोविच के अधीन काम करनेवाले छापेमार दस्ते को इस प्रकार के गौण कार्यों के लिए इस्तेमाल नही करना चाहिए।

सभी प्रमुख जमन सचार-लाइनें अब वारोशीलावग्राद प्रदश से होकर जाती थी। इवान फ्योदोरोविच प्रोतसेको के हाथो में जो कुछ था, उसने जो नयी नयी व्यवस्थाए की थी, उन सभी का एक ही उद्देश्य था कि दोनबास से सैकडो मील दूर स्तालिनग्राद की बडी लडाई में विजय प्राप्त करने में मदद दें।

प्रदेश के सभी छापमार दस्तो का कई छाटे छाटे दलो म बाट दिया गया था जो अब पूव और दक्षिण को जानेवाले समस्त राजमार्गों, देहाती सडका और तीन रेलवे लाइनो पर काम कर रहे थे। इन दला की शक्ति अभी तक कम थी। इसी लिए इवान फ्योदोरोविच ने जिमका पता ठिकाना अकेली उसकी पत्नी मार्फा कोनियेंको और सदेशवाहिका श्रोतोवा को मालूम था, प्रदेश में काम करनेवाली सभी खुफिया जिला कमिटियो की शक्ति तमाम सडको पर तोड फोड के कामो मे लगा दी थी।

येकतेरीना पाव्लोव्ना यह सब कुछ अच्छी तरह जानती थी क्याकि दलो के असख्य सचार सूत्र उसके छोटे छाटे और समथ हाथा में होत थे जिन्हे वह सूचना के एक सूत्र के रूप में इवान फ्योदोरोविच का भेज दिया करती थी। इसलिए जब मार्फा ने उसके सामने कोर्नेई तीखानाविच का सुझाव रखा तो उसने कोई उत्तर न दिया हालाकि उसने यह समझ लिया था कि उसके पास मार्फा के आने का एक ही उद्देश्य था—अपनी गुप्त आशा को फलीभूत होते हुए देखना। पति के साथ येकतेरीना पाव्लोव्ना का कोई प्रत्यक्ष सम्पक न था। यह सम्पक मार्फा, या कहना

चाहिए, मार्फा के घर के जरिये होता था। उसने पति के बारे में कुछ पूछा-ताछा भी नहीं। उसने समझ लिया था कि अगर मार्फा ने उसके पति के बारे में कुछ नहीं कहा था तो इसके माने यह है कि उसकी कोई खबर नहीं।

इस बीच क्लावा अलमारी के पास खडी खडी यह देख रही थी कि कौन कौन-सी पुस्तकें बच गयी थीं। ये वे किताबें थी जो उसने बचपन म पढी थी। वह बचपन के इन मित्रों को यहा देखकर उदास हो गयी। उसने स्कूल की काली काली और खाली डेस्कें देखी और दुखी हो उठी। सायकालीन सूय की किरणें तिरछी होकर खिडकी से प्रवेश कर रही थी और उनके स्निग्ध प्रकाश में जैसे विदाई की उदास और प्रौढ मुस्कराहट छिपी थी। इस समय जिन्दगी क्लावा को इतनी दुखभरी लग रही थी कि वह व्यथित कर देनेवाली इस उत्सुकता तक को भूल गयी थी कि अध्यापिका उसे जानती कैसे है।

'कुछ मिला तुम्हे?" अध्यापिका सीधे क्लावा पर दृष्टि गडाये थी। उसके ओठ कसकर जुडे थे किन्तु उसकी भूरी आखो मे उदासी की झलक थी। 'तो देख रही हो न! कभी कभी जिन्दगी कितनी निमम होती है, वह बोली, "फिर भी जब हम छोटी रहती है तो जल्दबाजी में इस बात पर ध्यान नहीं देती कि उस समय हमें जो कुछ मिलता है, वह जिन्दगी भर हमारे साथ रहता है तुम जैसी इस समय हो यदि म फिर कभी वैसी बन सकती तो मै उस समय को याद रखती। पर म उस सत्य को तुम्हे समझा भी नहीं सकती। अगर तुम्हारा मित्र यहा आ जाये तो मुझसे परिचय जरूर करा देना।'

यकतरीना पाल्लोव्ना यह अनुमान भी न लगा सकी कि ठीक उसी समय वान्या जेम्नुखोव गाव में प्रवेश कर रहा था और उसके लिए कोई सन्देश ला रहा था।

वाया ने उसे सकेत भाषा में सदेश दिया। यह सदेश वस्तुत क्रास्नोदोन जिला खुफिया कमिटी के कार्यों की रिपोर्ट थी। येकतेरीना पाव्लोव्ना ने भी उसे मौखिक रूप से अपने पति का यह निर्देश बता दिया कि क्रास्नोदोन खुफिया सघटन को एक छापामार लडाकू दस्ता बन जाना चाहिए और सभी सडको पर तोड फोड के काय और भी तेज गति से किये जाने चाहिए।

"उनसे कहना कि मार्चे की स्थिति खराब नही है। हो सकता है कि अब बहुत शीघ्र ही हमें बन्दूको से काम लेना पडे," येकतेरीना पाव्लोव्ना बोली और अपने सामने बैठे हुए इस बेडौल से युवक को पैनी दृष्टि से देखने लगी मानो यह जानना चाहती हो कि उसके चश्मे के पीछे क्या छिपा है।

वाया, उखडू-सा होकर चुपचाप बैठ गया और बार बार अपने हाथ से बालो को ठीक करने लगा। काश, वह जान पाती कि वान्या के दिल में कौन-सी ज्वाला धधक रही थी।

पर, शीघ्र ही वे बातचीत में मगन हो गये।

"कभी कभी लोगो के लिए जीवन कितना निर्मोही हो उठता है," वान्या के मुह से शुलगा और वाल्को की मृत्यु सबधी हृदयविदारक समाचार सुन चुकने के बाद येकतेरीना पाव्लोव्ना बोली, "तुम लोग उसे ओस्तप्चुक कहकर पुकारते थे न! उसका सारा परिवार शत्रुअधिकृत प्रदेश में रहता था। हो सकता है, उन्हे भी तडपा तडपाकर मार डाला गया हो। या कौन जाने, वह बेचारी औरत अपने बच्चो को लेकर अजनबियो के बीच रह रही हो और उसे यह आशा लगी हो कि एक न एक दिन वह आयेगा और उसकी तथा उसके बच्चो की रक्षा करेगा। पर अब तो वह इस दुनिया में रहा ही नही अभी एक औरत मुझसे मिलने आयी थी।" और येकतेरीना पाव्लोव्ना ने मार्फा और उसके पति

के बारे में वान्या को बताया, "वे एक दूसरे के इतने निकट हैं, फिर भी मिल नहीं सकते। दुश्मन उसके पति को और भी पीछे के इलाका में खदेड देगें, जहा वह घुट घुटकर मर जायेगा इन दुष्टा के लिए कठोर से कठोर न्ड भी कम है!" उसने कसकर मुट्ठी भींच ली।

'पागोरेली – यह जगह हमसे दूर नहा है। हमारा एक साथी वहा रहता है," वान्या बोला। उसे वीत्या पेत्रोव की याद आ रही थी। उसके मस्तिष्क में एक अस्पष्ट-सा विचार आया, हालाकि अभी तक उसका उसे भलीभाति ज्ञान न था। "वहा बहुत-से कदी है क्या? और बहुत-से पहरेदार भी?" उसने पूछा।

"तुम बता सकते हो कि क्रास्नोदोन में अब भी कुछ याग्य सघटनकर्त्ता जीवित रह गये है या नहीं?" अपने विचारो की शृखला को आगे बढाती हुई वह बोली।

वान्या जिन जिनका जानता था, उनके नाम उसने गिना दिये।

'उन सैनिका का क्या हुआ जिनका सेना स सबध कट चुका है या किसी कारण वहा रह गये ह?"

'ऐसे बहुत-से लोग हैं," वान्या को उन घायल सैनिको की याद आ गयी जो न्गेगा के घरो में छिप छिपकर रह रहे थे। उसे सेर्गेई स मालम हो चुका था कि नतालया अलेक्सेयेना उन्ह अभी तक चुपचाप चिकित्सा-सहायता पहुचा रही थी।

'जिन लोगा ने तुम्ह यहा भेजा है उनसे कहो कि उन लोगा मे मिलकर उनका सहयोग प्राप्त कर बहुत शीघ्र ही तुम्ह उनकी आवश्यकता पड़ेगी। हा, उनकी जरूरत पड़ेगी तुम युवका की अगुवाई करने के लिए। तुम लोग अच्छे हा, जवान हो पर वे लाग तुमस अधिक अनुभवी हैं," येकतेरीना पाव्लोव्ना बोली।

वान्या ने कावा के घर को एक गुप्त मिलने की जगह बनाने की

अपनी योजना येक्तेरीना पाव्लोव्ना को बतायी। उद्देश्य यह था कि 'तरुण गार्ड' गांव के युवकों के संपर्क में रहे। उसने येक्तेरीना पाव्लोव्ना से इस मामले में क्लावा की मदद करने को कहा।

"अच्छा तो यह होगा कि क्लावा को यह पता न चले कि मैं कौन हूं," येक्तेरीना पाव्लोव्ना ने मुस्कराते हुए कहा, "हम सिर्फ सहेलियां बनकर रहेंगी"।

'पर आपने हम लोगों के बारे में जाना कैसे?" वाल्या ने पूछा। वह अपनी उत्सुकता दबाये रखने में असमर्थ था।

"यह बात मैं तुम्हें कभी न बताऊंगी—इससे तुम्हें बड़ी झेंप होगी," वह बोली और उसके चेहरे पर सहसा चतुराई का भाव झलक उठा।

"तुम्हारे और उसके बीच कौन-सी राज की बातें हो रही थीं?" जब क्लावा ने वाल्या से यह प्रश्न किया तो उसके स्वर में ईर्ष्या साफ साफ झलक रही थी। दोनों इवान निकनोरोविच के घर में, घुप अंधेरे में, बैठे थे। क्लावा की मां काफी समय से, और खासकर नावोबाने पुल की घटनाओं के बाद से, वाल्या को परिवार का ही एक अंग समझने लगी थी। इस समय वह पास के गर्म गर्म बिस्तर पर बड़े चैन से सो रही थी। कज्जाकों के घरों में ऐसे बिस्तर विशेष रूप से मिलते हैं। बिस्तर गुब्बारे की तरह फूला हुआ था।

"तुम कोई राज अपने दिल में रख सकती हो?" वाल्या ने क्लावा के कान में फुसफुसाते हुए कहा।

"यह भी कोई पूछने की बात है? "

"नहीं, शपथ लो "

"मैं शपथ लेती हूं।'

'उसने मुझसे कहा था कि क्रास्नोदोन का हमारा एक साथी कहीं पास ही में छिपा है और यह कि मैं उसके घर में खबर कर दूं। उसके

बाद हमने कुछ इधर-उधर की बातचीत की कलावा।" वह उसका हाथ अपने हाथ में लेकर धीरे-से और बडी गंभीरता से बोला–"हमने हमलावरों के खिलाफ अपना मोर्चा जारी रखने के लिए युवक-युवतियों का एक संघटन बनाया है। तुम उसमें भरती होना चाहती हो?"

"तुम हो उसमें?"

"जरूर हूं।"

"फिर तो स्वाभाविक है कि मैं भी भरती हूंगी।" उसने अपने गर्म गर्म ओठ उसके कान से सटा दिये। "मैं तो तुम्हारी ही हूं, हूं न?"

"तुम्हें मेरी मौजूदगी में शपथ लेनी होगी। यह शपथ मैंने और आलेग ने मिलकर लिखी थी। मुझे तो जबानी याद है और तुम्हें भी याद रखनी होगी।"

"मैं याद कर लूंगी–तुम तो जानते ही हो कि मैं तुम्हारी ही हूं"

"तुम्हें यहां और पास-पड़ोस के गांवों के नवयुवकों का संगठन करना होगा।

"तुम्हारे लिए मैं उन सभी को संगठित करूंगी।"

"पर इसके बारे में तनिक भी लापरवाही न बरतना। कहीं गलत कदम रखा कि जिन्दगी खतरे में पड जायेगी।

"तुम्हारी भी?"

"हां मेरी भी!"

"तुम्हारे साथ मरने में मुझे कोई चिंता नहीं।"

"पर मैं समझता हूं साथ साथ जिन्दा रहना कहीं अच्छा है न?"

"बेशक!"

"सुनो, मेरे लिए अपने साथियो के साथ ही बिस्तर बिछाया गया है। अब मुझे चलना चाहिए। न जाना ठीक न होगा।"

"तुम वहा क्या जाओगे? समझते नही, मैं तुम्हारी ही हू। केवल तुम्हारी," क्लावा के गम गम ओठ उसके कान में फुसफुसाने लगे।

अध्याय १०

पेर्वोमाइस्की 'तरुण गार्ड' सघटन वोरोशीलोवग्राद जिले और खान १-बीस के आस पास के क्षेत्र में फैल चुका था। सितम्बर समाप्त होते होते यह सघटन खुफिया काम करनेवाले युवको के बडे से बडे दलो मे से एक हो गया था। पेर्वोमाइस्की स्कूल की उच्च कक्षाओ के सबसे अधिक जागरूक भूतपूर्व छात्र और छात्राए इस सघटन में शामिल हो चुकी थी।

पेर्वोमाइस्की के युवक-युवतियो ने स्वय अपना वायरलैस रिसीवर तैयार किया था और व सोवियत सूचना केन्द्र के सवादपत्र और पर्चे गुप्त रूप से, स्कूली कापियो के फटे हुए पन्नो पर भारतीय स्याही से लिखा करते थे।

वायरलैस ने तो उनके लिए मुसीबत ही खडी कर दी! कई बेकार वायरलैस सेट और पुर्जे बहुत-से घरो में बिखरे पडे थे, जिन्हे चुपके से चुरा लिया गया था। एक मोल्दावान, बोरीस ग्लवान (जिसे दल के लोग अलेको के नाम से जानते थे) ने इन पुर्जो से एक वायरलैस रिसीवर तैयार करने का जिम्मा लिया था। बोरीस ग्लवान के माता-पिता बेस्सराबिया के शरणार्थी थे और अब क्रास्नोदोन में बस गये थे। बोरीस को घर लौटते समय सडक पर एक पुलिस वाले ने गिरफ्तार कर लिया था और उसके पास से कई वाल्व और रेडियो के पुर्जे बरामद हुए थे।

थाने पर ग्लवान ने सिवा रूमानियाई भाषा के और किसी भाषा में एक शब्द भी न कहा। वह चिल्ला चिल्लाकर यही कहता रहा कि पुलिस मेरे परिवार वालों की रोटी छीने ले रही है क्योंकि उसके पास जो सामान निकला है वह सिगरेट-लाइटर बनाने के काम आता है, जो उसकी जीविका है। उसने कसम खा खाकर यह भी कहा कि वह रूमानियाई मैनिक-कमांड से इस बात की शिकायत करेगा। कास्नादान में कई रूमानियाई अधिकारी रहते ही थे। ग्लवान के घर की तलाशी ली गयी जिसमें कई पूरे बन चुके लाइटर निकले और कई ऐसे जो अधबने थे। वह सचमुच सिगरेट-लाइटर बना बनाकर ही अपनी रोज़ी चलाता था। पुलिस ने मित्र राष्ट्र के इस नागरिक को छोड़ दिया, पर उसको उसके रेडियो के पुर्जे नहीं दिये। फिर भी उसके पास जो कुछ पुर्जे थे उन्हीं से उसने एक वायरलैस रिसीवर तैयार कर लिया।

पेर्वोमाइस्की के युवक पास-पड़ोस की खेतिहर बस्तियों से सम्पर्क रखते थे लील्या इवानीखिना के जरिये। जर्मनों की क़ैद से छूटने के बाद लील्या धीरे धीरे कारावास के कटु अनुभवों को भूलने लगी और उसने सुखोदाल की खेतिहर बस्ती में अध्यापिका का काम कर लिया था। पेर्वोमाइस्की बस्ती के युवक स्तेपी में हथियार इकट्ठा करते थे और इसके लिए उन्हें कभी कभी दोनेत्स के युद्धों के क्षेत्र में दूर दूर तक जाना पड़ता था। वे उन जर्मन और रूमानियाई सिपाहियों और अफसरों के हथियार भी गायब कर देते थे जो गावों में आकर ठहरते थे। अतएव पेर्वोमाइस्की बस्ती के युवक हथियार सप्लाई करने का मुख्य साधन थे। जब पेर्वोमाइस्की संघ के सभी सदस्यों के पास हथियार हो गये तो फिर उन्हें सुरक्षित रूप से रखने के लिए सेर्गेई ल्युलेनिन के सुपुर्द कर दिया गया। ल्युलेनिन ने सारे हथियार एक गोदाम में रख दिये जिसका पता ठिकाना सिर्फ सेर्गेई को और थोड़े से दूसरे लोगों को मालूम था।

जिस प्रकार 'तरुण गार्ड' के मुखिया ग्रानेग कोशेवाई ग्रौर इवान तुर्केनिच थे, ग्रौर क्रास्नादान की वस्ती के कोल्या सुम्स्काई ग्रौर तोस्या येलिसियेको, उसी प्रकार 'पर्वोमाइस्का' के मुखिया थे ऊल्या ग्रोमोवा ग्रौर ग्रनातोली पापोव।

ग्रनातोली पापोव को 'तरुण गार्ड' के हेडक्वाटर ने पर्वोमाइस्की दल का कमांडर नियुक्त किया था। कामसोमोल में रहकर वह संघटनात्मक कौशल में दक्ष हो चुका था। उसका दृष्टिकोण भी गम्भीर था। ग्रतएव ग्रपने इन्ही गुणो के ग्राधार पर वह पर्वोमाइस्की वस्ती के युवको में ग्रपने कामो के प्रति कठोर ग्रनुशासन ग्रौर कमठता का भाव पैदा कर सकता था। युवको के सब काम सामूहिकता तथा सदभावना के ग्राधार पर सम्पन्न होते थे।

दूसरी ग्रोर ऊल्या ग्रोमोवा हर किस्म की क्रियाशीलता की प्रेरक ग्रौर पर्वोमाइस्की वस्ती की ढेरा ग्रपीला ग्रौर परवा की लखिका थी। जब से वह ग्रपने मित्रो ग्रौर साथियो के साथ, बराबरी के दर्जे पर, स्कूल मे पढ़ती थी, स्तेपी में घूमती थी, उनके साथ नाचती, गाती या कविता पाठ करती थी, या तरुण पायानियरो का नेतृत्व करती थी, तब से ग्रब तक यह बात स्पष्ट हुई थी कि उसके साथी उसकी कितनी इज्जत करते थे। उसका कद लम्बा था, चोटियाँ काली ग्रौर भारी थी, ग्राखें प्राय चमकती रहती थीं ग्रौर ग्रक्सर लगता मानो उनमे कोई रहस्यपूर्ण शक्ति भरी हुई है। वह चुप रहना, न कि चिल्लपो करना, ग्रधिक पसन्द करती थी। वह उत्तेजित से ग्रधिक सन्तुलित रहती थी यद्यपि उसमें एक ही समय में इन दोनो ही गुणो को प्रदर्शित कर सकने की क्षमता थी।

यौवन, किन्तु वे पयवेक्षण ग्रौर ग्रनुभव की ग्रपेक्षा, एक ही नज़र में ग्रथवा एक ही शब्द ग्रथवा भाव देखकर, दिखावटीपन ग्रौर निष्ठा,

स्फति और धनात्ति अथवा नक्ली और महत्त्वपूण आदि सभी क विषय मे तत्कार अपना निणय द डालना है। इस समय ऊ्या के कोई खास मित्र न थे। वह सभी के प्रति समान रूप म सदय, कठोर अथवा चिन्ताशील रहती थी। किन्तु लडकिया उल्या से ना बात करक ही समझ जाती कि वह जसी नही जसी दिखाई पडती है। और उसकी बाहरी सूग्न शक्त क पीछे अनुभूतिया और विचारा, लागा के मूल्यावन और उनके प्रति क्या रुप अपनाया जाना चाहिए इन सब का जैस एक ससार-सा छिपा हुआ है। और यह समार पूरी तीव्रता के माथ अपना उद्घाटन कर मकता था विशेषकर उस समय जब किसी से कोई नतिक भूल हो जाती। उल्या जैसा की प्रकृति मे ता स्वय सतुलन भी एक विशिष्टता का रूप ले नेता है। किंतु जब यह प्रकृति हृदय का उदघाटन करती है—भले ही यह उदघाटन एक क्षण के लिए ही क्यो न हा—ता यह विशिष्टता भी कितनी महत्त्वपूर्ण बन जाती है।

नडको के साथ भी वह समान रूप से व्यवहार करती थी। यह कोई न कह सकना था कि वह दूसरो की अपेक्षा मुझसे अधिक मित्रता निभाता है। साथ ही काई यह साचने की भी हिम्मत न कर पाता कि वह उसके साथ अधिक गहरी दोस्ती निभायेगी। जिस ढग से वह छोकरो की ओर देखती थी, अथवा चलती फिरती या काम करती था, उसमे प्रत्येक व्यक्ति यह समझ लेता था कि मैं किमी गवपूण और अतिरजित व्यक्तित्व के साथ बात नही कर रहा हू न ही किसी ऐसी लडकी के साथ जिसमें भावना की गहराई नहीं है। किन्तु किसी ऐसे के साथ बातचीत कर रहा हू जिसक अन्तस् में उन वास्तविक भावोद्वेगा का निहित ससार सा छिपा है जिन्हे पूणतया तथा स्वच्छता के साथ न्याच्छावर करने के लिए अभी तक काई याग्य पात्र नही मिला। उल्या एसी लडकी नही है जो अपनी भावनाओं को शनै शनै बूद बूद करके, नष्ट कर द।

ऊल्या के इन्हीं गुणों पर युवक रीझते थे, उसकी उपासना करते थे। ऐसी उपासना उन्हीं स्त्रियों के प्रति सम्भव है जिनके मन अत्यधिक शुद्ध होते हैं, अत्यधिक सुदृढ़।

बस इसी कारण न कि इसलिए कि वह पढ़ी-लिखी और बुद्धिमान थी ऊल्या ने स्वतन्त्र तथा स्वाभाविक रूप से और जैसे अनजाने, पेर्वोमाइस्की बस्ती के अपने मित्रों और साथियों को प्रभावित किया था।

एक दिन कुछ लडकियां इवानीखिना बहनों के यहां एकत्र हुईं। वे प्राय इसी घर में मिला करती थीं। वे घायलों के लिए पट्टियों के पैकेट बनाती थीं।

ल्यूबा ने ये पट्टियां उन अफसरों तथा जर्मन चिकित्सा दल के अन्य अधिकारियों के पास से चुरा ली थीं जो एक रात उसकी मां के घर ठहरने आये थे। ये पट्टियां उसने यों ही चुरा ली थीं और इस चोरी को कोई महत्त्व न दिया था। किन्तु जब ऊल्या ने सुना तो उसने ये पट्टियां इकट्ठी करके तुरन्त अपने काम में शामिल कर लिया।

"हमारे हर छोकरे को पट्टियों का एक एक पैकेट हमेशा अपने साथ रखना चाहिए। उन्हें लडना पडेगा हमें नहीं लडना होगा" वह बोली।

उसे शायद कोई बात मालूम हो गयी थी जिस कारण उसने साथ में यह भी कह दिया—

"शीघ्र ही वह समय आयेगा जब हम सबको जूझना होगा। उस समय हमें ढेरों पट्टियों की आवश्यकता होगी।"

वस्तुत ऊल्या अपने शब्दों में वही बात कह रही थी जो वान्या जेम्नुखोव ने 'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर की एक बैठक में कही थी। वान्या को इस बात का कहां से पता चला था यह ऊल्या न जानती थी।

इस प्रकार सभी लोग पैकेट बनाते रहे। स्वयं छात्रा, नूरा दुब्रोविना भी, जो पहले गैर मिलनसार और अहंवादी समझी जाती थी,

अपने किस्से का काम कर रही थी। वह 'सान्त गाड' दल में इसलिए भरती हुई थी कि वह गाया पनिसाशाया का बहुत मानती थी, उसमें स्नेह रखती थी।

जानती हो लड़कियो, इस समय हम कैसी लग रही हैं?' दुबली-पतली गाया बादम्वा बोली, "हम लग रही हैं उन बूढ़ी औरतों की तरह जो खानों में काम करती थीं, या पेंशनें पा रही हैं और जिनके बच्चे उनकी देख रेख करते हैं—मैंने ऐसी औरतों को प्रायः अपनी दादी के यहां देखा है। वे एक के बाद एक आतीं और जम जातीं—कोई कुछ बुनने लगती, कोई सीन पिरोने लगती, कोई ताश लेकर बैठ जाती और कोई आलू छीलने में मेरी दादी की मदद करने लगती। और कोई एक शब्द भी मुंह से न निकालती। सब चुप रहतीं। फिर सहसा उनमें से कोई औरत उठ खड़ी होती और कहती—'यह सब क्या है। चलो कोई हंसी-मेल की बात करो'। फिर वे मुस्कराती, झेंपती और कोई एक बात उठती—'यह कोई पाप तो है नहीं। भला तुम इसे पाप कहोगी?' और सीधे सीधे वे सब मिल थोड़े थोड़े पैसे इकट्ठा करतीं, और यह क्या! मेज पर एक पाइंट की बोतल आ जाती! इन बूढ़ियों को ज्यादा नहीं चाहिए। वे घूंट भर तो गटकती हैं, फिर हाथों पर गाल रखती हैं, इस तरह, और गाना शुरू कर देती हैं,—'मेरी उंगली में सोने की अंगूठी है एक' "

"गाया, तुम हमेशा कोई न कोई ऐसी ही बात ढूंढ़ती रहती हो!" लड़कियां जी खोलकर हंस दीं। "कोई गाना हो जाय तो कैसा रहे, उन्हीं बूढ़ियों की तरह?"

किन्तु ठीक इसी क्षण नीना इवान्सोवा आ गयी। अब तो वह बहुत ही यदा-कदा आती और आती भी तो उनके पास थोड़ा बैठने के लिए। वह हमेशा हेडक्वाटर की संदेशवाहिका के रूप में ही आती। किन्तु

कोई भी लडकी हेडक्वाटर का पता ठिकाना अथवा उसके सदस्या के सबध में कुछ भी न जानती थी।

उनके मस्तिष्क मे 'हेडक्वाटर' शब्द उन प्रौढ लोगो के दल का चित्र खडा कर देता था जो किसी अनजान तहखाने में किसी खुफिया बैठक मे भाग लेते हैं, जिनके सामने दीवाला पर ढेरा नक्शे टगे रहते ह, जा स्वय अच्छी तरह हथियारा मे लैस होत है और रडियो टेलीफान द्वारा इच्छानुसार मास्का से या मोर्चे मे बात कर सकत हैं।

नीना इवात्सोवा कमरे में आयी और तुरन्त ऊल्या को बुलाकर बाहर सडक पर ले गयी। इसपर वहा एकत्र लडकिया ने फौरन समझ लिया कि नीना उन्ह कोई न कोई नया काम सुपुर्द करन आयी है। कुछ ही क्षणो में ऊल्या वापस आकर बोली कि उसे अभी जाना होगा। उसने माया पग्लिवानोवा को अलग बुलाकर कहा कि लडकिया पट्टिया के पैकेट अपने अपने घर ले जायें और वह खुद सात-आठ पैकेट ऊल्या के घर छोड जाये। शीघ्र ही इन पट्टियो की जरूरत पड सकती है।

कोई पन्द्रह मिनट के भीतर ऊल्या अपना स्कट ऊपर उठाये, अपनी लम्बी और पतली टागें, बारी बारी से उठाकर अपने घर का बाडा पार करके पोपाव के बगीचे में उतर रही थी। वहा चेरी के एक पुराने वक्ष के नीचे सूखी, अधजली घास क ऊपर अनातोली पोपोव, जिसने उजबेकी टोपी से अपन गेहुए रग क बाला को ढक रखा था, और वीक्तोर पत्रोव, जिसका सिर नगा था, एक दूसरे के आमने-सामने पेट के बल लेटे हुए जिले के नक्शे का अध्ययन कर रहे थे।

उन्हान दूर से ही ऊल्या को देख लिया था और उसके आ जाने के बाद भी नक्शे पर से आखें उठाये बिना, चुपचाप बातचीत में लगे रहे। ऊल्या ने अकस्मात अपनी कलाइ घुमाकर अपनी चोटी अपने कन्धे

पर डाली, अपनी स्कर्ट टागा तक नीची की, जमीन पर बठी और घुटने समेटकर नक्श का अध्ययन करने लगी।

जिस काम की सूचना अनातोली और वीक्तोर को पहले ही दी जा चुकी थी और जिसके लिए ऊल्या को भी बुलाया गया था, वह पेर्वोमाइस्की बस्ती के युवको की पहली कठिन परीक्षा थी—'तरुण गार्ड' के हेडक्वाटर ने उन्ह पोगोरेली फोरेस्ट्री स्टेशन में काम करनेवाले युद्ध वन्दियो को मुक्त कराने का काम सौपा था।

"पहरेदार कहा रहते है?" अनातोली ने पूछा।

"सडक की दाहिनी ओर, स्वय गाव मे। याद है तुम्हे, वैरव कुज के निकट वायी ओर यहा पर है? वहा कभी एक गोदाम था। उन्होने वहा सोने के लिए कुछ तख्ते डालकर सारी जगह कटीली तारो से घेर दी है। वहा सिफ एक सतरी पहरा देता है। मेरा ख्याल है कि पहरेदारो के चक्कर में न पडकर सिर्फ सतरी को ही ठिकाने लगा दिया जाये अफसोस की बात तो जरूर है—दरअसल चाहिए ता यह कि हम सब के गले घोट डाले", वीक्तोर बोला और उसके चेहरे पर क्रोध झलकने लगा।

अपने पिता की मृत्यु के बाद मे वीक्तोर पत्रोव में बहुत अधिक परिवतन आ गया था। वह गहरे रग की एक मखमली जकेट पहने, घास का एक तिनका चवाता हुआ लेटा था। उसकी साहस से चमकती आखें वडी उदासी के साथ अनातोली पर लगी थी।

"रात में कैदी बन्द कर दिये जाते ह। किन्तु हम अपने साथ ग्लवान को ले सकते है। वह अपने औज़ारो से चुपचाप सारा काम कर लेगा," उसने जैसे वडी अनिच्छा से कहा।

अनातोली ने सिर उठाकर ऊल्या की ओर देखा।

"तुम्हारा क्या ख्याल है?" उसने पूछा।

हालांकि उन्या ने शुरू से बात नही सुनी थी, फिर भी उसने यह समझ लिया था कि वीक्तोर असतुष्ट क्या है। जब से इन लोगो ने साथ साथ काम करना शुरू किया था तब से वे कुछेक शब्द सुन कर ही बातचीत का आशय समझ लेते थ।

"म वीक्तोर की बात अच्छी तरह समझ रही हू–यानी यह कि अच्छा हो सभी पहरेदारो का सफाया कर दिया जाय। किन्तु हमें ऐसा काम इतने बडे पैमाने पर करने का कोई अनुभव नही," उसने शान्त किन्तु उत्साहपूण आवाज में कहा।

"हा यही तो मै भी समझता हू," अनातोली बोला, "हमें वही करना चाहिए जो सबसे आसान हो, जो हमें अपन लक्ष्य के सबसे निकट ले जा सके"।

दूसरे दिन शाम होते होते छोकरे, अलग अलग, दोनेत्स के तट पर, पागारेली गाव के निकट के वन मे चले गये। वहा व पाच थे। अनातोली, वीक्तोर, उसके स्कूल के दो साथी वोलोद्या रगोजिन और जेया शेपत्योव जो इस ग्रुप मे सबसे कम उम्र का था और बोरीस ग्लवान। सभी के पास रिवाल्वर थे। वीक्तोर के पास उसके पिता का पुराना शिकारी चाकू भी था जिसे वह हमेशा अपनी मखमली जैकेट के नीचे एक पटी में लटकाये रखता था। बोरीस ग्लवान के पास कुछ जरूरत के औजार थे–तार काटने की कची, पेचकश और एक लोहे का डडा।

शरद के आरभ की तारोभरी रात थी, किन्तु चाद न था। पाचो व्यक्ति नदी के दाहिने ढालवे तट के नीचे लेट गये। उनके ऊपर सरसराते पौधो की ध्वनि, नीचे पानी की सतह तक आ आकर विलीन हो रही थी। नदी पर प्रकाश के कण-से बिखरे हुए थे। वह नि शब्द बहे जा रही थी। हा, नीचे थोडी दूरी पर पानी के टपटप गिरने का शब्द सुनाई

देता। वहा किनारा नीचा हो गया था और पानी की टपटप या तो इसलिए होती कि गिरी हुई मिट्टी के रन्ध्रो से होकर पानी रिसता था या फिर किसी गिरी हुई टहनी को आलिंगन में लेकर सहसा उसे मुक्त कर देता। उससे ऐसी ध्वनि निकलती मानो कोई बछडा गाय का दूध पी रहा हो। सामने का दूसरा नीचा किनारा धुध मे विलीन हो चुका था।

वे इस बात की प्रतीक्षा कर रहे थे कि रात में कब सतरी को छुट्टी मिले और उसकी जगह दूसरा सतरी ड्यूटी पर आये।

शरद की रात का चमत्कारपूर्ण सौंदर्य। नदी कुहरे की चादर ओढे हुए और उससे निकलती हुई प्यारी प्यारी ध्वनिया। वहा लेटे हुए युवको के मन में यही भाव उठ रहे थे कि क्या सचमुच उन्हे इस नदी, नदी की इन प्यारी प्यारी ध्वनियो से मुह मोडकर जमन सतरी पर आक्रमण करना होगा, कटीले तारवाले बाडे और तालाबद द्वारा से जूझना होगा! यह नदी, यह ध्वनिया उन्हें कितनी परिचित और प्यारी थी, उनके कितने निकट थी, पर उन्हे जो कुछ करना था वह एक ऐसी चीज थी जिसे वे जीवन में पहली बार करने जा रहे थे। यह काम कैसा होगा, इसकी कल्पना भी वे नही कर सकते थे। किन्तु अपनी अनुभूतियो को उन्होने वाणी नही दी और परिचित चीजो के बारे में फुसफुसाते हुए बात करने लगे।

"वोल्या, याद है तुम्हे इस जगह की? निश्चय ही यह वही जगह है, है न?" अनातोली ने पूछा।

"नही यह जगह यहा से कुछ दूरी पर है, बहाव की ओर–वहा जहा किनारा कट गया है और जहा से गरगराती हुई आवाज सुनाई पड रही है। मुझे दूसरे किनारे से तैरकर आना पडा था और मुझे तो यह भय लग रहा था कि तुम और नीचे बहकर कहीं भवर में न फस जाओ।'

"हा, मैं भी तुम्हे यह बता सकता हूं कि मेरी भी उस वक्त जान खुश्क हो रही थी, हालाकि अपनी कमजोरी स्वीकार करने का इस समय कोई मौका नही," अनातोली ने दात निकालते हुए कहा, "मैं तो आधी नदी पी गया था"।

"जेया मोश्कोव और म जगल से बाहर निकल रहे थे हे भगवान! म तो एक हाथ भी नहीं तर सकता था," वालोद्या रगोजिन बोला। वह एक दुबला-पतला छोकरा था, जिसका चेहरा उसके सिर पर रखी टोपी के छज्ज के नीचे छिप गया था। टोपी उसने आखो तक सरका ली थी। "अगर जेया मोश्कोव सारे कपडे पहने पहाडी में पानी में न कूद पडा होता तो तुम उसे खीचकर कभी निकाल न पाये होते," उसने वीक्तोर से कहा।

"बेशक म नहीं निकाल पाता," वीक्तोर ने स्वीकार किया, "क्या तबमे किसी ने मोश्कोव के बारे में कुछ सुना है?"

"एक शब्द भी नही," रगोजिन बोला, "सिवा इसके कि वह एक जूनियर लेफ्टिनेंट है और पैदल सेना में है। यह सेना के अफसरो में से सबसे छोटा पद है और ये लाग मक्खियो की तरह मरते हैं।"

"नही, तुम्हारी यह दोनेत्स बहुत शात है किन्तु हमारी द्नेस्त्र—ओह, कुछ न पूछो उसका!" बोरीस ग्नवान, केहुनी के सहारे उठता हुआ बोला। उसके दात अधेरे में चमक उठे। "वह कितनी तेज बहती है। कितनी भयानक है वह! अगर तुम दनेस्त्र में डूबने लगो तो फिर बच नहीं सकते! और यहा के जगल—ये जगल भी कोई जगल हैं? हम भी स्तेपी में रहते ह, पर तुम्हे द्नेस्त्र के किनारे किनारे जगलो को देखना चाहिए। वहा वाले 'चिनार' और 'सदाबहार' के पड इतने मोटे मोटे ह कि वे तुम्हारी दोनो बाहो की लपट में नहीं आ सकते। और इतने ऊचे कि आकाश को छूते हैं"

"तब तो तुम्ह वही रहना चाहिए," जेया शेपेल्योव बोला, "यह सचमुच बडी बेजा बात है कि जहा लोग रहना चाहते हैं वहा नही रह पाते। ये लडाइया कम्बख्त अगर यह सब न होता तो लोग जहा चाहते रहते। अगर ब्राजिल में रहना चाहते तो वही रहते। अगर मुझसे पूछा जाये ता म तो यही दोनवास में रहना चाहूगा। यहा बडी शान्ति है, मुझे यहा बडा अच्छा लगता है।"

"सुनो, अगर तुम सचमुच शाति के साथ रहना चाहते हो तो लडाई खत्म हो जाने के बाद हमारे पास आकर सोरोका में रहो–यह हमारे जिले का केन्द्र है–और भी अच्छा हो कि यदि तुम हमारे गाव में रहो। जानते हो हमारे गाव का नाम कितना बडा, कितना ऐतिहासिक है–जारग्राद *" ग्लवान मस्कराते हुए बोला, "हा वहा आकर कोई ऐसी नौकरी न करना जिसमें परेशानी और चिन्ता मिर पर सवार रहे, मसलन, भगवान के लिए मवेशी खरीद विभाग के कमचारी के पद पर कभी काम न करना! हा, स्थानीय रेड क्रास सासाइटी के अध्यक्ष बनकर आओ तो अच्छा हो–फिर तो तुम्ह नाइयो की ही दुकाना का मुआइना करना होगा। सच पूछो ता इस काम में मौज ही मौज है। दिन भर कोई काम नही–बैठ बठे शराब की चुस्कियां लिया करो। भगवान जानता है यह एक ऐसी नौकरी है जिसके लिए सभी तरसते हैं,' उसने प्रसन्न मुद्रा में, हसते हुए कहा।

"ये अपनी बेवकूफी की बात बद भी करो।" अनातोली ने अच्छे मन से कहा।

और एक बार फिर सब के सब सरिता की कलकल में खो गये।

"बस, वक्त हो गया है," अनातोली बोला। और एक ही क्षण

---

*जार बादशाह का शहर

मे प्रकृति के प्रति उनकी स्वाभाविक जागरुकता और जीवन के आह्लाद ने जैसे उनका साथ छोड दिया।

वीक्तोर पास-पडोस का एक एक पौधा जानता था। वही इस समय अगुआई कर रहा था। वह अपने साथियो को लेकर, कटाव के किनारे किनारे, किन्तु खुली हुई जगह बचाता हुआ, उस कुज की ओर बढ रहा था जिसके उस ओर बैरक था। उसके साथी, एक के पीछे दूसरा, उस के पीछे पीछे चले जा रहे थे। यह बैरक अभी तक उनकी दृष्टि से ओझल था। एक क्षण के लिए वे कुछ सुनने के लिए जमीन पर पड रहे—चारो ओर मौत का सा सन्नाटा छाया हुआ था। वीक्तोर ने हाथ से इशारा किया और वे पट के बल सरकते हुए आगे बढने लगे।

आखिर वे कुज के किनारे पहुच गये। उनके सामने एक लम्बी और काली-सी इमारत थी जो एक साधारण बैरक जैसी लग रही थी। उसकी छत ढालवी थी। फिर भी वहा लोग भूसे की तरह भरे थे। इमारत बडी भयानक और मनहूस लग रही थी। उसके आस-पास के पेड काटे जा चुके थे। उसकी बायी ओर सतरी की काली-सी आकृति दिखाई पड रही थी। कुछ दूरी पर, और भी बायी ओर, सडक थी जिसके उस पार गाव के मकान शुरू हो गये थे। पर, जिस स्थान पर ये लोग लेटे थे वहा से मकान नजर नही आ रहे थे।

सतरी की ड्यूटी खत्म होने में कोई आधा घटा रह गया था। इस बीच सभी साथी सतरी की उस काली और निश्चेष्ट आकृति पर आखे गडाये अपनी जगह पडे रहे।

आखिर उन्ह सामने बायी ओर से पदचाप सुनाई दी और हालाकि वे अब भी कुछ न देख पा रहे थे, फिर भी उन्होंने दो व्यक्तियो को मार्च करते, सडक पर मुडते और अपनी ओर आते हुए सुना। उनमें से एक पहरेदार-कारपोरल और दूसरा वह सतरी था, जिसे पहले सतरी

की जगह लेनी थी। काली परछाइयाँ, ड्यूटी वाले सतरी की ओर बढ़ीं। सतरी, उनकी आहट सुनते ही, एटेन्शन होकर खड़ा हो गया।

तब जमन मे कोई घुटा घुटा-सा आदेश सुनाई पड़ा, बन्दूकें खड़की, जमीन पर बूटों की धमक हुई और दो आकृतियाँ अलग अलग हो गयीं और एक बार फिर से सड़क पर पैरों की आहट सुनाई दी, जो सड़क के कठोर धरातल पर विलीन होती हुई रात्रि की नीरवता में खो गयी।

अनातोली ने धीरे-से अपना सिर जेन्या शेपेरयोव की ओर घुमाया। जेन्या इस समय कुंज के बीचोबीच रेंग रहा था। उसका काम बस्ती के छोर पर आकर उस छोटे से मकान पर निगाह रखना था जहाँ पहरेदार रहते थे।

सतरी पिंजड़े के भेड़िये की भाँति कँटीले तारोंवाले बाड़े में चक्कर लगा रहा था। उसके कंधे पर बन्दूक का पट्टा पड़ा था। वह फुर्ती से पैर पटक रहा था और हाथ भी मल रहा था। सभवत बिस्तर से उठकर बाहर आने के बाद उसे ठंड लग रही थी।

अनातोली ने वीक्तोर का हाथ छुआ जो अप्रत्याशित रूप से गर्म था। उसने हाथ दबा दिया।

'क्या हम दोनों जायें?" वह फुसफुसाया। उसके होंठ वीक्तोर के कान के पास थे।

इस वाक्य में द्विविधा झलकती थी किन्तु साथीपन की द्विविधा। वीक्तोर ने निषेधस्वरूप जोरों से सिर हिलाया और आगे बढ़ने लगा।

अनातोली, बोरीस ग्लवान और वोलोद्या रगोज़िन साँस रोके हुए सतरी और उसकी ओर टकटकी लगाये रहे। जब कभी वीक्तोर की ओर से जरा भी सरसराहट सुनाई पड़ती तो उन्हें लगता कि दुश्मन को उसका पता चल गया है। किन्तु वीक्तोर उनसे दूर तब तक रेंगता रहा जब तक उसकी मखमली जैकेट गगन इर्द गिर्द के वातावरण में न विलीन

हो गयी, जब तक वह स्वय आखो से ओझल न हो गया, जब तक उसकी ओर से आनेवाली आवाज सुन पडनी बद न हो गयी। वे अपनी आखें सतरी पर गडाये रहे क्योकि किसी भी क्षण सभावित घटना घट सकती थी। किन्तु उसकी काली आकृति बाडे मे आगे पीछे होती रही और कोई घटना न घटी। उन्हे लगा कि काफी समय बीत गया और शीघ्र ही भोर हो जायेगी।

जैसे वीक्तोर अपने तरुण पायानियर के दिनो में अपने बचपन के, उन अर्द्धविस्मृत, खेलो में, ड्यूटी पर तैनात अपने किसी साथी को चकमा देने के लिए किया करता था, ठीक वैसे ही इस समय भी वह जमीन से चिपके रहकर, किन्तु बदन कुछ ऊपर उठाये हुए, अपने अत्यधिक लचकीले हाथो और पैरो की सहायता से आगे बढता जा रहा था। जब जब सतरी उसकी ओर मुडकर चलने लगता तब तब वीक्तोर मूर्ति की तरह जडवत् वही रुक जाता। और जब सतरी विपरीत दिशा में मार्च करता तो वीक्तोर फिर धीरे धीरे आगे बढने लगता।

उसका दिल जोर जोर से धडक रहा था, किन्तु उसे डर जरा भी न था। जब तक उसने रेगना शुरू नही किया था तब तक वह अपने पिता के बारे मे सोचता रहा ताकि उसके दिमाग में प्रतिशोध की भावना कूट कूटकर भरती जाये। पर इस समय वह यह सब कुछ भूल चुका था। उसकी सारी मानसिक शक्ति अकेले इसी प्रयास पर केन्द्रित [illegible] कि वह किसी प्रकार चुपचाप सतरी के पास तक रेग जाये [illegible] पता न चले।

वह बरको के चारो ओर लगे हुए कटील [illegible] छोर पर पहुचा और निश्चेष्ट-सा पड रहा। [illegible] पहुचकर अब लौटने के लिए मुड रहा था। [illegible] चाकू लिया, उसे दातो के बीच दबाया [illegible]।

उसकी आखे अधेरे की इतनी अभ्यस्त हो चुकी थी कि व बाडे के तार तक देख सकती थी। उसे लग रहा था। कि इस समय तक सभवत सतरी की आखें भी अधेरे की अभ्यस्त हो चुकी होगी और जसे ही वह वीक्तोर की ओर आयेगा उसकी आखें वीक्तोर को जमीन पर पड देख लेगी। किन्तु जब सतरी बाडे से हाकर प्रवेश द्वार पर पहुचा कि रुक गया। प्रवेश माग पर कटीले तार लपट लपेटकर कई टेक-से बनाये गये थे और उनसे माग बद कर दिया गया था। वीक्तोर तनावपूण स्थिति में प्रतीक्षा करता रहा किन्तु सतरी अपने पतलून की जेबो में हाथ डाले, और अपने कधे से बदूक हटाये बिना, बैरक की ओर पीठ किये वहा खडा रहा। उसका सिर तनिक झुका हुआ था।

वीक्तोर के मित्र फडकते हुए हृदय से यह इतजार करते रहे कि वह अपना काम पूरा करे। मित्रो की ही भाति सहसा वीक्तोर को भी यह ध्यान आया कि समय निकलता जा रहा है और शीघ्र ही भोर हो जायेगी। तब यह सोचे बिना कि अब सतरी के लिए उसे देखना और उसकी आवाज सुनना आसान होगा—क्योकि उसकी अपनी पदचाप अब अन्य ध्वनियो को दबा न सकती थी—वह सीधे सतरी की ओर रेंगने लगा। अब वह सतरी से कोई दो गज की दूरी पर रह गया था। सतरी अब भी उसी स्थिति में खडा था—जेबो में हाथ बदूक कधे से लटकती हुई, सिर फौजी टोपी में नीचे झुका हुआ, बदन एडिया पर थोडा थोडा हिलता हुआ। वीक्तोर उस समय रेंगा था या उछल पडा था, यह उसे बाद में याद न रह गया था। हा, वह सहसा हाथ में चाकू पकडे सतरी की बगल में खडा हो गया। सतरी ने आगें खोली और जल्दी से सिर घुमाया। वह एक दुबला-पतला और छूछदार दाढी वाला वयस्क जमन था। उसकी आखो में उन्माद की झलक दिखाई दी। वह जेब से हाथ भी न निकाल पाया था कि उसके मुह से एक अजीब हल्की-सी चीख

निकली—'उफ ' वीक्तोर ने उसकी ठुड्ढी की बायी ओर गरदन में पूरी ताकत के साथ अपना चाकू घुसेड दिया। चाकू गले की हड्डी के ऊपर के मुलायम मास में, मूठ तक घुस चुका था। जमन गिर पडा। वीक्तार भी उसके ऊपर गिर पडा और उसपर एक प्रहार और करने ही वाला था कि जर्मन के शरीर में ऐंठन-सी हुई और उसके मुह से खून निकलने लगा। वीक्तोर एक ओर हट गया, खून से भरा चाकू एक तरफ फेंका और सहसा इतनी तेजी से वमन करने लगा कि उससे हानेवाली आवाज़ दबाने के लिए अपने मुह में जैकेट की बायी आस्तीन ठूसने लगा।

सहसा अनातोली उसके सामने खडा दिखाई दिया और चाकू उसकी ओर करते हुए फुसफुसाकर बाला

"इसे रख लो। हम इसे निशानी के रूप में यहा नहीं छोड सकते। इस से सुराग लग सकता है "

वीक्तोर न चाकू छिपा लिया और रगोजिन उसकी वाह पकडते हुए बोला—"चलो, चलो, अब सडक पर चलो।" वीक्तोर ने अपना रिवाल्वर निकाला और दोनो दौडकर सडक तक आये तथा फिर लेट गये।

अधेरे में कटीले तारोवाली टेक में फस जाने का खतरा बना था, इसलिए वारीस ग्लवान ने पेशेवर अनुभवी व्यक्ति की भाति तार काटनेवाली कैंची से दो खम्भो के बीच लगा तार काट डाला और अन्दर जाने का रास्ता बना लिया। इसके बाद वह और अनातोली बैरक के दरवाजे की ओर दौडे। ग्लवान ने ताला टटोला। वह तो लोहे की छड का साधनेवाला एक साधारण ताला था। उसने कुण्डे में लोहे के डडे को फसाया और तोड डाला। उन्होने छड हटायी और अत्यधिक उत्तेजित होकर द्वार खोल दिया।

उनकी ओर गन्दी गर्म हवा का एक झोंका आया। उनके सामने, दायें और बायें, लोग अपने अपने तख्तों पर से उठने लगे थे। एक उनींदी और भयाकुल आवाज़ यह जानना चाहती थी कि मामला क्या था।

"साथियो " अनातोली ने कहना शुरू किया किन्तु वह इतना उत्तेजित हो चुका था कि आगे एक शब्द भी न बोल पाया। इधर-उधर कुछ प्रसन्नतापूर्ण आवाजें सुनाई दी किन्तु दूसरों ने उन्हें चुप करा दिया।

अनातोली ने अपने को संयत किया—"तुम लोग जंगल से होकर नदी की ओर भागो, फिर नदी की धारा के अनुकूल और विपरीत, दोनों ही दिशा में बंट जाना," वह बोला। "क्या गोर्देई कोनियेंको यहीं है? अगर तुम यहां हो, तो घर जाओ, तुम्हारी पत्नी तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है " अनातोली बाहर निकला और बैरक के दरवाज़े पर खड़ा हो गया।

"शुक्रिया भाइयो रक्षको ", ऐसी कई आवाजें अनातोली को सुनाई दीं। अब सामने के लोग उस द्वार की ओर भागने लगे थे जो कटीले तारोंवाले टेक से बन्द था। अतः बलवान उन्हें जल्दी जल्दी धकेलकर उधर भेजने लगा, जिधर उसने बाड़े में एक रास्ता बना दिया था। कैदी उस ओर बढ़ रहे थे कि सहसा कोई व्यक्ति अनातोली के पास आया और उसके कंधे दोनों हाथों से पकड़ता हुआ, हर्षातिरेक में फुसफुसाया—"तोल्या? तोल्या? '

अनातोली चौंक पड़ा और उस व्यक्ति के चेहरे में झांकने लगा जो उसे पकड़े था। "जेन्या मोरोज़ोव," वह चीखा। पता नहीं क्यों उसकी आवाज़ में आश्चर्य का कोई पुट न था।

"मैंने तुम्हारी आवाज़ पहचान ली थी," मोरोज़ोव ने कहा।

"ज़रा ठहरो। हम साथ साथ चलेंगे।'

करनी पड रही है," वीक्तोर उत्तेजित होकर बोल पडा। "पर दूसरा रास्ता भी तो नही है।"

"मेरे दोस्तो! मुझे यह यकीन नही होता कि मै सचमुच आजाद हू मेरे दोस्तो, मेरे दोस्तो!" जेया मोश्कोव की आवाज भारी हो रही थी। उसने अपने हाथो में अपना चेहरा छिपा लिया और सूखी घास पर पड रहा।

अध्याय ११

एक समय वह भी आया जब ठेलोवाले बेघर लोग भी कच्चो और अन्य बडी बडी सडको पर जाने से डरने लगे क्योकि सुरगो में बिछे हुए बमो से प्राय लारिया, कारे और पेट्रोल के टैंकर उडा दिये जाते थे। इसी लिए वे लोग अपनी अपनी ठेलागाडिया देहातो की गलियो या सीधे खुली स्तेपी से हाकर ले जाने लगे।

एक अफवाह यह भी सुनाई पडी थी कि मत्वेई कुर्गा से दक्षिण में नावाशाख्तिन्स्क के बीच किसी मडक पर एक गभीर दुर्घटना घटी थी। उसके बाद एक अफवाह और सुनने में आयी कि उत्तर में स्तारोबेल्स्क और बेलोवोद्स्क के बीच पेट्रोल की एक पूरी की पूरी रेलगाडी को नष्ट कर दिया गया था।

स्तालिनग्राद की ओर जानेवाले राजमार्ग पर अेपन्का नदी पर बना हुआ कक्रीट का एक पुल भी उन्ही दिनो उडा दिया गया था। यह दुर्घटना कसे घटी, यह समझ में आनेवाली बात न थी क्योकि पुल बोकोवा स्तानित्सा की एक घनी बस्ती के मध्य में था और जर्मन उसपर बडा पहरा रखते थे। कुछ दिनो बाद वोरानेज-रास्तोव रेलवे पर, कार्मेन्स्क के निकट बना हुआ एक बडा-सा रेलवे पुल भी टूटकर नदी में समा गया था। इस पुल पर चार मशीनगनो और टामी-गनो से एक पूरे जर्मन दस्ते

का पहरा रहता था। पुल के विस्फोट से रात में इतना तेज़ धमाका हुआ कि उसकी गूज आस्नोदोन तक सुनाई पडी।

ओलेग को शक था कि वह विस्फोट सभवत आस्नोदोन और कामेंस्क खुफिया पार्टी सघटनो के मिले जुले प्रयासो के परिणामस्वरूप हुआ था क्योकि उस घटना के कोई दो हफ्ते पहले पोलीना गेओर्गियेव्ना ने उसे ल्यूतिकोव का यह अनुरोध सुनाया था कि उसे एक सदेशवाहक की ज़रूरत थी जिसे वह कामेंस्क भेजना चाहता था।

ओलेग ने इस काम के लिए ओल्गा इवान्त्सोवा को चुना था।

अगले दो हफ्तो तक ओल्गा 'तरुण गार्ड' के क्रियाकलाप के क्षेत्र से एक तरह से बाहर थी। हा, नीना से ओलेग को यह पता अवश्य चल गया था कि ओल्गा इस बीच कई बार अपने घर, क्रास्नोदोन आयी थी और फिर वहा से बाहर निकल चली जाती रही थी। उक्त विस्फोट के कोई दो दिन बाद वह एक बार फिर ओलेग के घर आयी थी और 'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर की सदेशवाहिका के रूप में पुन चुपचाप काम करने लगी थी। ओलेग जानता था कि उसे उससे सभी तरह की पूछ-ताछ करने की स्वतत्रता नही है किन्तु प्राय वह बडे ध्यान से और बडी उत्सुकता से उसका चेहरा देखा करता था। पर वह कभी इसपर कोई ध्यान न देती और हमेशा की तरह स्थिर, शान्त-स्वभाव और गुप-चुप बनी रहती। उसके नाक-नक्श बेडौल-से थे। मुस्कराहट तो उसके चेहरे पर यदा-कदा ही खेलती। ऐसा लगता मानो खुफिया बातो को छिपाने के लिए उसका चेहरा विशेष रूप से बनाया गया है।

इस समय तक 'तरुण गार्ड' का काम तीन लडाकू दलो में बट गया था जो जिले की सडको पर और उसकी सीमाओं के पार बहुत दूर दूर तक काम कर रहे थे।

एक दल क्रास्नोदोन और कामेंस्क के बीच की सडक पर काम करता

था और जर्मन अफसरो की कारो पर हमले करता था। वीक्तोर पेत्रोव इस दल का नेता था।

दूसरा दल वोरोशीलोवग्राद और लिगाया के बीच की सडको पर काम करता था। इसका नेता लाल सेना का लेफ्टिनेंट जेन्या मोश्कोव था जो अभी हाल में स्वतंत्र हुआ था। इसका काम पट्रोल टैंकरो की खबर लेना अर्थात् टैंकरो के ड्राईवरो और पहरेदारो को मौत के घाट उतारना और पेट्रोल को जमीन पर बहा देना था।

तीसरा दल त्युलेनिन की मातहती में घूम फिरकर काम करता था। वह हथियार, रसद और कपडा ले जानेवाली जर्मन लारियो को रोकता और भटके हुए घुमक्कड जर्मन सैनिको की खोज में रहता था। वह शहर तक में इन लोगो की खोज किया करता था।

प्रत्येक दल के लोग काम करने के लिए अपनी सारी मिली-जुली ताकत लगा देते और जैसे ही काम पूरा हो जाता कि बिखर जाते, भाग जाते। हर शख्स अपना अपना हथियार स्तेपी में अपनी मन-पसन्द जगह पर गाड कर रखता था।

कैद से मोश्कोव को छुटकारा मिलते ही 'तरुण गार्ड' को एक और अनुभवी नेता मिल गया। वह बलूत की तरह हृष्ट-पुष्ट और मजबूत था। वह अपने भयावह अनुभव पूरी तरह भूल चुका था और अब वह बड़े मजे से झूमझूमकर घूमता था। उसके गले में एक बुना हुआ गुलूबंद लिपटा रहता जिसकी वजह से वह भारी भरकम दिखाई पडता। उसके पैरो में ऊचे ऊचे बूट होते थे और उनपर रबड के सोल। बूट और शाल उसने अपने ही जैसे कद-बुत वाले एक जर्मन सैनिक से मार लिये थे, जिसे उसने दोविरेव्का गाव के थाने पर हमला करके मौत की नींद सुला दिया था। इस सैनिक के और मोश्कोव के पैरो की नाप एक ही थी। हालाकि वह बिगडे दिमाग का लगता था लेकिन सच बात तो यह थी कि वह दिल

ना बड़ा अच्छा था। उसकी सैनिक सेवा में, ख़ासकर उस दिन से जब वह मोर्चे पर पार्टी में भरती हुआ था, उसे आत्मानुशासन और सहिष्णुता की शिक्षा दी थी।

मोश्कोव पेशे से फिटर था और प्रशासन-कार्यालय के मशीन विभाग में काम करने लगा था। ल्यूतिकोव के सुझाव पर उसे 'तरुण गार्ड' के हेडक्वाटर का एक सदस्य बना लिया गया था।

अभी तक इस बात के लिए कोई प्रमाण न मिला था जिससे पता चलता कि जर्मन, 'तरुण गार्ड' जैसे किसी भी दल के अस्तित्व के बारे में चिन्तित थे, हालांकि इस समय तक इस संघटन ने कई बड़े बड़े काय संपन्न कर लिये थे।

जिस प्रकार पृथ्वी के नीचे थोड़े थोड़े जल के रिसते रहने से ही, जिसे आखें भली भांति देख तक नहीं पातीं, बड़े बड़े झरने और नदियां बनती हैं, उसी प्रकार 'तरुण गार्ड' के काय भी उन, लाखों व्यक्तियों के गुप्त, गहरे तथा विशाल आन्दोलन का अंग बन गये थे जो जल्द से जल्द उन स्वाभाविक स्थितियों को पुनः प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील थे, जिनमें वे जर्मनों के आने से पहले रह रहे थे। जर्मनों के खिलाफ चलनेवाली छोटी बड़ी कारवाइयों के बीच दुश्मनों को 'तरुण गार्ड' के अस्तित्व का कोई भी विशेष चिह्न नज़र न आया।

इस समय मोर्चा इतनी दूर था कि क्रास्नोदान में बसे हुए जर्मनों को यह नगर जर्मन राइह का एक दूरस्थ नागरिक प्रान्त-सा लग रहा था। अगर सड़कों पर छापेमारों की छिटपुट कारवाइयां न होती रहतीं तो यही समझा जाता कि यहां हमेशा के लिए 'नयी व्यवस्था' की स्थापना हो चुकी है।

उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम, सभी ओर युद्ध के मोर्चों पर एक सन्नाटा-सा छा गया था मानो सब के सब स्तालिनग्राद के महायुद्ध की

गरज सुन रहे थे। सितम्बर और अक्तूबर के महीनो में स्तालिनग्राद और मोज्दोक क्षेत्रो में होनेवाली लडाइया के सबध में, प्रतिदिन जो समिप्त विज्ञप्तिया निकलती रहती थी, उनमें कोई ऐसी स्थायी बात जरूर रहती थी जिसे सुनने के लोग आदी हो गये थे। लगता था जैसे हमेशा सब कुछ इसी प्रकार चलता रहेगा।

चँदिया का जो ताता पूव की दिशा से आकर क्रास्नादान पहुचा करता था और वहा से पश्चिम की ओर चल देता था, वह क्षीण होते होते अब करीब करीब खत्म हो गया था। किन्तु जमनी और रूमानिया के सेना व्यूह, यातायात, तोपें और टैंक पश्चिम से आकर शहर में से होते हुए, अब भी पूव दिशा की ओर बराबर जा रहे थे। वे शहर से बाहर जाते थे किन्तु लौटते न थे। हा, पश्चिम से पलटने बराबर आती था, नतीजा यह होता था कि क्रास्नोदोन से जमनी और रूमानिया के सनिक और अफसर हमेशा गुजरते रहते थे। लगता था जैसे यह स्थिति भी हमेशा बनी रहेगी।

कई दिनो तक कोशेवोई और कोरोस्तिल्योव के घर में एक बढिया उडाकू जमन अफसर जो घावो से चगा हो जाने के बाद फिर मार्चे पर लौट रहा था, और एक रूमानियाई अफसर अड्डा जमाये रहे। रूमानियाई अफसर के साथ उसका एक अर्दली भी रहता था। वह खुशदिल जवान था, रूसी बोलता था और जिस चीज पर भी उसका हाथ पड जाता उसे चुरा लेता—चाहे वह बगीचे में लगी हुई लहसुन की गाठ हो या दीवाल पर लटकता परिवार के चित्र का फ्रेम।

रूमानियाई अफसर छोटे कद का था। हमेशा हरे रग की वर्दी पहनता, टाई लगाता और कधो पर सुनहरी डोरी वाले बिल्ले लगाये रहता। उसकी मूछें पतली और काली थी तथा आगे छोटी और बाहर की ओर निकली हुईं। वह बेहद फुर्तीला था। उसकी नाक की नोक तक बराबर हिलती

रहती। वह मामा कोल्या के कमरे में रहता था, पर अपना सारा दिन असैनिक कपडो में, खानों, दफ्तरो और सैनिक दस्ता का चक्कर लगाते हुए बिताता था माना वहा कोई जाच-पडताल कर रहा हो।

"तुम्हारा चीफ असैनिक कपडा में क्या घूमता है?" मामा कोल्या ने उसके अरदली से पूछा। इस समय तक उसने अरदली से दोस्ती गाठ ली थी।

खुशदिल अरदली ने गाल फुलाये फिर उन पर हाथ मारे और सकस के मसखरे की तरह मुह से हवा निकालते हुए मजा ले लेकर कहने लगा।

"वह जासूस है।"

इस बातचीत के बाद मामा कोल्या को अपना पाइप फिर कभी नही मिला।

जर्मन उडाकू अफसर ने बडे कमरे में कब्जा जमा लिया था और येलेना निकोलायेव्ना का नानी वेरा के कमरे मे और ओलेग का लकडी के शैड में खदेड दिया था। उसका कद लम्बा और बाल सुनहरी रग के थे। उसकी आखें खून की तरह लाल थी। उसने फ्रास और खार्कोव के हवाई हमला में बहुत-से पदक जीते थे। जब उसे कमाडाटुर से लाया गया ता उसने बुरी तरह पी रखी थी। बहुत दिना तक वह इसलिए टिका रहा कि वह रात दिन इतनी बुरी तरह पीता था कि उसके लिए बाहर निकलना तक असभव था। वह घर के सभी लागा को पिलाने की कोशिश करता सिवाय रूमानियन सनिका के जिनसे उसे चिढ थी। वह उनके अस्तित्व की ओर ध्यान ही न देता था। वह किसी से बिना बातचीत किये एक क्षण भी न रह पाता। वह अपनी जर्मन और रूसी की खिचडी भाषा में यह समझाता कि वह किस प्रकार सबसे पहले बोल्शेविका को, तब अग्रेजा का और उसके बाद अमेरिकनो को जमीन चटायेगा और तब सब कुछ ठीक ठाक हो जायेगा। परन्तु अपने निवास के आखिरी दिनो में उसपर गम का पहाड टूट पडा।

"स्तालिनग्राद! ... हा!" उसने अपनी लाल तर्जनी उठाकर कहा। "बोल्शेविक गोलिया बरसाता है ... हूह! हम kaputt"* और उसकी लाल लाल आखो में निराशा के आसू छलछला आये।

जाने से कुछ ही पहले वह बस इतने ही होश में आया था कि अपनी पिस्तौल से अहाते में बिलबिलाते चूजो पर गोली चला सका। किन्तु इन मरे हुए चूजो को वह रखता कहा? अत उसने उनके पैर बाध दिये और जब तक वह अपना सामान इकट्ठा करता रहा, चूजे डयोढी के पास पडे रहे।

रूमानियाई अर्दली ने ओलेग को पुकारा, अपने गाल फुलाये, उन्हे मसखरे की तरह पिचकाया और मरे हुए चूजो की ओर इशारा किया।

"सभ्यता है सभ्यता।" उसने मजा ले लेकर कहा।

इसके बाद ओलेग का कलम बनाने का चाकू ऐसा गायब हुआ कि फिर हाथ न लगा।

'नयी व्यवस्था' के अधीन क्रास्नोदोन में भी एक 'सुचारु और प्रतिष्ठित वर्ग' का जन्म हुआ। वहा भी पद और हैसियत के लिहाज से वैसे ही जर्मन, अफसर और अधिकारी दिखाई दिये जैसे मसलन हैडेलबर्ग या बाडन बाडन में मिलते थे। सबसे बडे पद पर थे हाप्तवह्टमिस्टर ब्रुक्नेर, वाह्टमिस्टर बाल्डेर और लेफ्टिनेंट श्वेदे जो प्रशासन-कार्यालय का चीफ था। यह चीफ उस जमाने कारखानो के स्वच्छ वातावरण में काम करने का आदी था जिनका प्रबन्ध प्रमाणिक कोटि का था तथा जहा हर चीज की व्यवस्था थी। बेशक उसने बराबोर को अपने अधीनस्थ उत्पादन की स्थिति से अवगत करा दिया था। यदि मजदूर, मशीनें, औजार, लकडी, यातायात और कानून सम्बन्धी बातें नहीं है तो कोयला मिल भी कहा से सकता

---

* हम अब कुछ नहीं सकते।

है। जो उलझन वह यहा प्रबन्ध योजनाए बनाते समय महसूस करता था, वही अब भी किये जा रहा था। उसकी योजनाओ का यही कुछ बच रहा था। वह अपने कर्त्तव्य का पालन बस इसी हद तक ईमानदारी से कर सकता था कि इस बात की बाकायदा देख रेख रखे कि रूसी साईस प्रशासन-कार्यालय के जर्मन घोडो को हर रोज सुबह जई खिलाते है या नही। इसके अलावा कागजो पर दस्तखत करना भी उसका एक काम था। वह अपना बाकी समय अधिक उत्सुकता से अपने निजी मुर्गीखाने, सुअर तथा मवेशियो के बाडे और जर्मन प्रशासन के अधिकारियो के लिए दावतो का इतजाम करने में लगाता था।

हैसियतो और पदो में कुछ नीचे आते थे श्वैंदे का डिप्टी फेल्दनेर, ओबेरलेफ्टिनेंट श्प्रीक और सोन्दरफयूरर साण्डेस। साण्डेस निकर पहने रहता था। कुछ और भी नीचे पद पर थे पुलिस चीफ सोलिकोव्स्की और बुरगोमास्टर स्तात्सेको। स्तात्सेको दिन भर शराब पीकर मस्त रहता था। प्रतिदिन सुबह स्तात्सेको मन ही मन स्वय अपने महत्त्व से गदगद होकर और छाता लेकर, बडी सफाई से कीचड को लाघता हुआ म्युनिसिपल दफ्तरो की ओर चल देता और शाम को उसी तरह गभीरता से लौटता मानो सारे दफ्तर का भार अकेले उसी के कधो पर हो। इस सिलसिले में सबसे अन्त में नम्बर आता था एन० सी० ओ० फेनबाग और उसके सैनिको का। वस्तुत वे लोग ही सारा काम करते थे।

जिस समय अक्तूबर की मूसलाधार वर्षा आरभ हुई, उस समय यह प्यारा छोटा-सा खान-नगर बडा ही बदनसीब सिद्ध हुआ। वहा आराम के साधन तो जैसे समाप्त ही हो गये। हर जगह कीचड ही कीचड था। न ईंधन, न प्रकाश। सारे बाडे तोडे जा चुके थे, सामने के बगीचों के पेड और झाडिया काट डाली गयी थी, खानी घरो की खिड़किया टूट चुकी थी। उधर से गुजरते हुए सैनिक घरो का सारा सामान और [illegible] [illegible]

के कर्मचारी अपने अपने घरों में इस्तेमाल करने के लिए वहां का सारा फर्नीचर चुरा ले गये थे। जब लोग आपस में मिलते जुलते तो जैसे एक दूसरे को पहचान भी न पाते। वे इतने दुर्बल, क्षीण और निर्धन हो चुके थे! कभी कभी तो ऐसा व्यक्ति भी जिसे सामाजिक बातों से कोई सरोकार न था बीचोबीच सहसा रुक जाता अथवा रात में जगकर सोचने लगता—'बेशक, बेशक, यह सत्य नहीं हो सकता? यह जरूर कोई दुःस्वप्न होगा। कोई भ्रमजाल? या कहीं मेरा ही दिमाग तो नहीं खराब हो गया?'

जब सहसा, गुप्त रूप से किसी दीवाल या तार के खंभे पर पानी से भीगा हुआ कोई ऐसा छोटा परचा दिख जाता जिसपर लिखा हुआ शब्द 'स्तालिनग्राद!' मनुष्य के मस्तिष्क में आग-सा लगा देता, या फिर कहीं सड़क पर होनेवाला कोई विस्फोट सुनाई पड़ता तो लोग मन ही मन कहने लगते—'नहीं! यह सपना नहीं, भ्रमजाल भी नहीं! सत्य है, सत्य! और युद्ध चल रहा है!'

जिस समय ल्यूबा एक भूरी जर्मन कार में वोरोशीलोवग्राद से आयी, उससे पहले कई दिनों तक शरद की घनघोर बारिश होती रही थी और सनसनाती हुई हवा चलती रही थी। कार रुकते ही एक युवक लेफ्टिनेंट कूदकर बाहर आया, उसने कार का दरवाजा खोला और ल्यूबा हाथ में सूटकेस लटकाये, उतरी और भागकर अपने घर की ड्योढ़ी की सीढ़ियां चढ़ने लगी। लेफ्टिनेंट ने सलामी मारी। ल्यूबा ने घूमकर उसकी ओर देखा तक नहीं।

इस बार उसकी मां, येफ्रोसीन्या मिरोनोव्ना, अपने को न सम्भाल सकी और नाश्ता व खाने की तैयारी कर रही थी, उस समय बोली—

बेटी ल्यूबा, तुम्हें बहुत सावधान रहना चाहिए। जानती हो लोग क्या क्या कहने लगे हैं। कहते हैं, 'जर्मनों में साथ मेल कर रही है ...''

"यही कहते ह न? यह तो वडी अच्छी बात है, प्यारी मा, सचमुच मेरे लिए यह वडी अच्छी वात है,' ल्यूवा मुस्कराती हुई वोली और विस्तर पर सिकुड सिकुडकर सो गयी।

काका जेम्नुखाव को ल्यूवा के आने का समाचार मिल गया था। दूसरे दिन सुबह वह अपनी सडक और वास्मीदामिकी ज़िले के बीच पडनेवाले एक बहुत बडे खाली मैदान को पार करता हुआ उससे मिलने के लिए निकल पडा। उसके पाव ज़मीन पर नही पड रहे थे। वह घुटनो तक कीचड में सना था और वारिश में भीग जाने के बाद काप-सा रहा था। आखिर वह विना दरवाज़ा खटखटाये ही धडधडाता हुआ शेव्त्सोव परिवार के बडे कमरे में पहुच गया।

ल्यूवा घर में अकेली थी। वह एक हाथ से छोटा दर्पण पकडे हुए उसे अपने चेहरे के सामने रखे हुए थी और दूसरे हाथ से उसने पहले अपने बेतरतीब वालो को सहलाया। फिर अपनी हरी फ्राक को कमर पर से ठीक करने लगी। कमरे में नगे पैर चहलकदमी करती हुई वह अपने आप से बाते कर रही थी–

"अरी प्यारी ल्यूवा! ये छोकरे तुम्ह प्यार क्यो करते है, मेरी समझ में नही आता। आखिर तुममें कौन-सी अच्छाई है? उफ मुह इतना वडा, आखें इतनी छोटी, चेहरा इतना सादा, डीलडौल हा डीलडौल उतना बुरा नही नही, सचमुच बुरा नही। और अगर सोचा जाये यदि तुम छोकरो के पीछे लगी होती तो एक बात भी थी, लेकिन यह हकीकत नही उफ! किधर दिमाग भटक गया! छोकरो का पीछा! नही, यह सब बाते मेरी समझ मे नही आती।"

उसने अपने घुघराले बाल हिलाते हुए पहले सिर एक ओर टेढा किया, फिर दूसरी ओर। अन्तत नगे पैरो से फर्श धमधमाती हुई नाचने लगी और यह गाने लगी

ल्यूबा, मेरी प्यारी ल्यूबा—
प्यारी, बड़ी दुलारी ल्यूबा।

वान्या चुपचाप बड़े धैर्य से उसे बड़ी देर तक देखता रहा। आखिर वह भाग दिया।

पर ल्यूबा जरा भी न घबरायी। इसके विपरीत उसने ऐसी मुद्रा बना ली मानो उसे चिन्ता हुई हो। उसने धीरे धीरे अपना दर्पण नीचा किया, वान्या की ओर मुड़ी, अपनी नीली आंखें मिचकायीं और ठहाका मारकर हंस दी।

"सेर्गेई लेवाशोव की किस्मत में क्या है, यह मैं साफ साफ देख रहा हूं," वान्या ने अपनी धीर-गभीर आवाज़ में कहा, "उसे रानी के पास जाकर तुम्हारे लिए उसकी जूतियां चुरानी होंगी।"*

"वान्या, जानते हो, मेरे लिए यह आश्चर्य की बात जरूर है, पर मैं उस सेर्गेई की अपेक्षा तुम्हें अधिक प्यार करती हूं," ल्यूबा बोली और कुछ कुछ शर्मा गयी।

"मेरी आंखें, इतनी कमजोर हैं कि दरअसल मुझे सभी लड़कियां एक जैसी लगती हैं। मैं तो उन्हें उनकी आवाज से पहचानता हूं। मुझे तो धीर गभीर आवाज़ वाली लड़कियां पसंद हैं। पर तुम्हारी आवाज तो घंटी जैसी है, घंटी जैसी!" वान्या ने शान्ति से कहा, "घर पर कौन कौन है?"

"कोई नहीं। मां इवान्त्सोवा के घर गयी है।"

"तो फिर चलो बैठें। और हां, खुदा के वास्ते यह दर्पण हटा दो। लगता है जैसे वह मेरे सिर पर सवार हो। अब मेरी बात सुनो। ल्यबोव

---

*न० गोगोल की परीकथा 'क्रिसमस से पहले' में बकूला लुहार को अपनी प्रेयसी का मन जीतने के लिए उसके आगे रानी की जूतियां पेश करनी थीं।

ग्रिगोर्येव्ना! तुम क्या इतनी व्यस्त रही थी कि यह याद भी नही रहा कि क्रान्ति की पच्चीसवी वर्षगाठ दूर नहीं है?"

"बेशक, मुझे याद है," ल्यूबा बोली। पर सच बात तो यह थी कि वह इसके बारे में सभी कुछ भूल गयी थी।

वान्या ने झुककर उसके कान में कुछ कहा। "खूब! बहुत अच्छे! बहुत अच्छा ख्याल है।" और ल्यूबा ने इतने जगकर उसके होठ चूमे कि घबराहट के कारण उसका चश्मा तक गिर गया।

"मा, क्या कभी तुमने कोई कपडे रगे है?"

ल्यूबा की मा जैसे घबराकर उसकी ओर देखने लगी। "मेरा मतलब यह है कि तुम्हारे पास कभी कोई ऐसी सफेद ब्लाउज़ थी, जिसे तुम नीले रग म रगना चाहती थी?"

"हा बेटी, कभी कभी मने यह भी किया था।"

"और कभी कोई चीज तुमने लाल रग में रगी है?"

"रग से कोई फर्क नहीं पडता, बेटी।"

"तो मुझे भी रगना सिखा दो, मेरी मा। कभी किसी दिन मुझे भी कुछ न कुछ रगना पडेगा!"

" चाची मरुस्या, यह तो बताओ कि कभी तुम्हे कोई ऐसा कपडा रगना पडा है कि कपडे का रग बदल जाये" वोलोद्या ओस्मूखिन ने अपनी चाची तिख्नोनोवा स पूछा। उसकी चाची, ओस्मूखिन परिवार के घर क पास ही एक छोटे-से मकान में अपने बच्चो के साथ रहती थी।

"रगना पडा है वोलोद्या!"

"तुम मेरे लिए दो तीन तकिए के गिलाफ रग दोगी—लाल रग में?"

"लेकिन, प्यारे वोलोद्या, कभी कभी रग पक्का नहीं होता, अत तुम्हारे कान और गाल तक लाल हो उठेंगे।"

"मै उनपर माऊगा नही। वस दिन भर अपने पलग पर रखे रहूगा।
अच्छे लगेगे ,

" वापू, मुझे पक्का यकीन हो गया है कि तुम लकडी और धातुओ की रगाई में सचमुच वडे माहिर हो। क्या तुम मेरे लिए एक चादर लाल रग में रग दोगे? जानते हो, वही खुफिया काम करनेवालो ने मुझसे कहा 'हमें एक लाल चादर चाहिए'। भला मै क्या कह सकता था।' जोरा अपने पिता से वोला।

"मै रग तो सकता हू। किन्तु चादर! तुम्हारी मा क्या कहेगी? उसके पिता ने वडी सतर्कता से जवाब दिया।

"वापू, आखिर तुम हमेशा के लिए यह सवाल तय क्या नही कर डालते कि घर का मालिक कौन है—तुम या मा? जो भी हो। यह तो साफ है—मुझे एक लाल चादर मिलनी ही चाहिए "

वाल्या वोरस को सेर्गेई का पत्र मिला था, किन्तु उसने उससे कभी उस पत्र का जिक्र न किया और न सेर्गेई ने ही वात चलायी। किन्तु उस दिन से वे जैसे एक ही शरीर के दो अग बन गये थे। दिन निकलते ही दोनो एक दूसरे के लिए तडपने लगते थे। प्राय सेर्गेई ही पहले-पहल अपनी सूरत देरेव्यान्नाया सडक पर दिखाया करता था। घुघराले वालोवाला यह दुवला पतला छोकरा अक्तूवर के ठडे और वरसाती दिनो में भी नगे पैर चलता था और वहा के लोग उसे पहचानने लगे थे। मरीया अद्रेयेव्ना और खासकर नन्ही ल्यूस्या उसे पसद करने लगी थी, हालाकि उनकी मौजूदगी में वह कभी कभी ही वात करता था।

"तुम जूते क्यो नही पहनते?' एक दिन नन्ही ल्यूस्या ने पूछा।

'नगे पर नाचना आसान होता है," उसने दात निकालते हुए उत्तर दिया। पर जब वह दुवारा आया तो जूते पहने था—वात यह थी कि जूतो की मरम्मत करने का उसे समय ही न मिला था।

एक दिन, उस जमाने मे भी, जब 'तरण गाड' के सदस्य सहसा चीजें रगने में रुचि दिखाने लगे थे, सेर्गेई और वाल्या का परचे बाटने का काम करना था। इस बार यह उनकी चौथी बारी थी। उन्हें ये परचे ग्रीष्म थियेटर में एक फिल्म प्रदशन में बाटने थे।

पहले इस ग्रीष्म थियेटर में लेनिन क्लब हुआ करता था। यह लकड़ी की एक ऊची और लम्बी इमारत थी जिसमें एक मनहूस-सा आगे का बढ़ा हुआ रगमच था, जो फिल्म दिखाते समय परद के पीछे छिप जाता था। हाल का फश पीछे मे आगे की ओर ढालवा होता गया था। [illegible] रगी हुई बेंचें गडी थी। दशक इन्ही बेंचो पर बैठते थे। [illegible] जमनो का अधिकार हो जाने के बाद से वहा जमन [illegible] थी जो अधिकाशत युद्ध समाचार सबधी होती था। [illegible] करनेवाली मडलिया भी विविध कायक्रम प्रस्तुत करती थी। [illegible] न थे। टिक्ट का दाम एक ही रहता था। [illegible]।

हमेशा की तरह वाल्या, हाल के [illegible], कार्नी पीछे, चली गयी और सेर्गेई आगे, प्रवशद्वार [illegible]। [illegible] बाद रोशनी गुल होते ही, जब मीटा [illegible] मचा रहे थे, उन्होने परचे हवा में [illegible] सिरो के ऊपर गिरने लगे।

बायी ओर लगे हुए एक नाजी झडे पर टिक गयी। झडे का रग गहरा लाल था और उसके बीचोबीच एक सफेद कपडे पर काला स्वस्तिका बना था। झडा मच पर लटक रहा था और मन्द हवा के झोको मे फहरा रहा था।

'म वहा जाऊगा। जब फिल्म खत्म हो जायेगी तो भीड के साथ तुम भी बाहर निकल जाना और बॉक्स आफिस में बात शुरू कर देना। अगर कोई हाल साफ करने के लिए आये तो उसे कोई पाच मिनट तक बातो में लगाये रखना," सेर्गेई वाल्या के कान में फुसफुसाया।

उसने बिना उत्तर दिये, सिर हिला दिया।

परदे पर फिल्म का नाम जमन में लिखा था। उसी के बीच सफेद रग के शब्दो म उसका रूसी शीर्षक था—'लडकी का पहला अनुभव'।

हम लोग बाद में तुम्हारे मकान में, मिलेगे," सेर्गेई ने फिर फुसफुसाते और तनिक लजाते हुए कहा।

उसने हामी भरी।

फिल्म के अन्तिम भाग के शुरू होने से कुछ ही पहले जब परदे पर कालिमा दिखाई दी, सेर्गेई वाल्या के पास से हटकर गायब हो गया। इस प्रकार गायब होना अकेला सेर्गेई ही जानता था। वह ऐसा गायब हुआ कि उसका कोई चिह्न तक न दिखाई दिया। बगल में खड़े हुए लोगो में कही भी कोई हरकत नहीं हुई। सर्गेई पलक गिरते गायब कैसे हो गया। वाल्या यह देखने के लिए बडी उत्सुक थी कि वह कब यह काम करेगा। धीरे धीरे वह भी परदे की रोशनी पार के हाटल दरवाजे पर अपनी निगाहें गडाए, अन्धकार को पार करती। सेर्गेई इस व्यवहार में ही सफाई से दाखिल होकर सब कर पूरा करता था।

शोर खत्म हुआ और लोग बाहर जाते हुए अन्धकार को पार कर गए। वाल्या का सेर्गेई का कोई सुराग मिल दिल कि अगर पता हो अतिरिक्त

जल गयी। वह भीड के साथ ही थियेटर से बाहर आ गयी और द्वार के ठीक सामने लगे हुए वृक्ष के नीचे प्रतीक्षा करने लगी।

अधेरे पार्क में सर्दी भी थी और नमी भी। पेडा पर जो थोडी सी पत्तिया बच गयी थी वे गीली थी और जब वे हिलती थी तो लगता था मानो कराह रही हो। उस समय हाल में से आखिरी थोडे-से लोग निकल रहे थे। वाल्या तत्काल बॉक्स आफिस तक दौडी दौडी आयी और झुककर, हाल के खुले हुए दरवाजे से निकलते हुए हल्के प्रकाश में, जमीन पर कुछ ढूढने लगी।

"आपको चमडे का कोई छोटा-सा पर्स तो नही मिला?"

"मुझे कसे मिलता, बेटी? अभी अभी तो लोग बाहर निकले है!" बॉक्स आफिस की प्रौढ महिला ने उत्तर दिया।

वाल्या झुकी और पैरो से कुचले हुए कीचड में, इधर उधर ढूढने लगी।

"यही कही होगा जब मै ठीक यहा पहुची थी तो मैंने अपना रूमाल निकाला था और कुछ ही कदम चली थी कि देखा तो मेरा पर्स गायब!"

वह औरत भी पर्स ढूढने में लग गयी।

इस बीच सेर्गेई मच पर पहुच चुका था—दरवाजे से होकर नही बल्कि आर्केस्ट्रा पिट के डडहरो पर से चढकर और मच पार कर। झडा उसके ऊपर लगे हुए एक शहतीर पर, एक डडे में लगा था। वह सारी शक्ति लगाकर झडा गिराने के लिए डडे से लटक गया था। पर वह बडी मजबूती से सधा था। उसने उसे और ऊचाई पर पकडा और अपना पूरा भार डालते हुए हवा में उछला। झडा नीचे आ गया और सेर्गेई आर्केस्ट्रा पिट में गिरते गिरते बचा।

हाल के दरवाजे बाहर पार्क में खुलते थे। सेर्गेई हाल की मद्धिम रोशनी में मच पर खडा खडा, बडे आराम के साथ झडे को तह करता

रहा। आखिर वह इतना छोटा हो गया कि वह उसे अपनी कमीज़ के नीचे खोस सकता था।

बाहर का पहरेदार प्रोजेक्शन-कक्ष का दरवाजा बद कर चुकने के बाद अंधेरे में से उस स्थान पर आया जहा हाल से रोशनी निकलकर बाहर पहुच रही थी। वह बाहर आकर टिकट वेचनेवाली, और वाल्या के पास आ खडा हुआ, जो अभी तक पस ढूढने में लगी थी।

"उधर की बत्ती क्या जल रही है? जानती हो अगर वह खुली रह गयी तो तुम्हारी क्या दशा होगी।" वह क्रोध से चिल्लाया, "उसे बन्द करो। हम अब ताला लगाने जा रहे है"।

वाल्या दौडी दौडी उसके पास आयी और उसने उसका कोट पकड लिया।

"बस, बस, एक सेकड और।" वह गिडगिडायी। 'मेरा पस खो गया है। बत्ती बुझ जाने पर तो हमें कुछ भी न दिखाई देगा बस एक सेकड।" वह कहती गयी और उसने उसकी जैकेट कसकर पकड ली।

"लेकिन अब वह तुम्हे मिलेगा कहा।" पहरेदार ने कहा। वह कुछ पिघल गया था और स्वय भी आखें घुमा घुमाकर पस ढूढने लगा था।

ठीक उसी क्षण, आखो तक टोपी नीची किये हुए एक तादियल छोकरा खाली थियेटर हाल से बाहर निकला। उसके बाद वह अपनी दुबली पतली टागो पर हवा में उछलता और 'म्याऊ' जैसी करुण ध्वनि करता हुआ अधेरे में लापता हो गया।

वाल्या ने पाखड भरे स्वर में कहा—"मुझे पस खो जाने का कितना दुख है।' और उसे इतने जोर से हसने की इच्छा हुई कि उसने दोनो हाथो से अपना चेहरा ढक लिया और जसे घुटती हुई-सी, थियेटर से जल्दी जल्दी निकल गयी।

अध्याय १२

एक बार जब ओलेग ने अपनी मा को सभी कुछ समझा दिया था तो अब उसके रास्ते की सारी बाधाए दूर हो चुकी थी। अब तो सारा परिवार उसके कामो में भाग लेता था। उसके सारे सबधी उसके सहायक हो गये थे और उसकी मा सबो की अगुआई करती थी।

उस सोलह साल के छोकरे के दिल में पुरानी पीढियो के उपयोगी अनुभव, पुस्तको की सीख और अपने सौतेले पिता द्वारा सुनाई जानेवाली कथा-कहानियो के लाभकर अश किस तरह बैठ गये थे यह कोई न जानता था। विशेष रूप से जो सीख उसे उसके अतिसन्निहित परामर्शदाता फिलीप्प पेत्रोविच ल्यूतिकोव ने दी थी उसका एक एक शब्द उसके मस्तिष्क पर अकित हो गया था। और ये प्रभाव तथा शिक्षा उसके हृदय में उन नये अनुभवो के साथ मिलकर एक हो गये थे जो उसे अब अपने काम में मिल रहे थे। बेशक, उसे और उसके साथियो को पहले-पहल विफलताए मिली थी पर साथ ही उसकी पहली साजिशें कामयाब भी हुई थी। 'तरुण गार्ड' के कामो में विकास होने के साथ साथ ओलेग का प्रभाव भी अपने साथियो पर अधिकाधिक बढता गया और वह इस तथ्य से भी अधिकाधिक अवगत होता गया।

वह इतना मिलनसार, उत्साही और निष्कपट था कि अपने साथियो पर रोब गाठना या उनकी और उनके विचारो की ओर ध्यान न देना उसके स्वभाव के ही विरुद्ध था। किन्तु वह बराबर यह समझता रहता कि उनके कामो की सफलता इस बात पर निर्भर है कि अपने मित्रो के बीच वह दूरदर्शी है या गल्तिया कर सकता है।

वह बडा ही फुर्तीला, खुश-तबीयत और साथ ही विश्वस्त, सतर्क और कठोर था। जिन बातो का सम्बन्ध अकेले उसी के साथ था उनमें

उसकी स्कूली बच्चे जैसी प्रवृत्ति बराबर झलका करती थी। उसे अपने जाकर परख छिपाना, अनाज के ढेर में आग लगाना, बन्दूकें चुराना या जमना पर छिपकर हमला करना बहुत अच्छा लगता था। वह अपने हर साथी तथा हर बात के लिए जिम्मेदार था और, वह अपनी जिम्मेदारी अच्छी तरह समझता था। अतएव वह अपने ऊपर संयम रखना जानता था।

वह अपने से अधिक उम्र की एक लडकी से अधिक हिला मिला था। वह बडी ही स्पष्टवादी, निर्भय, मितभाषी और रोमांटिक स्वभाव की लडकी थी। उसके काले काले बाल, छल्ला के रूप में, उस मजबूत, सुडौल कंधा पर लहराते थे। उसकी बाहें खूबसूरत तथा धूप के कारण सावली थी। उसकी धनुषाकार भौंहा और बडी बडी भूरी आंखा में उत्तेजना तथा आवेग की झलक थी। नीना इवान्नोवा ओलेग की हर दृष्टि और हाव भाव का अर्थ समझती थी और उसके सभी निर्देशा का, बिना किसी हिचक के, अक्षरश पालन करती थी।

दोनो पर्चे तैयार करने, अथवा कोमसोमोल की सदस्यता के अस्थायी काड लिखने अथवा नक्शा का अध्ययन करने में एक दूसरे के साथ बिना बातचीत किये हुए घंटो बिता देते और जरा भी न ऊबते। पर जब उन्हें बातचीत का मौका मिल जाता तो वे अपनी दैनिक दुनिया से बहुत ऊपर आसमान में विचरा करते—मानव मस्तिष्क की महानता जिस किसी चीज का भी निर्माण कर सकती थी, और साथ ही जो युवको की समझ में आ सकती थी, वह इन दोनो की कल्पना के समक्ष प्राय कौंध जाती। कभी कभी, और अकारण, दोनो इतने मगन हो जाते कि ठहाका मारकर हस पडते। ओलेग की हसी बच्चा जैसी निर्बाध, निर्द्वन्द्व होती। हसते समय वह प्राय अपनी उगलियो के पोर मल करता। और नीना की हसी में पहले तो मृदुता और मधुरता होती और

फिर सहसा स्त्रियों जैसी गूढ़ता और ऐसी रहस्यपूर्णता आ जाती मानो वह कोई चीज उससे छिपा रही हो।

एक दिन उसने नीना को एक कविता सुनानी चाही।
"तुम्हारी अपनी कविता है?" उसने साश्चर्य पूछा।
"तुम सुनो तो "

वह कविता पढ़ने लगा। पहले तो उसकी जबान कुछ कुछ डखडायी किन्तु कुछ पंक्तियों के बाद उसमें रवानी आ गयी।

रानी, आओ, मिलकर गायें गीत युद्ध का—
अरे, नहीं, मन करो न भारी और न छोड़ो अपनी हिम्मत—
क्योंकि लाल डैनोंवाले वे बाज हमारे,
सधे हुए पर-पख तोनते,
फिर आयेंगे बीच हमारे और तुम्हारे!
आओ, पख लगाकर आओ—
बंधन और बेडियां काटो ध्वस्त करो यह काल-कोठरी,
मेरी रानी, कल कि उगेगा सूर्य,
तुम्हारी भीगी पलकें अपनी किरनों से पोछेगा,
और, तुम्हारे होठों पर बुन देगा मधुर मधुर मुस्कानें!
गीली पलकें सूख जायेंगी—हमें साथ ही मुक्ति मिलेगी—
औ' हम दोनों यों गायेंगे ज्यों कि मई पहिली आई हो!
ऐसी स्थिति में कि नहीं सन्देह रहेगा कहीं मनों में,
हम लेंगे प्रतिशोध कि बदला डटकर लेंगे—
और, दिवस वह दूर नहीं है!

"मैंने अभी इसे मुकम्मल नही किया है," एक बार फिर जैसे परेशान होकर ओलेग बोला, "अन्त में हम साथ साथ सेना में भरती होते है भरती होगी तुम?"

"तुमने कविता मेरे लिए लिखी है? मेरे लिए लिखी है न?"-अपनी चमकती हुई आखो से उसकी ओर देखती हुई वह बोली। "मन तुरन्त समझ लिया था कि यह तुम्हारी ही कविता होगी। तुमने मुझे पहले क्या नही बताया कि तुम कविता लिखते हो?"

"शायद मुझे शर्म आती थी," उसने दात निकालते हुए कहा। नीना को कविता पसन्द आयी, यह जानकर वह बडा खुश था? "म बहुत समय से कविता करता रहा हू। मैं अपनी कविताए किसी को नहीं दिखाता। सबसे ज्यादा वान्या मुझे नीचा दिखाता है। जानती हो वह सचमुच अच्छा लिखता है। मेरी कविता तो बस मुझे लगता है जैसे मेरी कविता में मात्राए ठीक नही रह पाती और काफिया मेरे लिए कठिन होता है।" वह खुश था क्योकि नीना को उसकी पक्तिया अच्छी लगी थी।

वस्तुत हुआ यह कि जब उसके लिए सबसे अधिक सकट का समय था, उसी समय उसने जीवन के सबसे सुखद काल मे प्रवेश किया, उसी समय उसके यौवन की सभी क्षमताए खिल रही थी।

छ नवम्बर के दिन, अर्थात, अक्तूबर समारोह के एक दिन पहले कोशेवोई के घर में 'तरुण गार्ड' के हेडक्वाटर के सभी सदस्यो और सदेशवाहिकाओ – वाल्या बोर्त्स और नीना तथा ओल्या इवान्त्सोवा – का जमाव हुआ।

ओलेग ने निश्चय किया था कि यह दिन रादिक यूर्किन को कोमसोमोल में भरती करके मनाया जायेगा।

अब रादिक यूर्किन वह छोटा-सा, शान्त, विनम्र आखोवाला बालक न रह गया था, जिसने जोरा अरत्युन्यान्त्स से कभी कहा था कि म

"जल्दी सोने का आदी हू"। फोमीन की फासी में भाग लेने के बाद वह त्युलेनिन के दल का सदस्य बन गया था और रातो में जर्मन लारियो पर होनेवाले आक्रमणो में हिस्सा लेता था। वह दरवाज़े के पास कुर्सी पर बैठा हुआ खिडकी में से कमरे के दूसरी ओर देख रहा था। उसे जैसे अपने पर पूरा विश्वास था। ओलेग ने आरम्भिक भाषण दिया जिसके बाद त्युलेनिन ने रादिक के चरित्र पर प्रकाश डाला। कभी कभी वह यह जानने को भी उत्सुक दिखाई दिया कि जो लोग भाग्य का फैसला करेंगे वे किस किस्म के लोग है। और वह, अपनी लम्बी लम्बी बरौनियो में से, खाने की बडी मेज़ के चारो ओर बैठे हुए हेडक्वार्टर के सदस्यो की ओर देखने लगता। मेज ऐसी लगी थी मानो उसपर दावत का इन्तज़ाम हो। पर तभी दो लडकिया, जिनमें से एक सुनहरे बालोवाली थी और दूसरी काले बालावाली उसकी ओर देखकर ऐसे मुस्करायी और दोनो देखने में इतनी सलोनी थी कि सहसा रादिक असामान्य रूप से घबरा गया और उसने अपनी आखें हटा ली।

"क्या किसी को साथी रादिक यूकिन से कोई प्रश्न करना है?" ओलेग ने जानना चाहा।

किसी को कोई प्रश्न न करना था।

"वह हमें अपना जीवनवृत्त सुनाये," वान्या तुर्केनिच बोला। "हमें अपनी ज जीवन-कहानी सुनाओ।"

रादिक यूकिन खडा हो गया और झनझनाती हुई आवाज़ में ऐसे कह चला मानो दरजे में किसी प्रश्न का उत्तर दे रहा हो।

"म क्रास्नोदोन में १९२८ में पैदा हुआ। मैं गार्की स्कूल में पढने लगा " और इस वाक्य पर उसकी जीवनकथा समाप्त हो गयी। उसे लगा कि उसके जीवन में कोई खास बात नही, फिर कुछ कम विश्वास के साथ बोला—

"जब से जमन आये हैं, मैं स्कूल नहीं गया "

किसी ने कुछ न कहा।

"तुमने कभी कोई सामाजिक काम किया है?" वाया जम्नुकोव ने पूछा।

"नहीं ' रादिक ने गहरी सास लेकर और वाल सुलभ आवाज में कहा।

कामसोमोल सदस्य के कर्तव्यों को जानते हो?" सींग के फ्रेम वाले चश्मे में से मेज की ओर घूरते हुए वाया ने प्रश्न किया।

'कोमसोमोल सदस्य का कर्तव्य है कि जमन फासिस्ट हमलावरों से तब तक लड़ता रहे जब तक उनमें से एक भी जिंदा न रहे," रादिक ने दो टूक जवाब दिया।

"मेरा ख्याल है कि छोकरा राजनीति की बातें समझता है," तुर्केनिच ने कहा।

'मेरा प्रस्ताव है कि हम उसे स्वीकार कर लें," ल्यूबा बोली। शायद उसे डर लग रहा था कि स्थिति रादिक यूर्किन के अनुकूल नहीं है।

'बिलकुल ठीक!' हेडक्वार्टर के अन्य सदस्यों ने कहा।

"तो सभी लोग इस पक्ष में हैं कि साथी रादिक यूर्किन को कामसोमोल का सदस्य बना लिया जाय?" स्वयं हाथ उठाते और एक एक सदस्य की ओर देखकर गत निकालते हुए ओलेग ने कहा।

बाकी सभी लोगों ने भी हाथ उठा दिये।

"सर्वसम्मति से पास " ओलेग बोला और कुर्सी से उठकर खड़ा हो गया। 'कृपया इधर आइये।'

रादिक का चेहरा पीला-सा पड़ गया। तुर्केनिच और ऊल्या ग्रामोवा ने बड़ी गम्भीरता से उसकी ओर देखा और एक ओर हटकर उसे निकल जाने की जगह दे दी। वह मेज तक चला आया।

"रादिक!" ओलेग ने बडी गम्भीरता के साथ कहना शुरू किया, "'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर के निर्देश से मैं तुम्हें कोमसोमोल की सदस्यता का अस्थायी कार्ड देता हूँ। इसकी रक्षा करना अपनी इज्ज़त की तरह। तुम अपने ही दल में अपना चन्दा अदा करना। जैसे ही लाल सेना लौटेगी कि कोमसोमोल की ज़िला कमिटी तुम्हें इस अस्थायी कार्ड के स्थान पर स्थायी कार्ड दे देगी।"

रादिक ने धूप से सवलाया अपना हाथ फैलाया और कार्ड ले लिया। कार्ड उपयुक्त आकार का था और उस किस्म के कार्ट्रिज पेपर में से बनाया गया था जो नक्शा और प्लानों के लिए काम में लाया जाता है। कार्ड दुहराकर मोडा गया था। बाहर सिरे पर छोटे-बडे टाइपों में छपा था—"जर्मन हमलावर, मुर्दाबाद!" और कुछ ही नीचे लिखा था—"अखिल सघीय लेनिन तरुण कम्युनिस्ट लीग!" कुछ और नीचे थोडे और मोटे टाइपों में छपा था—"कोमसोमोल की सदस्यता का अस्थायी कार्ड"। अन्दर बायीं ओर के पन्ने पर रादिक का नाम, कुलनाम, पिता का नाम और उसका जन्म दिन लिखा था और उसके भी नीचे भरती होने की तारीख़ छ नवम्बर १९४२। उसके भी नीचे लिखा था—"क्रास्नोदोन नगर के 'तरुण गार्ड' कोमसोमोल संघटन द्वारा जारी किया गया। सेक्रेटरी कश्क।" दाहिने पन्ने पर कुछ चौकोर खाने बने थे जिनमें सदस्यता चन्दे का भुगतान दिखाया जाना था।

"मैं इसे अपनी जैकेट के अन्दर सी लूगा और तब यह हमेशा मेरे साथ रहेगा, रादिक ने इतने धीरे-से कहा कि उसकी आवाज़ मुश्किल से ही सुनाई पडी। उसने कार्ड अपनी जैकेट की भीतरी जेब में रख लिया।

"अब तुम जा सकते हो,' ओलेग बोला। और फिर सभी ने रादिक को बधाई दी और उससे हाथ मिलाये।

रादिक यूकिन बाहर सादोवाया भाग पर चला गया। इस समय मेंह नहीं पड़ रहा था अपितु तेज और ठंढी हवा चल रही थी। करीब करीब सध्या हो चुकी थी। उस रात को उसे अक्तूबर क्रान्ति जयन्ती के उपलक्ष्य में एक खुफिया कारवाई में तीन छोकरो के एक दल का नेतृत्व करना था। घर की ओर जाते हुए उसके मुह पर दृढता तथा खुशी का भाव था, क्योंकि वह जानता था कि उसकी जेब म कोमसामाल की सदस्यता का कार्ड रखा है। वह दूसरे लेवेल क्रासिंग आया और जिला सोवियत की इमारत से होकर गुजरते समय, जिसमें फिलहाल कृषि कमाडाटुर का दफ्तर था, उसने अपना निचला जबडा दबाया, ओठ अलग अलग किये और जोर से सीटी बजायी सिर्फ इसलिए कि जमना को उसके अस्तित्व का पता चल जाय।

उस रात जयन्ती के सम्मान में होनेवाले महत्त्वपूर्ण काय में अकेले रादिक को ही नहीं बल्कि करीब करीब सारे सघटन को भाग लेना था।

"भूलना मत। जैसे ही खाली हो जाना, सीधे मेरे यहा चले आना," ओलेग ने कहा, "अकेले पेर्वोमाइस्की बस्ती के साथी न आयें।"

पेर्वोमाइस्की बस्ती के साथियो ने उस रात इवानीखिना के घर में एक समारोह-दावत की योजना बनायी थी।

ओलेग, तुर्केनिच, वान्या जेम्नुखोव और सदेशवाहिकाए—नीना और ओल्या, कमरे में ही रह गयी। सहसा ओलेग चिन्तित दिखने लगा।

"ल लडकियो, उठो, च चलो व वक्त हो गया," उसने उनसे कहा। वह निकोलाई निकोलायेविच के कमरे के दरवाजे तक गया और द्वार खटखटाने लगा "मामी मरीना! व वक्त हो गया"।

मरीना रूमाल अपने सिर में लपेटती हुई कमरे से बाहर निकल

ग्रायी। वह कोट पहने थी। पीछे पीछे मामा कोल्या भी निकल ग्राया। नानी वेरा ग्रौर येलेना निकोलायेव्ना भी ग्रपने कमरे से निकल ग्रायी।

ग्रोल्या ग्रौर नीना ने ग्रपने ग्रपने कोट पहने ग्रार मरीना के साथ घर से बाहर निकल गयी। उन्हे पास पडोस की सडका की निगरानी करनी थी।

इस प्रकार की चीज इस समय करना खतरनाक था क्योकि ग्रभी तक लाग ग्रपने ग्रपने घरा में सोये न थे ग्रौर रास्ता चल रहा था। किन्तु मौके को हाथ से खोना भी तो वेवकूफी होती?

ग्रधेरा बढ रहा था। नानी वरा ने खिडकी पर काला परदा डाला ग्रौर दिया जला दिया। ग्रोलेग घर से वाहर निकल ग्राया जहा दीवाल के साथ मरीना खडी थी। मरीना दीवाल के पास से हट ग्रायी।

"ग्रास-पास कोई भी नही," वह फुसफुसायी।

मामा कोल्या ने झरोखे मे से सिर निकाला, ग्रपने इद गिद निगाह डाली ग्रौर ग्रोलेग को तार का सिरा थमा दिया। ग्रोलेग ने उसे लग्गी के साथ जोडा, फिर लग्गी को हुक के सहारे खभे के पास ही बिजली के बडे तार के साथ ग्रटका दिया। लग्गी बिलकुल खभे के साथ जुडी थी। ग्रधेरे में वह नजर नही ग्राती थी।

ग्रोलेग, तुर्केनिच ग्रौर वाया जेम्नुखोव मामा काल्या के कमरे में डेस्क के इद गिद बैठ गये। उनकी पेंसिले तैयार थी। नानी वेरा तनकर बैठ गयी। उसके चेहरे पर ऐसे ऐसे भाव झलक रह थे जिनकी थाह पाना ग्रसम्भव था। येलेना निकोलायेव्ना भी, कुछ ग्रागे झुकी हुई, भोली किन्तु कुछ डरी हुई नानी वेरा के ही पास बिस्तर पर बैठी थी। सब की ग्राखें वायरलैस-सेट पर लगी थी।

मामा कोल्या की कुशल ग्रौर फुर्तीली उगलिया ही शीघ्रता स ग्रौर विना ग्रावाज किये, ग्रपेक्षित 'वेव लेग्थ' ढूढ सकती थी। उसने

सीधे रेडियो निश्चित जगह पर लगा दिया। जहा क्रान्ति की जयजयकार पुकारी जा रही थी। वायुमडल की गडबडी के कारण वह आवाज़ मुश्किल से ही सुनाई पड रही थी। वह कह रही थी

"साथियो, आज हम अपने देश में सोवियत क्रांति की विजय की २५ वी जयती मना रहे हैं। हमारे देश म सोवियत प्रणाली चालू हुए पच्चीस वष हो चुके हैं। अब हम सावियत शासन के २६ वें वष म प्रवेश कर रहे हैं "

तुर्केनिच वाह्यत बडा गम्भीर और चुप लग रहा था। और वाया कागज पर इस कदर झुका हुआ था कि उसका चश्मा उसे छू रहा था। परन्तु दोनों ही जल्दी जल्दी उक्त समाचार घसीटे जा रहे थे। यह काम बहुत कठिन न था, क्योंकि स्तालिन धीरे धीरे बाल रहा था। कभी कभी वह चुप हो जाता और इन लोगा को गिलास म पानी उडले जाने और गिलास नीचे रखे जाने की आवाज़ सुनाई पडने लगती। कोई चीज लिखने से छूट न जाय इसके लिए पहले पहल तो उन्ह पूरी सावधानी बरतनी पडी किन्तु बाद में वे भाषण की रवानी से अवगत हो गये। उन्हें बराबर इस बात का आभास हो रहा था कि वे बडी ही असामान्य परिस्थिति में हैं, उन्ह यकीन न हो रहा था कि उन्ह यह अनुभव प्राप्त होगा।

यदि आपने टिमटिमाते दिये की रोशनी में किसी ऐसे कमरे में, जहा गर्मी की कोई व्यवस्था न हो, अथवा किसी खाई-खदक में, जिसके बाहर शरद के बर्फीले तूफान गरजते हो और सवत्र लोगा पर अत्याचार किया जाता हो, उन्ह अपमानित किया जाता हो, ठढ से अकडी हुई उगलियो से, अपने दल के अनधिकृत प्रेस की शानक बक-सैंग्य पर, गुप्त रेडियो-सेट या नहीं चलाया है, तो आप उन लोगो की भावनाए नहीं समझ सकत जो मास्को स आनेवाले इस भाषण को सुन रहे थे।

" यह नरभक्षी हिटलर कहता है—'हम रूस को इतना बरबाद कर देंगे कि वह फिर उठ भी न सकेगा'। वह बात तो शायद साफ कहता है पर बात मूर्खा जैसी है।"

इसके तुरन्त ही बाद उस उस बडे हाल से ग्राती हुई हसी की जो गूज सुनाई पडी उसने इन सबा के चेहरा पर मुस्कराहट बिखेर दी। नानी वेरा को ता अपने मुह पर हाथ तक रख लेना पडा।

"जमनी को बरबाद करने का हमारा कोई उद्देश्य नही, क्योंकि जमनी को बरबाद करना असम्भव है, वैसे ही असम्भव जैसे रूस को बरबाद करना। किन्तु हिटलरी शासन को अवश्य नष्ट किया जा सकता है और नष्ट किया जाना चाहिए। सचमुच हमारा पहला फर्ज यह है कि हम हिटलरी शासन और उसके प्रेरको को नष्ट कर डालें।"

इस भाषण के बाद हाल में तालियो की जा गडगडाहट हुई उससे इन लागा की भी इच्छा हुई कि वे भी, शार मचा मचाकर अपनी अनुभूतिया प्रकट करे, किन्तु वे ऐसा नही कर सकते थे, अतएव वे एक दूसरे की ओर ही देखते रहे।

सालह साल के बालक से लेकर एक बूढी औरत तक के दिलो मे देशभक्ति की जो भावनाए अगडाइया ले रही थी वे अब तथ्य और आकडा की सीधी सरल भाषा में उनके सामने स्वरूप ग्रहण करने लगी थी।

बेशक, इन्ही सीधे सादे लोगा के भाग्य में इतने अकथनीय अत्याचार और कष्ट झेलने बदे थे। यह उन्ही की आवाज थी जो सारी दुनिया से कह रही थी।

"हिटलर के बदमाश हमारे देश के अधिकृत प्रदेशा की नागरिक जनसख्या पर हमारे स्त्री-पुरुषा, बच्चा, बूढा हमारे भाई-बहना पर अत्याचार कर रहे ह, उनका वध कर रहे हैं। सम्मान की भावना से च्युत और पशुओ के स्तर तक गिरे हुए कमीने लोग ही सीधे-साद और

निहत्ये लोगो पर इतना अमानुषिक अत्याचार कर सकते हैं हम इन अत्याचारो के अपराधियो, 'यूरोप में नयी व्यवस्था' के निर्माताओ, सभी नये बने गवनर-जनरलों, मामूली गवनरो, कमाडाटो और उप-कमाडाटो को जानते हैं। उनके नाम लाखो पीडितो की जबान पर हैं। इन कसाइयों को यह मालूम रहे कि वे अपने अपराधो की जिम्मेदारियो से नहीं बच सकते और न अत्याचार पीडित देश के प्रतिशोध से ही मुक्ति पा सकते हैं ''

इन शब्दो में बोल रहा था उनका प्रतिशोध और उनकी आशा। ये शब्द बाहर के विराट ससार की उन्मुक्त सास के समान थे जो उनके छोटे-से नगर के बाहर था जिसे दुश्मनो के सैनिको ने अपने पैरो तक, कीचड में रौंदकर रख दिया था। ये शब्द उनके देश की सिहरन के द्योतक थे और रात में मास्को के हृदय की बलवती धडकन के। वे उनके कमरे में प्रवेश करके उनके दिलो में खुशी का सचार करते थे और उन्हे यह याद दिलाते थे कि वे भी अपने नगर के बाहर वाले ससार का ही अग हैं भाषण का प्रत्येक टोस्ट तालियों की गडगडाहट में डूब गया।

"हमारे छापामार नर-नारी अमर हो! "

"सुन रहे हो?" ओलेग बोला। उसकी आखें खुशी से चमक रही थी।

मामा कोल्या ने रेडियो बन्द कर दिया और कमरे में भयानक सन्नाटा छा गया। एक ही क्षण में हवा में सारे स्वर विलीन हो गये। हा, अरोव में से हल्की हल्की-सी सरसराहट जरूर सुनाई पड रही थी। बाहर शरद की वायु सनसना रही थी। अब वे उस थोडे थोडे प्रकाशित कमरे में अकेले रह गये थे और उनके और उस ससार के बीच, जहा की आवाज उन्हे अभी अभी सुनाई पडी थी यातना की सैकडो मीलो की दूरी बिखरी पडी थी।

क्षण में उसके कन्धा पर खड़ी हो गयी और बढ़कर दीवाल का सिरा पकड़ लिया। सेर्गेई उसके टखना को मजबूती से पकड़े रहा ताकि वह गिर न पड़े। हवा में उसका घाघरा यों फड़क रहा था मानो कोई पताका लहरा रहा हो। वह दीवाल के सिरे पर झुकी और उसके सारे शरीर का भार उसके मुड़े हुए हाथों पर थम गया। बेशक उसके हाथों में इतनी शक्ति तो न थी कि वह सेर्गेई को खींचकर दीवाल के सिरे तक ले जाता, हाँ वह दीवाल से इतने कसकर चिपकी हुई थी। सर्गेई ने उसकी कमर पकड़ी और दीवाल पर घुटनों की टेक देकर, पहले एक, फिर दूसरा हाथ फेंककर दीवाल के सिरे पर चढ़ गया। ल्यूबा ने उसके लिए जगह बनायी और दूसरे ही क्षण वह उसी की बगल में बैठा था।

मोटी दीवाल का सिरा ढालू और बहुत गीला तथा फिसलना था, किन्तु सेर्गेई मीनार की दीवाल के सहारे अपना माथा और हाथ टिकाये मजबूती से उस पर खड़ा हो गया। ल्यूबा उसकी पीठ पर चढ़कर बड़ी सरलता से उसके कन्धों पर खड़ी हो गयी। अब मीनार के दंदाने उसकी छाती तक आ चुके थे। मीनार के सिरे तक चढ़ जाना अब उसके लिए मुश्किल न था। हवा उसकी पोशाक और जैकेट को जैसे फाड़े दे रही थी और उसे लग रहा था कि किसी भी क्षण वह मीनार से गिरकर नीचे आ जायेगी। किन्तु सबसे कठिन चढ़ाई पूरी हो चुकी थी।

उसने अपनी चोली में छिपाकर रखा हुआ कपड़े का एक बंडल निकाला, गरदन से होकर जानेवाली उसकी डोरी हटायी और बंडल कसकर पकड़ते हुए कपड़ा ध्वजदंड से बाँध दिया। फिर उसने बंडल हाथ से छोड़ा और हवा कपड़े को इतनी जोरों से फहराने लगी कि उत्साह से ल्यूबा का दिल जोर जोर से धड़कने लगा। उसने एक और छोटा-सा कपड़ा खींचा और उसे ध्वजदंड के नीचे बाँध दिया, जिससे वह कपड़ा मीनार के नीचे और स्नान के भीतर लटकने लगा। फिर वह झुकी और

पहले की तरह सेर्गेई की पीठ का सहारा लेकर दीवाल पर उतर आयी। शीघ्र ही वह दीवाल पर बैठ गयी और पैर हिलाने लगी। उसे नीचे कीचड में कूदने में सकाच हो रहा था। इसी बीच सेर्गेई जमीन पर कूदा, उसने दोनो हाथ फैलाये और उससे कूद पडने का अनुरोध करने लगा। वह उसे देख तो न सकती थी, हा उसकी आवाज़ से उसके खडे होने की जगह का अनुमान भर लगा सकती थी। सहसा उसका दिल जस बैठने लगा। उसने अपने हाथ फैलाये, आखें मिचकायी और कूद पडी। वह उसकी बाहा ही में गिरी। उसने अपनी बाहे भी सेर्गेई के गले में डाल दी। इस प्रकार कुछ क्षणो तक सेर्गेई उसे अपनी बाहो में पकडे रहा। किन्तु उसने अपने का छुडाया, ज़मीन पर कूदी और उसके चेहरे पर सास छोडती हुई उत्तेजित हाकर फुसफुसाने लगी

"सेर्गेई! चला अपना गिटार सभाले?"

"हा, ठीक! और मै कपडे भी बदलूगा। तुमने मुझपर अपने जूते रख रखकर मेरा तो तमाशा बना दिया," वह खुश होकर बोल उठा।

"नही कपडे बदलने की कोई जरूरत नही! हम जैसे भी है वे हमें उसी हालत में स्वीकार कर लेगे!" वह खुलकर मुस्करा दी।

वाल्या और सेर्गेई ल्युलेनिन को नगर के केन्द्रीय भाग में काम करना था, जा सबसे खतरनाक क्षेत्र था—ज़िला सोवियत के भवन और श्रम-केन्द्र में जर्मन सतरी तैनात किये गये थे। पुलिस का एक सिपाही प्रशासन कार्यालय के पास पहरा देता था। जर्मन सशस्त्र पुलिस का हेडक्वार्टर पहाडी के ऐन नीचे था। किन्तु अधेरा और हवा दाना ही उनकी सहायता कर रहे थे। सेर्गेई ने 'पगले रईस' का वीरान घर चुना था और वाल्या उस हिस्से की निगरानी करती रही जो ज़िला सावियत के

सामने पडता था। मेर्गेई दरवे को जानवानी जीण शीण सीटी पर चढ गया। सीन्ी बहुत पुरानी थी और लगता था, वहा 'पगले रईस' के जीवन काल में ही रखी गयी थी। सारा काम कुल पद्रह मिनट में हो गया।

वाल्या को सर्दी लग रही थी। उसे खुशी थी कि हर काम इतना जल्दी हो गया। किन्तु सेर्गेई ने हसते हुए अपना चेहरा उसके चेहरे के पास सटाया और बोला

"मेरे पास एक फालतू झडा है। चलो प्रशासन-कार्यालय पर फहरा दें।'

"वहा पुलिस या सिपाही जो है।"

'आग लगने पर भागने या बुझाने के लिए जो सीढी लगी है, वह भी ता है!'

वस्तुत वह सीढी इमारत के पिछवाडे थी जो मुख्य द्वार से दिखाई नही पडती थी।

"तो चलो चलें,' वह बोली।

दोनो गहन अधेरे में उतरकर रेलवे लाइन पर आ गये और बहुत समय तक पटरिया के किनारे किनारे चलते रहे। वाल्या ने साचा कि वे वेर्ल्नेदुवानया के निकट होगे, किन्तु वह गलती पर थी। सेर्गेई अधेरे में बिल्ली की तरह देख सकता था।

"अब पहुच गये,' वह बोला, "बस मेरे पीछे पीछे चली आओ, क्योकि यदि तुम पहाडी के नीचे उतरी तो सीधे पुलिस ट्रेनिंग स्कूल में पहुच जाओगी।"

पार्क में हहराती हवा पेडो से टकरा रही थी और नगी नगी शाखाए एक दूसरे से सटकर उन दोनो पर पानी की ठडी ठडी बूदें बरसा रही थीं। सेर्गेई उसे आनन-फानन, एक के बाद एक कई गलिया से ले

गया, यहा तक कि स्कूल की छत की खडखड से वाल्या को पता चल गया कि उन्हे दूर नही जाना है।

सेर्गेई लोहे की सीढिया चढने लगा। वह ऊपर चढता जा रहा था और वाल्या उसकी आहट सुन रही थी। आखिर आहट बद हुई और वह लापता हो गया। वाल्या को लगा जैसे सेर्गेई ने बहुत देर लगा दी है। वाल्या आग लगने पर भागने या बुझानेवाली सीढी के नीचे बिलकुल अकेली खडी रही उफ़, कितनी भयानक थी यह रात! पत्रहीन शाखाए करुण स्वर में कराह रही थी। वे सब, याने वह, उसकी मा और ल्यूस्या, इस अधेरी और भयानक दुनिया में कितने निरीह, और कितने निबल थे! और उसका पिता? कौन जाने, इस समय भी वह कही निराश्रय भटक रहा हो! अधा की तरह! वाल्या की आखो के सामने दोनेत्स स्तेपी का अनन्त विस्तार कौंध गया—सारी खानें उडा दी गयी थी, छोटे छोटे नगर और गाव वपा से मने हुए थे। उनमें रोशनी की कोई व्यवस्था न थी, किन्तु जमन सैनिक सभी जगह पहरे पर तैनात थे। सहसा वाल्या को लगा कि सेर्गेई उस खडखडाती हुई छत से कभी न उतरेगा। उसकी हिम्मत जैसे उसका साथ छोडने लगी। कितु तभी उसे जीना हिलता डुलता-सा लगा। फलत तुरत उसके चेहरे पर उसके स्वाभाविक दृढता तथा स्वच्छन्दता के भाव चलक उठे।

"तुम यहा हो न?" वह अधेरे में मुस्कुराया।

वाल्या को लगा जैसे सेर्गेई ने उसकी ओर हाथ बढाया है। फलत उसने भी अपना हाथ बढा दिया। सेर्गेई का हाथ बफ जसा ठडा था। उसने क्या क्या मुसीबत न उठायी थी—दुबला-पतला लडका, वह घटा उन जूतो में चला फिरा था, जिनमे पहले से ही छेद हो गये थे। जूता में शायद पानी भर गया होगा। फिर उसकी बटनहीन, पुरानी और तार तार हुई जैकेट भी उसे कम कष्ट न पहुचा रही थी। वाल्या ने

उसका चेहरा अपने हाथों में थाम लिया। चेहरा भी बर्फ की तरह ठंडा हो गया था।

"तुम तो जैसे जम ही गये हो," अपने हाथों से उसके गाल दबाती हुई वह बोली।

दोनों कई क्षणों तक वहीं जड़वत खड़े रहे। उनके सिरों के ऊपर नंगी शाखाएं एक दूसरे को झकझोर रही थीं। आखिर सेर्गेई ने फुसफुसाकर कहा

"आज रात हमको और घूमना घामना नहीं है चलो बाड़े में से निकलकर कहीं चले जायें "

वाल्या ने उसके चेहरे पर से अपने हाथ हटा लिये। वे पड़ोस के मकान से होकर ओलेग के घर पहुंच गये। सहसा सेर्गेई ने वाल्या का हाथ पकड़ा और दोनों दीवाल से सट गये। वाल्या की समझ में कुछ नहीं आया। उसने अपना कान सेर्गेई के ओठों के पास कर दिया।

"दो व्यक्ति इस ओर आ रहे हैं। उन्होंने हमारी आहट सुन ली है और रुक गये हैं," वह फुसफुसाया।

'तुम्हारा भ्रम होगा!"

"नहीं, वे अब भी वहीं हैं।"

"तो चलो पीछे अहाते की तरफ चलें।'

जैसे ही दोनों मकान की बगल से होकर गुज़रे कि सेर्गेई ने उसे फिर पकड़ लिया– दूसरे दोनों व्यक्ति भी मकान की दूसरी ओर ठीक यही कर रहे थे।

"तुम्हें भ्रम हो रहा है।"

"नहीं, वे लोग वहीं हैं।'

कोशेवोई के घर का दरवाज़ा खुला, घर से कोई बाहर निकला और जिन दो व्यक्तियों को सेर्गेई और वाल्या चकमा दे रहे थे उन्हीं से वह टकरा गया।

युवकों के हृदयों में उस समय जन्म लेती है, जब वे एक साथ किसी महान मानवीय विचार और खासकर उस विचार के सम्पर्क में आते हैं, जो क्षणविशेष पर, उनके जीवन की सबसे महत्वपूर्ण भावनाओं की अभिव्यक्ति करता है। उनके चेहरों पर मैत्री, यौवन और भविष्य में पूर्ण विश्वास की भावना इतनी अधिक साकार हो उठी थी कि उनकी सगत में स्वयं येलेना निकोलायेव्ना तक जवान और खुश दिखने लगी थी। सिर्फ नानी वेरा अपने बादामी हाथ पर अपना चेहरा साधे स्थिर बैठी हुई कुछ भय और सहसा उत्पन्न सहानुभूति के साथ, अपनी अधिक उम्र की बुलदी से इन युवक-युवतियों को निहार रही थी।

भाषण पढ़कर वे युवक, जैसे सोच विचार में डूबे हुए वहीं चुपचाप बैठे रहे। नानी वेरा के चेहरे पर चतुराई का भाव दौड़ गया।

"ज़रा अपनी तरफ देखो!" वह बोली, "ऐसी अद्भुत छुट्टी के दिन भी तुम लोग यों गुम-सुम कैसे बैठे रह सकते हो? ज़रा मेज की तरफ देखो। यहां रखी हुई शराब केवल सजावट के लिए नहीं है, वह पीने के लिए है।"

"अरे नानी! अगर दुनिया में सबसे अच्छा कोई है तो वह तुम हो चलो खाने की मेज पर धावा बोल दें। चलो उठो!" ओलेग बोला।

इस समय जरूरत इस बात की थी कि लोग बहुत शोर न मचायें। जब कभी कोई तेज़ आवाज में बोलता तो सब लोग एक साथ ही 'हुश' कहने लगते और इसमें उन्हें बड़ा मज़ा आता। उन्होंने बारी बारी से बाहर की निगरानी रखने का निश्चय किया था और जो लड़की या लड़का अपने बगलगीर के साथ जरूरत से ज्यादा ताल्लुक से बात करने लगता था या बहुत चहकने लगता था उसे निगरानी करने की ड्यूटी पर भेजने में उन्हें भी बड़ा मज़ा आता था।

स्त्योपा सफोनोव नीना को सभाले रहा। नीना बिलकुल चुप था- बुत जैसी। स्त्योपा उसके साथ सभी नृत्यो में नाचा और उसे पूरे विवरण सहित नर और मादा फ्लैमिंगो के परा में फर्क बताता रहा। उसने यह भी बताया कि मादा फ्लमिंगो कितने अडे देती है।

सहसा नीना का चेहरा लाल और विकृत हो गया। वह बोली "स्त्योपा, तुम्हारे साथ नाचना भी एक मुसीबत है। एक तो तुम नाटे हो, मेरे पैर कुचलते हो और अपनी वाहियात बात भी बद नही करते।"

वह उसके आलिंगन से अपने को छुडाती हुई भाग गयी।

स्त्योपा नाचने के लिए वाल्या के पास सीधा पहुचने ही वाला था कि वह तुर्केनिच के साथ नाचने लगी। फिर उसने ओल्गा इवान्त्सोवा का पकड लिया। वह शात और गभीर स्वभाव की लडकी थी और अपना वहन से अधिक गुपचुप। अत स्त्योपा उसे बेधडक फ्लमिंगो की विचित्र आदता के बारे में समझा सकता था। किन्तु वह यह न भूला कि उसे किसने सिखाया है। फलत उसकी आखें बराबर नीना को ढूढ़ती रही। नीना ओलेग के साथ नाच रही थी और ओलेग पूर विश्वास और धय के साथ उसके गठीले वदन को इधर-उधर घुमा रहा था। नीना के ओठो पर मुस्कान, आखो में खुशी की चमक और चेहरे पर बेहद आकर्षण था।

नानी वेरा अधिक बर्दाश्त न कर सकी और बोल उठी—"यह कैसा नाच है? इह विदेशी नाच ही सूझते है। सेर्गेई, 'गोपाक'* शुरू करो, 'गोपाक'।"

और भौह ऊपर उठाये बिना, सर्गेई ने 'गोपाक' बजाना शुरू कर

---

*एक उक्रइनी नृत्य है।

दिया। दो ही छलागो में ओलेग कमरे के एक छोर से दूसरे छोर पर आया और नानी की कमर पकड ली। नानी के चेहरे पर घबराहट क कोई चिह्न न दिखाई दिये। वह फश को पैरो से पटपटाती हुई, बडी फुर्ती से, उसके साथ नाचने लगी। जिस ढग से उसके घाघरे की काली मग़ज़ी फश से एक दो इच ऊपर उठकर घूम रही थी, उससे पता चलता था कि नानी भी एक अच्छी नर्तकी थी। उसके नृत्य-कौशल का परिचय उसके पैरो की अपेक्षा उसके हाथो और मुद्रा से अधिक मिल रहा था।

नाच और गान से अधिक ऐसी कोई चीज़ नही जिससे किसी राष्ट्र के चरित्र का परिचय मिलता हो। ओलेग की भौहो के कापते हुए सिरो पर एक शरारत साकार हो उठी थी, किन्तु मुह या आखो पर उसका कोई आभास न था। उसकी उक्रइनी कमीज़ के कालर के बटन खुले थे, उसके माथे पर पसीने की बूदे झलक उठी थी, उसका बडा सिर और कधे सन्तुलित और निश्चेष्ट से हो गये थे और वह इतनी फुर्ती और उत्साह से 'गोपाक' नाच में चौकिया भर रहा था कि उसकी नानी के साथ साथ उसमें भी इस जन्मजात उक्रइनी कला का स्पष्ट परिचय मिल रहा था।

काली आखो और बर्फ जैसे सफेद सुन्दर दातोवाली मरीना उस पार्टी में एक से एक अच्छे आभूषण पहनकर आयी थी। वह अब अपने पर नियत्रण न रख सकी और पर पटकती हुई तथा हाथ चटकारती हुई, मानो कोई बहुमूल्य चीज़ गिरा रही हो, ओलेग के इद गिद तेज़ी से नाचने लगी। पर तभी मामा कोल्या ने उसकी कमर पकडी। ओलेग ने फिर नानी की कमर में हाथ डाला और पैर थपथपाते हुए दोनो जोडे फिर नाचने लगे।

सहसा नानी वेरा सोफे पर लुढकी और रूमाल से अपने लाल चेहरे पर हवा करती हुई चिल्लाकर बोली—"आह! इसके लिए मेरी पुरानी हड्डिया बेकार है।"

सा लगती थी, प्रगट होती थी। उसके पीछे सेर्गेई फर्श पर आया। उसके पैर भी अपने कौशल का चमत्कार दिखा रहे थे। उसके चेहरे पर तटस्थता का वैसा ही भाव था। उसके हाथ लटक रहे थे, किन्तु फिर भी उनसे उसी प्रवीणता का परिचय मिल रहा था जो उसके पैरो की कुछ कुछ हास्यजनक गति से मिलता था।

ल्यूबा ने गिटार की बढी हुई गति के साथ साथ अपना थिरकना भी तेज़ कर दिया और सेर्गेई के सामने आने के लिए एक पूरा चक्कर लगा डाला। सेर्गेई इतनी उत्तेजना और अतृप्त प्रेम के उन्माद मे उसके पीछे पीछे नाच रहा था कि जूते पटपटाने के साथ ही उनमें लगे हुए कीचड के टुकड तक सभी दिशाओ मे उडने लगे।

उसके नृत्य की विशेषता थी उसका ताल-लय सबधी ज्ञान और दिलेरी– वह दिलेरी जिसे वह छिपाये रखता था। और ल्यूबा? वह तो अपने मजबूत और सुघड परो से कस काम लेती थी, देखनेवाले हैरान रह जाते थे! उसका चेहरा अधिकाधिक लाल होता जाता, उसकी सुनहरी घुघराली लटो में लहर-सी उठने लगतीं, वे उछलतीं और शुद्ध सोने जैसी दिखाई देती। और जब लोग उसे देखते तो उनकी निगाहे जसे यह कहती-सी लगती–"वह है हमारी ल्यूबा! वह रही हमारी अभिनेत्री!" अकेला सर्गेई लेवाशोव ही, जो ल्यूबा को प्यार करता था, उसकी ओर पनी नज़रो से न देखता। वह अब भी अपने इद गिर्द के वातावरण के प्रति तटस्थ था और उसकी मजबूत, कापती उगलिया बराबर गिटार के तारो पर दौड रही थी।

सेर्गेई ने बिजली जैसी फुर्ती के साथ हाथ फैलाया मानो अपनी टोपी फर्श पर फेक रहा हो और ल्यूबा की ओर बढा। उसने हथेलिया घुटनो और जूतो के तलो पर बराबर ताल-लय के साथ पटपटायी। वह ल्यूबा को दर्शको के बीचोबीच ले गया और अपनी एडियो की अतिम पटापट के

साथ दाना रुक गये। सभी जी भरकर हसने और तालिया बजाने
लगे। तब सहसा ल्यूवा ने करुण आवाज़ में कहा—"यह था हमारा रूसी
नत्य।"

इसके बाद वह बिलकुल न नाची बल्कि सेर्गेई लेवाशाव के पास बठ
गयी और अपना छोटा-सा सफेद हाथ उसके कधे पर रखे रहा।

उसी दिन, खुफ्या जिला पार्टी कमिटी की आज्ञा से 'तरुण गाड'
के हेडक्वाटर ने मोर्चे पर काम करनेवाले लाल सेना के सनिका के कुछ
परिवारा को कुछ आर्थिक सहायता दी थी। इन परिवारा को पसे की
सख्त जरूरत थी।

'तरुण गाड' की निधि चन्दो से उतनी नही जमा होती थी जितना
सिगरेटो, दियासलाइया, कपडो तथा अन्य बहुत-सी चीज़ा और खासकर
शराब की बिक्री से। ये सभी चीज़ें 'तरुण गाड' के सदस्य जमन लारियो
मे से चुरा लाते थे।

वोलाद्या ओस्मूखिन दोपहर के समय अपनी चाची लित्वीनोवा से
मिलने आया और उसे प्रचलित सोवियत रूबला की एक गड्डी पकडा
दी। सोवियत रूबल जमन माक के साथ साथ इस्तेमाल किये जाते थे
लेकिन उनकी विनिमय-दर बहुत ही कम थी। 'चाची मरूस्या खुफिया
कामा मे लगे हुए लागा ने आप और क्लेरिया अलेक्सान्द्रोव्ना के लिए यह
रकम भेजी है," उसने चाची मरूस्या से कहा, "त्योहार मनाने के
लिए इस पसे से कुछ चीज़ें बच्चा के लिए खरीद लेना!"

क्लेरिया अलेक्सान्द्रोव्ना, लित्वीनावा की ही भाति, लाल सेना के
एक अफसर की पत्नी थी। दाना पडासिन थी। दोना के घरा में बच्चे
थे और दाना ही बडे कष्ट में था—जमन उनकी एक एक चीज़ लूट ले गये
थे। उनका अधिकाश फर्नीचर तक लारिया पर ढा ले गये थे।

दाना स्त्रिया ने इस उत्सव का शाम के समय दावत करके मनाने

का निश्चय किया। उन्होंने घर की बनी वाद्का खरीदी और पातगाभी तथा आलू के समोसे बना लिये।

कोई आठ बजे वालोद्या की मा येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना, वोलोद्या की बहन ल्युद्मीला और अपनी दो बेटिया सहित चाची मरुस्या, कलेरिया अलेक्सान्द्रोव्ना के मकान में जमा हुई। कलरिया अलेक्सान्द्रोव्ना अपने घर में अपने बच्चो और मा के साथ रहती थी। छोकरो ने बाद में आने का वादा किया था – उन्होंने कहा था कि पहले उन्हे अपने मित्रो से मिलना है। प्रौढा स्त्रियो ने एक दो जाम चढाये और इस बात पर खेद प्रगट किया कि इतना बडा त्योहार इतने गुप्त ढग से मनाना पड रहा है। बच्चो ने धीमी धीमी आवाज में कई सोवियत गीत गाये और माता पिताओ ने कुछ आसू बहाये। ल्युद्मीला ऊब रही थी। इसके बाद बच्चो को सोने के लिए भेज दिया गया।

रात मे काफी देर गये जोरा अरुत्युन्यान्त्स आया। वह कीचड मे लथ-पथ था और जब वह रोशनी में आया और खासकर जब उसने देखा कि अभी तक वहा दूसरे छोकरे नही आये ह और उस ल्युद्मीला क पास बैठना पडा है तो उसे बेहद झेंप होने लगी। वह इतना बुझा बुझा-सा दिखाई पड रहा था कि ल्युद्मीला ने उसे घर की बनी आधा गिलास वोदका दी तो वह तुरत चढा गया और फौरन ही नशे मे झूमने लगा। जिस समय तोल्या ओर्लोव और वोलोद्या लौटे, उस समय जोरा इतना गमगीन हो उठा था कि वह अपने साथियो क आने पर भी ठीक नहीं हुआ।

तोल्या ओर्लोव और वोलोद्या ने भी पी। प्रौढा स्त्रिया अपनी बातचीत मे लगी थी। छोकरे आपस में जिस ढग स बात कर रहे थे उससे ल्युद्मीला ने शीघ्र ही समझ लिया था कि वे सिर्फ दोस्तो से मिलने-जुलने ही नही गये थे।

"कहा?" वोलोद्या, 'घघरक' तोल्या के और भी आगे झुकता हुआ, जोरा के कान में फुसफुसाया।

"अस्पताल में," जोरा ने उदास होकर उत्तर दिया। "और तुम?"

"हमारा स्कूल – वोलोद्या की छोटी और काली आंखों में साहस और चतुराई की एक चिनगारी-सी दिखाई दी और वह जोरा की ओर झुककर उसके कान में कुछ कहने लगा।

"क्या? यह झूठमूठ तो नही?" जोरा की उदासी एक क्षण के लिए जाती रही।

"नही, सच है," वोलोद्या बोला, "स्कूल के लिए अफसोस है, पर चिन्ता करने से क्या फायदा? हम नया स्कूल बना लेंगे।"

"देखो अगर किसी से मिलने का वादा करो तो घर पर ही रहा करो," ल्युद्मीला ने वोलोद्या से कहा। उसे इन गोपनीय वार्ता में शामिल नही किया जा रहा था इससे उसे खीझ हो रही थी। "दिन भर तुमसे मिलने के लिए लड़कों और लड़कियों का तांता लगा रहा। सभी एक ही सवाल करते थे 'वोलोद्या घर पर है? वोलोद्या घर पर है या नही?'"

वोलोद्या हंसा और इस प्रश्न का मजाक में उड़ा दिया।

'घघरक' तोल्या के हाथ-पैर हठीले थे। उसके सिर के बाल खड़े थे। सहसा वह अपनी कुर्सी से उठा और बसुरी आवाज़ में बोलने लगा – "महान अक्तूबर क्रान्ति की पच्चीसवीं जयन्ती के अवसर पर सभी को मेरी बधाइयां"।

उसने ऐसा कहने की हिम्मत बटोर ली थी क्योंकि वह नशे में था। उसका चेहरा सुर्ख हो रहा था, उसकी आंखों में धूर्तता खेल रही थी और वह फीमाच्का नाम की एक लड़की का नाम ले लेकर वोलोद्या को चिढ़ा रहा था।

जोरा की माता आरमानियाई आर्से अपने सामने की मेज पर जा

उसने सहसा, विशेष रूप से किसी को भी सबोधित न करते हुए
—

"बेशक यह समकालीन नहीं लेकिन मैं पेचारिन* को अच्छी तरह
। सकता हू   यह हमारे समाज की चेतना के अनुकूल भले ही न
पर कभी कभी उनके साथ इसी तरह व्यवहार करना चाहिए।"
चुप हो गया और तब उदास होकर बोला—"स्त्रिया"।

ल्युद्मीला जैसे सभी को दिखाती हुई, अपनी कुर्सी से उठी,
रक' तोल्या के पास गयी और बडे प्यार से उसका कान चूमती हुई
ी—"प्यारे तोल्या, आज तुम बहुत पी गये हो, है न?"

सामान्यत स्थिति बडी निराशाजनक लग रही थी, अत विशेष
ं और तत्परता से, जो येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना की अपनी विशेषता
, उसने घोषणा की कि अब घर जाने का समय हो गया है।

घरेलू कामो और बच्चो के कारण चाची मरूस्या को जल्दी उठने
आदत पड गयी थी। उस दिन भी वह भोर हुए उठी, पैरो मे स्लीपर
े, अपनी पोशाक पहनी और तुरन्त रसोईघर का चूल्हा जला दिया।
ने चूल्हे पर केतली रखी और विचारो में खोयी हुई उस खिडकी तक
ी जिसके बाहर खाली मैदान था। बायी ओर बच्चो का अस्पताल
र वोरोशीलोव स्कूल था और दाहिनी ओर की पहाडी पर जिला सोवियत
इमारत और 'पगले रईस' का मकान। सहसा उसके मुह से एक दबी
सी चीख निकल गयी   नीचे लटकते से आसमान और उसपर भागते
 बादलो के नीचे वोरोशीलोव स्कूल की छत पर, हवा मे एक लाल

---

*लेर्मोन्तोव के 'हमारे युग का नायक' नामक उपन्यास का मुख्य
त्र। इसमें काकेशिया मे १६ वी शताब्दी के रूसी जीवन का एक झाकी
स्तुत की गयी है।

झडा लहरा रहा था। उससे हवा इतने ज़ोरा से टकरा रही थी कि वह एक कापते हुए चतुर्भुज जैसा लग रहा था। कभी वह झुक जाता, कभी तन जाता, कभी परता मे मुड जाता और कभी उसके सिरे खुलत, कभी मुद जाते।

एक इससे भी बडा झडा 'पगले रईस' के मकान पर लहरा रहा था। जमन मनिको और कई नागरिको का एक बडा-सा जत्था, उस मकान से लगी हुई लकडी की एक सीढी के नीचे खडा, झडे को घूर रहा था। दा मनिक सीढी पर चढ गये थे, जिनमें से एक तो छत तक पहुच गया था और दूसरा उससे कुछ ही नीचे था। वे झडे की ओर देख रहे थे। उन्होंन जमीन पर खडे लोगा से कुछ वात की और फिर झडे की ओर ताकने लगे। न जाने क्या काई भी झडे को उतारने के लिए और ऊपर न चढा और झडा पूरी शान मे लहराता रहा। झडा नगर की सब से ऊची जगह पर लहरा रहा था।

चाची मरुस्या ने जोश में अपने स्लीपर फेंके, जूते पहने और वेतरतीब बाला पर बिना रूमाल लपटे दौडती हुई, अपने पडासिया के पास चल गयी।

उसने देखा कि कलेरिया अलेक्साद्रोव्ना अपने भीतरी कपडे पहने खिडकी पर थुकी हुई थडा पर निगाह गडाये हुए थी। उसके पर मूजे हुए थे। उसक चेहरे पर उत्तेजना और उत्साह की झलक थी। उसके धसे हुए गाला पर आसू नजर आ रहे थे।

मरुस्या!" वह बाली, "मरुस्या! यह थाम उन्हान हमारे लिए किया है। हम सावियत जनता के लिए। व हमें याद रखत हैं। हमारे लिए हमें भूल नहा हैं। आह मरुस्या! म इस महान दिवस पर मेरी बधाइया!'

और दाना एक दूसरे के आलिंगन में बध गया।

अध्याय १४

लाल झडे केवल 'पगले रईस' के घर और वारोशीलोव स्कूल पर ही नही, वल्कि और भी कई इमारतो पर लहरा रहे थे, जैसे – प्रशासन-कार्यालय के ऊपर, उस भवन के ऊपर जिसमे कभी जिला सहकारिता-कार्यालय था, खान न० १२, न० ७ – १०, २ बीस और १-बीस खानो के ऊपर और 'पर्वामाइका' तथा नास्नोदोन खनिक-बस्तियो की सभी खानो पर।

झडो का दर्शन करने के लिए नगर के सभी भागो से लोगो की भीडें उमडी चली आ रही थी। इमारतो और खानो के फाटको पर बहुत बडी भीडे जमा हो गयी थी। सिपाही और सशस्त्र जर्मन पुलिस भीड हटाने के लिए भाग दौड कर रहे थे किन्तु झडे उतारने के लिए कोई आगे न बढता था क्योकि हर झडे के नीचे सफेद कपडे का एक टुकडा लगा था जिसपर लिखा था "विस्फोटक सुरग"।

एन० सी० ओ० फेनबाग वारोशीलोव स्कूल की छत पर चढा। उसने देखा कि एक तार झडे से निकलकर एक खिडकी के अधेरे मे चला गया है। और सचमुच उसे अटारी के नीचे एक विस्फोटक सुरग मिली भी थी। और उसे छिपाने के लिए किसी चीज से ढका भी नही गया था।

इन सुरगो के बारे में क्या कारवाई की जाये यह न तो जर्मन सशस्त्र पुलिस का ही कोई कर्मचारी जानता था, न एस० एस० का ही कोई व्यक्ति। हाप्तवाह्टमिस्टर ब्रूकनर ने सफर मैनों के फौजी दल को मगाने के लिए अपनी कार रोवन्की में स्थित जर्मन सशस्त्र पुलिस हेडक्वाटर में भेजी थी, किन्तु वहा भी सफर-मैन मौजूद न थे। अत कार को वोरोशीलोवग्राद जाना पडा।

आखिर अपराह्न में कोई ६ बजे यारोशीलावग्राद से कुछ सफर-मैन आये और स्कूल की अटारी में रखी विस्फोट सुरंग में से फ्यूज हटाया। अन्यत्र कहीं कोई सुरंग न मिली।

अनन्तर शान्ति के सम्मान में क्रास्नादान में फहराये गये लाल झंडा की खबर दोनवास के सभी नगरों और गावों में बिजली की तरह फैल गयी। साथ ही यूक्रेन में प्रादेशिक फेल्डकमाडाटुर मेजर-जनरल क्लर से यह बात भी न छिपी रह सकी कि क्रास्नादान की जर्मन सशस्त्र पुलिस ने अपने कार्यों में कितनी अपमानजनक असावधानी बरती है। फलत मिस्टर ब्रूक्नेर को आज्ञा दी गयी कि वह गुफिया सघटन के लोगों का पता लगाये और किसी भी दशा में उन्हें गिरफ्तार करे। साथ ही उससे यह भी कहा गया कि यदि वह ऐसा न कर सका तो उसके कंधों पर लगे चादी के सितारे वापस ले लिये जायेंगे और उसका दरजा घटा दिया जायेगा।

मिस्टर ब्रूक्नेर को इस सघटन की कोई भी जानकारी न थी, अत उसने वही व्यवहार किया जैसा कि ऐसी स्थिति में कोई भी जर्मन सैनिक या गेस्टापो का एजेंट करता। उसने एक पकड-जाल — सर्गेई लेवाशोव ने एक बार इस व्यवस्था को इसी नाम से पुकारा था — बिछाया और सारे नगर और जिले में दर्जनों निरपराध व्यक्ति गिरफ्तार कर लिये। यद्यपि उसका जाल बडा ही लम्बा-चौडा था, फिर भी वह जिला पार्टी सघटन का, जिसने झडे फहराने के निर्देश निकाले थे, या 'तरुण गार्ड' का एक भी सदस्य न फास सका। जर्मनों के पास यह अनुमान करने का कोई कारण भी न था कि जिस सघटन ने इतना बडा काम किया है उसमें सिर्फ लडके-लडकियां ही थे।

और सचमुच यह अनुमान करना कठिन था क्योंकि जिस रात अंधाधुंध गिरफ्तारियां हुई थीं उस रात खुफिया लडाकुओं का अग्रणी स्त्योपा सफोनोव एक ओर सिर लटकाये, पेंसिल चूसते हुए, अपनी डायरी में यह लिख रहा था

"सेन्का पाच बजे आया। उसने यह कहकर मुझे गोलुब्यात्निकी ज़िले मे अपने मकान मे बुलाया और कहा कि वहा कुछ सुन्दर लडकिया मिल जायेगी। हम लोग वहा गये और काफी देर तक बैठे रहे। दो तीन लडकिया तो अच्छी थी लेकिन बाकी बिलकुल मामूली।"

नवम्बर के उत्तरार्द्ध में 'तरुण गार्ड' को गावो के सपर्क-व्यक्तियो से सूचना मिली कि जर्मन कोई पन्द्रह सौ मवेशी रोस्तोव क्षेत्र से हाककर पीछे के इलाको की ओर लिये जा रहे है। मवेशियो को कामेन्स्क के निकट एक जगह दोनेत्स पार कर दाहिने तट पर पहुचाया जा चुका था और अब उन्हे नदी और उस बडी सडक के बीच से हकाया जा रहा था जो कामेन्स्क गुन्दोरोव्स्काया की ओर जाती है। दोन के उन्नइनी चरवाहो के अलावा जो चौपाया को हाक रहे थे, मवेशियो के झुड के साथ एक प्रशासनीय टुकडी के कोई एक दर्जन जर्मन सैनिक भी थे जो बन्दूको से लैस थे। सैनिक बडी उम्र के थे।

जिस रात यह सूचना मिली थी, उसी रात त्युलेनिन, पेत्रोव और मोश्कोव के दल, बन्दूको और टामी-गनो से लैस होकर उत्तर दोनेत्स मे गिरनेवाली एक छोटी-सी नदी के पास जगली खड्ड में एकत्र हुए। यहा से व उस लकडी के पुल को आसानी से देख सकते थे जिसके ऊपर कच्ची सडक नदी को पार करती थी। स्काउटो ने खबर दी कि रात में सारे मवेशियो का यहा से पाच किलोमीटर की दूरी पर एक जगह अनाज के ढेरा के पास ठहरा दिया गया है और चरवाहा तथा सनिको ने मवेशिया को खिलाने के लिए अनाज के कुछ गट्ठर खोल दिये है।

उस रात पानी के साथ साथ बर्फ भी पड रही थी जो पिघल पिघलकर कीचड का रूप लेती जा रही थी। स्तेपी पार करते समय छोकरा के बूटा पर ढेरा कीचड लग गया था। व एक दूसरे को गर्मी पहुचाने के लिए एक

दूसरे मे सट गये थे और मजाक में यह भी पूछ लेते थे—'इ
स्वास्थ्य-केन्द्र तुम्हे कैसा लग रहा है?"

उषा की लाली इतनी बोझिल, मेघाच्छन्न और तन्द्रिल थी श्रौ
दिन का प्रकाश फैलने में अभी देर था मानो वह सोच में पड गया
कि—"इस बेतुके मौसम मे उठने से क्या लाभ, क्यो न मैं लौट चलू श्रौ
एकाध झपकी और ले लू।" परन्तु इन विचारो पर कर्तव्य की भावन
ने विजय पायी और दानेत्स की भूमि पर प्रभात का प्रकाश फैल गया
वर्षा, बर्फ और कुहरे के कारण तीन सौ कदम के बाद भी कुछ
दीखता था।

तीनो दलो का कमाडर था तुर्केनिच। उसी की आज्ञा से सभी छापेमार
ठढ से ठिठुरते हुए अपने हाथो में अपनी अपनी बन्दूकें सभाले, नदी के
दाहिने तट पर कायदे से जम गये। इसी ओर से जमनो का पुल प
आना था।

इस कारवाई में ओलेग भी भाग ले रहा था। वह पुल से कुछ
हटकर नदी के छोटे-से मोड के पास छिपकर पड रहा। उसके साथ स्तखोविच
भी था जो इसलिए साथ लाया गया था कि यह पता चले कि इस प्रकार
की कारवाइयो में वह कैसा ठहरता है। हेडक्वाटर से निकाले जाने के बाद
भी उसने 'तरुण गार्ड' की कई कारवाइयो में भाग लेकर एक बार फिर
अपनी प्राय पहले जैसी ही धाक जमा दी थी। यह काम कोई कठिन
न था क्योकि 'तरुण गार्ड' के सदस्यो की निगाहो में उसकी धाक या
भी कम नही हुई थी।

मानव प्रकृति की कमजोरी प्राय उन लोगो में भी पायी जाती है
जो बडे सिद्धान्तवादी होते हैं। इस कमजोरी के कारण वे किसी व्यक्ति
के प्रति अपनी धारणा नही बदलना चाहते, जो उनके स्वभाव, उनके
जीवन का अग बन चुकी होती है। उन्हे ऐसा करना बडा बेतुका लगता

है, उन तथ्यो के बावजूद भी, जिनसे यह पता चलता है कि वह व्यक्ति वस्तुत जैसा लगता है वैसा है नही। ऐसे मौको पर लोग यह कह डालते हैं, "वह अपने तौर-तरीके ठीक कर लेगा। आखिर हम सभी म कोई न कोई दोष है ही।"

न केवल 'तरुण गार्ड' के साधारण सदस्य ही, जो स्तखोविच के बारे में कुछ भी न जानते थे, बल्कि व बहुत-से लाग भी जो 'तरुण गार्ड' के हेडक्वाटर के निकट सम्पक मे रहते थे, उसके साथ ऐसा ही व्यवहार करते थे मानो कुछ हुआ ही न हो।

ओलेग और स्तखोविच एक छोटी-सी झाडी मे, जमीन पर गिरी पत्तियो पर लेटे हुए सामने के नग्न, आर्द्र और ऊर्मिल भूखड पर आखे गडाये रहे। वे बरसते हुए मेह और गिरती हुई बर्फ के धधले परदे के उस पार अधिक से अधिक दूरी तक देखने की कोशिश कर ही रहे थे कि सहसा उन्हें सकडा मवेशियो के रंभाने की आवाज सुनाई दी जो बराबर बढती ही गयी। लगता था जैसे शैतान अपना साज बजा रहा है।

"चौपाये प्यासे हैं," ओलेग धीरे-से बोला, "वे उन्ह नदी मे पानी पिलायेंगे। वही मौका हमारे लिए सबसे ठीक रहेगा।"

"उधर देखो, उधर!" जोश में आकर स्तखोविच फुसफुसाया।

उनके सामने, और बायी ओर, धुध मे से लाल लाल सिर निकलते हुए दिखाई दिये—एक, दो, तीन दस, बीस और फिर अनगिनत। सभी के सिरो पर पतले पतले सीग थे जो सीधे ऊपर की ओर निकले थे। सीगो के नुकीले सिरे एक दूसरे की ओर झुके हुए थे। उनके सिर साधारण गायो जैसे थे, किन्तु सीग रहित गायो के भी कानो के बीच, जहा से सीग फूटते है, एक उठान होता है। लेकिन इन जानवरो के सीग चिकने सिरो के ऊपर सीधे निकले दिखाई पड रहे थे। पृथ्वी के निकट धुध घनी होने के कारण इन जानवरो के शरीर अभी भी दिखाई न दे

दूसरे स सट गये थे और मजाक में यह भी पूछ लेते थे–"यह स्वास्थ्य-केन्द्र तुम्हे कैसा लग रहा है?"

उषा की लाली इतनी बोझिल, मेघाच्छन्न और तन्द्रिल थी और दिन का प्रकाश फैलने में अभी देर थी मानो वह सोच में पड गया हो कि– इस बेतुके मौसम में उठने से क्या लाभ, क्या न मै लौट चलू और एकाध झपकी और ले लू।" परन्तु इन विचारो पर कर्त्तव्य की भावना ने विजय पायी और दोनेत्स की भूमि पर प्रभात का प्रकाश फैल गया। वर्षा, बर्फ और कुहर क कारण तीन सौ कदम के बाद भी कुछ न दीखता था।

तीनो दलो का कमाडर था तुर्केनिच। उसी की आज्ञा से सभी छोकरे, ठढ मे ठिठुरते हुए अपने हाथो में अपनी अपनी बन्दूके सभाले, नदी के दाहिने तट पर कायदे मे जम गये। इसी ओर से जमना को पुल पर आना था।

इस कारवाई मे ओलेग भी भाग ले रहा था। वह पुल से कुछ हटकर नदी क छोटे-से मोड के पास छिपकर पड रहा। उसके साथ स्तखाविच भी था जो इसलिए साथ लाया गया था कि यह पता चले कि इस प्रकार की कार्रवाइयो मे वह कसा ठहरता है। हेडक्वाटर से निकाले जाने के बाद भी उसने 'तरुण गार्ड' की कई कारवाइयो मे भाग लेकर एक बार फिर अपनी प्राय पहले जसी ही धाक जमा दी थी। यह काम काई कठिन न था क्याकि 'तरुण गार्ड' के सदस्या की निगाहो में उसकी धाक यो भी कम नही हुई थी।

मानव प्रवृत्ति की कमजोरी प्राय उन लोगा में भी पायी जाती है जा बडे सिद्धान्तवादी होत ह। इस कमजोरी के कारण वे किसी व्यक्ति के प्रति अपनी धारणा नहा बदलना चाहते, जो उनके स्वभाव, उनके जीवन का अग बन चुकी होती है। उन्ह एसा करना बडा बेतुका लगता

है, उन तथ्यों के बावजूद भी, जिनसे यह पता चलता है कि वह व्यक्ति वस्तुत जसा लगता है वसा है नही। ऐसे मौको पर लाग यह कह डालते है, "वह अपने तौर-तरीके ठीक कर लेगा। आखिर हम सभी में कोई न काई दाष है ही।"

न केवल 'तरुण गाड' के साधारण सदस्य ही, जो स्तखोविच के बारे में कुछ भी न जानत थे, बल्कि व बहुत-से लाग भी जो 'तरुण गाड' के हेडक्वाटर के निकट सम्पक में रहते थे, उसके साथ ऐसा ही व्यवहार करते थे मानो कुछ हुआ ही न हो।

ओलेग और स्तखोविच एक छोटी-सी झाडी में, ज़मीन पर गिरी पत्तियो पर लेट हुए सामने के नग्न, आद्र और ऊमिल भूखड पर आखे गडाये रह। वे बरसते हुए मेंह और गिरती हुई बर्फ के धुधले परदे के उस पार अधिक से अधिक दूरी तक देखने की काशिश कर ही रहे थे कि सहसा उन्हे सैकडा मवेशिया के रभाने की आवाज सुनाई दी जो बराबर बढती ही गयी। लगता था जैसे शैतान अपना साज बजा रहा है।

"चौपाये प्यास ह," ओलेग धीरे-से बोला, "वे उन्ह नदी मे पानी पिलायेंगे। वही मौक़ा हमारे लिए सबसे ठीक रहेगा।"

"उधर दखो, उधर!" जोश म आकर स्तखोविच फुसफुसाया।

उनके सामने, और बायी ओर, धुध मे से लाल लाल सिर निकलते हुए दिखाई दिये—एक, दो, तीन दस, बीस और फिर अनगिनत। सभी के सिरा पर पतले पतले सीग थे जो सीधे ऊपर की ओर निकले थे। सीगा के नुकीले सिरे एक दूसरे की ओर झुके हुए थे। उनके सिर साधारण गाया जैसे थे, किन्तु सीग रहित गाया के भी काना के बीच, जहा से सीग फूटते हैं, एक उठान हाता है। लेकिन इन जानवरो के सीग चिकने सिरा के ऊपर सीधे निकले दिखाई पड रहे थे। पृथ्वी के निकट धुध घनी होने के कारण इन जानवरो के शरीर अभी भी दिखाई न द

रहे थे। जब ये जानवर धुंध में से दिखाई दिये तो 'हिमेरा'* जैसे लग रहे थे।

ये सभवत झुड की अगुआई करनेवाले जानवर न थ बल्कि सबसे बायी ओर के झुड के एक अग थे। पीछे से, और उनके उस पार कही बहुत दूर मे, रभाने की तेज आवाज सुनाई पड रही थी और ऐसा लग रहा था मानो पशुओ के शरीर, एक दूसरे से रगड खाते हुए आगे बढ रहे है और उनके हजारो खुरो की पटपट से जमीन हिल रही है।

ठीक इसी समय ओलेग और स्तखोविच का कही अपने पास हा, सड़क की दाहिनी ओर, जमन में बातचीत सुनाई दी। उनकी आवाज से ही यह समझ में आ रहा था कि जमना ने अच्छी नीद मारी है और अब बडे खुश है। वे हसी-खुशी अपने रास्ते पर बढ रहे थे और उनके बूट कीचड में सने हुए थे।

ओलेग और स्तखोविच नीचे झुके झुके उस स्थान पर आ गये जहा दूसरे छोकर लेटे हुए थ।

तुर्केनिच पुल से अधिक से अधिक दस गज की दूरी पर, मिट्टी के एक टीले के नीचे खडा था। टीला नदी के ऊपर लटका-सा दिखाई पड रहा था। उसकी टामी-गन उसकी बायी बाह पर सधी थी, उसका सिर झुलसी किन्तु गीली घास के डठलो के बाहर निकला था और वह सडक पर, काफी दूर तक झाक झाककर देख रहा था। उसके परा पर ज्या मोरकोव बैठा था। हल्के लाल लाल बाल, चेहरे पर आध का भाव और गले में लिपटा गुलूबन्द। वह भी हाथ में टामी-गन लिए पुल पर नजर गडाये था। बाकी लोग ढालवें तट पर एक उतरती हुई सीधी रेखा के रूप

---

*शेर क मुह तथा साप की सी पूछ तथा बकरी क बदन वाला एक कथा कल्पित राक्षस।

में लेटे थे। सबसे आगे सेर्गेई त्युलेनिन और सबसे अन्त में वीक्तार था। दोनो ही के पास टामी-गनें थी।

ओलेग और स्तखोविच, मोश्कोव और सेर्गेई त्युलेनिन के बीच ज़मीन पर पड रहे।

अधेड जमन सनिको की निश्चित-सी बातचीत अब ठीक सिर के ऊपर सुनाई पड रही थी। तुर्केनिच एक घुटने के बल बैठ गया और अपनी टामी-गन का घोडा चढा लिया। मास्कोव लेट गया, उसने अपने नीचे की रूईदार जैकेट सीधी की और अपनी टामी-गन तैयार कर ली।

ओलेग जसे बालसुलभ सीधी, सरल दृष्टि से पुल की ओर ताकता रहा। सहसा पुल पर बूटा की पटापट सुनाई दी और कीचड से सने बडे बडे ओवरकोट पहने, जमन सनिका का एक जत्था पुल पर दिखाई दिया। कुछेक ने लापरवाही से बन्दूकें हाथो में उठा रखी थी, और कुछेक की बन्दूकें कन्धा पर से लटक रही थी।

आगे के कुछ सनिका में लम्बे कद का, और सुनहरे रग की Lands knecht* मूछावाला एक लान्स-कार्पोरल दिखाई दिया। वह जब-तब पीछे घूमकर कुछ कहता जा रहा था, ताकि पीछे के लोग उसकी बात सुन ले। उसने अपने इद गिद निगाह डाली और तट पर लेटे हुए लडको की दिशा में भी अपना सिर घुमाया। उसके साथी सैनिक भी, किसी अपरिचित स्थान से गुज़रनेवाले व्यक्तिया की स्वाभाविक उत्सुकता के साथ पुल के दाहिने, बायें नदी की दिशा मे देख रहे थे। पर चूकि उन्हे इन इलाका में किन्हा छापेमारो से सामना हा जाने की आशा न थी, इसलिए उन्हे काई भी नज़र नहा आया।

ठीक इसी मौके पर तुर्केनिच ने टामी-गन दाग दी और उसकी धाय धाय बराबर कान के परदे फाडती रही। इसके बाद मोश्काव ने भी

---

*मध्य युग में भाडे पर भरती किया जानेवाला सिपाही।

गोलिया बरसायी और बाकी लोगा ने भी अपनी बन्दूका से छिटपुट गोलाबारी की।

ओलेग ने जैसी कल्पना कर रखी थी, वसा कुछ भी न हुआ। सारी घटना इतनी अकस्मात् घटी कि उसे बन्दूक दागने का मौका भी न मिला। पहले एक सेकण्ड तक वह सब कुछ बालसुलभ आश्चय के साथ देखता रहा, फिर उसकी अन्तश्चेतना ने भी उसे गोली बरसाने को प्रेरित किया। परन्तु उस समय तक सब कुछ समाप्त हो चुका था। अब पुल पर एक भी सैनिक नजर न आ रहा था। उनमें से अधिकतर धराशायी हो चुके थे और दो, जा अभी अभी पुल पर दिखे थे व सहसा घूमकर वापिस सडक पर चले गये थे। सेर्गेई और उसके पीछे पीछे माश्कोव और स्तखोविच ने किनारे पर कूदकर उन्ह भी गोलिया का निशाना बना दिया।

तुर्केनिच तथा उसके कुछ और साथी कूदकर पुल पर आ गये। एक जमन सनिक अभी भी तडप रहा था। उन्होने उसका भी काम तमाम किया। फिर वे सभी सनिका को, उनकी टागे पकडकर घसीटते हुए झाडिया में ले आये ताकि कोई उन्ह सडक पर से न देख सके और उनकी बन्दूकें उतार ली। मवेशिया का झुड दूर दूर तक नदी किनार फल गया। सभी मवेशी नदी में अपनी प्यास बुझा रहे थे। कुछ के अगले पैर जल में थे तो कुछ के चारा पैर। कुछ आगे बढकर नदी के दूसरे किनारे पर भी चले गय थे। वे अपने नथुने फलाये हुए जल्दी जल्दी पानी सुडक रहे थे। उनके मुह से सी-सी की ऐसी आवाज निकल रही थी माना सकडा पम्प एकसाथ काम कर रहे हा।

बहुत बडे झुड में सभी तरह के मवशी थे—साधारण वाहक मवेशी, लाल, भूरे, चितकबरे और नीची छाती और मोटे सीगावाले बल जो देखने में एसे लगते थे मानो धातु के ढले हा और अपने मजबूत खुरा पर जड से गये हा। गाए भी सभी नस्ल की थी। दुधार और गाभिन, कुछ

के पटे वढे हुए, थन लाल लाल और फूले हुए क्योकि उन्हे दुहा न गया था। कुछ गाए हल्के रग की थी और देखने में विचित्र-सी। उनके समतल सिर के ऊपर उनके सीग सीधे निकले थे। वे बाकी झुड से कुछ अलग थीं। वहा हालड की काली-सफेद गाए और लाल-सफेद चौपाये भी थे जो अपने उजले धब्बो म इतने शिष्ट लग रहे थे माना टोपिया और एप्रॉन पहने हुए हो।

चौपाये हाकनेवाले बूढे चरवाहे थे जिनकी आदते धीरे धीरे सरकनेवाले अपने ही पशु-समूहा जसी पड गयी थी या जो शायद युद्धकाल की विपत्तिया के आदी हो चुके थे क्याकि उन्होने चार कदम पर होनेवाली गोलाबारी पर काई ध्यान न दिया था और वे पानी पीते हुए मवेशियो के पीछे भीगी जमीन पर एक मडल मे बठे हुए, अपने पाइप सुलगा रहे थे। किन्तु जब उन्होने हथियारबद लागा का अपनी ओर आते देखा तो उठकर खडे हो गये।

छोकरो ने अदब से अपनी अपनी टोपिया उठाकर उनका अभिवादन किया।

"नमस्ते, प्यारे साथियो!" एक बूढे ने उत्तर दिया। गठीला बदन, नाटा कद, बाहर की ओर मुडे हुए पैर। शरीर पर एक सूती कमीज और उसके ऊपर भेड की कच्ची खाल की बिना आस्तीनोवाली जकेट। उसके हाथ मे दूसरो की तरह लम्बे लम्बे चाबुक के बदल एक गाठदार शिकारी कोडा था जो इस बात का सूचक था कि वह इनका मुखिया था। अपने साथियो को भय से मुक्त करने का प्रयास करते हुए वह उनकी ओर मुडा और बाला—

"डर की काई बात नही—ये लोग छापेमार ह।"

"भले आदमियो हमें माफ करना," टोपी सिर पर से उठाते और फिर सिर पर रखते हुए ओलग बोला, "हमने जमन पहरेदारा को ठिकाने

लगा दिया है और हमें अब आप लोगो से यह अनुरोध करना है कि आप
स्तेपी में इन मवशिया को खदेडने में हमारी सहायता कर ताकि वे जमना
के हाथ में न पडें।"

कुछ क्षणा तक मौन छाया रहा। तब "हूह उन्ह खदेड दें।"
एक टुइया-से चुस्त बूढे ने कहा, "वे हमारे अपने मवेशी है, दोन के इलाके
के। हम उन्हे इन विदेशी इलाको में क्या खदेड दें?"

"अच्छी बात है। तो फिर इन्हे वापस ले जाइये," आलेग ने
दात निकालते हुए कहा।

"यह तो बिलकुल ठीक है हम अब ऐसा नही कर सकते," टुइया
बूढे ने सहमत होते हुए कहा।

"अगर हम उन्ह खदेड देंगे तो वे हमारे अपने लोगा के हाथा में
ही पडेंगे।"

"अइ अई अई, कितने ताकतवर मवेशी है ये," सहसा वह टुइया
बूढा बोल उठा। उसकी आवाज मे खुशी और निराशा दोना ही झलक
रही थी। उसने दोना हाथा से अपना सिर थाम लिया। यह एक ऐसा
भाव था जिससे स्पष्ट पता चलता था कि इन बूढा पर क्या बीत रही
है। उन्हे इतने बडे पशु-समूह को अपने वतन से खदेडकर विदेशी भूमि पर,
जमन भूमि पर ले जाने के लिए मजबूर किया गया था। छोकरा को मवेशी
और बूढा दाना ही पर दया आ रही थी, किन्तु वहा एक क्षण भी बरबाद
न किया जा सकता था।

"बाबा, मुझे देना तो अपनी चाबुक," ओलेग बोला और चाबुक
टुइया बूढे के हाथो से लेता हुआ झुड की ओर चल दिया।

गाय-बैल छककर पानी पी चुकने के बाद नदी को पार कर उसके
दूसरे किनारे पर पहुच गये। वहा पहले से ही कुछ चौपाये नगी और
गीली जमीन पर, अपने नथुने फैलाये हुए, सूखी हुई घास की तलाश

में घूमने लगे थे। कुछ जानवर अपनी पिछाडी बौछार की ओर किये हुए निराश से खडे थे या मानो यह सोचते हुए अपने इद गिद देख रहे थे, "हमे हाकनेवाले कहा गायब हो गये। अब हमे करना क्या है ?"

ओलेग पूरे विश्वास के साथ, मानो इस समय वह पूरी तरह आश्वस्त हो, चुपचाप मवेशियो के बीच घुसा और ऐसा करते समय कभी किसी जानवर को केहुनियाता रहा, किसी की पीठ या गदन थपथपाता रहा, या फिर किसी का कोडे से सटकारता रहा। उसने नदी पार की ओर झुड के बीचोबीच चला आया। भेड की खाल की बिना आस्तीनवाली जकेट पहने बूढा भी अपना शिकारी कोडा लिये हुए उसकी मदद को आ गया। उसके पीछे पीछे दूसरे बढे और छोकरे भी चले आये।

आखिर कोडे सटकारते और चीखते चिल्लाते हुए उन्होने सारे झुड को दो हिस्सो में बाट दिया किन्तु इस काम में उन्हे बहुत समय लग गया।

"नही, यह ठीक नही," भेड की खाल की जैकेट पहने बूढे ने कहा, "तुम अपनी टामी-गने इन पर चला दो। हमारे लिए ता ये पहले से ही मर चुके है।"

"अई अई अई!" ओलेग ने इस तरह आखें मिचकायी मानो उसे बडी वेदना हा रही हो और उसी क्षण उसके चेहरे पर स्वत कठोरता भलक उठी। उसने कधे पर से टामी-गन उतारी और झुड पर गोली चला दी।

कई पशु जमीन पर गिर पडे, कई घायल हाकर, बुरी तरह दहाडत हुए स्तेपी मे भाग गये। बारूद और खून की महक से लगभग आधे जानवर पखे के आकार मे स्तेपी में फैल गय और वहा का वातावरण उनके खुरा की पटापट से गूज उठा। सेर्गेई और जेन्या मास्कोव ने झुड के दूसरे आधे भाग पर भी एक एक राउड गोली चलायी और व जानवर भी भाग खडे हुए।

छाकर उनके पीछे दौडे और जब कभी कोई दस-पन्द्रह पशु एक साथ एकत्र होते तो छोकरे उनपर गोली चला देते। सारी स्तेपी में बन्दूक की धाय धाय, मवेशियो की दहाड, उनके खुरो की पटापट, कोडो की सटाक और लोगो की चीख-पुकार गूज उठी। कही किसी दौडते बल को गोली लगती और वह अगले पर सिकोडता हुआ मुह के बल धम्म से गिर पडता। कही घायल गायें ददनाक आवाज म कहरा रही थी। वे अपने खूबसूरत सिर उठाती और असहायो की तरह गिरा लेती। सारे क्षेत्र पर पशुओ की लाशें बिछ गयी। ये लाशें काली मिट्टी की पृष्ठभूमि में धुध में से लाल लाल-सी दिखाई पड रही थी।

लडके एक दूसरे से अलग अलग होकर जब अकेले अपने अपने रास्ते पर चल पडे तो बहुत देर बाद भी उनकी मुलाकात स्तेपी में इधर-उधर मडराते हुए चौपायो स होती रही।

कुछ समय बाद स्तेपी के आकाश में धुए का बादल उठता हुआ दिखाई दिया। तुर्केनिच के आदेश का पालन करते हुए सेर्गेई त्युलेनिन ने लकडी के पुल में आग लगा दी थी। उसके पहले यह पुल जसे किसी चमत्कारवश नष्ट हाने स बच गया था।

ओलेग और तुर्केनिच साथ साथ गये थे।

"तुमने उन गायो पर ध्यान दिया जिनके सीग उनके सिर में से सीधे निकले हुए थे तथा जिनके सिरे ऊपर जाकर जैसे एक दूसरे का स्पश कर रहे थे?" ओलेग ने उत्तेजित होकर पूछा। "वे साल्स्क स्तेपी के पूर्वी भागो की ह और हो सकता है, आस्त्रखान की हो। ये हिदुस्तानी मवेशी ह। व हमारे यहा 'स्वण दल'* के जमाने से आये है।"

---

*तेरहवी शताब्दी के पूर्वार्द्ध में पूर्वी यूरोप के अधिकृत क्षेत्रो पर मगोलो द्वारा स्थापित राज्य।

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ?" अविश्वास के साथ तुर्केनिच ने पूछा।

"जब मैं बच्चा था तो मेरे सौतेले पिता व्यापार करने बाहर दौरे पर जाया करते थे। वह मुझे हमेशा अपने साथ ले जाया करते। उन्हें इन बातों के बारे में बड़ा अच्छा ज्ञान था।"

"आज स्तखोविच ने बड़ी हिम्मत दिखायी है न?" तुर्केनिच बोला।

"हां आं " ओलेग ने अनिश्चय के साथ उत्तर दिया। "हमारी यात्राएं यानी मेरी और मेरे पिता जी की – बड़ी दिलचस्प हुआ करती थीं। ज़रा सोचो – द्नेप्र, धूप और स्तेपी में मवेशियों के बड़े बड़े झुंड   उस समय कौन सोच सकता था कि मैं   हम   " ओलेग के माथे पर फिर कुछ सिलवटें पड़ गयीं मानो उसे बड़ा दुख हो रहा हो। उसने हाथ झटकाकर अपने विचारों को वहीं छोड़ दिया और घर पहुंचने तक एक शब्द भी न बोला।

अध्याय १५

चूंकि जर्मनों ने धोखा देकर नगरवासियों के पहले जत्थे को जर्मनी भेज दिया था, अतः अब सभी इस ख़तरे से होशियार हो गये थे और श्रम-केन्द्र में अपना नाम दर्ज कराने से कतराने लगे थे। फलतः अब जर्मन, लोगों को सड़कों पर अथवा उनके घरों में पकड़ लेते, ठीक उसी तरह जिस तरह गुलामी के दिनों में हबशियों को जंगलों में पकड़ा जाता था।

वोरोशीलोवग्राद फ़ेल्दकमांडाटुर के विभाग न० ७ द्वारा एक छोटा-सा अख़बार निकलता था जिसका नाम था 'नोवे जीता'। उसके प्रत्येक अंक में जर्मनी भेजे गये बच्चों के तथाकथित पत्र अपने माता पिता के नाम छपते थे। उनमें लिखा रहता था कि वे जर्मनी में बड़ी आज़ादी और सुख से रह रहे हैं और उन्हें ऊंची तनख़ाह मिल रही है।

कभी कभी ऐसे युवक-युवतियों के पत्र भी क्रास्नादोन में पहुंच

जाया करते जिनमे से कुछ पूर्वी प्रशिया में, खेतो में मजदूरा के रूप में अथवा घरेलू कामकाज सबधी निम्न स्तर की नौकरिया कर रहे थे। पत्रा मे सेसर विभाग का कोई ठप्पा न होता और यद्यपि उनमे अपने रहन सहन की बाह्य परिस्थितियो की ही चर्चा रहती, फिर भी पढनेवाला ऐसी बहुत-सी बाता का अनुमान लगा लेता था जो पत्रा में अनकही छोड दी जाती था। बहुत-स माता-पिताग्रा को तो एक भी पत्र नसीब न होता था।

डाकखान में काम करनेवाली एक औरत ने ऊल्या का बताया कि सशस्त्र पुलिस कायालय का एक रूसी जाननेवाला जमन जमनी से आनेवाले सभी पत्रा की डाकखाने में जाच करता है। वह एक के बाद एक पत्र लेता जाता है उन्ह अपनी मेज की दराज में बन्द करता जाता है और जब उनकी सख्या बहुत बढ जाती है तो उन्ह जला देता है।

'तरुण गाड' के हेडक्वाटर के निर्देशो पर चलते हुए, ऊल्या ग्रोमोवा ने वह सब काय अपने कधा पर ले लिया था, जो नवयुवको को भरती करने और उन्ह जमना भेजने के विरुद्ध किया जाता था। वह परचे लिख लिखकर बाटती थी, जिन युवका को जमनी भेजे जान का खतरा होता था, उनके लिए नगर मे काम का इन्तजाम करती थी, या कभी कभी बीमारा के बहाने उन्हे नताल्या अलेक्सेयेव्ना की सहायता से मुक्त करा देती थी। कभी कभी वह उन लोगा का फार्मो में पनाह भी दिलाती थी जो श्रम केन्द्र में अपने नाम दज कराने के बाद भाग आले थे।

ऊल्या यह सारा काम करती थी, केवल इसलिए नही कि यह काम उसे सौंपा गया था बल्कि इसलिए भी कि उसकी आत्मा उसे प्रेरित करती थी—सम्भवत वह वाल्या का दुर्भाग्य से बचा न सकने के लिए अपने को ही अपराधी समझती थी। अपराध की यह चेतना ऊल्या का और भी कचोटती थी क्याकि न ता उसको वाल्या की कोई खबर मिली थी, न वाल्या की मा का ही।

एक दिन, दिसम्बर के शुरु में, डाकखाने की औरत की सहायता से, पर्वोमाइस्की वस्ती के छोकरे रात को सेसर की दराज में से सारे पत्र चुरा ले गये। अब पत्रावाला बोरा ऊल्या के सामने पडा था।

सर्दी बढते ही वह अपने घर मे आकर अपने बाकी परिवार के साथ रहने लगी थी। किन्तु 'तरुण गाड' के अधिकाश सदस्यो की भाति, उसने अपनी सदस्यता की वात भी अपने सवधियो से गुप्त रखी। उन दिना, जब ऊल्या के मा-वाप उसकी सुरक्षा के वारे में चिन्तित हो उठे थे और उसके लिए नौकरी तलाश करने लगे थे, ऊल्या को वडी परेशानी उठानी पडी थी। उसकी वीमार माता अपनी काली भयग्रस्त आखो से अपनी वेटी को निहारती और परेशान होकर रोने लगती। और इधर कई वर्षों में पहली वार ही वूढा मत्वेई मक्सीमोविच अपनी वेटी पर वुरी तरह वरस पडा था। उसका चेहरा और उसकी गजी खापडी तक वगनी हो उठी थी। उसके हड्डिया के वडे ढाचे और भयानक मुट्ठियो के वावजूद, उसकी गजी खोपडी के चारो ओर उगनेवाले छल्लेदार छोटे छोटे वालो में और अपनी वेटी को प्रभावित न कर सकने की असमथता मे ज़रूर कोई दयनीय वात थी।

ऊल्या ने अपने माता पिता से साफ साफ कह दिया था कि यदि वे उसे यह कहकर फटकारेंगे कि वह उनके लिए एक वोझ है तो वह घर से निकल जायेगी। ऊल्या उनकी दुलारी वेटी थी, अत वे सचमुच वडे परेशान हो उठे थे। यह वात पहली वार स्पष्ट लग रही थी कि मत्वेई मक्सीमोविच का अपनी वेटी पर जैसे कोई अधिकार न रहा और उसकी पत्नी इतनी वीमार रहती थी कि उस अधिकार का प्रयोग करना उसकी शक्ति के वाहर था।

चूकि ऊल्या अपने कार्यों को छिपाती थी, अत वह घर का अपना काम-काज पूरा कर लेने का वरावर ध्यान रखती, और जब कभी वह

काफी देर तक बाहर रहती तो घर आकर यही रोना रोया करती कि अब जिन्दगी इतनी अपमानजनक हो गयी है कि उस मजबूर होकर अपनी सहेलियो के साथ उठ-बैठकर मन बहलाना पडता है। प्राय उसकी मा काफी देर तक और बडे दुख के साथ उसकी ओर देखा करती, मानो उसकी आत्मा में उतरने का प्रयास कर रही हो। उसका पिता तो जस ऊल्या से शरमाता और जब ऊल्या मौजूद रहती तो जसे पिता की जबान ही बद हो जाती।

अनातोली क घर की स्थिति भिन्न थी। उसका पिता मोर्चे पर चला गया था और इसी लिए अनातोली परिवार का कर्ता जसा बन गया था। उसकी मा ताईस्या प्रोकाफ्येव्ना और उसकी छोटी बहन उसकी योग्यता पर मुग्ध थी इसलिए घर में उसकी चलती थी। इस समय ऊल्या अपने सामने पत्रो का बोरा लिये बैठी थी, अपने घर में नहो बल्कि अनातोली के घर म। अनातोली दिन भर के लिए सुखोदोल गया था, वहा उसे लील्या इवानीखिना से मिलना था। अपनी पतली पतली उगलियो, से वह ससर द्वारा खोले गये लिफाफो में से पत्र निकालती, उनपर एक सरसरी निगाह डालती और मेज पर रख देती।

उसकी आखे तुरन्त नाम उपनाम और सामान्य अभिवादन के साथ साथ माता पिता अथवा बहनो क लिए लिखी गयी खबरो पर पड जाती। पत्र साधारण थे फिर भी दिल का चैन छू लते थे। पत्रो की सख्या इतनी अधिक थी कि उन्हे सरसरी नजर से देखने पर भी बहुत-सा समय लग गया। किन्तु इन पत्रो में वाल्या का कोई पत्र न था

ऊल्या अपनी कुर्सी पर झुकी, हाथ नीचे डाले और चेहरे पर असहायो जैसा भाव लाती हुई, शून्य की ओर ताकने लगी। घर में सवत्र शाति थी। ताईस्या प्रोकाफ्येव्ना और नन्ही लडकी सोने जा चुकी थी। दिये की टिमटिमाती लौ, ऊल्या की सासो के कारण कभी झिलमिलाकर नीचे

आ जाती तो कभी ऊपर उठती। उसके सिर के ऊपर दीवालघडी टिकटिक करती हुई सकडा की गिनती कर रही थी। लगता जसे सुई में जग लगा हो। ऊल्या की तरह पोपोव परिवार का मकान भी सतिहरा की बस्ती में एकाकी-सा था। फलत बचपन से ही ऊल्या में यह अनुभूति घर कर गयी थी कि उसकी जिन्दगी, जसे दूसरा की जिन्दगी से अलग, कटी कटी, बीत रही है। यह अनुभति शरद और जाडा की शामा में विशेष रूप से प्रबल हो उठती थी। पोपोव परिवार का मकान पुख्ता बना था। इस समय बाहर सनसनाती हवा में सर्दी थी पर उस की आवाज़ खिडकिया के बद पल्ला से होकर बहुत हल्की-सी प्रवेश कर पाती थी।

ऊल्या को लग रहा था जसे इस रहस्यपूण और अरुचिकर ध्वनियावाली दुनिया मे वह बिलकुल अकेली है और उसका साथ देने के लिए अकेला एक ही झिलमिलाता हुआ दिया है जिसकी लौ उठ रही है और गिर रही है

आखिर यह दुनिया इस तरह बनी कसे कि लाग अपने दिल पूणतया दूसरा को नही द पाते। बचपन से ही उसकी और वाल्या की अनुभूतिया में साम्य रहा है, फिर भी उसने सब कुछ भूल भुलाकर वाल्या का बचाने का प्रयास क्या नही किया? वह क्या उस समय अपने परिवार की दनिक चिन्ताओ स, उन सब चीज़ा से जिनकी वह अपने जीवन मे अभ्यस्त हो गयी थी, और अपने माता पिता तथा सगी-साथिया से चिपटी रही? वह उसके पास जाती, उसके आसू पाछती और उसे छुडाने का प्रयास करती। किन्तु उसकी अन्तश्चेतना उसे उत्तर देती—"नही, यह सभव न होता, क्योकि तुमने वाल्या की अपेक्षा, किसी और बडे लक्ष्य के लिए अपनी जिन्दगी लगा दी है। तुमने मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए प्राणा की बाज़ी लगायी है।" पर ऊल्या मन ही मन कहने लगी—"नही, बहाने मत

बनाओ। समय रहते तुमने कुछ नहीं किया क्योंकि तुमने वैसा करने की इच्छा ही अपने दिल में न आने दी। तुम वैसी ही बनी रही, जैसे बाकी दूसरे हैं।"

"पर जब मैं क्या नहीं कर सकती?" ऊल्या ने सोचा। और वह बच्चों के से सपनों में खो गयी—वह ऐसे ऐसे हिम्मती लोगों को जुटायेगी जो उसके इशारे पर चलेंगे। वे अपने रास्ते की सारी बाधाएं पार करेंगे, जर्मन कमाण्डरों को बेवकूफ बनायेंगे और वहां, उस भयानक देश में, वह वाल्या से मिलकर कहेगी—"अपनी शक्ति भर मुझसे जो कुछ हो सकता था वह मैंने किया। मैंने तुम्हें बचाने के लिए कुछ भी उठा नहीं रखा और अब तुम मुक्त हो।" काश यह सब संभव हुआ होता! पर यह संभव न था। ऐसे लोग थे भी कहां! वह खुद बहुत कमजोर थी। यह काम कोई मित्र ही कर सकता था—कोई लड़का, यदि वाल्या का कोई ऐसा मित्र होता तो!

पर क्या उसका अर्थात् खुद ऊल्या का वैसा कोई मित्र है? यदि वह स्वयं वाल्या की जगह होती तो उसके लिए यह सब कौन करता? नहीं, उसका ऐसा कोई मित्र नहीं। शायद दुनिया में ऐसा कोई मित्र नहीं होता।

तो क्या दुनिया में ऐसा भी कोई है जिसे वह प्यार करेगी? वह होगा कैसा? वह उसकी कल्पना तो न कर सकी, किन्तु वह रहता उसी के दिल में था—लम्बा, गठीला, हर दृष्टि से सुन्दर, बहादुर उसकी आंखों से दया छलकती थी। उसके दिल में प्रेम करने की उत्कट आकांक्षा उठी। आंखें बन्द कर लो सब कुछ भूल जाओ और पूरे मन से ... ऊल्या की काली काली आंखों में दिये की झिलमिलाती हुई सुनहरी लौ प्रतिबिम्बित हो रही थी ... जो कभी उसकी सुखद अनुभूतियों का आश्रय पाकर चमक उठती, तो कभी उसके दुख से बोझिल होकर धूमिल पड़ जाती ...

सहसा ऊल्या ने एक हल्की-सी कराह सुनी, माना कोई धीरे-से पुकार रहा हो। वह सिहर उठी और उसके सुन्दर नथुने धीरे धीरे कापने लगे   किन्तु यह तो ग्रनातोली की ही बहन थी जो नीद में कराह रही थी। ऊल्या के सामने मेज पर पत्रा का ढेर पड़ा था। लौ से धुम्रा उठ रहा था। खिडकी के बाहर से हवा की हल्की हल्की सरसराहट सुनाई पड रही थी और घडी का लटकन बराबर सेकडा की गिनती कर रहा था   टिक, टिक, टिक

ऊल्या के गाला पर गलाबी छा गयी। वह इस लज्जा का कारण स्वय ही न जानती थी -- क्या इसका कारण यह था कि अपने सपने सजोकर उसने अपने कत्तव्या की उपेक्षा की थी? या फिर उसे सपना में कुछ और बात कहनी थी, कुछ ऐसी बाते, जिनपर उसे लज्जा आ सकती थी? उसे अपने ऊपर क्रोध आया और वह पत्रा की जाच बडी सावधानी से करने लगी। वह उन पत्रा को ढूढ रही थी जिनसे काम निकल सकता था।

"काश तुमने उन्हे पढ़ा होता! रोयें खडे हो जाते ह!" ओलेग और तुर्केनिच का सामना हाने पर ऊल्या बाली, "नताल्या अलेक्सेयेव्ना का कहना है कि जमना ने कुल मिलाकर ८०० लागो को जमनी भेजा है। और अय १८०० व्यक्तियो की एक गुप्त सूची तैयार की गयी है जिसमे पते वगैरह लिखे हुए है। निश्चय ही बडे पैमाने पर कुछ किया जाना चाहिए अर्थात जब वे हमारे लोगो को लिये जा रहे हा तो उनपर हमला करना चाहिए, या उस बदमाश श्रिक का ही मौत के घाट उतार देना चाहिए।"

"हम उसे मार तो सकते हैं, पर वे उसकी जगह फिर किसी न किसी को भज देंगे," ओलेग बाला।

"हमें उस सूची को नष्ट कर डालना चाहिए। यह काम कसे किया जाये, यह मैं जानती हू -- हम पूरे श्रम केन्द्र को ही जलाकर राख कर

दें," सहसा वह बोल उठी। उसके चेहरे पर प्रतिवाद का भाव साकार हो उठा था।

यह काम 'तरुण गार्ड' के दूसरे सभी कार्यों की अपेक्षा सबसे अकल्पनीय था। इसे वीत्या लुक्याचेंको की सहायता से त्युलेनिन और ल्यूबा ने पूरा किया था।

हवा में नमी बहुत पहले ही आ चुकी थी। रात में पाला पड़ता और लारियों द्वारा छितरायी मिट्टी के सम्न लादे और गहरी लीक पूरी तरह जम जाती दोपहर को जब धूप में गरमी आती तो वे कुछ कुछ पिघलने लगते थे।

मित्रों के मिलने का स्थान लुक्याचेंको का साग-सब्जी वाला बगीचा निश्चित हुआ था। वहां से वे रेलवे लाइन के किनारे किनारे और तब सीधे—सड़क को छोड़कर, पहाड़ी के उस पार चले आये। सेर्गेई और वीत्या के पास पट्रोल का एक टीन और विस्फोटक द्रव्य से भरी हुई कुछ बोतलें थीं। वे दोनों हथियारों से लैस थे। ल्यूबा के पास सिर्फ एक बोतल शहद और 'नोवे जीता' ('नया जीवन') नामक समाचारपत्र का एक अंक था।

रात्रि इतनी नीरव थी कि सुई के गिरने की आवाज़ तक सुनाई पड़ सकती थी। अगर पैर ज़ोर से पड़ा या असावधानी के कारण हाथ हिला या पेट्रोल का टीन झनझनाया तो उनकी खैर न थी। अंधेरा इतना गहन था कि वहां के स्थानों की अच्छी जानकारी होने के बावजूद, उन्हें कभी कभी यह पता न चल पाता कि वे हैं कहां। वे एक कदम चलते और कुछ सुनने लगते फिर एक कदम बढ़ते और फिर सुनने लगते।

उन्हें अपनी मंजिल तक पहुंचने में बड़ा समय लग गया। लग रहा था उनकी मंजिल अनन्त दूरी पर है। हां, यह जरूर आश्चर्य की बात है कि जब उन्होंने श्रम-केन्द्र के बाहर सन्तरी के पैरों की आहट सुनी तो

उनका डर कम हो गया। रात में यह आहट साफ साफ सुनाई पडती और जब संतरी कुछ क्षणा के लिए कुछ सुनने या ड्याढ़ी पर आराम करने के लिए रुक जाता तो फिर सहसा बन्द हो जाती।

इमारत के सामने का लम्बा भाग और उसकी ड्योढी कृषि कमाडाटुर के सामने पडती थी। वे इमारत का तो नही देख सकते थे, हा संतरी के परो की आहट से जरूर बता सकते थे कि वे इमारत की बायी ओर पहुच गये हैं। व उसके किनारे किनारे होकर चलने लगे ताकि उसकी पिछली लम्बी दीवाल से होकर इमारत तक पहुच सके। वीत्या लुबयाचेको इमारत से काई बीस गज की दूरी पर रह गया ताकि शोर और भी कम हा। ल्यूवा और सेर्गेई धीरे धीरे खिडकिया तक बढ आये। ल्यूवा ने एक खिडकी के शीशे के निचले पल्ले पर शहद लगाया और उसपर अखबार का कागज चिपका दिया। सेर्गेई पल्ला दबाकर खडा हुआ, शीशा धीरे-से चिटका किन्तु गिरा नहीं। इसके बाद उसने पूरा शीशा हटा दिया। इस काम के लिए बडे धैर्य की जरूरत थी। इसी प्रकार उन्हाने उसी खिडकी का दूसरा शीशा भी तोड डाला।

तब वे सुस्ताने लगे। संतरी को शायद ठड लग रही थी। वह ड्योढ़ी पर पैर पटपटा रहा था। उन्हे इन्तजार करना था क्याकि वे डर रहे थे कि डयोढ़ी से कही वह इमारत के भीतर से आती हुई ल्यूवा के परा की आहट न सुन ले। आखिर संतरी फिर टहलने लगा किन्तु इतना अरसा भी उन्हे युग की तरह लम्बा लगा। तब सेर्गेई तनिक झुका और अपने दोना हाथ कसकर जकड लिये ल्यूवा ने खिडकी का चौखटा पकडा, एक पर सेर्गेई के हाथो पर रखा और दूसरा पर फेककर खिडकी के दासे पर। वह भीतरी दीवाल से सधी और पैर फैलाये दासे पर खडी रही। उसे बराबर यही लग रहा था जैसे चौखटा उसकी जाघें काट रहा है। किन्तु इन छोटी छाटी बाता पर ध्यान देन का समय न था। आखिर

उसने पैर नीचे किया और बड़ी सावधानी से फर्श तक पहुंच जाने का प्रयत्न करने लगी। आखिर वह इमारत के भीतर पहुंच ही गयी।

सेर्गेई ने उसे पेट्रोल का टीन थमा दिया।

वह बहुत देर तक अन्दर रही। सेर्गेई को भय लग रहा था कि कहीं वह अंधेरे में किसी कुर्सी या मेज़ से न टकरा जाये।

अन्तत जब वह फिर खिड़की पर दिखाई दी तो उसके बदन से पेट्रोल की बू आ रही थी। वह सेर्गेई को देखकर मुस्करायी, उसने अपनी एक टांग खिड़की के दासे के बाहर की, और एक हाथ और सिर बाहर निकाला। सेर्गेई ने उसे बांहों के नीचे से पकड़कर उसे सहारा दिया और ल्यूबा बाहर निकल आयी।

इसके बाद अकेला सेर्गेई खिड़की के पास खड़ा रहा। उसके नथुनों मे पेट्रोल की तेज़ गन्ध भरती जा रही थी। वह वहां तब तक खड़ा रहा जब तक उसे यह यकीन न हो गया कि ल्यूबा और वीत्या इतनी दूर निकल गये हैं कि अब उनपर कोई आंच नहीं आ सकती। तब उसने अपनी कमीज़ की भीतरी जेब से विस्फोटक द्रव्य वाली बोतल निकाली और खिड़की के भीतर ज़ोर से फेंक दी। आग का शोला इतने ज़ोर से भभककर उठा कि क्षण भर के लिए उसकी आंखें चौंधिया गयीं। उसने बाकी बोतलें नहीं फेंकीं किन्तु भागकर पहाड़ी से होकर रेलवे लाइन की ओर दौड़ने लगा।

संतरी चिल्लाया और उसने उसके पीछे गोली दाग दी। सेर्गेई ने अपने सिर से बहुत ऊपर सनसनाती हुई गोली की आवाज़ सुनी। तब उस पूरे स्थान में एक विचित्र पीला-सा प्रकाश कौंधा और तुरत अंधेरा छा गया। तब सहसा असंख्य लपटें एक साथ उठीं और वहां दिन का सा प्रकाश हो उठा।

उस रात ऊल्या बिना कपडे उतारे ही सोने चली गयी। वह सभल सभलकर पैर बढाते हुए खिडकी तक जाती ताकि कोई जग न जाय और काले परदे का कोना उठाकर देखने लगती। लेकिन बाहर घुप अँधेरा था। उसे सेर्गेई और ल्यूबा की चिन्ता लगी थी। कभी कभी उसे लगता कि यह सब योजना उसने व्यर्थ ही बनायी। धीरे धीरे रात कटती रही। वह बेहद थक गयी थी। उसकी आख लग गयी।

सहसा उसकी आख खुली। वह एक कुर्सी स लडखडायी और दरवाजे तक दौड गयी। उसकी मा जगी और उसने उनींदी तथा डरी हुई अवाज में कुछ पूछा, किन्तु ऊल्या बिना उत्तर दिये हुए, अपने महीन कपडा मे ही बाहर अहाते मे निकल आयी।

पहाडी के उस पार नगर मे लाल लाल प्रकाश फल रहा था। काफी दूरी पर गोलिया दगने की आवाज भी सुनाई पड रही थी। ऊल्या को लगा मानो उसे शोर-गुल भी सुनाई पडा। लपटो के प्रकाश में, नगर के इस दूरस्थ भाग के मकानो की छते और सायबान भी प्रकाशित हो उठे थे।

लाल लाल प्रकाश देखकर भी ऊल्या को वैसा अनुभव न हुआ जिसकी उसे आशा थी। आकाश की चमक, इमारतो पर पडनेवाली रोशनी, चीख-पुकार, गोलियो की धाय धाय, और उसकी मा की डरी हुई आवाज ने ऊल्या के दिल में विपत्ति की एक अस्पष्ट-सी अनुभूति पदा कर दी थी। उसे ल्यूबा और सेर्गेई के खतर में पड जाने की आशका हो रही थी। खास तौर स वह यह सोच रही थी कि इस समय, जब उनके सगठन का सुराग लगाने के सभी सभव प्रयत्न हो रहे थे, इस घटना का सारे सगठन पर न जाने कैसा प्रभाव पडे। उसे इस बात का भी भय लगा हुआ था कि मजबूरी में किये जानवाले इन भयानक और विनाशकारी कार्यों के बीच कहीं उस ऐसी किसी चीज स हाथ न

धोना पडे जो उच्च कोटि की है, श्रेष्ठ है, दुनिया मे अभी तक ज़िदगी की सासे ले रही है और जिसे वह दिल की धडकन मे महसूस कर रही है। ऊल्या को यह अनुभूति उसके जीवन में पहली बार हुई थी।

अध्याय १६

२२ नवम्बर १६४२ को वाराशीलोवग्राद प्रदेश के सभी ज़िला मे दजनो गुप्त रेडियो-सेटो पर सोवियत सूचना केन्द्र का 'ताजा समाचार' सुनने का मिला कि सोवियत सेनाओ ने उन दो रेलवे लाइना को काट दिया है जिनसे स्तालिनग्राद के जमन मोर्चे को सप्लाई मिलती थी और ढेरो कैदियो को गिरफ्तार कर लिया है। तभी वे तमाम खुफिया कारवाइया, जिन्हे इवान फ्योदोराविच प्रोत्सेको धीरे धीरे सघटित और रात दिन निर्देशित कर रहा था, सहसा सतह पर आ गयी और उन्होने 'नयी व्यवस्था' के खिलाफ कुछ कुछ जन आदोलन का रूप लेना शुरू किया।

प्रतिदिन यही ताजे समाचार मिलते थे कि स्तालिनग्राद मे सोवियत सेनाओ को बराबर सफलताए मिलती जा रही है। इन समाचारो ने प्रत्येक सोवियत नागरिक के मन मे असीम उत्साह भर दिया था। जहा पहले उनके हृदय मे एक धूमिल-सी आशा और इन्तज़ार बना रहता था, अब वहा यह विश्वास पैदा हो गया था कि "वे आ रहे है!"

३० नवम्बर को सुबह पोलाना गेओर्गियेव्ना ने हमेशा की भाति ल्यूतिकोव के घर दूध पहुचाया। फिलाप्प पेत्रोविच ने केन्द्रीय कारखानो मे पहले ही दिन से दनिक काय का जो ढर्रा अपना लिया था उसमें उसने कोई हेर-फेर न किया था। उस दिन सोमवार था। पोलिना गेओर्गियेव्ना ने देखा कि वह अपना वही पुराना सूट पहने है जो धातु

और चिकनाई के बराबर सम्पक में आने के कारण चमचमाता रहता था। फ़िलीप्प पत्राविच काम पर जानेवाला था। यह सूट काम के घटा में उसने हमेशा ही पहना था, नगर पर जमनो का अधिकार होने के पहले भी। जब वह कारखाने के दफ्तर में आता तो, हमेशा की भाति अपने सूट के ऊपर नीली 'दुगरी' पहने रहता। फ़र्क़ यही था कि पहले ज़माने में ये 'दुगरी' दफ्तर की ही एक अलमारी मे रहती थी पर इन दिना वह उसे अपने साथ बडल मे बाधकर, बग़ल में दबाये घर लाया करता था। इस समय 'दुगरी' रसोईघर मे एक स्टूल पर पडी थी और ल्यूतिकोव नाश्ता कर रहा था।

उसने पोलीना गेओर्गियेव्ना का चेहरा देखकर ही समझ लिया था कि वह उसके लिए काई अच्छा समाचार लायी है। दोना साथ साथ ल्यूतिकोव के कमरे मे आये और पेलगेया इल्यीनिच्ना के साथ थाडा बहुत हसी-मज़ाक भी करत रहे, जो सचमुच ज़रूरी नहीं था, क्याकि इन सभी महीना में, जिनमें वह पेलगेया इल्यीनिच्ना के मकान में रहा था, पेलगेया इल्यीनिच्ना ने सचमुच कभी यह सकेत भी नहीं किया था कि वह किसी बात की ओर ध्यान दती रही है।

"यह बात मैंने खास तौर से तुम्हारे लिए लिखी है यह कल रात को ही प्रसारित हुई है," उसने बडी उत्तेजना के साथ कहा और अपनी चोली के नीचे स काग़ज़ का एक पुर्ज़ा निकालकर उसे थमा दिया, जिसपर बारीक लिखावट मे कुछ लिखा हुआ था।

पिछले दिन सुबह को वह एक सोवियत सूचना केन्द्र का 'ताज़ा समाचार' लायी थी। उसमें लिखा था कि बीच के मोर्चे के वेलीकिये लूकी और र्ज़ेव इलाका पर सोवियत सेनाओ ने बडे पैमाने पर आक्रमण किया है। इस समय खबर यह थी कि सोवियत सेनाए दोन के पूर्वी तट पर पहुच गयी ह।

कुछ क्षणो तक तो ल्यूतिकाव वडे ध्यान से कागज़ के टुकडे की ओर घूरता रहा, फिर अपनी कठोर आखे ऊपर उठायी और बोला–

"Kaputt हिटलर Kaputt "*

उसने उन्ही शब्दो का प्रयोग किया था, जिनका प्रयोग आत्मसमर्पण करते समय जर्मन सैनिक करते थे। यह उन लोगो का कहना था जिन्हो ने जर्मन सैनिको का आत्मसमर्पण करते देखा था। किन्तु ये शब्द उसने वडी गभीरता से कहे और पोलीना गेओर्गियेव्ना को छाती से लगा लिया। पोलीना गेओर्गियेव्ना की आखो मे भी खुशी के आसू छलक आये थे।

"क्या हम इसकी और प्रतिया वना डाले?" उसने पूछा।

पिछले कुछ समय से उन्होने परचे निकालना वन्द कर दिया था। उसके वजाय सोवियत सूचना केन्द्र की छपी हुई नोटिसे वाटने लगे थे। सोवियत विमान इन नोटिसो का उनके लिए निश्चित स्थानो पर फेक जाया करते थे। पिछली रात का समाचार इतना महत्त्वपूर्ण था कि ल्यूतिकाव ने उसे परचे के रूप में छापने का निश्चय किया।

"दोनो समाचारो को एक में कर दो। हम उन्हे आज रात में चिपका देंगे," उसने कहा। उसने जेव से लाइटर निकाला, एक राखदानी के ऊपर कागज के टुकडे को जलाया, राख हाथ से मली और खिडकी खोलकर वग़ीचे में पीछे की तरफ उड़ा दी। उसके चेहरे पर पालेदार हवा लग रही थी और उसको खारेँ सब्ज़ी के वग़ीचे में उगती हुई सूरजमुखी और लौकी की पत्तियो पर जमे पाले पर टिकी हुई थी।

"वेहद पाला पडा है क्या?" उसने चिन्तित स्वर में पूछा।

"कल ही के जैसा पाला पडा है। गड्ढे जम गये हैं और वर्फ अभी तक पिघलने का नाम नही ले रही है।"

---

*हिटलर वच नहा सकता।

ल्यूतिकाव के माथे पर भुरिया पड गयी और वह अपने विचारा मे खोया हुआ क्षण भर खडा रहा। पोलीना गेम्रोगियेव्ना आगे के निर्देशा की प्रतीक्षा करती रही किन्तु ल्यूतिकाव को तो जसे उसकी उपस्थिति का ख्याल ही नही रहा।

"अब म जा रही हू," वह धीरे-से बोली।

"हा हा," जस वह होश में आते हुए बोला और इतनी गहरी सास ली कि पोलीना गेम्रागियेव्ना ने माचा कि शायद ल्यूतिकाव अस्वस्थ है।

सचमुच ल्यूतिकाव अस्वस्थ था। वह गठिया का रोगी था और उसकी सास भी फूलती थी। पर वह तो बहुत जमाने मे अस्वस्थ था। परन्तु इस अस्वस्थता के कारण वह अपने विचारो में नही खो गया था। ल्यूतिकाव जानता था कि उसकी जैसी स्थिति वाले लोगा पर मुसीबत प्राय उन जगहा स आती है, जहा से प्राय उसकी आशा नही की जाती।

खुफिया सघटन के नता के रूप में ल्यूतिकोव की स्थिति लाभकर थी, इस माने में कि जमन प्रशासन के साथ उसका कोई सीधा सम्पक न था, अत वह बिना उत्तरदायी हुए, उनके खिलाफ कारवाइया कर सकता था। जमन प्रशासन के प्रति बराकोव जिम्मेदार था। और सिफ इसी कारण, उत्पादन पर प्रभाव डालनेवाल हर मामले मे, ल्यूतिकोव के निर्देशो पर, बराकोव यथासभव वही करता था जिससे वह जमन प्रशासन और श्रमिका की निगाह मे, जमना का सवस अधिक भला चाहनेवाला डाइरेक्टर बना रहे। वह सब कुछ करता था, सिफ एक बात को छोडकर—ल्यूतिकोव जमनो के खिलाफ जो कुछ करता था, उसे बराकोव नजरअन्दाज कर देता था।

बाह्यत स्थिति कुछ इस प्रकार की थी—उत्साही और योग्य बराकोव हर चीज का निर्माण करने के लिए यथासभव सभी कुछ करता था, और उसके ये प्रयास सभी लोग देखते थे। और एक भगण्य और

विनम्र ल्यूतिकाव फिर हर चीज चौपट कर न्ता था और उसके इस काम को कोई न देख पाता था। क्या काम रुक जाता था? नही कुल मिलाकर काम चालू रहता था किन्तु उसकी गति अपेक्षित गति से कम थी। कारण? कारण यही थे—'न मजदूर ह, न मशीन, न औजार, न यातायात। जब कुछ है ही नही तो ताहमत लगाने की गुजाइश ही कहा!'

बराकोव और ल्यूतिकाव के बीच जो श्रमविभाजन था, उसके अनुसार वराकोव वडी विनम्रता से प्रशासन से ढेरा आदेश और निर्देश प्राप्त कर चुकने के वाद ल्यूतिकोव का आगाह करता और तब इन आदेशा और निर्देशो को कार्यान्वित करने के लिए पागला जसी भाग-दौड करने लगता किन्तु ल्यूतिकोव सबपर पानी फेर दता।

उत्पादन को पूव स्थिति पर लाने के लिए बराकोव क सारे प्रयास बिलकुल निष्फल रहत। किन्तु उसके ये प्रयास उसके दूसरे कामो पर परदा डालने के लिए बडे उपयोगी सिद्ध होते—वह क्रास्नोदोन और पास पडोस के जिलो मे से जानेवाली सडका पर तोड फोड के कामा और छापेमारा के आक्रमण जैसे कार्यों का सगठन-कर्त्ता और इन कार्यों को सपन्न करनेवाले व्यक्तिया का नेता था।

वाल्को की मृत्यु के वाद ल्यूतिकोव ने ही नगर और जिले की सभी कायला खाना तथा अन्य कारखाना और सबस अधिक केन्द्रीय बिजली-मेकेनिकल शॉपा में तोड फोड के कामा का सगठन किया था क्योकि अन्य किसी चीज की अपेक्षा, इन्ही पर, खाना तथा अन्य कारखाना की साधन-सामग्री का पुनरुद्धार निभर करता था।

जिले भर में कारखाना की सख्या बहुत अधिक थी। बेशक ऐस लोगा की बहुत कमी थी जिनपर जमन प्रशासन को भरासा हो सकता था, फलत उनपर जमन प्रशासन का कोई प्रभावकर नियत्रण न था।

सभी जगह, लोग काम से टाल-मटूल करते थे और वहां ऐसे लोग भी थे जो स्वतः और अपनी पहलकदमी से काम टालनेवालों के नेता बने हुए थे।

मसलन निकोलाई निकोलायेविच का दोस्त वीक्तार विस्त्रीनोव प्रशासन-कार्यालय में एक ऐसे पद पर काम करता था जो मुनीम या क्लर्क के पद जैसा था। वह स्वयं प्रशासन-कार्यालय में कुछ भी न करता था। इसके अलावा उसने उन लोगों का एक दल भी बना लिया था जो खानों में कुछ न करते थे प्रशिक्षण और पेशे से इंजीनियर होने के कारण उसने उन्हें सिखा रखा था कि खानों में बाकी लोग भी कुछ न करें इसके लिए उन्हें कौन कौन-सी तिकड़में करनी चाहिए।

पिछले कुछ समय से बूढ़ा कोन्द्रातोविच भी उससे मिलने आने लगा था। *अपने साथियों – शेव्त्सोव, वाल्को और शुल्गा – की मौत* के बाद से बूढ़ा, नंगी पहाड़ी पर खड़े किसी एकाकी बलूत वृक्ष की भांति अकेला रह गया था। बूढ़े को यकीन था कि जर्मनों ने उसे इसी लिए नहीं छुआ था कि उसका बेटा बियर और अन्य शराबें बेचता था और पुलिस वाला, तथा सशस्त्र पुलिस में अन्य छोटे छोटे पदों पर काम करनेवालों से उसकी अच्छी छनती थी।

एक दिन बेटे ने भी – जो स्वभावतः झूठ बोलने का आदी था – यह साफ साफ स्वीकार किया था कि खुद उसके लिए भी जर्मन शासन सोवियत शासन की अपेक्षा कम लाभकर है।

"लोग बेहद गरीब हो चुके हैं। किसी के पास पैसा नहीं रहा!" उसने दुखभरी आवाज़ में यह स्वीकार किया था।

"ज़रा इन्तज़ार करो। मोर्चे से तुम्हारे भाई घर लौटेंगे। तब तुम्हें आटे-दाल का भाव मालूम होगा," बूढ़े ने अपनी धीर, गंभीर और रूखी आवाज़ में उत्तर दिया था।

अब भी कोंद्रातोविच कोई काम न कर रहा था और दिन-ब दिन छोटी छोटी खाना और खान मजदूरो के घरो के चक्कर लगाया करता था। जमन प्रशासन खानो मे कैसी कैसी गलतिया, मूखता या गन्दे काम कर रहा था, इन सबका तो वह एक कोष ही था। बूढा एक घिसा हुआ और अनुभवी श्रमिक था। वह जमन प्रशासको से घृणा करता था और जितना ही उसका यह विश्वास दृढ होता जाता था कि जमन निकम्मे प्रशासक है उतनी ही उनके प्रति उसकी घृणा बढती जाती थी।

"तुम लोग युवा इजीनियर हो! तुम लोग तो खुद ही समझ सकते हो," उसने बिस्त्रीनोव और मामा कोल्या से कहा। "हर चीज उनकी मुट्ठी में है, पर उन्हे मिलता क्या है? सारे जिले से प्रतिदिन दो टन! तुम बता सकते हो कि यह पूजीवाद है, जबकि हम अपने लिए काम करने के आदी थे। पर उनके पीछे डेढ सौ वर्षों का अनुभव है। हमारा अनुभव तो कुल पच्चीस साल का है। उनको कुछ न कुछ ट्रेनिंग मिली होगी। वे तो व्यवस्थापको और धन लगानेवाला के रूप मे दुनिया भर मे मशहूर है। वे दुनिया भर मे डकैती करते हैं। म तो यही कहूगा कि उन्हे देखकर घिन उठती है!" बूढे ने अपनी बडी ही गभीर आवाज मे कहा और जमीन पर थूक दिया।

'ओछे लोग है। अपनी बीसवी शताब्दी की डकैतिया से कुछ भी तो उनके हाथ न लगेगा—१९१४ में उन्हे मुह की खानी पडी थी और इस बार भी खानी पडेगी। वे हमेशा हथियाने के चक्कर में ही रहते है, पर रचनात्मक कल्पना उन्हे छू तक नही गयी है। ओछे लोग है, अपनी दो दिन की कामयाबी पर इठला रहे हैं उद्योगो का सचालन करने में उन्हे कोई सफलता नहीं मिली। सारी दुनिया इस देख सकती है!" बिस्त्रीनोव ने घृणा से नाक चढाते हुए हसकर कहा।

बूढा श्रमिक और दोनो युवक इजीनियर प्रतिदिन बिना किसी खास

प्रयास के ऐसी ऐसी योजनाए बनाते कि कोयला प्राप्त करने के लिए इवँदे जा थोडा-बहुत प्रयत्न करता भी था वह भी विफल हो जाता था।

इस प्रकार के बीसिया लोगो के प्रयासो से खुफिया जिला पार्टी कमिटी के प्रयासो को योग मिलता था।

कारखाने के जिन विभागा में ल्यूतिकोव स्वय काम करता था उनमे उसके लिए ऐसे ऐसे काम करना कठिन भी था और खतरनाक भी। उसने यह कायदा बना रखा था—वह छोटे छोटे आडरा से सम्बधित उन सभी निर्देशा का पूणतया पालन करेगा जिनका उत्पादन प्रक्रिया में कोई निश्चित महत्त्व न होगा। हा, वडे वडे आडरो को पूरा करने मे वह जरूर ढील डालेगा। जब से वे जमन प्रशासन के अधीन काम करने लगे थे तभी से बहुत-सी बडी वडी खाना की ढेरो प्रेसिग और पम्पिग मशीनो की मरम्मत [होती रही किन्तु न तो अभी तक उनकी मरम्मत ही हो सकी, न उन्हे उनकी पूवस्थिति में ही लाया जा सका।

फिर भी डाइरेक्टर बराकोव को ऐसी स्थिति में नही डाला जा सकता था कि उसके सभी उपाय निष्फल ही सिद्ध होते। इसी दृष्टि से कुछ काम पूरे, या करीब करीब पूरे कर लिये गये ये लेकिन किसी भी अप्रत्याशित टूट-फूट से सारी की सारी मशीन ठप्प हो जाती थी। मसलन अगर बालू के थोडे-से कण किसी बिजली के मोटर में डाल दिये जाय ता मोटर ठप्प हो जायेगा। इधर इसकी मरम्मत होगी, उधर इजन बेकार हो जायेगा—बस, सिलेडर जरूरत से ज्यादा गम होता रहे और ऊपर से ठडा पानी चालू कर दिया जाय। ये छोटे छोटे काम करने के लिए ल्यूतिकोव के आदमी सभी विभागा में मौजूद थे। औपचारिक रूप से ये लोग अपने ही विभाग के फोरमना की मातहती में थे किन्तु वस्तुत वे करते वही थे जा ल्यूतिकाव करने को कहता था।

पिछले कुछ समय मे बराकोव ने ऐसे बहुत-से लोगा को काम पर

लगा रखा था जो पहले फौज में थे। लाल सेना के दो अफसर लुहार की शाप मे हथौडा चलाते थे। दाना ही कम्युनिस्ट थे। वे रात में छापेमारा के जत्था के कमाडर बनकर सडका पर हानेवाले तोड-फोड के ढेरा कामा मे भाग लेते थे। बहुत-से लोग काम पर नहीं जाते थे क्याकि उन्हे दूसरे जिला के कारखानो से औजार और सामान लाने के बहाने भेज दिया जाता हालाकि उनका वहा भेजा जाना आवश्यक न हाता था। उनके साथ साथ उन लागा को भी भेजा जाता था जो खुफिया सघटन में नही होते थे ताकि लोगा को शक न हो। इस प्रकार श्रमिका को यह यकीन हो जाता कि औजार या सामान प्राप्त करना असभव है और प्रशासन को यह विश्वास हा जाता कि डाइरेक्टर और विभाग के फोरमैन यथाशक्ति सब कुछ कर रहे हैं। इस प्रकार काम मे कोई प्रगति न होती और साथ ही इस विफलता के लिए एक वैध कारण भी मिल जाता।

कारखाने, क्रास्नोदोन खुफिया सघटन के केन्द्र हो रहे थे। ऐसी ऐसी शक्तिया एक ही स्थान पर केद्रित हो रही थीं जिन्हे कोई जानता तक न था। ये शक्तिया किसी भी समय उपलब्ध हा सकती थी। उनसे सम्पर्क बनाये रखना आसान भी था और सुगम थी। लेकिन इसमें खतरे भी थे।

बराकोव पूरी हिम्मत, आत्मनियत्रण और सुव्यवस्थित तरीके से काम करता था। सनिक और इजीनियर हाने के नाते वह ब्योरा पर बहुत ध्यान दता था।

"जानते हो मने हर चीज की व्यवस्था ऊपर से नीचे तक कर ली है,' किसी मौके पर बराकोव ने ल्यूतिकाव स कहा, "और हम यह क्या मान ले कि हम उनसे ज्यादा मूख ह," वह बोला। "इसी लिए, अधिक होशियार होने के कारण हम उन्हे मुह की खिलायेग। निश्चय ही ऐसा करगे।"

फिलीप्प पत्रोविच सिर चुकाकर बैठ गया जिससे उसका चेहरा और भी उतरा हुआ सा लगने लगा। यह इस बात की निशानी थी कि वह किसी बात से नाराज था।

"तुम यह सब बडा आसान समझते हो," वह बोला, "ये लोग जमन है, फासिस्ट है। हा, वे तुमस ज्यादा न तो हाशियार ही ह, न योग्य ही, पर उन्हे इसकी चिन्ता नही रहती कि तुम ठीक कहते हो या गलत। जब वे देखेगे कि सब कुछ चौपट हो रहा है ता बिना साचे-विचारे तुम्हारी गदन मरोड देगे। तब तुम्हारी जगह पर वे किसी शैतान को बिठा देगे जिसके माने यह हागे कि या ता हम सब का खात्मा हा जायेगा या हमे भागना पडेगा। और हमे भागने का अधिकार नही है। नही, मेरे दोस्त हम तलवार की धार पर चल रहे है। हो सकता है कि तुम पहले से ही सावधानी बरतते हो, पर अब तुम्ह तिगुनी सावधानी बरतनी होगी।"

जिस समय ल्यूतिकाव कमरे के अधकार मे करवटे बदल रहा था उस समय उसके दिमाग मे यही सब विचार घूम रहे थे। नीद ने तो जसे उसकी आखा म प्रवेश करने से इन्कार ही कर दिया था। वह प्राय यह भी सोचा करता था कि समय बीतता जा रहा है

जसे ही जसे आडर पूरा करने मे विलब होता गया और टेक्नीकल दाप, टूट-फूट और दुघटनाओ की सख्या बढती गयी, वैसे ही वैसे जमन प्रशासन के साथ बराकोव के सबध भी सदिग्ध और अनिश्चित होते गये। पर और भी खतरा इस बात स हुआ कि कालान्तर मे कारखाने के बहुत-से लाग, जिनमे बहुत-स अनुभवी कायकत्ता भी थे, इस निष्कर्ष पर पहुचते जाते, कि इस कारखाने मे कोई व्यक्ति ऐसा जरूर है जो कारखाने के कामा मे जान-बूझकर राडा अटका रहा है।

वराकाव हमेशा ही जमना के साथ दिखाई पडता था, उनकी
भाषा बोलता था और कठोरता से काम लेता था, इसी लिए कामगार
समझते कि वह जमनो से मिला हुआ है। वे उससे दूर रहते थे और
जहा तक कारखाने के विभागा का सबध था लोग उसपर शक कर भी
नही सक्त थे। शक तो सिफ ल्यूतिकोव पर ही हो सकता था। फिर
भी त्रास्नोदोन मे उन लागा की सख्या बहुत थोडी थी जो यह समझते
थे कि सचमुच ल्यूतिकोव जमना के लिए काम करता है। वह उस ढग
का रूसी श्रमिक था जिसे पुराने जमाने में श्रमिक वग की अन्त चेतना
समझा जाता था। हर शख्स उसे जानता था, उसपर विश्वास करता
था—और जनसमुदाय कभी गलती नही करता।

विभाग मे कई दजन लोग उसके अधीन काम करते थे। भले ही
वह कितना भी थोडा क्यो न बोलता, कितनी ही विनम्रता का व्यवहार
क्या न करता, पर कामगार यह जरूर समझ लेते कि वह चलते चलाते,
कठिनाइयो के दौरान में जैसे खोया खोया-सा, अनिश्चित ढग से जो भी
निर्देश देता वे उत्पादन के हितो के विरुद्ध होते।

उसकी तोड-फोड की क्रियाशीलता के अन्तगत् छोटी छोटी वात
आती थी। यदि इन वाता को अलग अलग देखा जाये तो उनपर कोई
ध्यान भी न देगा। किन्तु समय बीतने के साथ ही साथ ये छोटी छोटी
वात पुलिन्दा बन गयी और उन्हाने जसे एक बडे पैमाने का रूप ले लिया।
अब लागो का ध्यान भी ल्यूतिकोव पर जाने लगा। उसके इद गिद जो
कामगार काम करते थे उनमें से बहुत-से ऐसे थे जिनपर वह विश्वास
कर सकता था और वह यह अनुमान लगा सकता था कि बहुत-स एस
लाग भी हैं जिनका रुख उसकी मकान-मालिकिन, पेलगेया इल्यीनिच्ना
जसा है। व हर चीज दखत थे, उसका पक्ष लेते थे, किन्तु न ता उससे
ही कुछ कहते-सुनते थे, न दूसरा से, न स्वय अपने आपसे। पर

पर्दाफाश करने के लिए एक भी बदमाश काफी होता है। मौका पडने पर एक आदमी भी साहस खो बैठे तो सब काम चौपट हो सकता है।

कारखानो को सुपुर्द किया गया सबसे ज़रूरी काय था क्रास्नोदोन के उस `बडे पम्पिग स्टेशन का पुनरुद्धार, जो न सिर्फ थोडी-सी खानो को ही पानी सप्लाई करता था बल्कि नगर के केन्द्रीय भाग और केन्द्रीय वकशॉपो को भी। कोई दो महीने पहले यह काय बराकोव के सुपुर्द किया गया था और बराकोव ने उसे ल्यूतिकोव के सुपुर्द कर दिया था।

काम तो आसान था, पर अन्य सभी कार्यों की भाति व्यावहारिक ज्ञान के अनुरूप नही किया जाता था। फिर भी पम्पिग स्टेशन की बडी आवश्यकता थी। हर फेल्दनेर काम की प्रगति की शिथिलता देखकर बडा क्रुद्ध हुआ था। वह कई बार इसकी जाच करने आया था पम्पिग स्टेशन तैयार हो जाने के बाद भी ल्यूतिकोव उसे चालू नही कर रहा था। उसका कहना था कि पहले स्टेशन की जाच की जानी चाहिए। पम्पिग स्टेशन के नल और नालिया पानी से भरी थी उस वष सुबह का पाला कुछ पहले ही पडने लगा था और सख्त पडता जा रहा था।

एक दिन शनिवार को, जब छुट्टी होनेवाली थी, प्राय उसी समय ल्यूतिकोव पम्पिग स्टेशन का चाज लेने आया। वह रिसती हुई टकियो और पाइपो के बारे में न जाने कब तक चीक्ता-चिल्लाता रहा। उसने बडी सावधानी से पेचो और ढिबरिया को कसा। उसके पीछे फोरमन भी आया। उसने देखा कि सब कुछ ठीक था, और कुछ न बोला। बाहर सडक पर मजदूर लाग इन्तजार कर रहे थे कि आगे क्या होगा।

आखिर ल्यूतिकोव और फोरमन बाहर श्रमिको के पास आ गये। ल्यूतिकोव ने अपनी कोट की जेब से तम्बाकू का एक बटुआ और 'नावे जीता' अखबार की सावधानी से कटी हुई कुछ पुजिया निकाली और बिना कुछ कहे-सुने मजदूरो को घर का उगा और जसे-तैसे कटा

तबाकू देने लगा। उत्सुक हाथो ने तम्बाकू ले लिया क्योकि इस समय घर का उगा तम्बाकू भी दुर्लभ हो गया था। अभी जो वे तम्बाकू पीते थे वह बड़ी ही घटिया किस्म का होता था जिसमें आधी घास-पात मिली रहती थी। उसे आम तौर से 'मेरी दादी का गद्दा' कहा जाता था।

सभी लोग तम्बाकू पीते हुए चुपचाप पम्पिग स्टेशन के इर्द गिर्द खड़े हो गये। हा कभी कभी वे ल्यूतिकोव और फोरमैन पर एक प्रश्नसूचक दृष्टि जरूर डाल लेते थे। अन्तत ल्यूतिकोव ने अपनी सिगरट का अधजला टुकडा जमीन पर फेंका और उसे बूट से मसल दिया।

"अभी तो लगता है कि आखिर सारा काम खत्म हो गया," वह बोला। "पर आज हम काम किसी को सौंप नही सकते काफी देर हो चुकी है। हम सोमवार तक इन्तजार करगे।"

उसे लगा कि सभी उसकी ओर चकित दृष्टि से देख रहे हैं। हालाकि अभी अच्छी तरह शाम नही हुई थी, फिर भी जमीन जम रही थी।

"पानी खीच लेना चाहिए," फोरमैन ने अनिश्चय के साथ कहा।

"अभी जाडा तो है नही। क्यो?" ल्यूतिकोव ने सख्ती से कहा।

उसे फोरमन से आख मिलाने की जरा भी इच्छा न थी, पर हुआ ऐसा कि उसे फोरमैन की ओर देखना ही पडा। ल्यूतिकोव ने देखते ही समझ लिया था कि फोरमैन सब कुछ जान गया है। और यदि वहा फैली हुई चुप्पी से अन्दाज लगाया जाता तो वह सकते थे कि शायद बाकी लोग भी समझ गये थे। तब बडे आत्मनियन्त्रण के साथ ल्यूतिकोव ने जसे चलते-चलाते कहा—"अब हमें चलना चाहिए," और चुपचाप वे सब पम्पिग स्टेशन के बाहर चले गये

ल्यूतिकोव को यह सब उस समय याद आ रहा था जब वह खिडकी के बाहर, सूरजमुखी और लौकी की पत्तियो पर जम हुए पाले

की मोटी परत देख रहा था। कडाके की सर्दी के कारण पत्तिया काली पड गयी थी।

जैसी कि उसने आशा की थी, काम करनेवालों की पूरी टोली पम्पिग स्टेशन पर उसका इन्तज़ार कर रही थी। उसे यह बताने की जरूरत नही रह गयी थी कि पाइप फूलकर फट गये थे और सारी मेहनत वेकार हो गयी थी तथा अब सब कुछ फिर से करने की ज़रूरत थी।

"अफसोस की वात है! किन्तु ऐसा हो जाने की आशा किसे थी? ऐसा कडाके का पाला!" ल्यूतिकोव बोला। "परवाह न करो, हिम्मत न हारो। हम पाइप वदल देगे। वेशक पाइप ह तो कही नही, पर हम कुछ पाइपो का वन्दोवस्त करने की पूरी कोशिश करगे।"

सभी ने उसकी ओर घवराकर देखा। वह जानता था कि वे लोग उसकी हिम्मत देखकर उसकी इज्ज़त करते थे और साथ ही जो कुछ उसने किया था उससे डर भी गये थे। उसके शान्त रवैये से तो वे और भी भयभीत हो उठे थे। हा, जिन लोगो के साथ ल्यूतिकोव काम करता था, उनका विश्वास किया जा सकता था। पर आखिर वह नियति को कव तक भुलावे में रख सकता था।

किसी गुप्त समझौते के अनुसार वराकोव और ल्यूतिकोव एक दूसरे को आराम के घटा में कभी न मिलते थ। यह व्यवस्था इसलिए की गयी थी कि किसी का उनकी दोस्ती का रत्ती भर भी सुराग न मिले और यह भी शक न हो कि सिवा अपने अपने काम के उनका परस्पर और भी कोई सवध है। जव कभी वराकोव को ल्यूतिकोव से वाते करना आवश्यक होता तो वह ल्यूतिकाव को अपने दफ्तर में बुलाता और उसके आने से पहले और उसके चले जाने के वाद दूसरे विभागा के फोरमना को भी जरूर बुलाता।

इस समय बातचीत करना उनके लिए आवश्यक हो गया था।

ल्यूतिकोव शॉप में अपने छोटे-से दफ्तर में आया, अपनी लपटी हुई 'दुगरी' एक कुर्सी पर फेंकी, अपनी टोपी और ओवरकोट उतारकर खूटी पर टागा, अपने सफेद बाल ठीक किये, अपनी कटी छटी मूछा पर कघी फेरी और बराकोव के पास चला गया।

कारखाने के दफ्तर अहाते में ही एक छोटी-सी ईंटो की बनी इमारत में थे।

क्रास्नोदोन के अधिकाश दफ्तरो और मकानो के भीतर का तापमान सर्दी बढने के कारण सडको के तापमान से भी नीचे गिर गया था। किन्तु इस कारखाने के दफ्तर इतने ही गम थे जितने वे दफ्तर या मकान जिनमें जमन काम करते या रहते थे। बराकोव अपने गम दफ्तर में नीले रग की कमीज के ऊपर सज की ढीली जैकेट पहने और चमकते हुए रग की टाई लगाये बैठा था। जैकट की कालर मुडी हुई थी। वह पहले से क्षीण और सावला हा गया था, अत पहले से जवान भी लग रहा था। उसके सिर के बाल बढ गये थे और ललाट पर एक लट लहरा रही थी। माथे पर लहराती लट, उसकी ठुड्डी का गड्ढा, उसकी बडी बडी आखो की स्पष्ट, सीधी और साहसपूण दृष्टि, कसकर दबे हुए आठ, जिनसे उसकी शक्ति का पता चलता था, वतमान परिस्थितियो में दो तरह का प्रभाव डाल रहे थे।

बराकोव दफ्तर में बैठा हुआ एक प्रकार से कोई काम नहीं कर रहा था। वह ल्यूतिकोव को देखकर खिल उठा।

"तुम्हे पता चल गया?" उसके सामने बैठते हुए और भारी सास लेते हुए फिलीप्प पेत्रोविच ने पूछा।

'खूब बदला लिया!" बराकोव के मोटे मोटे होठो पर एक हल्की सी मुस्कान बिखर गयी।

"नही मेरा मतलब सवाद से है।"

"म वह भी जानता हू।" वराकोव का एक अपना रेडियो भी था।

"तो इससे उक्रइन में हम सवपर क्या असर पडेगा?" दात निकालते हुए ल्यूतिकोव ने उक्रइनी भाषा मे पूछा। वह था ता रूसी, किन्तु दोनवास में पलकर वडा हुआ था, इसलिए कभी कभी उक्रइनी बोलने की छूट ले लेता था।

"असर पडेगा," वराकोव ने भी उक्रइनी में उत्तर दिया, "हम आम विद्रोह की तैयारी करेगे।" उसने दोना हाथा से एक चौडा-सा वृत्त वनाया और ल्यूतिकोव को यह बात अच्छी तरह समझ में आ गयी कि वराकोव की तैयारिया किस तरह की हागी। "जसे ही हमारी सेनाए नगर के पास आयेंगी " उसने हाथ मेज़ के उस पार तक वढाया और मुट्ठी वद कर ली।

"विलकुल ठीक," ल्यूतिकोव अपने मित्र की इस बात से खिल उठा था।

"कल म तुम्हे अपनी सारी याजना समझाऊगा। अडगा वच्चो की कमी के कारण नही है वल्कि ढोल की डडिया और मिठाइया की कमी के कारण है " वराकोव के शब्दा में अन्त्यानुप्रास की झलक मिलती थी जिससे वह खुद ही हस पडा। उसके कहने का मतलब था कि काम करने के इच्छुक व्यक्तियो की कमी न होगी वल्कि बन्दूको और गोला बारूद की कमी पडेगी।

"म छोकरो को इस काम पर लगा दूगा। वे यह सव वना डालेगे। यह पम्पिग स्टेशन का सवाल नही है," ल्यूतिकोव कहता रहा। सहसा उसने उस विषय की चर्चा की जो उसके मस्तिष्क पर छाया था। 'सवाल यह नही है। वात तो बस मेरा मतलब तो तुम समझ ही गये होगे।"

बराकोव की त्यौरिया चढ गयी।

"जानते हो मेरा क्या सुझाव है? मेरा सुझाव होगा कि मैं तुम्हे नौकरी से बरखास्त कर दू" उसने दृढता से कहा, "म यह शिकायत करूगा कि पम्पिंग स्टेशन में पाइपो के जम जाने के दोषी तुम हो और तुम्हे बरखास्त कर दिया जाये।

ल्यूतिकोव ने क्षण भर सोचा – इससे शायद समस्या का कोई हल निकल आये।

"नही," कुछ रुककर उसने कहा, "मेरे छिपने की कोई जगह नही। और अगर होती भी तो हमें यह क़दम नही उठाना चाहिए। वे लोग सब कुछ तुरत भाप लेगे। इसमे तुम तो बर्बाद होगे ही, दूसरे भी होगे। इस समय हमारा जो प्रभाव है वह भी खत्म हो जायेगा – नही इससे काम न चलेगा," ल्यूतिकोव ने निश्चय के साथ कहा, "नहीं, हम इन्तज़ार करेगे और मोर्चे की स्थिति का अध्ययन करेगे। अगर हमारी सेनाए तेज गति से आयेगी तो हम इतने जोश-खरोश के साथ जमनो के लिए काम करना शुरू करगे कि अगर किसी को हमपर कोई शक भी रहा हो तो वह यह समझ लेगा कि वह गलती पर था, क्योकि हम पूरी ताकत लगाकर उनका काम उस समय करेगे जब मोर्चे पर उनके कदम उखड रहे होगे। और सबसे बडी बात यह है कि हमारी इस मेहनत का फल मिलेगा हमारे अपने लोगो को।"

एक क्षण के लिए बराकोव इस चाल की असाधारण सुगमता पर मुग्ध हो गया।

"पर अगर मोर्चा बहुत निकट आ गया तो वे हमें हथियारो की मरम्मत पर लगा देगे," वह बोला।

"अगर मोर्चा बहुत निकट आ ही गया तो हम सब कुछ छोडकर छापामार बन जायेगे।"

"बूढ़ा बडा कमठ है," खुश होकर बराकोव ने सोचा।

"हमें नेतृत्व का एक दूसरा केन्द्र स्थापित करना चाहिए, एक तरह का रिज़र्व," ल्यूतिकोव बोला, "कारखाने के बाहर, बिना तुम्हारे बिना मेरे।" वह कुछ दिलासे की बात, कुछ मज़ाक की बात कहने के मूड में था, मसलन "बेशक हमें इसकी कोई आवश्यकता न पडेगी, किन्तु दुखी होने की अपेक्षा सुरक्षित होना बेहतर है," वग़ैरह, वग़ैरह। पर, तभी उसे लगा कि इस तरह की किसी बात की न उसे खुद ही कोई ज़रूरत है, न बराकाव को।

"अब हमारे पास कुछ अनुभवी लोग हो गये हैं और अगर कोई बात हो भी जायेगी तो वे बिना हमारे भी सब कुछ सभाल लेगे। है न?" उसने कहा।

"हा यह तो ठीक है।"

"हमें जिला पार्टी कमिटी की एक बैठक बुलानी चाहिए। हमने पिछली बार बैठक की थी जमना के आने से पहले। मैं जानना चाहूगा कि हमारे अन्दरूनी-पार्टी लोकतन्त्र का क्या हुआ?" ल्यूतिकोव ने बराकाव की ओर सख्ती से देखा और आख मारी।

बराकोव हस दिया। सचमुच उन्होंने जिला पार्टी कमिटी की बैठक नही बुलायी थी क्योकि क्रास्नादोन में जैसी स्थिति थी उसे देखते हुए ऐसी बैठक बुलाना प्राय असभव हो गया था। किन्तु सबसे महत्त्वपूर्ण मामलो पर, जिले के अन्य प्रमुख लोगो की सलाह ले चुकने के बाद ही, कोई निर्णय किया जाता था।

विभाग से होकर अपने छोटे-से दफ्तर जाते वक्त ल्यूतिकोव का सामना मोश्कोव, वोलोद्या ओस्मूखिन और तोल्या ओर्लोव से हो गया। ये लोग एक दूसरे की बगल की ही बेंचो पर काम करते थे। वह फिटरा की बेंचो से होकर गुजरा जो दीवार के आधे हिस्से तक फैले हुए थे और

ऐसा बन गया मानो काम की जाच कर रहा हो। जा छोकरे अभी अभी सिगरेट पी रह थे और गप्प लडा रहे थे वे भी अब अपने अपन काम पर जुट जाने का बहाना करने लगे।

जब ल्यूतिकोव मोश्कोव की बेंच से होकर गुजरा तो उसने उसकी ओर देखा, दात निकाले और बुदबुदाया—

"क्या उसन तुम्हे गाली दी है?"

ल्यूतिकोव न अन्दाज लगा लिया था कि मोश्काव पम्पिग स्टेशन के बारे मे पहले से ही जानता था, और उसका मतलब बराकोव से था। दूसरे छाकरो की तरह माश्कोव भी बराकाव का असलियत न जानता था और उसे जमना का पिट्ठू समझता था।

"इसके बारे में कुछ मत कहो," ल्यूतिकोव ने धीरे-से अपना सिर हिलाया मानो सचमुच गाली खाई हा, यह कैसा काम चल रहा है?" उसने ओस्मूखिन से पूछा और ऐसे झुक गया माना उसके काम का मुआयना कर रहा हो, फिर मूछा के भीतर ही बुदबुदाया—

"ओलेग से कहना आज रात मैं उससे मिलना चाहता हू। उसी जगह।"

यहा से भी क्रास्नोदोन के 'तरुण गाड' खुफिया सघटन को नुक्सान पहुच सकता था।

अध्याय १७

न सिफ स्तालिनग्राद और दान के किनारे किनारे ही बल्कि उत्तरी काकेशिया और वेलीकिये लूकी के क्षेत्र में भी लाल सेना की सफलताए अधिकाधिक प्रत्यक्ष होती जा रही थी। इन सफलताओ के साथ कदम से कदम मिलाये रखने के लिए 'तरुण गाड' की क्रियाशीलता भी बढ़ती जा रही था और उसके काय अधिकाधिक साहसपूण होते जा रहे थे।

इस समय तक 'तरुण गार्ड' बड़ा और सशक्त संघटन बन चुका था। उसके सौ से अधिक सदस्य हो चुके थे और ज़िले भर में उसकी शाखाएं फैल गयी थीं। 'तरुण गार्ड' के सहायकों की संख्या भी बेहद बढ़ गयी थी।

अपनी क्रियाशीलता बढ़ाने के साथ ही साथ संघटन नये नये सदस्यों की भी भरती करता था क्योंकि यह भी उसका एक महत्त्वपूर्ण काम था। यह भी सच था कि युवक यह समझने लगे थे कि अपने कार्यारम्भ के पहले दिनों की अपेक्षा, वे उत्तरोत्तर अधिक प्रकाश में आने लगे थे। पर, वे कर ही क्या सकते थे? कुछ हद तक यह अपरिहार्य था।

'तरुण गार्ड' के काम जितने ही अधिक विस्तृत होते जाते, गेस्टापो और पुलिस का 'जाल' उनके उतना ही पास आता जाता।

एक हेडक्वार्टर की बैठक में सहसा ऊल्या ने पूछा था—

"हममें से कौन मोर्स कोड जानता है?"

इसपर किसी ने यह प्रश्न नहीं किया कि इसकी ज़रूरत क्या है, और न इस प्रश्न को किसी ने मज़ाक ही समझा। जब से हेडक्वार्टर के सदस्यों ने कंधे से कंधा मिलाकर काम करना शुरू किया था तब से शायद अब पहली बार उन्हें यह विचार आया था कि शायद उन्हें गिरफ्तार किया जाये। किन्तु यह एक हवाई ख्याल भर था क्योंकि फिलहाल उन्हें किसी तरह का खतरा नज़र नहीं आ रहा था।

ठीक इसी अवधि में ल्यूतिकोव ने व्यक्तिगत रूप से बातचीत करने के लिए ओलेग को बुलाया था।

अपनी पहली मुलाक़ात के बाद से दोनों एक दूसरे से नहीं मिले थे। प्रत्येक को लग रहा था कि दूसरा बहुत अधिक बदल गया है। फिलीप्प पेत्रोविच के बालों में और अधिक सफ़ेदी आ गयी थी और वह

पहले स अधिक भारी और मोटा हो गया था। उसे देखते ही समझा जा सकता था कि यह अच्छी सेहत की निशानी नहीं थी। वह अपनी बातचीत के दौरान मे बार बार उठकर कमरे मे चहलकदमी करने लगता था। आलेग उसकी सास सुनता था और उसे लगता था जसे ल्यूतिकोव को अपना भारी शरीर घसीटना भी दूभर लग रहा है। केवल उसका आखो मे अब भी कठोरता का भाव दिखाई दे रहा था। थकान तो उनमे लेशमात्र भी न थी।

ल्यूतिकाव ने इस बात पर गौर किया था कि आलेग का शरीर स्वस्थ हो गया था। अब वह बडा हो गया था और अपने जीवन के सर्वोत्तम वर्षा से होकर गुजर रहा था। उसका चेहरा और गालो की उभरी हुई हड्डिया अधिक मजबूत, अधिक स्पष्ट लगने लगी थी। अब सिर्फ उसकी बडी बडी आखो और उसके भरे हुए होठो की रेखा से ही, खासकर उसके मुस्कराते समय, यह पता चलता था कि उसमें स्कूली बच्चा जैसा भाव अब भी विद्यमान है। इस समय वह उदास लग रहा था और कधे झुकाये तथा कधा के बीच सिर नीचा किये बैठा था। उसके माथे पर गहरी झुरिया दिखाई पडने लगी थी।

ल्यूतिकोव कई बार अपने विषय पर आया और उसने पुराने और नवसघटित दोनो ही प्रकार के 'तरुण गाड' कायवाहक दलो के सबध में पूरे विस्तार के साथ जानने की इच्छा प्रगट की। वह सदस्यो के नाम और उनके चरित्र की विशेषताओ के बारे मे जानना चाहता था। साफ जाहिर था कि इस समय उसकी दिलचस्पी दल के बाहरी कामो म उतनी न थी—जिसकी सारी सूचना उसे पालीना गेओर्गियेव्ना स मिल जाती थी—जितनी सघटन के अन्दरूनी मामलो में थी। खास तौर स वह दल के बारे में, और उसके भीतरी मामलो के सबध में स्वय आलेग के विचार जानना चाहता था।

ल्यूतिकोव यह जानना चाहता था कि कितने प्रतिशत सदस्य एक दूसरे को जानते ह, हेडक्वाटर और दला के बीच किस प्रकार सम्पक स्थापित किया जाता हे, ढेरा दलो का एक दूसरे से जोडनेवाली कौन कौन-सी कडिया है और वे किस प्रकार अपने कामा का समन्वय करते हैं। उसने मवेशिया का छुडानेवाली घटना का भी उल्लेख किया। कुछ समय तक ल्यूतिकोव ओलेग से यही प्रश्न करता रहा कि किये जानेवाले किसी काम के सबध म सूचना देने के निमित्त हेडक्वाटर किन किन टेकनीकल साधना का प्रयोग करता है। उसने यह भी पूछा कि दल के लीडरा ने सदस्या को किस प्रकार सूचना दी थी और वे किस प्रकार मिले थे। उसे परचे चिपकाने जैसी छाटी छोटी वाता में दिलचस्पी थी, विशेषकर सम्पक और नेतृत्व की दृष्टि से।

हम यह बात फिर से स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि जब कभी ल्यूतिकोव किसी से बात करता तो वह उन्हे बराबर यह मौका दिया करता कि जा कुछ उन्हे कहना है, वे कह डाले। उस अपनी राय जाहिर करने की कभी जल्दी न रहती। वह जिस किसी से भी बात करता उसका अनुग्रह प्राप्त करने का कोई प्रयत्न न करता और बच्चे, बूढे सभी से, बराबरी के नाते, बडे स्वाभाविक ढग से बातचीत करता।

ओलेग यह सब कुछ जानता था। ल्यूतिकोव उससे ऐसे बात करता मानो वह कोई राजनतिक नेता हो, और बडे ध्यान से उसके विचार सुना करता। यदि कोई और अवसर होता ता ल्यूतिकोव का यह रुख देखकर उसका हृदय गव और खुशी से भर गया होता। किन्तु इस समय उसे लगा कि ल्यूतिकाव 'तरुण गाड' स बहुत प्रसन्न नही है।

ल्यूतिकाव ने उससे सवाल किये और सहसा खडे होकर कमरे में चहलकदमी करने लगा। यह बात उसकी आदत स मेल न खाती थी। फिर उसने सवाल पूछने बन्द कर दिये और केवल कमरे मे चहलकदमी करता

ओलेग भी चुप हो गया था। आखिर ल्यूतिकोव ओलेग के मामने
हुई एक कुर्सी मे धस गया और अपनी कठोर आखें उसपर गडा

"अब तुम वयस्क हो चुके हो। सघटन भी वडा है और खुद तुम
," उसने कहना शुरू किया, "यह भी अच्छा ही है। तुम हमारे लिए
डे काम के सिद्ध हो रहे हो। लोग तुम्हारी सरगर्मिया महसूस करने लगे
। और वह समय आयेगा जब वे तुम्हे इसके लिए धन्यवाद देंगे। लेकिन
मै तुमसे कहना चाहता हू—कही कुछ गडबडी जरूर है अब विना
मेरी अनुमति के अपने दल मे किसी और को न लेना। तुम्हारे पास काफी
सदस्य है। अब वह वक्त आ गया है जब सबसे वुजदिल और काहिल
व्यक्ति भी, बिना किसी सघटन में शामिल हुए, हमारी मदद करेगा।
मेरी वात समझ रहे हो न?"

'समझ रहा हू," ओलेग धीरे-से बोला।

"तुम्हारा सपक " ल्यूतिकोव कुछ देर तक खामोश रहा।
"सम्पर्क का तुम्हारा इन्तजाम कच्चा है। तुम्हारे सदस्य, एक दूसरे के
पास, एक दूसरे के घर बहुत अधिक आते जाते है, विशेप रूप से
तुम्हारे और तुर्केनिच के घर। यह खतरनाक है। मसलन् अगर म ही उस
सडक पर रहता होता, जहा तुम रह रहे हो, तो म तुम्हारे यहा आने-
जानेवाला को देखकर सोचता—'आखिर ये लडके-लड़किया, दिन में भी
और रात में भी, जब किसी को घर के बाहर निकलने की अनुमति
नही दी जाती, वरावर तुम्हारे घर के चक्कर क्या लगाते ह?' यदि
मैं तुम्हारी गली में रहता होता तो यही समझता। यह मत भूलना कि
जमन तुम्हारी टोह में ह और आखिर में वे तुम्हारे घर में लोगा के
आने-जाने के क्रम का देखेंगे अवश्य। तुम लोग जवान हो। म बडी
हिम्मत के साथ यह सकता हू कि तुम राजनीतिक उद्देश्यो से अनावा

भी एक दूसरे से मिलते जुलते होगे। है न? मसलन मन-वहलाव के लिए? ल्यूतिकोव ने सदभावना से मुस्कराते हुए कहा।

ओलेग कुछ घवरा गया, फिर उसने दात निकाले और हामी भरते हुए सिर हिलाने लगा।

"इससे काम नही चलेगा। कुछ समय तक तुम्हे ऊव महसूस करना ही होगा। जव हमारी सेनाए आ जायगी तो हम सभी खूब मौज करेगे," ल्यूतिकोव ने गभीरता से कहा, "और तुम्हारे हेडक्वाटर की बठके भी कम होनी चाहिए। इस समय सनिक कारवाई करने का अवसर है। तुम्हारे पास एक कमाडर है ही, एक कमीसार भी इस मौके पर उसी तरह काम पर जुट जाओ जैसे युद्ध की स्थितियो में मोर्चे पर जुटते है। तुम्हारे सम्पर्क प्रबन्ध भी उसी स्तर पर आने चाहिए जिस स्तर पर तुम्हारा दल है। अच्छा तो यह होगा कि तुम लोग किसी ऐसे स्थान की व्यवस्था करो, जहा तुममे से हर व्यक्ति बिना किसी रुकावट के आ जा सके और किसी वाहरी आदमी को उसमे कोई असाधारण वात भी न जान पडे। इन दिना गोर्की क्लव मे क्या हो रहा है?"

"वह खाली पडा है," ओलेग बोला। उस उस रात की याद आ गयी जव उसने क्लव की दीवाल पर परचे चिपकाये थे और पुलिस वाले के हाथ मे पडने से वाल वाल वच गया था। 'यह वहुत दिना की वात है।" उसने मन ही मन कहा।

"न तो वह दफ्तरा के ही काम का है, न रहने के ही काम का। इसी लिए खाली पडा है,' ओलेग ने समझाया।

'अच्छी बात है, फिर प्रशासन से अनुमति मागो और उसमें एक क्लव चालू कर दो!"

कुछ क्षणो तक ओलेग चुप रहा। उसके माथे पर वल पडते रहे। "यह वात मेरी समझ में नही आती," वह बोला।

आलेग भी चुप हो गया था। आखिर ल्युतिकोव श्रालेग के सामने हुई एक कुर्सी मे धस गया और अपनी कठोर आखें उसपर गडा

"अब तुम वयस्क हो चुके हो। सघटन भी बडा है और खुद तुम ;" उसने कहना शुरू किया, "यह भी अच्छा ही है। तुम हमारे लिए डे काम के सिद्ध हो रहे हो। लोग तुम्हारी सरगर्मिया महसूस करने लगे है। और वह समय आयेगा जब वे तुम्हे इसके लिए धन्यवाद देंगे। लेकिन मैं तुमसे कहना चाहता हू—कही कुछ गडबडी जरूर है अब बिना मेरी अनुमति के अपने दल मे किसी और को न लेना। तुम्हारे पास काफी सदस्य है। अब वह वक्त आ गया है जब सबसे बुजदिल और काहिल व्यक्ति भी, बिना किसी सघटन में शामिल हुए, हमारी मदद करेगा। मेरी बात समझ रहे हो न?"

'समझ रहा हू," आलेग धीरे-से बोला।

"तुम्हारा सपक " ल्युतिकोव कुछ देर तक खामोश रहा। "सम्पक का तुम्हारा इन्तजाम कच्चा है। तुम्हारे सदस्य, एक दूसरे के पास, एक दूसरे के घर बहुत अधिक आते जाते है, विशेष रूप से तुम्हारे और तुर्केनिच के घर। यह खतरनाक है। मसलन् अगर मैं ही उस सडक पर रहता होता, जहा तुम रह रहे हो, तो मै तुम्हारे यहा आने जानेवालो को देखकर सोचता—'आखिर ये लडके-लड़किया, दिन मे भी और रात में भी, जब किसी को घर के बाहर निकलने की अनुमति नही दी जाती, बराबर तुम्हारे घर के चक्कर क्या लगाते है?' यदि मैं तुम्हारी गली में रहता होता तो यही समझता। यह मत भूलना कि जर्मन तुम्हारी टोह में है और आखिर में वे तुम्हारे घर में लोगो के आने-जाने के क्रम को देखेंगे अवश्य। तुम लोग जवान हो। मै बडी हिम्मत के साथ कह सकता हू कि तुम राजनीतिक उद्देश्यो के अलावा

एक दूसरे स मिलते-जुलते होगे। है न? मसलन् मन-वहलाव के ?" ल्यूतिकाव ने सदभावना स मुस्कराते हुए कहा।

ओलेग कुछ घवरा गया, फिर उसने दात निकाले और हामी भरत सिर हिलाने लगा।

"इससे काम नही चलेगा। कुछ समय तक तुम्ह ऊव महसूस करना होगा। जब हमारी सेनाए आ जायेगी ता हम सभी खूब मौज करगे," तिकाव ने गभीरता स कहा, "और तुम्हारे हेडक्वाटर की वठक भी हानी चाहिए। इस समय सनिक कारवाई करने का अवसर है। ारे पास एक कमाडर है ही, एक कमीसार भी इस मौक पर उसी इ काम पर जुट जाओ जैस युद्ध की स्थितियो मे मोर्चे पर जुटते हैं। ारे सम्पक प्रवन्ध भी उसी स्तर पर आने चाहिए जिस स्तर पर ारा दल है। अच्छा तो यह हागा कि तुम लोग किसी ऐस स्थान की स्था करा, जहा तुममे से हर व्यक्ति विना किसी रुकावट के जा सके और किसी वाहरी आदमी को उसमें कोई असाधारण वात न जान पडे। इन दिना गोर्की क्लव मे क्या हो रहा है?"

"वह खाली पडा है," ओलेग वाला। उस उस रात की याद आ ी जव उसने क्लव की दीवाल पर परचे चिपकाये थे और पुलिस वाले हाथ मे पडने स वाल वाल वच गया था। "यह बहुत दिना की वात ।" उसने मन ही मन कहा।

"न ता वह दफ्तरो के ही काम का है, न रहने के ही काम का। ी लिए खाली पडा है,' ओलेग ने समझाया।

"अच्छी वात है, फिर प्रशासन स अनुमति मागो और उसमें एक लव चालू कर दो।"

कुछ क्षणो तक ओलेग चुप रहा। उसके माथे पर वल पडते रहे।

"यह वात मेरी समझ मे नही आती," वह वाला।

इसमे समर्थन की कोई बात नहीं—युवको के लिए, समस्त जनता के लिए क्लब। उन लड़के लड़कियों को संगठित करो जिन्हे राजनीति में कोई रुचि नहीं किन्तु जो मनोविनोद चाहते है, जो ऊब महसूस कर रहे है। कुछ लोगो को इकट्ठा करो और एक उद्घाटन-मंडली बनाओ, फिर उस स्थान मे क्लब चालू करने के लिए बुरगोमास्टर से प्रार्थना करो। उससे कहो कि तुम्हारा ख्याल है कि 'नयी व्यवस्था' के अनुरूप जनता को सास्कृतिक सुविधाए प्राप्त होनी चाहिए। उन्हे सुझाव दो कि बेकार की गप्पो से बचने और दिमागो मे खुराफात न आने देने के लिए युवक युवतियो को नाचने की सुविधाए दी जाये। वह गधा खुद तो कुछ निर्णय करता नहीं, वह अपने ऊपर वाले अधिकारियो से पूछेगा। वे शायद तुम्हे अनुमति दे देगे। वे खुद ऊब से मर रहे है," ल्यूतिकोव बोला।

ओलेग अपनी उम्र के लिहाज से काफी कुशाग्रबुद्धि और व्यवहार कुशल था। तुच्छ और लौकिक बातो मे उसकी कोई रुचि नहीं थी। उसने अपनी बुद्धि से तत्काल ही समझ लिया था कि वह हेडक्वाटर के सदस्यो को क्लब मे रख सकेगा और उनकी माफ़त दलो के नेताओ से सम्पर्क स्थापित कर सकेगा। किन्तु इस पैशाचिक संसार मे खिंच आना इस अनजाने संसार के घृणित मामलो मे, अप्रत्यक्ष रूप से भी, भाग लेना उसकी आत्मा के विरुद्ध था। भ्रष्टाचार की व्यक्तिगत रूप से स्वीकृति देना या अप्रत्यक्ष रूप से ही सही, उसे बढ़ावा देना नहीं, नहीं, यह सब वह नहीं करेगा। उसने चुपचाप अपना सिर झुका लिया। ल्यूतिकोव की ओर देखने की भी उसकी हिम्मत न पड़ रही थी।

"मेरा अनुमान ठीक था," ल्यूतिकोव ने शांति से कहा, "तुमने मेरी बात समझी नहीं। अगर समझी होती तो मेरे लिए और सारे संघटन के लिए यह एक बहुत बड़ी चीज होती," वह उठा और कमरे में चहलकदमी करने लगा, 'बच्चे को डर लग रहा है कि कहा वह खुद

गन्दा न हो जाय । शुद्ध लोग अपने को अपवित्र नहीं होने देते ! आखिर उनके भ्रष्ट प्रचार का असर होगा भी क्या ? अगर वे लोग अपना लाउडस्पीकर क्लब में लगा भी दें, तो भी क्या ? यह सब तो हम जगह जगह सुन ही रहे हैं। क्लब हमारी मुट्ठी में रहे, इसके लिए हमें यह सब बरदाश्त करना ही होगा। हमारा प्रचार ऊंची आवाज में नहीं होगा, पर उसका असर उनके प्रचार से ज्यादा होगा। मैं तुम्हें यह साफ साफ बता दूं कि तुम्हारे कार्यों में हमारा भी कुछ हाथ होगा, जिसे तुम अधिक न देख सकोगे और इसके लिए तुम हमें क्षमा करोगे। किन्तु तुम्हारा कार्यक्रम तटस्थ होना चाहिए। इस तरह के कार्यों का संगठन मोश्कोव, ज़ेम्नुखोव और आस्मूखिन, या उनसे भी अच्छे ढंग से, ल्यूबा शेव्त्सोवा कर सकती है। यहां तुम्हें इस तरह के लोगों से काम लेना चाहिए।"

अन्ततः ओलेग उसकी बात से सहमत हो गया, किन्तु बूढ़ा ल्यूतिकोव फिर भी उसे बड़ी देर तक समझाता रहा। ओलेग अपने हृदय में झूठी भावनाओं के प्रभाव में आ गया था, अतः वह बड़ा खिन्न था।

'यह सब मैं तुम्हें इसलिए समझा रहा हूं कि तुम्हारे साथी तुमसे यही सब कुछ कहेंगे जो तुमने अभी अभी मुझसे कहा है। और मैं चाहता हूं कि तुम उन्हें ठीक ठीक जवाब दे सको," वह बोला और ओलेग को समझाता रहा।

खान १-बीस के व्यवस्थापकों का समर्थन प्राप्त हो जाने के बाद वान्या ज़ेम्नुखोव, मोश्कोव तथा दो लड़कियां, जो 'तरुण गार्ड' से किसी भी प्रकार संबद्ध न थीं, बुरगोमास्टर स्तात्सेंको से मिलने गयीं। सचमुच वे उन युवक-युवतियों के प्रतिनिधि थे, जो नये क्लब को संगठित करने के लिए एकत्र किये गये थे।

स्तात्सेंको, हमेशा की भांति, नशे में धुत्त था। वह उनसे नगर परिषद् के सर्द और गन्दे मकान में मिला। उसने सूजी हुई अंगुलियोंवाले

अपन छाट छाट हाथ अपने सामने विछे हुए माट हर ऊनी मजपाश पर रग दिय और फिर दृष्टि म वाया वा ओर देखा लगा। वाया विनम्र, शिष्ट और मग्न भाग या रमानी वाला चश्मा लगाये, बुरगामास्टर की ओर नहा वल्कि हर मजपाश की ओर देखे जा रहा था।

स्तालिनग्राद में जमन फौज की हार हो रही है, एसी ऐसी मूठा खबर नगर म फैल रही ह। इसी वजह स, इसकी वजह मे," वान्या की पतला पतनी उगलिया हवा में लहरा उठा, "हमारे युवक-युवतिया व दृष्टिकोण मे कुछ अस्थिरता आ गयी है। हमें मि० पॉल," उसन रान १-बीस के माइनिग बटालियन के कमिश्नर का नाम लिया, "और उस सज्जन का समर्थन मिल चुका है जो नगर परिषद् क शिक्षा विभाग क अध्यक्ष ह तथा इसके बारे में आपका निश्चय ही सूचना मिल चुकी होगी। अतत 'नयी व्यवस्था' के प्रति वफादार सभी युवक-युवतिया की ओर म, वर्नोली टल्लारिओनोविच, हम खुद आपस प्राथना करत हैं, आप कितने उदार, कितने दयावान हैं! "

' सज्जनो और देवियो, प्यारे लडको। जहा तक मेरा सवाल है," "नगर परिषद् " उसकी आखा में सहसा स्तातसको वडे स्नेह मे बोला, आसू छलछला आये।

स्तातसेको, "वे सज्जन" और "प्यारे लडके" अच्छी तरह जानत थे कि नगर परिषद् स्वय किसी बात का निणय नहीं कर सकती थी, क्योकि सारे निणय किये जाते थे सशस्त्र पुलिस के सीनियर वाह्टमिस्टर द्वारा। किन्तु स्तातसको पूरी तरह से इस प्रस्ताव के पक्ष मे था। ल्यूतिकोव ने ठीक ही अनुमान लगाया था स्तातसेको खुद ऊब से घुट घुटकर मर रहा था।

हाप्तवाह्टमिस्टर ने अनुमति दे दी और १६ दिसम्बर १६४२ के दिन गार्की क्लब में पहला रगारग प्रोग्राम प्रस्तुत किया गया।

इमारत को गम रखने की कोई व्यवस्था न थी। क्लव में जितने लोगा के लिए स्थान था उससे कोई दूने दशक, ओवरकोट, फौजीकोट और फर-जकेट पहने, वहा या तो खडे थे या वठे थे। छत पर जो भाप ठडी होने लगती थी वह शीघ्र ही बूदा के रूप मे उनपर टपकने लगती थी।

सामने की कतारा म हाप्तवाह् टमिस्टर ब्रूक्नेर, वाह् टमिस्टर वाल्डेर, लेफ्टिनेंट श्वदे, उसका डिप्टी फेल्दमेर, सोन्दरफ्यूरर साण्डेस, कृषि कमाडाटुर के सभी अफसर, ओवेरलेफ्टिनेट श्प्रीक और नेम्चीनावा, बुरगोमास्टर स्तात्सेवो, पुलिस चीफ सालिकोव्स्की, उसकी पत्नी, और कुलेशोव वठे थ। कुलेशाव परीक्षक-न्यायाधीश था जा पुलिस चीफ की सहायता के लिए अभी हाल ही में नियुक्त हुआ था। यह शान्त और शिष्ट आदमी था। चित्तीदार गाल चेहरा, नीली आखें, छितरी हुई हल्की लाल भौह, शरीर पर लम्वा काला ओवरकोट, सिर पर कज़्जाक टोपी जिसकी लाल खोपडी पर सुनहरी डोरी लगी थी। वहा हेरेन पॉल, जूनर, वेकेर, ब्लोश्के, श्वात्स और माइनिंग बटालियन के कई लान्स कारपोरल भी मौजूद थे। इनके अलावा वहा दुभापिया शूर्का रैवन्द, हाप्तवाह् टमिस्टर का रसोइया और लेफ्टिनेंट श्वदे का मुख्य रसोइया भी था।

उनके बाद पुलिस-कमचारिया, और उन जमन और रूमानियाई सनिको की कतार थी जा इधर से होकर मोर्चे पर जा रहे थे। उनक पीछे सशस्त्र जमन पुलिस के सिपाहिया की कतार थी। इधर इन सैनिका की चमचमाती वर्दिया और उधर बाकी हॉल मे खडे और वठे स्थानीय व्यक्तिया के गन्दे कपडे, फूहड टापिया, सिर के रूमाल। वहा फेनबाग उपस्थित न था। उसके पास बहुत काम था और उस मनारजन का शौक भी न था।

'प्रतिष्ठित महमाना' के सामने एक पुराना और भारी परदा टगा था जिसपर सोवियत सघ के राजचिह्न और हसिया हथौडे का चित्र वना

था। जब घटी १ मात्र गाय परदा उठा तो रगमच के पीछे, स्थानीय चित्रकारो द्वारा रचित पचूरर या एक बडा-सा रगीन छवि चित्र दिखाई पडा। चित्र में मनपसन्द-दाय तो या ही, पर चहरा असली स बहुत कुछ मिलता-जुलता था।

नाटक का आरम्भ एक पुराने मञ्चाभिनय प्रदर्शन से हुआ, जिसमें वाया तुर्केनिच ने वधू के बूढे बाप की भूमिका में काम किया। परम्परा, और कलात्मक सिद्धान्तो का अनुसरण करते हुए, साज-सज्जा स वह बूढ बागवान दनीलिच की तरह दिखाई पड रहा था। श्रास्नोदान के लोगा न तालिया बजा बजाकर अपने इस प्रिय पात्र का स्वागत किया और प्रदर्शन के अन्त तक उत्साह से भरे रहे। जमन नहा हस क्योकि हाप्तवाह्टमिस्टर ब्रूक्नेर के चेहरे पर गभीरता थी। जब प्रदर्शन समाप्त हुआ तो मिस्टर ब्रूक्नेर ने दो-एक बार अपनी हथेलिया सटायी और तब जमना न भी तालिया बजायी।

उसके बाद वाद्य आर्केस्ट्रा ने 'शरद-स्वप्न' वाल्ज और 'जाऊ क्या मै नदी किनारे पर' गीत की धुन बजायी। इस आर्केस्ट्रा में नगर के दो सवश्रेष्ठ गितारवादको—वील्या पत्रोव और सेर्गेई लेवाशाव—ने मुख्य भाग लिया।

तब क्लब मनेजर और कायक्रम-सचालक स्तखोविच मच पर आया। दुबला-पतला स्तखोविच काला सूट और चमचमाते हुए बूट पहने था।

"ल्युबोव शेव्त्सोवा, लुगान्स्क प्रादेशिक रगमच की अभिनेत्री!"

दशको ने तालिया बजानी शुरू की।

ल्यूबा अपनी नीली रेशमी पोशाक मे मच पर अवतरित हुई। उसके जूते भी पोशाक से मेल खा रहे थे। उसने पहले तो कुछ करुण गीत गाय और बाद मे खुशी के गीत भी। वाल्या बोर्त्स पियानो पर सगत कर रही थी, किन्तु पियानो को ठीक करने की सख्त जरूरत थी। ल्यूबा को अपने

प्रदशन में बडी सफलता मिली और दशका ने तालिया बजा बजाकर उसे कई बार मच पर बुलाया। वह एक बार फिर फुदकती हुई मच पर आयी। इस बार वह अपनी भडकीली पोशाक और हल्के रग के जूत पहने थी। वह मुहबाजा बजाती हुई एक जटिल नाच नाचने लगी। उसके सुघड पैर बडी तेजी से थिरक रहे थे। जमन खुशी से चीख उठे और तालिया बजा बजाकर अपनी प्रसन्नता प्रगट करने लगे।

स्तम्रोविच फिर मच के बीचोबीच आ गया।

"जिप्सी रोमासा की भडत! व्लादीमिर ओस्मूखिन। गितार पर सगत कर रहे ह सेर्गेई लेवाशाव।"

वालोद्या मच पर आते ही बाह झुला भुलाकर और सिर आगे को बढाये बडी फुर्ती से नाचने लगा। वह गा रहा था—'मेरी मा, मेरी मा, मै कितना अकेला हू!" सेर्गेई लेवाशोव मुह लटकाये उसकी सगत कर रहा था। और शतान की भाति उसके पीछे पीछे चल रहा था। दशकगण हस रहे थे। जर्मन भी हस रहे थे।

वोलोद्या ने और एक गीत गाया उसने बडे अस्वाभाविक ढग स अपना सिर घुमाया और अपना चेहरा फ्यूरर के चित्र की ओर करके गाने लगा।

> बतला, बतला, अरे छिछारे बतला—
> कहा कि तेरे सग-मघाती, और कहा से आया?
> अभी अभी सूरज की किरने आग बनेगी,
> और, मिलेगा पुरस्कार जो तुझे चाहिए—
> हा, हा तू ऐसा सोयेगा, फिर न उठेगा सोकर!

दराकगण अपनी अपनी कुसिया पर स उछल पडे। सभी उत्साह से भरकर चिल्ला रहे थे और वोलोद्या को बार बार मच पर आना पड रहा था।

प्रदशन के अन्त में कोवल्योव के नेतृत्व में सरकस के खेल भी दिखाये गये।

इधर कसट चल रहा था, उधर ओलेग और नीना 'ताजा समाचार' लिख रहे थे। समाचार में कहा गया था कि मध्य दोन क्षेत्र में सावियत सेना ने बडा ज़ोरदार हमला किया है और नोवया कलीत्वा, कन्तेमीरोव्का और बागुचार पर फिर से कब्जा कर लिया है। ये वे स्थान थे जिनपर, जुलाई मे, दक्षिण मे प्रवेश करने के कुछ ही पहले, जमनो ने अधिकार कर लिया था।

ओलेग और नीना रात भर उस समाचार की प्रतिलिपिया बनाते रहे। सुबह के समय सहसा उन्हे अपने सिरो पर हवाई जहाजो के इजनो की भनभनाहट सुनाई दी। उनकी विशेष ध्वनि से चौककर वे बाहर अहाते में आ गये। उन्होंने तुरन्त ही पहचान लिया कि स्वच्छ, पालेदार वायु का सीना चीरते हुए सावियत बमवषक विमान नगर से होकर गुजर रहे ह। वे मन्द गति से उड रहे थे। हवा में उनके इजनो की भनभनाहट गूज रही थी। वे कही वारोशीलोवग्राद के निकट बम गिरा रह थे। विस्फोट की धमक क्रास्नोदोन मे भी सुनाई पड रही थी। दुश्मन के लडाकू विमानो ने सोवियत बमवषको का कोई मुकाबला नही किया था। विमानमार तोपो के मुह काफी दर के बाद खुले थे क्योकि उस समय तक बमवषक विमान, उसी मद गति से एक बार फिर क्रास्नादोन के ऊपर से उडकर वापस जा रहे थे।

अध्याय १८

१६४२ के नवम्बर और दिसम्बर के ऐतिहासिक महीनो में सोवियत जन, खासकर वे जो जमन सेना के पिछवाडे में रह गये थ, उस घटना को पूरी तरह देख नही पाते थे, जिन्हे विश्व के इतिहास न एकमात्र

प्रतीकात्मक शब्द 'स्तालिनग्राद' के रूप में जनता के मस्तिष्क पर अंकित कर दिया था।

स्तालिनग्राद की ख्याति केवल इस कारण नही थी कि वोल्गा नदी के सकरे से तट ब्रध की रक्षा अद्वितीय साहस के साथ की गयी थी, जिसकी मिसाल इतिहास मे नही मिलती। दुश्मन ने अपने असख्य सैनिक, सभी प्रकार के शस्त्रा से सज्जित सेनाए इस नगर के विरुद्ध लगा दी थी। नगर को नष्ट भ्रष्ट कर डाला गया था। मानव इतिहास में इतने बडे हमले की मिसाल ढूढना मुश्किल है।

स्तालिनग्राद इस बात का प्रमाण था कि नयी सावियत प्रणाली के अधीन प्रशिक्षित सेनानायको ने अपने अभूतपूर्व नेतत्व का परिचय दिया था। छ सप्ताह से भी कम समय मे सोवियत सेनाओ ने, तीन चरणो मे, एकीकृत और साहृश्य योजना पूरी कर ली थी। प्रत्येक चरण, सय कौशल का उत्कृष्ट उदाहरण था और वोल्गा एव दोन के बीच स्तेपी के विशाल क्षेत्रा में कार्यान्वित किया गया था। इस प्रकार सेनाओ ने दुश्मनो के २२ डिविजना का घेर लिया था और ३६ के पाव उखाड दिये थे। और घिरे हुए दुश्मनो का सफाया करने अथवा उन्हे बदी बना लेने के लिए सिफ महीने भर की जरूरत और रह गयी थी।

स्तालिनग्राद नयी, सावियत प्रणाली के अधीन पले हुए लोगो की सगठन प्रतिभा का सब से अच्छा प्रमाण था। इसे समझने के लिए उस अथाह जन शक्ति और सन्य-सज्जा की कल्पना करन की जरूरत है, जिसे इस एकीकृत याजना, इस एकीकृत इच्छाशक्ति के अनुसार गतिशील बनाया गया, सामग्री और जन शक्ति के उन विशाल सचया की कल्पना कीजिये, जिन्हे इस याजना की क्रियान्विति के लिए सगृहीत तथा नव निर्मित किया गया। विशाल स्तर पर जन समूह तथा सामग्री को मार्चे तक पहुचाने के लिए सगठन के उन प्रयासो तथा भौतिक साधनो की कल्पना कीजिये,

और अन्तत, इसके लिए, विश्व ऐतिहासिक महत्त्व के शिक्षण एवं प्रशिक्षण के उस काय की भी कल्पना कीजिये, जो इसलिए जरूरी था कि राजनीतिक ज्ञान और सैन्य अनुभव रखनेवाले, सर्जेंट से लेकर मार्शल तक सभी हजारों-हजार नेता और कमांडर इस महान काय का नेतृत्व कर सके और उसे करोड़ो सशस्त्र व्यक्तियों के एक सोद्देश्य आन्दोलन में परिवर्तित कर सके।

जिनके अनुसार मोर्चे पर रसद, कपडे, हथियार, ईंधन आदि जुटाये गये।

स्तालिनग्राद, अराजकता से परिपूर्ण प्राचीन समाज पर नये समाज की अर्थव्यवस्था और उसकी एकीकृत योजना की श्रेष्ठता का उच्चतम द्योतक था। देश के अन्दर दुश्मन की करोडो आदमियों की सशस्त्र और सुसज्जित सेना घुस आयी थी। उसे यूरोप के अधिकाश देशो के उद्योगो और खेतीबारी की उपज उपलब्ध थी। इसपर वह डेढ साल तक अभूतपूर्व भौतिक विनाश और तबाही ढाती रही थी। प्राचीन किस्म के किसी भी राज्य के लिए आर्थिक दृष्टि से ऐसे आक्रमण की समस्या का हल कर पाना असम्भव होता। स्तालिनग्राद, पूजी की जजीरो से मुक्त हुई जनता की आध्यात्मिक शक्ति और ऐतिहासिक सूझ की अभिव्यक्ति था। इतिहास के पन्नो मे उसने इसी रूप में प्रवेश किया था।

अन्य सोवियत जनो की भाति, इवान फ्योदोरोविच प्रोत्सेको भी उस घटना के असली पैमाने से वाकिफ न हो सका था, जो उसने स्वय देखी थी, अथवा जिसमे उसने कोई भाग लिया था। किन्तु वह, रेडियो और लोगो की मार्फत, उक्राइनी छापामार हेडक्वाटर और दक्षिण-पश्चिमी मार्चे की सैन्य परिषद् के सम्पर्क में रहता था। इस परिषद् को उक्राइनी क्षेत्र में सबसे पहले बढना था। इसी लिए वह, वोरोशीलोवग्राद क्षेत्र में दुश्मन से लडनेवाले साधियन जनो की अपेक्षा, सोवियत सेनाओ के आक्रमण के स्वरूप और परिमाण का कही अधिक समझता था।

वोरोशीलोवग्राद नगर में चार खुफिया जिला पार्टी कमिटिया थीं। प्रोत्सेको को उन्हे सक्रिय बनाना था। यह कार्य कर चुकने के बाद, वहा उसके रहने की कोई जरूरत न रह गयी थी। जिस समय यह खबर आयी कि सोवियत सेना जर्मन मोर्चा तोडती हुई मध्य दोन मे घुस आयी है, उस समय तक उसने अपने ठिकाने कई बार बदले थे। नवम्बर के अन्त से लेकर वह मुख्यतया वोरोशीलोवग्राद प्रदेश के उत्तरी जिला मे काम करने लगा था।

इवान फ्योदोरोविच को इस समय, विशेष तौर पर उत्तरी जिलो में काम करने के लिए किसी ने उकसाया नही था। उसने अपनी सहज बुद्धि और अन्तश्चेतना के आधार पर समझ लिया था कि उसकी उपस्थिति उस क्षेत्र मे ज्यादा जरूरी है जहा बढती हुई सोवियत सेनाए सबसे निकट पडती हा और जहा, छापामार दस्ता और नियमित सोवियत सेनाओ के बीच सैन्य समन्वय, अन्य किसी स्थान की अपेक्षा, अधिक शीघ्र स्थापित हो सकता हो।

इवान फ्योदोरोविच ने जिस घडी की इतनी मुद्दत से प्रतीक्षा की थी, वह अब पास आती जा रही थी और वह घडी थी जब कि एक बार फिर छोटे छोटे छापेमार दला को ऐसे ऐसे दस्ता में विलय कर देना सभव हो सकेगा जो बडे पैमाने पर काय कर सकेगे।

इस समय उसकी कारवाइया का अड्डा वेलोवोद्स्क जिले के एक गाव में मार्फा कानियेंको के किसी रिश्तेदार के मकान में था। वही मार्फा का पति, गाड्स सर्जेंट गोर्देई कोनियेका भी छिपा हुआ था। उस अभी हाल ही में दुश्मना की कैद से छुडाया गया था। कानियको ने उस गाव में एक छापामार दल का सगठन किया था। यह दल अपने सामान्य कार्यों के अलावा, हर प्रकार के खतरो से भी इवान फ्यादोरोविच की रक्षा करता था। वेलावोद्स्क जिले के सभी छापामार दल उस सरकारी फाम के

डाइरेक्टर के कमान में थे, जहां गर्मियों में श्रास्नोदोन के गोर्की स्कूल के विद्यार्थियों ने काम किया था। इसी व्यक्ति ने बच्चों को खतरनाक क्षेत्रों से हटाने के लिए मरीया अन्द्रेयेव्ना बात्सं को अपनी आखिरी लारी दे दी थी। प्रोत्सको ने उसी को निर्देश दिया था कि वह वेलावोदस्क् ज़िले की सभी टोलियों को इकट्ठा करे और दो सौ व्यक्तियों का एक दस्ता बनाये।

मध्य दोन क्षेत्र में सोवियत सेनाओं के एक नये और बहुत बड़े हमले के बारे में दुनिया को खबर होने से पहले ही, प्रोत्सको के रेडियो आपरेटर को संकेतलिपि में यह खबर मिली थी कि उत्तर-पूर्व से नोवाया कलीत्वा – मोनस्तीरश्चिना क्षेत्र पर, और पूर्व से चीर नदी पर बोकोव्स्काय क्षेत्र में, जर्मनों का मोर्चा तोड़ दिया गया है। उसी समय इवान फ्योदोरोविच के लिए भी यह आदेश दिया गया था उसे उत्तर में कन्तेमीरोव्का और मार्कोव्का तथा पूर्व में मील्लेरोवो, ग्लुबोकाया, कामेंस्क और लिखाया में दुश्मनों की संचार-लाइनें नष्ट करने के लिए छापमारों की समस्त उपलब्ध शक्ति का प्रयोग करना है। यह मोर्चे की सैन्य परिषद का आदेश था।

"हमारे भी दिन आ गये हैं," प्रोत्सेको ने विजयपूर्ण गर्व से कहा और रेडियो आपरेटर को सीने से चिपका लिया।

उन्होंने भाइयों की तरह एक दूसरे को चूमा। तब उसने रेडियो आपरेटर को धीरे-से धक्का दिया और बिना ओवरकोट पहने जल्दी से घर के बाहर निकल गया।

रात स्वच्छ थी। ठिठुरन भरी, तारों भरी। पिछले कुछ दिनों से काफी बर्फ गिरी थी और गांव की छतें तथा दूरस्थ पहाड़ियां बर्फ की मोटी चादर ओढे ऊंघ रही थीं। प्रोत्सेको मुंह खोले हुए बर्फीली हवा में सांस ले रहा था। सर्दी तो जैसे उसे लग ही न रही थी। उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे जो गालों पर जमते जा रहे थे।

उसे घर पहुचने में कोई एक घटा लग गया। वह अपने साथ रेडियो आपरेटर और उसके सामान को भी लेता आया। बलवान गार्ड्समैन, गोर्देई कोनियेंका अपनी कारवाइयो के बाद कुछ ही घटे पहले लौट आया था और सो रहा था। इन कारवाइयो के दौरान मे कई खेतिहर बस्तियो की पुलिस चौकियो का सफाया किया गया था। किन्तु जसे ही इवान प्यादारोविच ने उसका कधा छुआ और उसे खबर सुनायी कि उसकी नीद काफूर हो गयी।

"मानस्तीरिचना के निकट!" वह चीख पडा और उसकी आखो मे चमक आ गयी, "म उसी मार्चे से तो आया हू। वही तो मुझे कद किया गया था। तो फिर थाडे ही दिना में हमारी फौज यहा भी पहुच जायेगी। मेरी बात याद रखना।" बूढा सनिक उत्तजना से भरकर सिसका और जल्दी जल्दी कपडे पहनने लगा।

गार्देई कोनियेंका को सभी उत्तरी छापेमार दलो का नायक बना दिया गया था। उसे तुरत ही माकाल्का–कान्तमीराव्का क्षेत्र मे कारवाई पर जाना था। प्रात्सको, रेडियो आपरेटर और दो छापेमारो को गारादीश्चे पहुचना था, जो फाम डाइरेक्टर और उसके दस्ते की कारवाइयो का अड्डा था–अब प्रात्सको ने समझ लिया था कि समय आ गया है जब उसे स्थायी रूप से दस्ते के ही साथ रहना चाहिए।

प्रात्सका ने अपनी पत्नी की सहेली, माशा शूबिना को भी वोरोशीलावग्राद से अपने साथ ले लिया था। माशा ने प्रोत्सको की एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा में उसकी सदेशवाहिका का काम किया था। जसे कि प्रात्सेका ने आशा की थी, माशा बडी ही कत्तव्यनिष्ठ और पूरे लगन की औरत साबित हुई थी। वह उन कत्तव्यपरायण व्यक्तियो में से थी जो अपने दैनिक जीवन मे इतने अलग थलग रहते ह कि जन्मजात सगठनकर्त्ता की अनुभवी आखे ही, दूसरो की भीड मे से, उन्ह चुन सकती

। किन्तु एक वार चुन लिये लिये जाने पर ऐसे लोग काम कर सकन
ी इतनी अतिमानवीय सामथ्य का परिचय देते है, और साथ ही इतन
नि स्वाय हात ह, कि उनके प्रधाना और नेताओ द्वारा दिये गये कार्यों
का सपन्न करना मुख्यत उन्ही को सापा जाता है। ऐसे लोगा की सहायता
के विना सब स आवश्यक काय भी अधूरे और अपूण रह जात ह।

माशा शूविना काम मे इतनी फसी रहती थी कि उसके लिए रात
और दिन एक बराबर हो गये थे। जिन लोगो के साथ उसने काम किया
था, यदि वे यह समझने की काशिश करते कि माशा के जीवन और कार्यों
की सब से बडी विशेषता क्या थी तो उन्ह इस बात से जरूर आश्चय हुआ
होता कि किसी को याद नही कि वह कभी सोयी थी। यदि वह कभा
सायी भी थी तो इतना कम कि लगता मानो वह कभी न सोती हो।

इस औरत के दिल मे काम के प्रति उत्साह कूट कूटकर भरा था।
व्यक्तिगत रूप से उसके हृदय को जिस बात से राहत मिलती थी वह था
इस बात का ज्ञान कि वह अकेली नही है। हा, अपनी सहेली कात्या के
साथ उसका सीधा सम्पक न रह गया था, उसके साथ उसका सम्पक था
मार्फा कोनियेंको के जरिये। किन्तु माशा जानती थी कि उसकी सर्वोत्तम
और सच्ची सहेली कही पास ही रह रही है और वे दानो ही समान उद्देश्य
की प्राप्ति में लगी हुई हैं। माशा नि स्वाथ भाव से और पूणतया इवान
पयोदोराविच के प्रति वफादार थी क्याकि उसने उसे बहुतो में से चुना था
और उसपर विश्वास करता था। इस विश्वास के बदले वह उसपर अपने
प्राण तक निछावर कर सकती थी।

इस समय तरह तरह की महत्त्वपूण घटनाए हो रही था, जिनके
विकास में प्रोत्सका ने अपनी योग्यता भर पूरा याग दिया था। उन्ही
घटनाओ के बारे में सोचते हुए वह रवाना होने से पहल माशा का आखिरी
निर्देश दे रहा था।

"मार्फ़ा के यहा तुम्हे मित्याकिन्स्काया दस्ते का कमाडर मिलेगा। उसका कार्यक्षेत्र उन सडको पर पडता है जो ग्लुबोकाया और कामेस्क जाती है। उससे कहना कि तुरत रवाना हो जाय और रात-दिन कारवाइया करता रहे ताकि दुश्मन को सास लेने का मौका तक न मिले। मार्फा से कहना कि वह कात्या से कहे कि वह अध्यापिका की नौकरी छोड छाडकर यहा चली आये।"

"यहा, इस मकान मे?" माशा ने निश्चित तौर पर जानने के लिए पूछा।

"हा, इसी मकान में। और तुम इसके बाद बिना समय बरबाद किये क्सेनिया नातावा से मिलना। तुम रास्ता तो मालूम कर लोगी न?"

"हा।"

जिस समय प्रोत्सेंका ने माशा को उसकी ड्यूटी समझायी थी, उस समय उसने उसे एक पता दिया था—डाक्टर वलेन्तीना श्रोतोवा, प्रथम उपचार केंद्र, ग्राम उस्पेंका। वलेन्तीना की बहन, क्सेनिया, इस समय प्रोत्सको की पत्नी कात्या और दोनेत्स के दक्षिण स्थित समस्त जिला पार्टी कमिटिया के बीच सदेशवाहिका के रूप में काम कर रही थी।

"क्सेनिया से कहना अब कारवाई के इलाके लिखाया, शाख्ती, नोवोचेर्कास्क, रोस्तोव और तगनरोग जानेवाली सडके होगी," प्रोत्सको कहता गया, "कारवाइया रात दिन चलनी चाहिए ताकि दुश्मन को सास लेने का भी मौका न मिले। जिन क्षेत्रो में मोर्चा निकट हो, वहा आबादी वाली जगहो पर कब्ज़ा करके दुश्मन को उलझा लिया जाय। इस समय कात्या का मुख्य सम्पर्क-पता बदल गया है। अब से यह पता है—मार्फा का घर। अब नया सकेत शब्द है," उसने माशा के कान में कुछ कहा। "भूलोगी तो नही?"

"नही।"

वह एक मिनट तक सोचता रहा और तब बोला

'बस इतना ही।"

"तो अब?" माशा ने आखे उठाकर उसकी ओर देखा। उसके प्रश्न का असली अर्थ था, "और मेरे लिए भी कुछ?" किन्तु उसकी आखो मे कोई भी भाव न दिखाई दिया।

प्रोत्सका की याद अच्छी थी। अत उसने मन ही मन सोचा कि कहा उसने कोई बात छोड तो नही दी और तभी उसे याद आया कि उसने इस सबध मे तो कोई निर्देश दिया ही नही था कि खुद माशा को क्या करना है।

'हा जब तुम क्सेनिया के पास जाना तो जैसा वह कहे वैसा ही करना। तुम दोनो का मार्फा के साथ सम्पर्क रहेगा। हा उससे मेरी ओर से यह भी कह देना कि वह तुम्हे कही दूसरी जगह न भेजे।"

माशा ने आखे नीची कर ली। उसने कल्पना की कि वह अकेली जा रही है और उसके और उन जगहो के बीच की दूरी बढ गयी है जहा किसी भी दिन सोवियत सेना आ सकती है। हा, कुछ ही दिनो में, जिस जगह वह प्रोत्सका के साथ खडी है, वहा दुश्मन का एक भी सैनिक न रह जायेगा और वे जिस उज्जवल ससार की इतने दिनो से प्रतीक्षा कर रहे थे, जिसके लिए उन्होने अपनी जिन्दगी की बाजी लगा दी था, वह शीघ्र ही अवतरित होगा।

अच्छा तो माशा," प्रोत्सका बोला, "हममें से किसी के भी पास गाने के लिए वक्त नहीं। तुम्हें इन सब के लिए धन्यवाद"

उसने माशा को कधे पर हाथ लगाया और उसके होठ चूम लिये। एक क्षण के लिए वह उसकी बाहो में निश्चेष्ट पडी रही। वह अब उत्तर देने में भी असमर्थ हो रही थी।

जब वह घर से बाहर निकली तो जर्मन अधिकृत प्रदेश में रहनेवाली गरीब से ग़रीब औरतों की तरह कपडे पहने और कंधे पर स बला लटकाये थी। इवान फयादारोविच उस दरवाज़े तक पहुचाने नही आया था। अभी भोर होने मे काफी देर थी। उसके पैरो के नीचे की बर्फ कड़कड़ा रही थी। उसके वयस्क चेहरे पर तरुणाई झलक रही थी। यह मामूली-सी किन्तु दृढ़-सकल्प वाली औरत अपने लम्बे और एकाकी रास्ते पर बढ़ती जा रही थी।

जैसे ही हल्के कोहरे में से जाडे का भोर छनता हुआ दिखाई दिया कि प्रोत्सको अपनी छोटी-सी टोली के साथ बाहर निकल गया। सुबह शान्त थी और चारो ओर पाला पडा था। पृथ्वी और आकाश पर जीवन का जैसे कोई चिह्न तक न रह गया था—कोई आवाज़ तक नही, हवा की सरसराहट तक नही। जहा तक आख जाती थी, श्वेत शून्य और घाटियो के किनारे किनारे अथवा पहाडियो के ढलवानो पर हल्के, भूरे धब्बो की तरह झाडियो के झुरमुट दिखाई पडते थे। हर चीज बर्फ की मोटी-सी चादर के नीचे सो रही थी और ऐसा लग रहा था जैसे तकलीफ़, ग़रीबी और उदासी वहा खूटा गाडकर जम गयी है। इवान फयादोरोविच इस निस्सीम क्षेत्र को पार कर गया। उसका उफनता हुआ हृदय विजय के उल्लास से नाच रहा था।

जिस दिन भोर के समय प्रोत्सको अपने दस्ते मे शामिल होने गया था, उसके कोई पाच दिन पहले एक छापामार, गहरी रात गये प्रोत्सको की पत्नी कात्या को उस जगह लाया जहा प्रोत्सको, गोरोदीश्ची के बाहर एक सुनसान और एकाकी घर मे उसका इन्तज़ार कर रहा था। छापामार ने नकली फर के अस्तर वाला जर्मन सिरपोश पहन रखा था। उस विशाल प्रदेश में घमासान लडाइया हो रही थी जिनकी भयकर गरज से ज़मीन

और आसमान दोनो हिलने लगे थे। बारूद से काला हो गया प्रोत्सको, बैठा बैठा अपनी पत्नी का सुंदर मुखड़ा निहार रहा था।

चारो ओर जैसे खलबली, भाग-दौड और रोशनी की झिलमिलाहट सी दिखाई पड रही थी। रात मे प्रकाश राकेट की चमक और तोपो की धमक से निकलनेवाली आग आसपास कई कई मील तक दिखाई पडती थी। जमीन पर और वायुमडल में एक गडगडाहट-सी सुनाई पडती थी। वहा पर विशालकाय टैको की और विमानो की लडाइया जोर शोर से चल रही थी। प्रोत्सको के दस्ते के कुछ लोगो को यह खबर मिली कि अभी गार्ड्स पदक प्राप्त टैको का एक दस्ता दुश्मनो का घेरा तोडता हुआ उनसे मिलने आ रहा है, अत यह भ्रम उनके दिमाग से टूटता ही न था कि वे युद्ध में भडभडाते हुए टैको की धमक सुन रहे है। आसमान में बहुत ऊपर, सोवियत और जर्मन विमान सफेद धारियां बना गये थे जो पालेदार हवा में घटो निश्चल लटकी रही।

जर्मन सेना की टुकडियो के पृष्ठवर्ती सैनिक, त्रस्त-व्यस्त दशा में, पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम की ओर बडी सडको पर रेगते चले जा रहे थे। इधर देहातो की अनगिनत सडको पर प्रोत्सको के आदमियो का अधिकार था। जैसा घोर पराजय के समय प्राय होता है अर्थात् उस समय जब कि विजेता निरतर बढता जाता है—जर्मनो की सभी सेनाए, जिनमें मुकाबिला करने की कुछ भी शक्ति रह गयी थी, अपने सामने सब से बडे खतरे से जूझ रही थी। ऐसे नाजुक समय में वे छापामारो से भी वच भागने लगती थी।

छोटे-बडे, सभी सामरिक महत्व वाले इलाको में, और खासकर उत्तरी डानल्ज में गिरनाकी, बमोनाया, ख्यूत और मयगुन नदियो के किनारे के गावो में जर्मन टुकडियो छावनी डाले था। इन सभी इलाको में पहले ही से सभी किलेबन्दी की जा चुकी थी और इस समय जल्दी जल्दी नयी किलेबन्दी

की जा रही थी। किलेबन्दी के इन सभी स्थाना मे, उस समय भी जब सोवियत सेनाए उन्ह छोडकर आगे बढ गयी थी, वे सब उनके पीछे रह गये थे, भयानक लडाइया लडी जा रही थी। जमन फौजे आखिरी सैनिक तक लडती रही क्योकि उन्हे हिटलर का यह आदेश मिला था कि वे न तो पीछे हटे और न आत्मसमपण ही कर। खदेडी गयी या पहले पकडी गयी बची-खुची जमन टुकडिया, जो अब गावो की सडको पर सैनिको और अफसरा के छोटे-वडे दल बनाकर भाग रही थी छापेमारा का शिकार बन रही थी।

सोवियत सेना की बढती हुई रफ्तार का अदाज केवल इसी बात से लग जाता था कि जमना के पष्ठवर्त्ती हवाई अड्डे, जो कई महीनो से बेकार पडे थे, अब पाच दिना के अदर अन्दर असाधारण रूप से सक्रिय हो उठे थे और सोवियत वायु-सना की भयकर शक्ति का निशाना बन रहे थे। जमना ने शीघ्र ही दूर तक गोला फेकनेवाले अपने बमवपका को काफी पीछे के अड्डो मे हटा लिया था।

वे उस सुनसान घर मे अकेले थे। बाहर पाले के कारण कात्या का चेहरा अब भी लाल था। उसने भेड की खाल वाला अपना किसानी कोट अलग फेक दिया था। कम साने के कारण प्रात्सेका का चेहरा भारी लग रहा था किन्तु उसकी आखा मे शरारत चमकने लगी जब उक्रइनी भाषा मे उसने कहा--

"हमे गाड्स टैक दस्त के राजनीतिक विभाग द्वारा जो कुछ भी करने की सलाह दी गयी थी वह सब कुछ हम कर रहे है, और ठीक से कर रहे है,' वह हसा, 'कात्या, मने तुम्ह इसलिए बुलाया है कि इस काम मे म सिफ तुम्हारा ही विश्वास कर सकता हू। तुम अनुमान लगा सकती हो कि काम कौन-सा होगा?'

वह अब भी उसके प्रथम उद्वेगपूण आलिगन का और अपनी आशा पर

उसके चुम्बना का अनुभव कर रही थी। कात्या की आखें अब भी भीगी थी और चमक रही थी क्योंकि वे इयान पयादाराविच पर जमी थी। किन्तु प्रात्सका तो सिफ एक ही बात रह सकता था, वह जो उसके दिमाग पर छायी हुई थी। कात्या न तुरत ही, अपने बुलाये जाने के कारण का अनुमान लगा लिया था। वस्तुत अनुमान से काम लने की कोई भी जरूरत न थी, वह तो उसी समय समझ गयी थी, जिस समय उसने अपने पति पर निगाह डाली थी। कुछ ही घटों में वह फिर उसे छोडकर चली जायगी। कहा जायेगी, यह वह जानती थी। यह बात वह सत्त जानती थी, इसे वह स्वय समझने मे असमथ थी। वह उसे प्यार जो करती थी। अत यकतरीना पाव्लाव्ना ने उत्तर में, हामी भरते हुए अपना सिर हिला दिया और फिर अपनी गीली और चमचमाती हुई आखें उस पर गडा दी। कात्या के कठोर और मुझाये हुए किन्तु सुडौल चेहरे पर उसकी आखें बडी आकपक लग रही थी।

प्रात्सका उछलकर खडा हो गया। पहले यह देखा कि दरवाजा अच्छी तरह बद है या नही। उसके बाद नक्शा के बस्ते मे से, फुलस्केप पष्ठ के चौथाई आकार के कुछ महीन कागज निकाल लिये।

"देखो" उसने ये पन्न मेज पर बडी सावधानी से फला दिये, "तुम देख रही हो न कि मने सब कुछ सकेतलिपि में लिख दिया है। पर नक्शे को तो सकेतलिपि मे नही दिखाया जा सकता।"

हर कागज के दोनो ओर बहुत महीन पेंसिल से इतने छोट छोट अक्षर लिखे थे कि यह कल्पना करना कठिन था कि मनुष्य के हाथ ने इन्हे लिखा है। एक कागज पर वाराशीलोवग्राद प्रदेश का बढिया नक्शा खिचा था, जिस पर वग, छोटे वत्त और त्रिकोण बने थे। इस काम में कितना श्रम लगाया गया था इसका पता केवल इसी बात से लगता था कि लख का सब से बडा चिह्न खटमल से बडा न था और सब से छोटा

पिन के सिरे जितना। इन पन्ना में वह सारी सूचना सगृहीत थी जो पिछले पाच महीना मे एकत्र की गयी थी और जिसकी अच्छी तरह जाच की जा चुकी थी। नयी सूचनाओं का ब्यौरा भी इनके साथ दिया गया था। इस लेख मे वे विवरण थ जो प्रतिरक्षा के मुख्य मोर्चों, क़िलेबन्दी के स्थाना, तोपें रखने की जगहो, हवाई अड्डा, विमानमार तापे और लारिया रखने की जगहा तथा मरम्मत खाना के सबध में थे। इनके अलावा उनमें, फौजी टुकडियो के सैनिका की सख्या और शस्त्रास्त्रो के परिमाण आदि के भी ब्योर थे।

"उनसे कह देना कि वोरोशीलोवग्राद मे और दोन क किनारे किनारे बहुत-से परिवतन हुए होगे जो दुश्मना ने अपने को मजबूत बनाने के लिए किये होगे। दोनेत्स के सामने सब कुछ वैसा ही हागा जैसा मैंने लिख दिया है। यह भी बता देना कि मिऊस नदी को बडी मजबूती से किलेबन्द किया जा रहा है। इन सबस वे अपने निष्कर्ष स्वय ही निकाल लगे। मैं उन्हें क्या सिखाऊगा! हा, यह म तुमसे जरूर कह सकता हू कि यदि वे मिऊस को किलेबद कर रहे ह तो इसके माने यह है कि हिटलर को यह विश्वास नहीं कि उसकी फौज रास्ताव को अपने हाथ म रख सकेगी। समझी?'

इवान फ्योदोरोविच बडी खुशी से और ठहाका मारकर बस ही हस दिया जैसे वह अपने परिवार में और खास तौर से बाल-बच्चा के बीच उस समय हसता था, जब वह काम में व्यस्त न होता था। एक क्षण तक दोना ही भूल गये कि उनके आगे कैसी कैसी मुसीबत ह। प्रात्सका ने कात्या का मुह अपने हाथो में ले लिया और तनिक पीछे को हटकर, अत्यन्त वात्सल्यपूर्ण आखो से उसकी ओर देखते हुए फुसफुसाता रहा—

'आह, मेरी प्यारी, मेरी बुलबुल हा, हा," वह खुशी स

झूम उठा, "सबसे जरूरी खबर तो मैंने तुम्हें सुनायी ही नहीं—हमारी सेना उत्तर में घुस आयी है। देखो।"

अपने बस्ते में से उसने एक बड़ा-सा फौजी नक्शा निकाला जो कई टुकड़ों में गोंद से जुड़ा था। उसने नक्शा मेज पर फैला दिया। सब से पहले कात्या की निगाह कई आबादी वाले स्थानों पर पड़ी जिन्हें लाल, नीली पेंसिल से घेर दिया गया था। इन स्थानों को सोवियत सेनाओं ने, वोरोशीलोवग्राद प्रदेश के उत्तर-पूर्व के सीमावर्ती भागों में, अपने अधिकार में कर लिया था। कात्या का दिल तेजी से धड़कने लगा क्योंकि इनमें से कुछ जगहें गोरोदीश्ची से बिलकुल निकट थीं।

प्रात्सेको और उसकी पत्नी एक दूसरे से उस समय मिले थे, जब महान स्तालिनग्राद मोर्चे का दूसरा और तीसरा चरण पूरे न हुए थे और स्तालिनग्राद में जर्मन सेनाओं के इर्द गिर्द दूसरा घेरा पूरी तरह न डाला गया था। रात में इस आशय की खबर आयी थी कि स्तालिनग्राद की टुकड़ियों का भार कम करने के लिए कोतेल्निकोवो क्षेत्र में जर्मनों की जो नई टुकड़ियां भेजी जा रही थीं, उन्हें बुरी तरह से परास्त किया जा चुका था और यह खबर भी सुनने को मिली थी कि उत्तरी काकेशिया में सोवियत सेना ने हमला कर दिया है।

"हमारी टुकड़ियों ने लिखाया से स्तालिनग्राद जानेवाली रेलवे लाइन को दो स्थानों पर काट दिया है—यहां चेर्निशेव्स्काया में और तत्सीस्काया में," प्रात्सेको बड़े उत्साह से बोल उठा, "किन्तु मोरोजोव्स्की अब भी जर्मनों के अधिकार में है। और यहां, कलीत्वा नदी के किनारे किनारे की सभी बस्तियां अब हमारे हाथों में हैं। हम मील्लेरोवो-वोरोनेज रेलवे लाइन को पार करते हुए कन्तेमीरोव्का के उत्तर में यहां तक आ गये हैं, पर मील्लेरोवो अब भी जर्मनों के हाथ में है। और वहां उन्होंने बहुत जबरदस्त किलेबन्दी की है। पर लगता है जैसे हमारी सेनाएं दूसरे रास्ते से होकर

निकल ग्रायी ह–देखो न टक कितनी दूर तक चले ग्राये है।" वह नक्शे पर कमीश्नाया नदी के किनारे किनारे, उगली चलाते चलाते मील्लेरोवो के पश्चिम मे एक स्थान पर रुक गया ग्रौर कात्या की ग्रोर देखने लगा।

वह बडे ध्यान से नक्शे की ग्रोर दख रही थी, यह जानने के लिए कि गोरोदीश्ची के सबसे निकट सोवियत सेनाए कहा कहा पर है। उसकी ग्राखो में बाज जैसा भाव झलक रहा था। इन क्षेत्रो को कात्या इतने ध्यान से क्या देख रही थी, इसका कारण इवान फ्योदारोविच जानता था ग्रौर उसने कुछ भी न कहा। कात्या ने नक्शे पर से ग्रपनी ग्राखे उठायी ग्रौर एक क्षण के लिए शून्य मे ताकती रही। ग्रब उसके चेहरे पर विवेक, चिन्ता ग्रौर करुणा का सामान्य भाव झलक उठा था। इवान फ्योदारोविच ने एक ग्राह भरी ग्रौर महीन कागज पर बना हुग्रा नक्शा बडे फौजी नक्शे पर रख दिया।

"इसे ग्रच्छी तरह दख लो। तुम्हे यह सब याद रखना होगा, क्योकि ग्रपने रास्ते पर निकल पडने के बाद यह नक्शा फिर तुम्ह देखने को न मिलेगा," वह बोला, "ये कागज ग्रपने शरीर पर ही कही ऐसी जगह छिपा लेना कि किसी मुसीबत का सामना होने पर तुरत उन्हें निकाल कर निगल सको। ग्रौर हा, ग्रब ग्रपना नया परिचय भी याद रखना। मसलन् शरणार्थी, चीर से भागी हुई ग्रध्यापिका, लाल सनिको से पीछा छुडाने के लिए भागी हुई एक ग्रबला। जमना ग्रौर पुलिस वाला से तुम यही कहना। स्थानीय निवासियो को यह बताना कि तुम चीर की रहनेवाली हो ग्रौर स्तारोबेल्स्क में ग्रपने रिश्तदारो के पास जा रही हो क्योकि तुम ग्रपने ग्राप ग्रपना पेट भरने मे ग्रसमथ हो। ग्रच्छे लोग तुम्हारी दुदशा पर दुख प्रगट करेगे, तुम्ह पनाह देंगे ग्रौर बुरे लोग भी नही दुतकारेगे," प्रात्सका ने ग्रपनी पत्नी की ग्रोर देखे बिना, विनम्र स्वर मे कहा, 'याद रखना, जिस ग्रथ में हम मार्चे का समयत ह वमा काई मोर्चा ग्रब नही

है। हमारे टैंक इधर उधर बढ रहे हैं। जमना की सभी खिलवाड़िया के इर्द गिर्द चक्कर काटकर जाओ ताकि किसी की आंखों के सामने न पड़ो। किन्तु तुम्हें इधर उधर कुछ छिटपुट जर्मन मिल सकते हैं जिनसे खास तौर से होशियार रहना है। जब तुम इस रेखा पर, यहां, पहुंच जाओ तो रुककर हमारी फौज का इन्तजार करना। देखो मैंने यहां नक्शे में कुछ भी नहीं दिखाया है क्योंकि हमें इस क्षेत्र के बारे में कोई सूचना नहीं मिली। और तुम किसी से पूछ भी नहीं सकोगी। ऐसा करना खतरनाक होगा। किसी अकेली बुढ़िया की टोह में रहना और उसी के साथ टिक जाना। अगर लड़ाई बिलकुल सिर पर आ जाय तो बुढ़िया के साथ तहखाने में घुसकर दुबकी हुई बैठी रहना ..."

कात्या से यह सब कहने की कोई खास जरूरत न थी किन्तु वह उसकी सहायता करना चाहता था। वह केवल सलाह ही दे सकता था। अगर वह उसकी जगह खुद गया होता तो उसे कितनी प्रसन्नता हुई होती!

'जैसे ही तुम यहां से चल दोगी कि मैं खबर दे दूंगा कि तुम रास्ते में हो। और यदि तुमसे कोई मिलने न आये तो जो भी लाल सेना का सैनिक तुम्हें मिले और होशियार जान पड़े उससे कहना कि वह तुम्हें टैंक दस्ते के राजनीतिक विभाग तक पहुंचा दे।" उसकी आंखों में सहसा शरारत की चमक दिखाई दी और वह कहने लगा, 'और जब तुम राजनीतिक विभाग में पहुंच जाना तो यह न भूलना कि तुम्हारा एक पति भी है। उनसे कहना कि मुझे इस बात की खबर कर दें कि तुम सुरक्षित पहुंच गयी।"

"मैं उनसे यह तो जरूर कहूंगी, बल्कि यह भी कहूंगी, 'या तो लोग अपनी रफ्तार बढ़ाओ और मेरे पति की रक्षा करो या फिर मुझे ही जल्दी से उनके पास जाने दो,'" कात्या बोली और हंस दी।

सहमा प्रोत्सको खोया खोया सा दिखने लगा।

"म इस प्रश्न को उठाना ही नहीं चाहता था लेकिन अब देखता हू कि उठाना ही पडेगा," वह बोला। उसका चेहरा गभीर हो उठा था। "हमारी फौजें चाहे जिस गति से भी आगे क्यो न बढ़ें। मै उनकी प्रतीक्षा न करूगा। हमारा काम, जमनो के साथ साथ, पीछे हटना है। हमारी सेनाए यहा आयेंगी किन्तु हम तो भागते हुए जमनो के ही साथ रहेगे। जब तक आखिरी जमन हमारे वोरोशीलावग्राद प्रदेश से नहीं भाग जाता तब तक म उनसे लडता रहूगा। अन्यथा हमारे गुरिल्ला लडाके और स्तारोबेल्स्क, वोरोशीलावग्राद, क्रास्नोदोन स्वजान्स्क और क्रास्नी लूच के हमारे छापेमार मेरे बारे में क्या कहगे? और तुम्हारा मेरे पास यहा आना भी बेवकूफी होगी – उसकी कोई जरूरत नही। मेरी बात सुनो।" प्रोत्सको ने कात्या की ओर झुककर, उसकी नाजुक उगलियो को अपने कडे हाथो में लेकर दबाते हुए कहा

"दस्ते के साथ न रहना। वहा तुम्हारे लायक कोई काम नही। उनसे कहना कि वे तुम्हे मोर्चे की सैन्यपरिषद मे भेज दे। तुम वहा साथी ख्रुश्चेव से मिलोगी। उनसे कहना कि वे तुम्हे बच्चो से मिला दे। इसमे शर्माने की कोई बात नही। यह अधिकार तुम पहले ही प्राप्त कर चुकी हो। वस्तुत हम यह नहीं जानते कि बच्चे है कहा – सरातोव मे या कही और, तथा वे जीवित और स्वस्थ भी है या नही।"

कात्या ने उसकी ओर देखा और कोई जवाब न दिया। रात में दूर पर होती हुई लडाई उस छोटे-से अलग थलग मकान को हिलाये दे रही थी।

प्रोत्सको का हृदय अपनी सखा अपनी प्रिय पत्नी के प्रति प्रेम और सहानुभूति से विभोर हो उठा था। अकेला वही जानता था कि कात्या कितनी विनम्र, कितनी सुकुमार थी, कितने अतिमानवीय चरित्रबल से वह सभी, खतरो, कष्टो और अपमानो पर विजय प्राप्त करती थी किस प्रकार अपने निकट से निकट साथियो की मृत्यु को सहन करती थी। वह

चाहता तो यही था कि कात्या दूर, वहा रहें जहा लोग आजादी से रहते हो, जहा सुख हो, सद्भावना हो, बच्चे हो। पर कात्या तो दूसरी ही बात सोच रही थी।

वह अपने पति के चेहरे पर से अपनी आखें न हटा सकी। उसने अपना हाथ छुडाया और धीरे धीरे अपनी अगुलिया पति के सुनहरी बालो मे फेरने लगी। पिछले कुछ महीनो में उसके बाल कनपटिया के और भी पीछे हट गये थे, फलत उसका ललाट और भी ऊचा लगने लगा था। वह उसके कोमल, सुनहरी बालो को धीरे धीरे थपथपाते हुए बोली

"बोलो मत, कुछ मत कहो। म सब कुछ खुद जानती हू। वे जहा उचित समझें, मुझसे काम ले क्योकि म यह कभी न कहूगी कि मुझे कहीं भेज दिया जाय। जब तक तुम यहा हो तब तक म तुम्हारे इतने निकट रहूगी, जितना वे मुझे रहने देंगे।"

उसने कुछ आपत्ति करनी चाही किन्तु सहसा उसके चेहरे का तनाव दूर हो गया, उसने उसके दोनो हाथ पकडे और उनसे अपना चेहरा ढाप लिया।

कुछ क्षणो बाद उसने अपनी नीली आखें उसकी आखो में डालते हुए धीरे-से बोला—

"कात्या"

"हा, समय हो गया,' उसने कहा और उठ बठी।

अध्याय १६

कात्या को जो व्यक्ति पहुचाने गया था वह पनाम के गाव का एक बूढा था। लोग उसे "बूढा फामा" कहते थे। वह बनैले भालू की तरह बूढा था। यात्रा के आरम्भ में कात्या और बूढे फामा ने आपस निगाननाम था। यात्रा के प्रारम्भ में कात्या और बूढे फामा न आपस

में कुछ बातचीत की थी, जिससे काल्या को पता चल गया था कि उसका नाम कोनियेको था। वह इन क्षेत्रा में पुराने बसनेवाले उक्रइनी कुटुम्बा से ही एक कुटुम्ब का चिराग था, और गार्देई कोनियेको का एक दूर का रिश्तेदार।

आगे चलकर कोई बातचीत न हुई।

दोना रातभर देहात की सडको पर अथवा खुली हुई स्तेपी मे चलते रहे। जमीन पर पडी हुई बर्फ गहरी न थी अत चलना फिरना आसान था। समय-समय पर, क्षितिज के ऊपर से, उत्तर या दक्षिण मे लारिया-मोटरा की बत्तिया का प्रकाश पडता था, क्याकि उधर बडी बडी सडके थी। सडके दूर था, फिर भी ये दोना यात्री उनपर दौडती हुई कारो की भनभनाहट सुन सकते थे। मील्लेरोवो क्षेत्र मे परास्त की गयी जमन टुकडिया दक्षिण की ओर भाग रही थी। और उत्तर में वरान्निकोव्का क्षेत्र से अन्य जमन फौजें भाग रही थी। वरान्निकाव्का वह पहला गाव था जिसपर वोरोशीलोवग्राद प्रदेश मे सोवियत सेना न पुन अधिकार किया था।

काल्या और बढा फोमा पूव की ओर बढ रहे थे, किन्तु प्राय उन्हे मजबूरन, गावो और स्तेपी के किलेबन्दी वाले इलाका से घूमकर ही जाना पडता था। काल्या का लग रहा था जैसे यह सडक समाप्त ही न होगी, फिर भी दाना युद्धरत टुकडिया के निकट पहुच रहे थे—तापा के धमाके अब जोरा स सुनाई पडने लगे थे और छूटते हुए गाला स निकलनेवाली आग आसानी से दीख पड रही थी। प्रात काल बर्फ गिरने लगी जिससे सभी ध्वनियो के मुह बन्द-से हो गये थ और हर चीज निगाह स छिप गयी थी।

काल्या की पीठ पर सफरी झाला लटक रहा था और सारा बदन बर्फ स ढक गया था। वह शरणार्थिया-वाले फेल्ट के जजर बूट पहने अपने

रास्ते पर बढती जा रही थी। ऐसा लग रहा था कि उसके आसपास की हर चीज अवास्तविक है, हर चीज मायावी – रोये की टापी पहन और टापी के कनपट खोले हुए बढे फोमा की विशाल आकृति भी, उनके पैरो के नीचे बर्फ की चर चर भी, और उनकी आखो के आगे गिरती हुई मुलायम बर्फ भी। उसका मस्तिष्क शिथिल हो रहा था, वह कुछ कुछ स्वप्नावस्था मे पहुच गयी थी।

सहसा उसे अपने नीचे की जमीन सरत लगने लगी। बूढा फोमा रुक गया। कात्या ने अपना चेहरा उसके चेहरे से सटाया और उसने तत्काल समझ लिया कि इसी जगह उन्हे एक दूसरे से अलग होना है।

बूढे फोमा ने उसे चिन्ता और सहानुभूति की दृष्टि से देखा और अपने जजर और सावले हाथ से गाव को जानेवाली उस सडक की ओर इशारा किया जिस तक अब वे पहुच चुके थे। कात्या उसी दिशा में देखती रही जिधर फोमा ने इशारा किया था। सुबह का उजाला फैलने लगा था। बूढे ने अपने बडे बड हाथ कात्या के कधो पर रखे, कुछ आगे उसके पास बढा और उसकी दाढी-मूछें उसके गालो स रगड खाने लगी। तब वह फुसफुसाते हुए बोला

"सिर्फ पाच सौ गज। समझी?"

'अच्छा तो विदा," वह फुसफुसायी।

वह कुछ कदम चली और मुडकर देखने लगी। फोमा कार्निर्येको अब भी सडक पर खडा था। कात्या ने समझ लिया कि वह तब तक वहा खडा रहेगा जब तक वह उसकी आखो स ओझल न हो जायगी। पचास गज आगे बढने के बाद भी वह उस बूढे की बर्फ म ढकी आकृति देख रही थी। बूढा इस समय 'सान्ता क्लाज' जसा दीख रहा था। किन्तु जब वह तीसरी बार मुडी तो बूढा फोमा आखो से ओझल हो चुका था।

यह अन्तिम गाव था जहा कात्या किसी की मदद की आशा कर सकती थी। जहा यह गाव पार किया कि उसे पूणत अपने ऊपर ही निभर रहना होगा। गाव, अपने पूव में स्थित ऊचो ऊची किलबन्दिया के पीछे था। जमना न यह किलेबन्दी जल्दी जल्दी मे की थी और वह उनकी प्रतिरक्षा का एक अग थी। प्रात्सका ने कात्या का पहले ही बता दिया था कि गाव के सबसे आरामदेह मकाना पर किलेबन्दी का सचालन करनेवाले छाटे छाटे दस्ता के जमन अफसरा तथा हडक्वाटरा ने कब्जा कर रखा है। उसन अपनी पत्नी को आगाह कर दिया था कि यदि गाव में, कमीश्नाया नदी के किनारे किनारे की प्रतिरक्षा-स्थला से मजबूरन भागी हुई टुकडिया ने पनाह ले रखी होगी तो कात्या के लिए स्थिति जटिल भी हा सकती है। यह नदी दानत्स की एक सहायक नदी देकूल मे गिरती थी। यह नदी रास्ताव प्रदेश की सीमा के पास उत्तर से दक्षिण की ओर और कन्तमीरोव्का-मील्लेरावो रलमाग के समानान्तर बहती थी। कात्या का कमीश्नाया के किनारे स्थित एक गाव मे जाकर वहा सावियत फौज के आने का इन्तजार करना था।

उस अब गिरती हुई बफ के आवरण मे से गाव के पहले मकान की धूमिल आकृति-सी दिखाई देने लगी थी। वह मकाना की छता पर निगाह रख रखे, सडक से हटकर गाव में पिछवाडे से होकर पहुचन के लिए खता से हाकर जाने लगी। उसे बताया गया था कि उसे तीसरे मकान मे जाना ह। जिस समय वह उस छाटे-से मकान में पहुची उस समय दिन निकल आया था। उसन खिडकी की झिलमिली से कान सटाकर कुछ सुनने की कोशिश की। भीतर सन्नाटा था। उसने खिडकी को नही खटखटाया जैस उस निर्देश दिया गया था उसे केवल हाथ से खुरचा।

काफी देर तक उसे कोई उत्तर न मिला। उसका दिल जोरा स धडकने लगा। कुछ क्षणा के बाद उस भीतर मे कोई धीमी-सी आवाज,

जो शायद किसी छोटे बालक की रही होगी, सुनाई दी। वह फिर हाथ से खिड़की को खुरचने लगी। मिट्टी के फर्श पर चलते दो छोटे छोटे पैरों की आहट आयी। और दरवाजा खुला। कात्या अन्दर चली गया। कमरे मे घुप अंधेरा था।

"कहा से आ रही हो तुम?" एक बच्चे ने धीरे-से उक्रइनी में पूछा।

कात्या ने वही शब्द कहे जो पहले से तय हो चुके थे।

"मा, सुन रही हो न?" बालक बोला।

"चुप " एक औरत की फुसफुसाहट सुनाई दी। "तुम जरा भी रूसी नही जानते क्या? तुम यह भी नही सुन सकते कि वह रूसी है? मेहरबानी करके अन्दर आये और यहा बिस्तर पर बैठें। साशा, इन्हें अन्दर ले आओ।"

बालक की ठढी उगलियो ने कात्या का हाथ थामा और उसे कमरे से होकर ले आया। कात्या का हाथ गर्म था क्योकि वह दस्ताना पहने रही थी। तब उस औरत ने कात्या का हाथ पकडा और बालक ने छोड़ दिया।

"जरा ठहरो," कात्या बोली, "मैं अपनी जैकेट उतार लू"।

किन्तु उस स्त्री के हाथ ने कात्या का हाथ पकडा और उसे बिस्तर के पास खींच लिया।

"जसी हो वैसी ही बैठ जाओ। यहा सर्दी है। तुमने किसी जर्मन गश्तीपुलिस को तो नहीं देखा? उस औरत ने पूछा।

"नही।'

कात्या ने अपना सफरी झोला उतारा, सिर पर से शाल खोला और चप्पू नाडी। तब उसने नेड का खाल वाली अपनी जकेट के बटन खोले, उसके पल्ले पकडकर उसे खोला और उस औरत की बगल में

बिस्तर पर बैठ गयी। बालक भी बिस्तर पर चढ़कर अपनी मा से सट गया और कात्या ने, मातृ-सुलभ चेतना से, समझ लिया कि बालक अपनी मा के शरीर से सटकर गरमाहट का सुख लेने उसके पास पहुच गया था।

"गाव मे बहुत-से जर्मन है क्या?" कात्या ने पूछा।

"दरअसल बहुत तो नही है। अब ज्यादातर जर्मन गाव मे नही सोते, बल्कि दूर के तहखाना मे सोते है।"

"तहखाना में," बालक ने दात निकाले, "तुम्हारा मतलब है खाइया मे"।

"एक ही बात है। उनका कहना है कि उन्हे यहा कुमक पहुचायी जायेगी क्योकि वे यहा के मोर्चे पर जम रहेगे।"

"कृपया मुझे बताओ–तुम्हारा नाम गलीना अलेक्सेयेव्ना है?" कात्या ने उससे पूछा।

"मुझे सिर्फ गाल्या कहो। मै कोई बुढ़िया नही हू। मेरा नाम है गाल्या कानियेंको।"

कात्या को बताया गया था कि उसकी भेट एक और कोनियेंको से होगी।

'क्या तुम मोर्चा पार करके हमारे लोगो से मिलने जा रही हो?" धीरे-से बच्चे ने पूछा।

"हा। यह सभव तो है न?"

लडके ने तुरत कोई जवाब न दिया। तब जैसे गूढ भाव से बोला–

"लोगो ने यह किया था "

"अभी हाल ही में?"

लडके ने कोई जवाब न दिया।

"मै तुम्हे क्या कहकर पुकारू?" उस औरत ने पूछा।

"पासपाट में ता मेरा नाम वेरा लिखा है।"

"तो वेरा ही बलाऊगी। यहा के लोगा पर विश्वास किया जा सकता है। वे तुम्हारा विश्वास करगे। और यदि कोई नही करता ता वह तुम्ह कुछ कहगा भी नही। उनमें काई न काई बदमाश भी हा सकता है जा तुम्हार साथ गद्दारी कर सकता है, लेकिन अब वसा करने की हिम्मत किसे होगी?' वह औरत वाली और धीरे से हस दी। "सभी जानत ह कि शीघ्र ही हमारी फौज आ धमकेगी। अब कपड उतारकर बिस्तर पर लेट रहा। मै तुम्हे कुछ ओढा दूगी और तुममें गरमाहट आ जायगी। म अपन बेट के साथ साती हू, इस तरह कुछ गरमाहट मिल जाती है।'

'म तुम्हारा ओढना बिस्तर नही छीन सकती! नही, नही," कात्या जाश म आकर बाली। 'मै बेंच या फश पर पड रहूगी। आखिर मुन साना भी ता नही है।"

'तुम सो जाओ। अब तो हमारे उठन का वक्त हा गया है।"

उस घर में सचमुच बहुत सर्दी थी। सर्दी के आरभ स ही उसे एक बार भी गम नही किया गया था। यह बिलकुल स्पष्ट था। अब चूकि जमन यहा थे, अत कात्या पहले स ही समझती थी कि जमना के कारण घरा मे गर्मी की व्यवस्था न हागी। वह ता इस विचार का अभ्यस्त हा चुकी थी। गाव वाल लकडी की चलिया या घास-फूस पर, जा भी उनक हाथ लग जाता था, सीधा-सादा भोजन बना लते थ जई का दलिया या आलू पका लते थे।

कात्या न अपनी जकट और फल्ट के बूट उतारे और पड रही। औरत न उसक ऊपर एक गम रजाई डाल दी और ऊपर स भड का खाल की आट भी। कात्या का तुरत नीद आ गयी।

उसकी आखें तज और भयानक धमाके स खुल गयी। यह धमाका उसन अपना नींद म उतना न सुना था जितना अपन सारे शरीर में

अध्यापिका के रूप में काल्या को जिन्दगी भर उसी की उम्र वाले बच्चों से साबिका पड़ा था। उसने समझ लिया था कि बालक उसमें दिलचस्पी ले रहा है और चाहता है कि काल्या भी उसकी ओर ध्यान दे। लड़का अपनी प्रतिष्ठा के प्रति स्वाभाविक तौर पर सचेष्ट था। वह किसी भी भाव अथवा सहज से ऐसी कोई बात व्यक्त न करना चाहता था जो किसी भी प्रकार उसकी शिष्टता के अभाव की सूचक होती।

काल्या ने गाव के बाहर कहीं विमानमार मशीनगनों की भी भयानक गड़गड़ाहट सुनी। मानसिक उत्तेजना के बावजूद वह यह समझे बिना न रह सकी कि पास-पड़ोस में जमना के पास विमानमार तोपों का कोई बड़ा तोपखाना नहीं था जिसका अर्थ यह था कि क्लिवर्दियो के इस स्थान ने अभी हाल ही में गंभीर प्रतिरक्षा मोर्चे का महत्त्व प्राप्त किया था।

"काश हमारे लोग और जल्द आ जाते," काल्या बोली "हमारे यहा तो कोई तहखाना तक नहीं। जब हमारी फौजें भाग रही थी तो जमना के हवाई हमलों के समय हम या तो पड़ोसियों के तहखाने में छिपते थे या खुले मैदान में निकल जाते थे। हम ऊची ऊची घास में या खाइयों में पट पड़ जाते कानों को हाथ से कसकर बंद कर लेते और बम इन्तजार करते रहते

एक, दो, तीन कई बम गिरे। छोटा-सा मकान हिल उठा। एक बार फिर सोवियत विमान निचाई पर आये और फिर कोण बनाते हुए सीधे आसमान से जा लगे।

हाय हमारे अपने हमारे प्यारे!" काल्या चीखी और अपने कानों पर दोनों हाथ रखकर फर्श पर उकड़ू होकर बैठ गयी।

विमानों की आवाज से फर्श पर उकड़ू बैठ जानेवाली यह औरत, जिले के मुख्य छापामार संपर्क-केन्द्र की गृहप्रबंधिका थी। उसके घर से

होकर लाल सेना के वे सैनिक गुज़रा करते थे जो कैद से भाग निकलते थे या दुश्मनों का घेरा तोडकर निकल जाते थे। कात्या जानती थी कि गाल्या का पति लडाई के शुरू शुरू में ही मारा गया था और उसके दो बच्चे जर्मनी के आधिपत्य-काल में रक्तातिसार की बीमारी से मर गये। खतरे से बचने के लिए यह औरत खाट से फर्श पर बैठ गयी थी और कान बन्द कर लिये थे। उसका ख्याल था कि शोर न सुनेगी तो खतरा टल जायेगा। उसकी इस सादगी और सहज मानवीयता को देखकर कात्या बडी प्रभावित हुई और भागकर उसकी कमर में बाहें डाल दी।

'डरो मत, डरो मत ' कात्या ने द्रवित होकर कहा।

"मैं डरती नही, मैं तो वही कर रही हू जिसे करने की उम्मीद किसी भी स्त्री से की जाती है।' गाल्या ने अपना शान्त चेहरा कात्या की ओर उठाया और मुस्करा दी। उसके चेहरे पर बहुत से काले तिल थे।

कात्या ने सारा दिन घर में ही बिताया। अधेरा होने तक प्रतीक्षा करने में उसे जैसे अपनी सारी मनःशक्ति लगा देनी पडी—वह जाकर सोवियत सेना से मिलने के लिए इतनी उत्सुक जो थी! दिन भर सोवियत बमवर्षक और लडाकू विमान गाव के बाहर की किलेबदी पर बम बरसाते रहे। सभी चिह्नों से पता चलता था कि बमवर्षकों की सख्या अधिक न थी—शायद उनके दो या तीन दल रहे होगे। वे दो-तीन बार आये और बम गिरा चुकने के बाद फिर से पेट्रोल और बम भरने के लिए लौट गये और पुन बम बरसाते नज़र आये। तडके सुबह से, जब से इनके कारण कात्या की आखे खुली थी, रात होने तक उनका यही रवैया बना रहा।

गाव के ऊपर, काफी ऊचाई पर, सोवियत लडाकू विमानों और जर्मन 'मेस्सेर' विमानों के बीच हवाई लडाइया चला करती। जब तब सोवियत बमवर्षक, बहुत ऊचाई पर भनभनाते हुए जर्मनों की दूरस्थ

प्रतिरक्षा पंक्तियो पर हमला करने के लिए, निकल जाया करते। शाय
वे दोनेत्स मे गिरनेवाली देकून नदी के किनार किनारे के उन स्थला प
बम बरसा रहे थे जो मित्याकिन्स्काया दस्ते के अड्डे स दूर न थे। यह
पर, एक कदरा में, प्रोत्सका की 'गाज़िक' मोटर छिपाकर रख
गयी थी।

दिन मे कई बार जमन आक्रामक-विमान भी कही पास हो-शाम
कमीशनाया नदी के उस ओर बम गिराने के लिए गुज़रा करते थे। उ
दिशा से तोपा की गडगडाहट बराबर सुनाई पडती थी।

एक बार, जमन किलेबन्दिया के उस पार के क्षेत्र मे सहसा ता
की गोलाबारी शुरू हो गयी। इसी क्षेत्र से होकर तो कात्या को जा
था। गोलाबारी पहले कुछ दूरी से, फिर और भी पास आती हुई लग
और ठीक जिस समय वह अपनी चरम सीमा पर थी कि सहसा बन्द
गयी। शाम के समय गोलाबारी फिर शुरू हुई और गोले गाव की स
पर भी फटने लगे। कुछ मिनटो तक जवाब मे जमन तोपा की गडगड
इतने ज़ोरा स सुनाई दी कि खुद मकान तक मे बातचीत करना अस
हो गया।

कात्या और गाल्या ने एक दूसरे पर सारगर्भित दृष्टि डाली,
नन्हा साशा बराबर शून्य में देखता रहा और उसके चेहरे पर रहस्
भाव झलक रहा था।

हवाई लडाइया और विमानमार तोपा की गडगडाहट के व
स्थानीय लोग या तो अपने अपने घरा में दुबके रहे या तहखाना
इनकी वजह से कात्या की घर आनेवाले आकस्मिक मुलाक़ातिया ग
न हुईं। प्रत्यक्षत जमन फौज अपने सर्वाधिक आवश्यक कार्यों में
थी। सिवा इस छोटे-से घर में, जहा इस समय दो औरत और
छोटा-सा बालक थे, गाव में अन्यत्र जम कोई जीवा न रह गया

कात्या को फिर से सडक पकडने के लिए जितना ही कम समय बाकी रहता जा रहा था, अपनी अनुभूतियो पर नियत्रण रख सकना उसके लिए उतना ही कठिन हो रहा था। यह घडी उसके जीवन मे निर्णायक थी और सभवत प्राणनाशक सिद्ध हो। उसे जिस रास्ते पर जाना था उसके बारे में उसने गाल्या से पूछा और यह भी जानना चाहा कि कोई उसे वह रास्ता दिखा सकता है, किन्तु गाल्या ने केवल यही कहा—

"तुम परेशान मत हो, अच्छी तरह आराम करो। बाद मे चिन्ता करने के लिए तुम्हारे पास बहुत समय होगा।"

सभवत गाल्या स्वय कुछ भी न जानती थी। उसे केवल कात्या के लिए खेद हो रहा था। इससे कात्या की मानसिक व्यग्रता ही बढी। फिर भी यदि उस समय घर मे आकर किसी ने कात्या से बातचीत की होती तो उसे यह पता कभी न चलता कि कात्या के मन मे कौन कौन से विचार उठ रहे थे।

साझ घिरती आ रही थी। सोवियत बमवर्षकों ने अपना अन्तिम आक्रमण पूरा कर लिया था और विमानमार तोपो के मुह बन्द हो गये थे। चारो ओर नीरवता छा गयी थी पर उस विशाल भूप्रदेश के उस पार युद्ध और सहार की ज्वाला धधक रही थी।

नन्हे साशा ने बेच के नीचे से अपने पैर हटाये। उसने दिन में किसी समय पैरो मे फेल्ट के बूट पहन लिये थे। अब वह दरवाजे के पास गया और चुपचाप भेड की खाल की अपनी पैवद लगी जैकेट से जूझने लगा। इस जैकेट की खाल कभी सफेद रही होगी पर अब वह बहुत गदी हो गयी थी।

"वेरा, यही समय है," गाल्या बोली, "ठीक यही समय। सब

ग्नान आराम कर रह हैं। इस वक्त हमारे कुछ लोग यहा आयेंगे। अच्छा हो यदि तुम उनके सामने न पडो।"

टुप्पुट म उसके चेहरे पर का भाव पढना मुश्किल था। उसकी आवाज रूखी थी।

'यह लडका कहा जा रहा है?" काया ने पूछा। उसका हृदय आशका से भर उठा।

'कोई फिक्र न करो, कोई फिक्र न करो," गाल्या ने शीघ्रता से कहा। वह घर में इधर-उधर दौडी और अपने बेटे और काल्या का कोट पहनने में मदद देने लगी।

एक क्षण तक काल्या उस बालक के पीले पडे हुए चेहरे को बडी ममता के साथ देखती रही। तो यही है वह मशहूर पथप्रदर्शक, जो जर्मनो के आधिपत्य के पाच महीनो में लोगो को दुश्मनो की किलेबन्दी की गहराइयो में से निकाल निकालकर ले जाता रहा है, जिसने सकडो और शायद हजारो सोवियत जनो को—भले ही वह एक एक करके आये हो या दलो मे अथवा टुकडियो में उनकी मजिल तक सुरक्षित पहुचाया है। इस समय वह काल्या की ओर नही देख रहा था। वह अपना जकेट पहन रहा था और उसकी एक एक गतिविधि मानो कह रही थी—"तुम्हे मेरी ओर देखने का काफी मौका मिला था, फिर भी तुम एक बार भी अनुमान न लगा सकी। और अब अच्छा हो यदि तुम मेरे काम म बाधा न पहुचाओ।"

'तुम जरा ठहरो। म इधर-उधर निगाह डालकर इतमीनान कर लू, फिर आकर तुमसे कहूगी।' गाल्या ने काल्या का झोला उसकी बाहो में डालकर उसे पीठ पर रखने मे उसकी सहायता की और फिर उसे कायदे से जमा दिया। "अभी एक-दूसरी से विदा हो ले बाद में शायद समय न मिले। भगवान तुम्हारी यात्रा मगलमय करे।'

दोनो ने एक दूसरे को चूमा और तब गाल्या बाहर चली गयी। कात्या को इस बात पर कोई आश्चय न हुआ कि मा ने बेटे का प्यार नही किया, उससे विदाई या अभिवादन भी नही कहा। कात्या को अब किसी भी बात पर कोई आश्चय न होता था। वह जानती थी कि ये शब्द कि "वे इसके आदी हो गये ह ' यहा ठीक नही बठते थे। यदि स्वय उसे अपने बटे को इस प्रकार के साधातिक एव खतरनाक काम के लिए भेजना पडता तो वह बिना उसे चूमे या उसके लिए आसू बहाये न रहती। साथ ही उसे यह भी मन ही मन स्वीकार करना पडा कि गाल्या इस समय ठीक ही व्यवहार कर रही है। नन्हे माशा ने शायद मा के प्यार-दुलार को स्वीकार करने से भी इन्कार कर दिया होता, शायद वह उसका विरोध भी करता, क्योकि इस ममता से उसके काम में बाधा आ पडती थी।

कात्या को उसके साथ अकेले जाना बडा अटपटा लग रहा था। उसे लगा कि वह चाहे जो भी बात कहे वह बनावटी ही प्रतीत होगी। फिर भी वह यह बात साफ साफ कहे बिना न रह सकी—

"मेरे साथ बहुत दूर तक जाने की जरूरत नही। बस मुझे यह बता दो कि उस किलेबन्दी से होकर किधर जाना है। उसके बाद की सडक म जानती हू।"

साशा ने कोई उत्तर न दिया और न उसकी ओर देखा ही। ठीक उसी समय गाल्या ने थोडा दरवाजा खोला और फुसफुसाकर कहा, "कोई नही है। निकल आओ।"

बहुत बड़ी लग रही थी, अपने चारों ओर निगाह दौड़ाये बिना, सड़क को पार करता हुआ चलने लगा। इस सदा में उसके हाथों में दस्ताने तक न थे। प्रत्यक्षतः वह जानता था कि उसकी मां गलती न करती—यदि उसने कह दिया है कि आसपास कोई नहीं तो इसके माने हैं कि सचमुच आसपास कोई नहीं।

उन्हें पहाड़ियों की टूटी हुई शृंखला पार करनी थी। उत्तर से दक्षिण की ओर फैली हुई ये पहाड़ियां दकूल और उसकी सहायक नदी कमीश्नाया के बीच एक वाटरशेड बनाये हुए थीं। गांव पहाड़ियों से होकर देकूल की ओर फैले हुए दो टीलों के बीच बसा था। ये टीले धीरे धीरे ढलवां होकर स्तेपी में मिल गये थे। आगे आगे चलता हुआ साशा इनमें से एक टीला पार करने के लिए, गांव से दूर, ठीक सड़क के बीच में होकर जाने लगा। साशा ने यह रास्ता क्यों पकड़ा था, यह बात वाल्या की समझ में आ चुकी थी—हालांकि टीला नीचा था फिर भी उसे पार कर चुकने के बाद वे गांव की निगाहों के बाहर हो गये थे। जब वे टीले के ऊपर पहुंच गये साशा मुड़ा और टीले के समानान्तर, पूरब की ओर चलने लगा। अब वे पहाड़ियों की उस शृंखला की दिशा में बढ़ रहे थे जहां जमना की रिहायशी थी।

जब से दोनों घर से निकले थे तब से एक बार भी साशा यह देखने के लिए नहीं मुड़ा था कि वाल्या उसके पीछे आ भी रही है या नहीं। वह [illegible] उसके पीछे चलती आ रही थी। यहां गांव की तरह हो [illegible] जमीन पर बर्फ की [illegible] इधर-उधर कुछ गेहूं की [illegible] दिखाई दे रही थी। [illegible] टूटियां [illegible] पड़ रहे थे। [illegible] उन्हें [illegible] और [illegible] पर, [illegible] हुई [illegible] सुनाई पड़ रहा था। [illegible] आवाज भी [illegible] सुनाई

पडने लगी थी। हा, दक्षिण-पूर्व मे, मील्लेरोवा के निकट, तोपो की गर्ज तेज और ज़ोरदार हो चुकी थी। काफी दूर पर, शायद क्मीश्नाया नदी के पार, जर्मन फ्लेयरो की आग की दमक आसमान मे बत्तियो की तरह लटकी हुई थी। वे इतनी दूर थी कि उनका धूमिल प्रकाश किसी तरह दिखाई भर पडता था। उसमे इतनी शक्ति न थी कि वह आस पास के झुटपुटे को दूर कर सके। यदि ऐसी कोई बत्ती इन दोनो के सामने की किसी पहाडी पर लटकी होती तो उन्हे आसानी से देखा जा सकता था।

उनके पैर नि शब्द नम बर्फ मे धस जाते। बस वहा एक ही आवाज़ हो रही थी—खरखराहट की आवाज़, और वह भी उस समय जब उनके बूट खूटियो से रगड खाते थे। इसके बाद वहा खूटिया भी नही रह गयी। साशा ने अपने पीछे देखा और कात्या को अपने निकट आ जाने का सकेत किया। जब वह उसके पास आयी तो साशा उकडू बैठ गया और उसे भी वैसे ही बैठ जाने का सकेत किया। वह भी भेड की खाल वाली जकेट पहने वहीं बर्फ पर बैठ गयी। साशा ने पहले उसकी ओर, फिर अपनी ओर सकेत किया और बर्फ मे पूर्व की ओर जाती हुई एक लकीर खीच दी। साशा ने अपनी जकेट की लम्बी लम्बी आस्तीनो से अपने हाथ निकाले और जो लकीर खीची थी उसपर मुट्ठी भर बर्फ डाल दी। कात्या ने समझ लिया था कि साशा उनकी यात्रा का मार्ग बना रहा था और उस अवरोध का सकेत कर रहा था जो उन्हे पार करना होगा। तब उसने मुट्ठी भर बर्फ पहले एक छोटे टीले की दिशा से फिर दूसरे की दिशा से उठायी मानो यह बताना चाहता हो कि टीले के आर-पार दो दर्रे है। उसने उगली के पोर से दर्रों के दोनो ओर की क़िलेबदी वाली जगह चिह्नित की और पहले एक दर्रे से, फिर दूसरे से, जाती हुई एक लकीर खीच दी।

कात्या ने उसकी बात समझ ली। साशा उसे दो सम्भावित मार्ग

बहुत बडी लग रही थी अपने चारा ओर निगाह दौडाये बिना, खेता को पार करता हुआ चलने लगा। इस सर्दी म उसके हाथा में दस्ताने तक न थे। प्रत्यक्षत वह जानता था कि उसकी मा गलती न करेगी—यदि उसने कह दिया है कि आस पास कोई नही तो इसके माने ह कि सचमुच आस-पास कोई नही।

उन्ह पहाडियो की टूटी हुई शृखला पार करनी थी। उत्तर से दक्षिण की ओर फली हुई ये पहाडिया देकूल और उसकी सहायक नदी कमीश्नाया के बीच एक वाटरशेड बनाये हुए था। गाव पहाडियों स होकर देकूल की ओर फैले हुए दो टीला के बीच बसा था। ये टील धीरे धीरे ढालवा होकर स्तेपी में मिल गये थे। आगे आगे चलता हुआ साशा इनमें स एक टीला पार करने के लिए, गाव से दूर, ठीक खेता के बीच से होकर जाने लगा। साशा ने यह रास्ता क्या पकडा था, यह बात कात्या की समझ मे आ चुकी थी—हालाकि टीला नीचा था फिर भी उसे पार कर चुकने के बाद वे गाव की निगाहा के बाहर हो गये थे। जसे ही वे टील के ऊपर पहुचे कि साशा मुडा और टीले के समानान्तर, पूव की ओर चलने लगा। अब वे पहाडिया की उस शृखला की दिशा मे बढने लगे जहा जमनो की किलेबन्दी थी।

जब स दोना घर से निकले थे तब से एक बार भी साशा यह देखने के लिए नही मुडा था कि कात्या उसके पीछे आ भी रही है या नही। वह चुपचाप आज्ञानुकूल उसके पीछे चलती आ रही थी। यहा गाव की तरह ही नीची जमीन पर बफ की चादर में से इधर-उधर कुछ गेहू की खूटिया निकली दिखाई द रही थी। दोना इन्ही खूटिया के बीच से अपने रास्ते पर बढते रहे। पिछली रात की तरह उन्ह इस समय भी उनके उत्तर और दक्षिण मे सडका पर, किसी स्थान का भागती हुई जमन फौज का शोर सुनाई पड रहा था। तोपा की आवाज भी अब देर देर के बाद सुनाई

पडने लगी थी। हा, दक्षिण-पूर्व मे, मील्लेरोवो के निकट, तोपो की गरज तेज और जोरदार हो चुकी थी। काफी दूर पर, शायद क्मीश्नाया नदी के पार, जमा फ्लेयरा की आग की दमक आसमान मे बत्तियो की तरह लटकी हुई थी। वे इतनी दूर थी कि उनका धूमिल प्रकाश किसी तरह दिखाई भर पडता था। उसमे इतनी शक्ति न थी कि वह आस पास के झुटपुटे को दूर कर सके। यदि ऐसी कोई बत्ती इन दोना के सामने की किसी पहाडी पर लटकी होती तो उन्हें आसानी से देखा जा सकता था।

उनके पैर नि शब्द नम बर्फ मे धस जाते। बस वहा एक ही आवाज हो रही थी—खरखराहट की आवाज, और वह भी उस समय जब उनके बूट खूटियो से रगड खाते थे। इसके बाद वहा खूटिया भी नही रह गयी। साशा ने अपने पीछे देखा और कात्या को और निकट आ जाने का सकेत किया। जब वह उसके पास आयी तो साशा उकडू बैठ गया और उसे भी वैसे ही बैठ जाने का सकेत किया। वह भी भेड की खाल वाली जकेट पहने वही बर्फ पर बैठ गयी। साशा ने पहले उसकी ओर, फिर अपनी ओर सकेत किया और बर्फ मे पूर्व की ओर जाती हुई एक लकीर खीच दी। साशा ने अपनी जैकेट की लम्बी लम्बी आस्तीनो से अपने हाथ निकाले और जो लकीर खीची थी उसपर मुट्ठी भर बर्फ डाल दी। कात्या ने समझ लिया था कि साशा उनकी यात्रा का मार्ग बना रहा था और उस अवरोध का सकेत कर रहा था जो उन्हें पार करना होगा। तब उसने मुट्ठी भर बर्फ पहले एक छोटे टीले की दिशा से फिर दूसरे की दिशा मे उठायी मानो यह बताना चाहता हो कि टीले के आर-पार दो दर्रे है। उसने उगली के पोर मे दर्रों के दोना ओर की क्लिबदी वाली जगह चिह्नित की और पहले एक दर्रे से, फिर दूसरे से, जाती हुई एक लकीर खीच दी।

कात्या ने उसकी बात समझ ली। साशा उसे दो सम्भावित मार्ग

दिखा रहा था। कात्या को सुवोरोव का यह सिद्धान्त याद आ रहा था कि हर सैनिक को अपनी चाला की स्पष्ट जानकारी होनी चाहिए। यह स्मरण आते ही वह मुस्करा दी। जहा तक इस दस वर्षीय सुवोरोव की बात थी, कात्या ही उसकी एकमात्र सैनिक थी। कात्या ने यह सकेत करते हुए सिर हिलाया कि उसे 'अपनी चाल' की जानकारी है और वे फिर अपनी राह पर चल पडे।

अब वे उत्तर पूव की दिशा में चक्कर काटकर जाने लगे और कटीले मोटे तारा के बाडे के पास तक पहुच गये। लडके ने कात्या को इशारा किया कि वह पट लेट जाये और खुद तार के किनारे किनारे चलकर शीघ्र ही आखा से ओझल हो गया।

कात्या के सामने कटीले तार कोई एक दजन पक्तिया में एक के पीछे एक फैले हुए थे। वे वहा काफी अरसे से लगाये गये लग रहे थे क्योकि कात्या ने जब तार को छुआ तो उसके हाथो का जग लग गया। इन क्षेत्रा में सोवियत बमवपका क हमलो का कोई चिह्न नजर न आ रहा था और लग रहा था जस जमना ने ये तार छापामारा से वचने के लिए लगाये हैं क्योकि ये कटीले तार पीछे से पहाडी की रक्षा करते थे और मुख्य किलेबदी की जगहा से काफी दूर थे।

एक लम्बे अरसे से कात्या को इस तरह की व्यग्रता की अनुभूति कभी न हुई थी। समय सरकता गया लेकिन साशा न लौटा। एक घटा बीता, फिर दूसरा बीता, लेकिन बालक का अब भी पता न था। किन्तु कात्या को उसकी चिन्ता न थी—वह एक सच्चा तरुण सैनिक था और उसपर भरोसा किया जा सकता था।

वह इतनी देर तक निश्चेष्ट लेटी रही कि ठिठुरने लगी। उसने पहले इधर-उधर करवटें बदली लेकिन अन्तत अधिक बर्दाश्त न कर सकी और उठ बैठी। नहा, नन्हा सुवोराव इसक लिए उसकी भर्त्सना करेगा।

किन्तु उसे गये बहुत देर हो चुकी थी, और कम स कम कात्या इस बात की जाच तो करना चाहती थी कि वह किस इलाके में आयी है। बालक खडा होकर गया है, रेगकर नही, इसलिए वह बिलकुल सीधी न भी खडी हो तो चुककर तो जा ही सकती है।

वह मुश्किल से पचास कदम चली होगी कि उसने कोई ऐसी चीज़ देखी जिससे उसे खुशी भी हुई और आश्चय भी – उसके आगे एक नया बना, किन्तु टेढा मेढा गडढा था। कोई गोला यहा हाल ही में फूटा था, जिसने काली मिट्टी जमीन के गभ में से निकाल बफ पर बिखेर दी थी। निश्चय ही यह किसी गोले द्वारा बना हुआ गडढा था, न कि बम द्वारा। इसका पता इस बात से चलता था कि सारी मिट्टी मुख्यत गडढे के एक ओर गिरी थी, उस ओर जिधर से साशा और कात्या आये थे। प्रत्यक्षत साशा ने भी यह लक्ष्य किया था क्योकि बफ में बने परो के निशानो से पता चलता था कि उस गड्ढे के इद गिद घूम चुकने क बाद ही वह अपने रास्ते पर बढा होगा।

कात्या ने इस प्रकार के और गडढो का पता चलाने के लिए बफ पर दूर तक निगाह दौडायी, किन्तु कम से कम उसके आसपास तो वैसे दूसरे गड्ढे न थे। उसका मन उत्तेजना से भर गया – ऐसा गड्ढा सोवियत सेना के गोले से ही बन सकता है। और यह गडढा, भारी और बहुत दूर तक गोला फेंकनेवाली तोपो से नही, बल्कि औसत दर्जे की तोपो स बना था। इसके माने थे कि सोवियत सेना ने कही आस-पास स ही गोला फेंका था। पिछली शाम गाल्या के मकान में इन तीनो ने जो भयकर गोलाबारी सुनी थी यह गड्ढा उसी का एक चिह्न था अथवा उसके बहुत-से चिह्नो में से एक।

हमारी सेना कहा पास ही है! कही बिलकुल निकट! बेशक इस नारी ने पूरे पाच महीनो तक, बच्चो से दूर रहकर, दुश्मन से अविराम

मोर्चा लिया है और अपने मन में उस क्षण के सपने सजाये है जब खून से सना, लम्बा फौजी कोट पहने वह वीर सैनिक शत्रु-कलुषित अपनी धरती पर फिर से पाँव रखेगा और कात्या को भ्रातृ आलिंगन में कस लेगा। सचमुच इस नारी की अनुभूतियाँ शब्दों में नहीं पिरोयी जा सकती। कात्या की व्यथित आत्मा इस समय 'लम्बा फौजी कोट पहने उस वीर सैनिक' की ओर भागने लगी जो इस समय उसे अपने पति, अपने भाई से भी अधिक प्यारा लग रहा था।

कात्या को बर्फ में जूतों की चरमराहट सुनाई दी और साशा उसके पास आ गया। पहले तो उसने इस बात पर ध्यान न दिया कि भेड़ की खाल की उसकी जैकेट के सामने का भाग, उसके घुटने और उसके फल्ट के बूट बर्फ से नहीं, मिट्टी से सने हैं। उसने अपने हाथ अपनी जैकेट की आस्तीनों में डाल लिये थे। शायद उसे बहुत समय तक रेंगना पड़ा था जिसके कारण उसके हाथ-पैर बेहद ठंडे हो गये थे। तो यह उसे कौन-सी खबर सुनायेगा? कात्या ने बड़ी व्यग्रता से उसके चेहरे की ओर देखा। बालक के कानों तक खिसकी हुई उसकी ऊँची चोंचदार टोपी के नीचे दिखनेवाले उसके चेहरे पर निराशा के चिह्न न थे। उसने अपनी आस्तीनों में से हाथ निकालकर हिलाये और निषेधात्मक संकेत करने लगा जिसका मतलब था—"हम यहाँ से होकर नहीं निकल सकते।"

कात्या इस संकेत से द्रवित हो गयी। लड़के ने गोले वाला गड्ढा देखा और फिर आँखें कात्या की ओर उठा दीं। दोनों की आँखें चार हुई और बालक सहसा मुस्करा दिया। सम्भवतः गड्ढा देखकर बालक को भी वही धारणा बँधी थी जो कात्या को बँधी थी। वह जानता था कि कात्या के दिमाग में क्या क्या घूम रहा था। उसकी मुस्कराहट मानो कह रही थी—"कोई बात नहीं, यदि हम इधर से होकर नहीं जा सकते तो कहीं और से होकर चलेंगे।"

उनके सबंध ने एक नया रूप ले लिया था—अब वे एक दूसरे को समझते थे। उन्होंने एक दूसरे को कुछ न कहा था, किन्तु दोनो गहरे मित्र बन गये थे।

कात्या की कल्पना के आगे साशा की वह मूर्ति घूम गयी जब वह अपने दुबले-पतले हाथ बर्फ से जमी हुई भूमि से सटाये शरीर के बल रेंगता हुआ आगे बढ रहा था। बालक ने एक मिनट आराम करना भी ठीक न समझा और कात्या को अपने पीछे पीछे आने का संकेत करते हुए पहले रास्ते पर वापस घूम पडा।

कात्या के मन में बालक के प्रति कौन कौन-सी भावनाए उठ रही थीं इसका चित्रण करना आसान नही। ये भावनाए थी—दोस्ती, विश्वास, अधीनता और सम्मान की। साथ ही उनमें ममता का भाव था। ये सारी भावनाए ममता मे मिलकर एकाकार हो गयी थी।

कात्या ने उससे इस बारे में कोई पूछ-ताछ न की कि कौन-सी चीज़ उन्हे यहा से होकर गुज़रने में बाधक बन रही है। बेशक, उसे एक क्षण के लिए भी यह सन्देह न हुआ था कि वह उसे वापस घर ले जाने के लिए नही बल्कि इसलिए मुडा है कि वह चक्कर काटकर उसे दूसरे दर्रे से और किलेबन्दी के बीच से होकर ले जायेगा। कात्या ने उसे हाथ गर्माने के लिए अपने दस्ताने भी नही दिये थे, क्योकि वह जानती थी कि वह उन्हे न लेगा।

कुछ समय बाद वे उत्तर की ओर तब उत्तर-पूर्व की ओर मुडे और अन्तत उन कटीले तारो तक पहुच गये जो एक दूसरी ही पहाडी की तलहटी को घेरे हुए थे। साशा फिर अकेला निकल गया और फिर कात्या को उसका बडी देर तक इतज़ार करना पडा। आखिर वह फिर दिखाई दिया। टोपी से उसने अपने कानो को भी ढक रखा था। उसके हाथ आस्तीनो मे घुसे थे और उसके शरीर पर और भी अधिक मिट्टी जमा

थी। कात्या बर्फ पर बैठी उसके ग्राने की प्रतीक्षा कर रही थी। वह ग्रपना चेहरा उसके मुह के पास लाया, ग्राख मारी ग्रौर दात निकाल दिये।

ग्राखिर कात्या, ग्रपने निश्चय के प्रतिकूल जबरदस्ती ग्रपने दस्ताने उसे देने लगी, पर उसने न लिये।

जसा प्राय होता है, कात्या ने जिस बात को सबसे मुश्किल समझ रखा था, वह बहुत ही ग्रासान निकली। ग्रासान ही नहीं, उसे पार करते हुए उसे पता तक नही चला। उसे मालूम ही न था कि वे दाना दो गिलबन्द स्थलों के बीच से गुज़र रहे ह। ग्रपनी सारी यात्रा में, उसे सिर्फ यही यात्रा सबसे सीधी ग्रौर ग्रासान सिद्ध हुई थी, किन्तु इसका कारण उसे तुरत नही, बाद में ही समझ में ग्राया था। वे कितनी दूर तक चलते रहे ग्रौर फिर कब रेंगने लगे उसे कुछ भी याद न रहा। उसे बस इतना ही याद रह गया था कि दिन में 'इल्यूशिन' बमवर्षकों के हमले के कारण ज़मीन की ग्रतडी तक निकल गयी थी ग्रौर यह बात उसे तब याद ग्रायी जब खुले खेतों म पहुचकर उसने देखा कि उसकी भेड की खाल वाली जैकेट, फेल्ट के बूट ग्रौर दस्ताने साशा की ही तरह मिट्टी में सन गये ह।

कुछ समय तक वे खुले में ग्रौर कुछ कुछ ऊचे-नीचे मैदानों की साफ बर्फ पर चलते रहे। ग्रतत साशा रुक गया ग्रौर मुडकर कात्या की प्रतीक्षा करने लगा।

"उधर एक सडक है। देख रही हो न?" उसने फुसफुसाकर कहा ग्रौर दूर पर सकेत कर दिया।

साशा ने उसे बताया कि वह देहात की उस सडक पर किस प्रकार पहुच सकती है। सडक उस गाव से, जिसे वे छोड चुके ह, उस फार्म तक जाती है, जहा से उसकी यात्रा का दूसरा चरण शुरू होगा। वह ग्रब उस इलाके मे पहुच गयी थी जहा, प्रात्सको के नक्शे के ग्रनुसार,

जमनो की प्रतिरक्षा-पक्तिया तो अधिक नही थी लेकिन अस्तव्यस्त दशा में थी क्याकि जमन वहा से हाकर इधर-उधर भाग रहे थे। बेशक इस बात की सभावना बनी हुई थी कि भागत हुए जमन दस्ता न उस इलाके मे अस्थायी मार्चा कायम कर लिया होगा और पिछले दस्ते लडाई लड रहे हाग। कौन जाने, भागत हुए जमना के दस्ते या छिटपुट सनिक कही मडरा रहे हा और आबादी वाले क्षेत्र, अप्रत्याशित रूप से, जमना की अगली प्रतिरक्षा-पक्ति का अग बन गये हो। प्रात्सेको ने यात्रा के इस भाग का सबसे खतरनाक बताया था।

किन्तु यदि पक्की सडका पर से सुन पडनेवाली जमना की भाग-दौड और दक्षिण-पूव मे मील्लेरावा की दिशा से आनेवाली गालेबारी की अविराम गडगडाहट पर ध्यान न दिया जाता, तो उस क्षेत्र में एसी कोई चीज न निकलती जिससे प्रोत्सको की बतायी हुई बात सत्य प्रतीत हाती।

"तुम्हारी यात्रा सफल हो!" हाथ नीचे गिराते हुए साशा बाला।

इस क्षण कात्या का हृदय उसके प्रति ममता स भर गया। वह उसे अपनी बाहा में भरकर, अपने सीने स लगा लेना चाहती थी माना सारी दुनिया क खतरा से उसे बचाना चाहती हो। किन्तु इस समय ऐसा करने स उनके सबध एकदम बिगड सक्त थे।

"विदा! धयवाद,' हाथ से दस्ताना उतारकर साशा से हाथ मिलाती हुई कात्या बोली।

"तुम्हारी यात्रा सफल हो उसने फिर कहा।

"अरे, म तो पूछना ही भूल गयी थी," कात्या ने कहा और उसके आठा पर एक हल्की-सी मुस्कराहट बिखर गयी। 'दूसरे दर्रे मे होकर गुजरना क्या सभव नही था?"

साशा ने आंख नीची की। उसके चेहरे पर कठोरता झलक उठी।

"जमन वहा अपने मुर्दों को दफना रहे थे। उन्होंन वही पास में एक बडा सा गड्ढा खोदा था।"

कात्या चल पडी। थोडी थोडी देर बाद वह बराबर पीछे देखती रही ताकि अधिक से अधिक समय तक के लिए बालक को देखती रहे। किन्तु साशा ने एक बार भी पीछे मुडकर न देखा और शीघ्र ही अधेरे मे गायब हो गया।

इसी अवसर पर काया को इतना बडा धक्का लगा, जिसे भुलाना उसके लिए जिन्दगी भर सभव न था। कोई दो सौ गज चल चुकने के बाद जब उसे लग रहा था कि किसी भी समय वह सडक पर पहुच सकती है सहसा, टीले के सिरे पर पहुचते ही, उसे अपनी आखा के सामने एक बहुत बडा टैक दिखाई दिया। ताप की नली उसका रास्ता रोके खडी थी। सहसा उस बुजा के ऊपर उठी हुई कोई गेंद जैसी विचित्र वस्तु दिखाई दी। सहसा उस चीज में हरकत हुई और उसे पता चल गया कि बुर्जी में से सिर निकाल लाहे की टोपी पहने, टैकचालक खडा था।

उसने कात्या पर अपनी टामी-गन का निशाना इतनी तेजी से साधा कि कात्या को लगा मानो वह उसी का शिकार करने के लिए उसका इतजार कर रहा था।

"रुक जाओ!"

यह शब्द स्थिरता के साथ, किन्तु ऊची आवाज में बोला गया था। लहजे मे दृढता किन्तु नम्रता थी, क्योकि बोलनेवाला एक नारी को ...। कर रहा था। पर सबस बडा बात यह थी कि यह शब्द उसने रूसी मे कहा था।

इस समय तक कात्या का उत्तर देने की भी सामर्थ्य न रह गयी थी। ... आखा से आसुओ की अविरल वर्षा हो रही थी।

अध्याय २०

ये दोना टैंक, एक अग्रगामी टक-दस्त के अग्रणी, गश्ती टक थ। काल्या ने तत्काल दूसरे टैंक को देखा भी न था क्योंकि वह सडक के उस पार एक टीले के पीछे खडा था। जिस टकमैन ने उस रोका था वह टक का कमाडर और अग्रणी गश्त का कमाडिग अफसर था। इस बात का अनुमान कोई न लगा सकता था क्योकि वह मामूली-सा लबादा डाले हुए था। ये सारी बात काल्या को बाद में मालूम हुई थी।

अफसर न उसे आग आने का हुक्म दिया और टा स कूद पडा। उसके साथ ही एक और व्यक्ति भी कूदा। इधर अफसर काल्या से उसके बारे में पूछ-ताछ कर रहा था, उधर वह उसके चेहरे का अध्ययन कर रही थी।

वह जवान आदमी था और बेहद थका हुआ। वह इतना जगा था कि उसकी पलक भारी हो रही थीं और आखें खोले रखना उसे बहुत ही मुश्किल लग रहा था।

काल्या ने अपना परिचय दिया और बताया कि इस सडक पर क्या जा रही है। अफ़सर क चेहरे से इस बात का कोई पता न चल रहा था कि उस उसकी कहानी पर विश्वास है या नही, किन्तु काल्या ने इसपर ध्यान न दिया। उसने एक युवक के चेहर को इतना थका हुआ, और उसकी पलक इतनी सूजी हुई देखी कि एक बार फिर उसकी आखो में आसू भर आय।

अधेरे में से एक मोटर-साइकिल सडक पर आकर टक के पास रुक गयी।

'क्या मामला है?" मोटर-साइकिल पर बठे आदमी ने सामान्य लहज में सवाल किया।

इस प्रश्न से कात्या को यह पता चल गया कि उस मोटर साइकिल वाले को उसी के कारण बुलाया गया था। दुश्मना की सेना के पीछे पाच महीनो तक काम कर चुकने के कारण उसमें छाटी छोटी वाता पर भी ध्यान देने की आदत सी पड गयी थी। सामान्य स्थितियो मे ऐसी वाता पर किसी का ध्यान नही जाता। यदि मोटर-साइकिल वाल का रेडियो द्वारा भी बुलाया जाता ता भी इतनी जल्द न आ पाता। तो फिर उसे बुलाया कस गया था?

इस समय तक दूसरे टैंक का कमाडर भी उनके पास आ चुका था। उसने कात्या पर एक उडती-सी नज़र डाली और पहले कमाडर और माटर-साइकिल सवार के साथ कुछ कदम पीछे हटकर उनसे वातचीत करने लगा। इसके वाद मोटर-साइकिल सवार फिर अपनी मोटर-साइकिल पर अधेरे मे गायब हो गया।

टक कमाडर फिर कात्या के पास आये और सीनियर कमाडर न कुछ सकोच वे साथ कात्या से कागजात मागे। कात्या ने वताया कि सिवा सुप्रीम कमाड के अन्य किसी का भी ये कागजात देन का उसे अधिकार नही है।

वे कुछ क्षणा तक चुप रहे, फिर दूसरे कमाडर ने, जो पहले कमाडर से कम उम्र का था, गहरी आवाज मे पूछा

"तुम किधर से निकलकर आयी हा? क्या जमना की किलेबन्दी वहुत मज़बूत है?"

कात्या किलेवन्दी के वारे मे जा कुछ जानती थी वह सभी उसने उन्हे वता दिया और यह भी कह डाला कि किस प्रकार एक दस साल का बालक उसे इन किलेवदियो के बीच स लाया था। उसने मरे हुए जमना का दफनाये जाने के सवध म भी सूचना दी और यह भी वताया कि उसने सोवियत गाले द्वारा वना एक गड्ढा भी देखा था।

"तो वहा गिरा था वह! सुन रह हो?" छोटा कमाडर वोला। वह दूसरे कमाडर की आर देखकर वच्चा की तरह दात निकाल रहा था।

इसी समय कात्या को पता चला कि गाल्या के मकान मे, दिन को कभी दूर, कभी नज़दीक, और बाद मे, अधरा होने से पहले, उसने गोलाबारी की जो आवाज सुनी थी वह दुश्मना की किलेबन्दी पर हमला करनेवाल इन्ही सोवियत अग्रणी टैंको की ही आवाज़ थी।

इसके बाद से कात्या और टक कमाडरा के सबध अधिक अच्छे हो गये। उसने गश्ती कमाडर से यह पूछने की हिम्मत भी की कि उसने किस प्रकार मोटर-साइकिल वाले को इतनी जल्दी बुला लिया था। कमाडर ने बताया कि टक के पीछे एक बत्ती लगी रहती है, जिससे उसे बुलाने का सकेत दिया गया था।

व अभी बातचीत कर ही रहे थे कि एक मोटर-साइकिल, जिसमे एक साइड-कार लगी थी, उनके पास आयी। सवार ने कात्या को फौजी सलामी भी दागी जिसस कात्या ने समझ लिया कि वह न केवल उसे मित्र ही समझ रहा है बल्कि एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति भी मान रहा है।

जिस क्षण से वह साइड-कार मे बैठी थी उसे एक विलक्षण और नयी अनुभूति हो रही थी जो सोवियत फौज के बीच उसके पहुचने के कई दिनो बाद तक बनी रही। उसने अनुमान लगा लिया था कि वह सयोग से टैंक के उस दस्ते के हाथ लग गयी थी जो किसी प्रकार जमन अधिकृत प्रदेश में घुस आया था। किन्तु उसने अब दुश्मन की ताकत को कोई महत्त्व न दिया। दुश्मन, और उसके पाच महीना का सारा जीवन, और साथ ही यात्रा के कष्ट, न सिर्फ पीछे ही छूट गय थे, बल्कि उसके मस्तिष्क के किसी सुदूर कोने में विलीन-से हो गये थे।

कोई महान नैतिक सीमा उसे उसके सन्निकट विगतकाल के वातावरण से अलग-सी कर रही थी। अब वह उन लोगा की दुनिया में रह रही थी, जिनकी अनुभूतिया, अनुभव, सोचने विचारने के ढग और मत उसके अपने जैसे ही थे। यह दुनिया इतनी विशाल थी कि उस दूसरी दुनिया की तुलना

में, जिसमे से वह निक्लकर यहा ग्रायी थी, ग्रनन्त लग रही थी। इस मोटर-साइकिल पर वह पूरे दिन, पूरे साल सफर कर सक्ती थी, ग्रौर हर जगह उसे ग्रपनी जैसी दुनिया दिखाई पड सकती थी। इस दुनिया मे उस कुछ भी छिपाने, यठ वालने ग्रौर नैतिक एव शारीरिक स्तर पर ग्रस्वाभाविक प्रयासा की कोई ग्रावश्यक्ता न थी। ग्रब कात्या एक बार फिर, ग्रौर हमशा के लिए, मानसिक रूप से स्वस्थ हो गयी थी।

सद हवा उसके चेहरे को जैसे काटे दे रही थी, पर उसका जी गाने को हा रहा था।

मोटर-साइकिल उसे लेकर दिन भर या घटे भर भी न चली। वह ज्यादा से ज्यादा दो मिनट तक दौडी हागी। जब वह एक छोटे-से पुल पर से, वफ पर होकर जा रही थी, तभी चालक ने ब्रेक लगाये। पुल एक छाटी-सी नदी पर वना था जो शायद गर्मी के मौसम में सूख गयी थी। कात्या ने, नदी की ढालो द्वारा वने निचले खड्ड मे खडे कोई एक दजन टैंक ग्रौर कुछ दूर सडक पर खडी कई लारिया देखी। मोटर वाली पदल सेना के टामी-गन चालक इन लारिया के इद गिद खडे या उनमें वठे थे। ये साधारण-से टामी-गन चालक जाडे की टोपिया ग्रौर रूईदार जकटें पहने थे।

यहा कात्या का पहले से ही इन्तजार हा रहा था। मोटर-साइकिल पुल से उतरी ग्रौर रुक गयी। लवादा पहने दो टक्मन उसके पास ग्राये ग्रौर ग्रपने वाजुग्रा का सहारा देकर साइड-कार से उतरने में उसकी मदद करने लगे।

"कामरेड, माफ करना " एक वुजुग मे दिखनेवाने टैंकमन ने उसे सलाम करत हुए कहा ग्रौर उसे चार गाव की ग्रध्यापिका के नाम स सबोधित करने लगा, जा उसके नक्ली पासपोट में दज था। "माफ़ कीजिये, पर यह ग्रौपचारिकता हमें निभानी ही पडती है "

में, जिसमें से वह निकलकर यहा आयी थी, अनन्त लग रही थी। इस मोटर-साइकिल पर वह पूरे दिन, पूरे साल सफर कर सकती थी, और हर जगह उसे अपनी जैसी दुनिया दिखाई पड सकती थी। इस दुनिया मे उसे कुछ भी छिपाने, झूठ बोलने और नैतिक एव शारीरिक स्तर पर अस्वाभाविक प्रयासो की कोई आवश्यकता न थी। अब कात्या एक बार फिर, और हमेशा के लिए, मानसिक रूप से स्वस्थ हो गयी थी।

सद हवा उसके चेहरे को जैसे काटे दे रही थी, पर उसका जी गाने को हो रहा था।

मोटर-साइकिल उसे लेकर दिन भर या घटे भर भी न चली। वह ज्यादा से ज्यादा दो मिनट तक दौडी होगी। जब वह एक छोटे-से पुल पर स, बफ पर होकर जा रही थी, तभी चालक ने ब्रेक लगाये। पुल एक छोटी-सी नदी पर बना था जो शायद गर्मी के मौसम में सूख गयी थी। कात्या ने, नदी की ढालो द्वारा बने निचले खड्ड में खडे कोई एक दजन टैंक और कुछ दूर सडक पर खडी कई लारिया देखी। मोटर वाली पदल सेना के टामी-गन चालक इन लारियो के इद गिद खडे या उनमें बैठे थे। ये साधारण-से टामी-गन चालक जाडे की टोपिया और रूइदार जक्टें पहने थे।

यहा कात्या का पहले से ही इन्तजार हो रहा था। मोटर-साइकिल पुल से उतरी और रुक गयी। लबादा पहने दो टैंकमन उसके पास आये और अपने बाजुओ का सहारा देकर साइड-कार से उतरने में उसकी मदद करने लगे।

"कामरेड, माफ करना " एक बुजुर्ग से दिखनेवाले टैंकमन ने उसे सलाम करते हुए कहा और उस चीर गाव की अध्यापिका के नाम से सबोधित करने लगा, जो उसने नकली पासपोर्ट में दर्ज था। "माफ़ कीजिये, पर यह औपचारिकता हमें निभानी ही पड़ती है "

उसने उसके पासपोर्ट को एक जबी टार्च की रोशनी में देखा और फिर उसे वापस कर दिया।

"सब ठीक है, कामरेड कप्तान!" उसने दूसरे टकमैन को सूचना दी। इस टकमैन के माथे से लेकर नाक के ऊपरी भाग और बायें गाल तक एक ताजे घाव का निशान था।

"शायद आपको ठंड लग रही है!" कप्तान बोला और उसकी विनम्र, सदय, और शिष्ट आवाज, तथा सीधे, सरल किन्तु साहस और अधिकारपूर्ण व्यक्तित्व से कात्या ने समझ लिया कि वह टैंक दस्ते का कमाण्डिंग अफसर है। "इतना समय नहीं है कि आपके लिए गर्मी की व्यवस्था की जाये–हम बढ़े जा रहे हैं। मगर यदि आपको कोई एतराज न हो तो " उसने झेंपते हुए अपना हाथ उठाकर कंधे पर बंधी हुई एक पेटी से झूलता हुआ एक फ्लास्क उतारा और उसकी डाट खोली।

कात्या ने फ्लास्क दोनों हाथों में पकड़ा और एक बड़ा-सा घूंट भर लिया।

"धन्यवाद।"

"थोड़ा और लीजिये!"

"नहीं, धन्यवाद!"

"हमें आदेश मिला है कि हम आपको दस्ते के हेडक्वाटर तक पहुंचायें और टैंक में बिठाकर ले जायें," मुस्कराते हुए कप्तान बोला, "यद्यपि हमने सड़क के किनारे किनारे दुश्मनों की टुकड़ियों का सफाया कर दिया है, पर यह एक ऐसा इलाका है कि शैतान तक नहीं बता सकता कि यहां कब क्या हो सकता है!"

"आपको मेरा नाम कैसे मालूम हुआ?" कात्या ने पूछा। एक घूंट शराब उसके पेट में आग की तरह गर्मी पैदा कर रही थी।

"आपका इन्तजार हो रहा है।'

इसवे माने ये कि इवान फ्योदोरोविच, यानी उसके अपने वान्या ने,
सारा इन्तजाम पहले से ही कर दिया था। उसके बदन में गर्मी आ गयी थी।
एक बार फिर कात्या को गाव के बाहर की, दुश्मन की, प्रतिरक्षा
पक्तियो के बारे में जो कुछ वह जानती थी, बताना पडा। उसे लगा
कि ऊचाइयो पर जमे दुश्मनो पर हमला करने के लिए टैको को अभी
भेजा जा रहा था। और ठीक जिस समय उसे एक टैंक के भीतर
बैठाया जा रहा था कि सभी टैंक तेजी से गडगडा उठे और टामीगन
चलानेवाले अपनी अपनी लारियो की ओर भाग गये। कात्या इस टक की
विशालता का तब तक अन्दाज न लगा सकी थी जब तक वह उसके
बिलकुल पास न आ गया था। उसे पहले टक की बुर्जी पर चढाया गया
और वहा से वह अदर उतर गयी। टैंक के भीतर बडी ठण्ड थी।

जिस टैंक मे उसे अपनी यात्रा पूरी करनी थी उसमें चार व्यक्ति
काम करते थे। हर एक के बठने की अपनी अपनी जगह थी। कात्या
'ऐक्शन डेक' के फर्श पर कमाडर के पैरो के पास बठी थी। टक के
भीतर जगह तग थी। चारो सनिको मे से अकेला टैंक चालक ही घायल
नही हुआ था।

टक कमाडर के सिर पर चोट लगी थी। उसके सिर के चारो ओर
मोटी रुई रखकर एक पट्टी बाध दी गयी थी, अत लोहे की टोपी पहनना
उसके लिए असभव हो गया था। इसी लिए वह सनिकोवाली एक साधारण
टोपी लगाये था। उसकी बाह भी घायल थी और गले से लटकती हुई एक
पट्टी में सधी थी। वह इस बात का ध्यान रखता था कि बाह में किसी
चीज से धक्का न लग जाये। जब कभी टैंक में झटके लगते थे तो उसके
माथे पर बल पड जाते थे।

अपने साथियो का साथ छोडना इस कमाडर को और उसके साथियो
को बुरा लगा था। इसी लिए पहले-पहल उन्होने कात्या के प्रति रुखाई

बरती – आखिर उसी के कारण तो उन्ह पीछे लौटना पड रहा था। बाद में पता चला कि इस टैंक के मूल कमचारियो में से केवल ड्राइवर और कमाडर ही यहा पर मौजूद थे। बाकी दाना को दूसरे टैंको से तबदील करके इस टक पर भेजा गया था। इस तबादले का इन लोगा ने काफी विरोध किया था। इस टक के दो स्वस्थ लोगा को इनकी जगह दूसरे टैंको पर भेज दिया गया था। जिस क्षण कात्या को टक पर लाया गया था, उस समय, टैंक कमाडर और कप्तान के बीच विवाद चल रहा था। दोना बडी शिष्ट भाषा में झगड रहे थे, परन्तु दाना के चेहरो पर भयानकता झलक रही थी। कप्तान – जिसके चेहरे पर ताज़ा घाव लगा था – अपनी ही मनमानी करने पर तुला हुआ था। उसे कात्या की यात्रा से अपने दस्ते स घायला का हटा दने का मौका मिल गया था।

जब टक चल पडा और सैनिका ने देखा कि उनके साथ एक जवान औरत सफर कर रही है तो उन्होने उसके प्रति अपना रुख बदल दिया। फिर, शीघ्र ही उन्हे पता चल गया कि कात्या उन्ही प्रतिरक्षा-पक्तियो से होकर आयी है जिनपर टक दस्ता अधिकार करनेवाला था। सभी की बाछें खिल गयी। सभी युवक थे, कात्या से यही कोई पाच सात साल छाटे।

इसी मौके पर कमाडर ने 'दूसरा मोर्चा' खोलने का हुक्म दिया, अर्थात् अमरीकी शूकर मास के टीन खालने का कहा। गनर-रेडियो आपरेटर ने गोली की रफ्तार से 'दूसरा मोर्चा' खाल डाला और राटी के कुछ बडे बडे टुकडे काट लिये। कमाडर ने बायें हाथ से अपना मदिरा पात्र कात्या को देना चाहा, किन्तु उसे लेने से कात्या ने इन्कार कर दिया। हा, रोटी और मास के साथ उसने कोई मुरौवत न दिखायी। कमाडर के पात्र में से एक एक घूट चढाने के लिए टक वाले घूमे और टैंक के भीतर मैत्रीपूर्ण सवधा का दरिया बहने लगा।

वे पूरी गति मे चले जा रह थे। कात्या को बराबर झटके लग रहे

थे। सहसा उनके ऊपर, खुली हुई छोटी बुर्जी पर खड़ा तोपची कुछ झुका और कमांडर के कान के पास ग्राठ लाकर बोला—

"सुन रहे हो, कामरेड सीनियर लेफ्टिनेंट?"

"उन्होंने अपना काम शुरू कर दिया है न?" कमांडर ने भारी आवाज में कहा और उसका पैर ड्राइवर के कंधे से छू गया। ड्राइवर ने टक रोक दिया और तब चारों ओर के सन्नाटे में उन्हें गोलेबारी की तेज धमक सुनाई दी। यह आवाज उसी दिशा से आ रही थी जिस दिशा से कात्या आयी थी।

"हा-हा! जर्मन शैताना के पास आसमान में रोशनी करनेवाले फ्लेयर नहीं हैं!" तोपची ने, फिर झुकते हुए, सन्तोष के साथ कहा, "हमारे साथी उन्हें मजा चखा रहे हैं। मैं फटते हुए गोलों की आग भी देख रहा हूं।"

"जरा देखने तो दो!"

सीनियर लेफ्टिनेंट तोपची की जगह खड़ा हुआ और बड़ी सावधानी से अपना जख्मी सिर ऊपर निकाला। इधर वह गोलाबारी देख रहा था और उधर टैंक वाले, कात्या की उपस्थिति भूलकर, आक्रमण की प्रगति के संबंध में तरह तरह की कल्पनाएं कर रहे थे। उन्हें इस बात पर फिर क्रोध आ रहा था कि वे अपने टैंकों के साथ नहीं हैं।

कमांडर ने अपना घायल सिर फिर टैंक के भीतर कर लिया और उसके चेहरे पर रोगी जैसा भाव छा गया। इसी समय उसे कात्या की उपस्थिति का ध्यान आया और उसने सारी बातचीत बन्द कर दी। फिर भी कात्या उसका चेहरा देखकर ही बता सकती थी कि युद्ध में भाग न ले सकने के कारण उसे कितना बुरा लग रहा था। युद्ध में क्या हो रहा था इसे देखने का मौका कमांडर ने हर व्यक्ति को दिया। इसके बाद टैंक उनकी आगे की यात्रा शुरू हुई।

इसके बाद उनपर उदासी-सी छा गयी। कात्या समझदार औरत थी। उसने उनसे सैनिक कार्यों के संबंध में प्रश्न करने शुरू कर दिये। इजनो की गडगडाहट के कारण बातचीत करना बडा कठिन हो रहा था। उन्हे बराबर चीखना पडता था। फिर भी उन्ह जो जो बात याद आयी वे बडे उत्साह से सुनाने लगे और यद्यपि प्राय उनकी बात परस्पर-विरोधी पडती थी, फिर भी कात्या को उस क्षेत्र की, जहा इस समय वह थी, सैनिक कारवाइयो के संबंध में बहुत कुछ ज्ञान हो गया।

सोवियत टैक दस्ता ने रास्सोश और मील्लेरोवा के बीच वोरोनेज-रोस्ताव रेलवे के एक बडे भाग को पार कर लिया था, कमीश्नाया नदी के किनारे किनारे जर्मनो को उनकी प्रतिरक्षा-पक्तियो से खदेड दिया था, और अब उत्तर की ओर नोवामार्कोव्का गाव के निकट देकूल नदी के ऊपरी क्षेत्रो तक पहुच गये थे। भागती हुई जर्मन फौज ने कमीश्नाया और देकूल के बीच के बाटरशेड का जल्दी एक अग्रणी प्रतिरक्षा-क्षेत्र का रूप दे दिया था। इसी क्षेत्र में वे टीले भी शामिल थे जिन्ह पार कर कात्या यहा पहुची थी। यह नयी पक्ति लिसरेव्का, वेलावाद्स्क और गोरादीश्ची से होकर—इन सभी जगहो में प्रात्सको के छापामार दस्त काम कर रह थे—दोनेत्स पर उस स्थान तक जाती थी जिसके निकट मित्याकिन्स्काया छापामार दस्ते का अड्डा था। कात्या इन सभी स्थानो का अच्छी तरह जानती थी, और साथ ही बढती हुई लाल सेना की शक्ति का भी अनुमान लगा सकती थी। इसके अलावा वह उन सभी कठिनाइयो को भी देख सकती थी जो इस सडक पर सोवियत सेना के सामने आ सकती थी—उनको देकून, येव्सूग, ऐदार और वोरोवाया नदियो के किनारे किनारे की किलेबंदियां, स्तारोबेल्स्क और स्तनीच्नो-लुगास्काया के बीच की रेलवे लाइन और अन्तत स्वय दोनेत्स नदी को भी पार करना था।

जिस अग्रगामी टैक दस्ते से कात्या मिली थी वह अपनी टुकडी से

दो दिन पहले अलग हो चुका था। उसकी पूरी टुकडी कोई दस मील पीछे थी। इस दस्ते ने पश्चिम की ओर बढकर, अपने रास्ते पर पडनेवाली दुश्मन की सभी प्रतिरक्षा-पक्तियो का सफाया कर दिया था और कई गावो और फार्मों पर कब्जा कर लिया था। इसमें वह गाव भी शामिल था, जहा प्रोत्मेको के निर्देशो के अनुसार कात्या को जाना था।

जिस टैंक में कात्या सफर कर रही थी वह दिन के समय सब से आगे गश्त पर निकला था और उसने उन टीलो पर हमला किया था जिनसे वह वाकिफ हो चुकी थी। गश्ती टैंक ऐसे स्थलो पर जा पहुचा था जहा दुश्मन की किलेबन्दी बडी मजबूत थी, उसने भारी भारी तोपो और मशीनगनो से गोले बरसाये जिससे दुश्मन पूरे जोर से उसपर गोले बरसाने लगे। टैंक को नुकसान पहुचा और कमाडर को सिर और बाह मे चोट लगी थी।

इस समय वे युद्धक्षेत्र से दूर जा रहे थे और इसका पता इस बात से चल रहा था कि कात्या और ड्राइवर के अलावा सभी बुरी तरह थक चुके थे और उन्हे वैसी ही नीद आ रही थी जैसी सख्त लडाई कर चुकने के बाद आराम करते हुए सैनिको को आती है। कात्या का दिल उनके प्रति सहानुभूति से भर गया।

वे कई बस्तिया से होकर गुजर चुके थे कि सहसा ड्राइवर कात्या की ओर मुडा और चिल्लाकर बोल उठा—

"ये रहे हमारे लोग, ये रहे!"

टैंक बराबर सडक पर ही चलता जा रहा था किन्तु इस समय ड्राइवर ने टैंक खेतो में मोडा और रोक दिया।

रात अधेरी थी। रात का सन्नाटा पास और दूर पर होनेवाली उसी युद्ध ध्वनि मे भग होता था, जिससे लडाकुओ के कान पक चुके थे। और इस नीरवता में झनझनाती हुई धातु की आवाज भी उनकी ओर बढती चली आ

रही थी। यह आवाज बराबर तेज होती जा रही थी। ड्राइवर ने अपनी धूमिल हडलाइट स सकेत किया। कमाडर और तोपची नीचे जमीन पर आ गये। कात्या वही टक में, बुर्जी में से बाहर सिर निकालकर सीधी खडी हो गयी।

कई मोटर-साइकिले सर से गुजर गयी। उनके पीछे टैंक और बख्तरबद मोटर थी जो सडक और स्तेपी से होकर चली आ रही थी। उनकी तज आवाज रात के सन्नाटे में गूज रही थी। कात्या ने दोनो हाथ अपने कानो पर पडी हुई शाल के ऊपर रख लिये। टैंक भडभडाते हुए आगे निकल गये। आगे निकली हुई उनकी तोपें तथा उनके लम्बे-चौडे आकार बडा ही आतकपूण प्रभाव डाल रहे थे। यह प्रभाव अधेरे के कारण और भी गहरा हो उठा था।

एक छोटी-सी बख्तरबन्द मोटर उनके एकाकी टैंक के पास आकर रुक गयी। कार मे से दो सैनिक अफसर निकले। वे लम्बे लम्बे ओवरकोट पहने थे। कुछ क्षणा तक वे टक कमाडर से जार जार से बाते करते रहे और टक पर खडी हुई कात्या की ओर जब तब देखते रहे। फिर व अपनी कार पर चढे और अपने टैंको का साथ पकडने के लिए स्तेपी में अपनी कार दौडा दी।

टको के बाद लारिया थी फिर टक, फिर लारिया, इसी क्रम से सेना आगे बढ रही थी लारिया में पैदल सनिक भरे थे। लारिया मे बैठे टामी-गन वाले सनिक स्तेपी में खडे उस एकाकी टक को घूरते जा रहे थे, जिसपर, काना पर दस्ताने वाले हाथ रखे एक औरत खडी थी।

कात्या इस विशाल जन समूह और वृहत् परिमाण में शस्त्रास्त्रो को देखकर चकित रह गयी थी। लग रहा था जसे यह जन समूह शस्त्रास्त्रा की धातु के साथ मिलकर एकाकार हो गया था। सभवत इन्ही क्षणा में आतरिक मुक्ति की उसको अनभूति में एक नयी अनुभूति और जुड गयी थी,

जो बहुत समय तक उसके साथ बनी रही। उसे लगा कि वह स्वय यह सब देख सुनकर इसका अनुभव नहा कर रही थी, बल्कि कोई दूसरा उसका अनुभव कर रहा था। वह अपने को उसी प्रकार बाहर से देख रही थी जसे कि कोई अपने को स्वप्न में देखता है। उसे प्रथम बार ऐसा लग रहा था कि वह उस ससार की अनभ्यस्त हो गयी है जिसका प्रचड रूप वह अपनी आखो के सामने देख रही है। और बहुत समय तक तो वह इन असख्य चेहरो, घटनाओ, बातचीत और अन्तत मानवीय धारणाओ के बीच अपना स्थान ही न पा सकी, जिनमें से कुछ तो उसके लिए बिलकुल ही नयी थी और बहुत सी ऐसी, जिनसे उसका बहुत समय तक कोई वास्ता न पड़ा था।

उसे अपने पति को देखने और उसकी निकटता का अनुभव करने की उत्कट इच्छा होने लगी। पति की चिन्ता उसके लिए कष्टदायक बनने लगी थी। प्रेम और बिछाह के कारण उसका हृदय तडप रहा था, खासकर इसलिए कि वह बहुत समय पहले ही यह भूल चुकी थी कि रोने से भी आदमी को सन्ताप मिलता है।

जिस समय कात्या ने लाल सेना को देखा था, उस समय सभी सनिक यह जानते थे कि वे विजयी होगे।

युद्ध के अठारह महीनो मे भी यह विजयी सेना साज-सामान की दृष्टि से विपन्न न हुई थी। वस्तुत, कात्या ने देखा कि लाल सेना के पास शस्त्रास्त्रो की असीम शक्ति है। यह शक्ति दुश्मन की उन दिनो की शक्ति से भी अधिक थी जब उसे यूरोप के अधिकृत देशो के सर्वोत्तम कारखानो के हथियार उपलब्ध थे, और जब उसकी फौजें बाढ की तरह जलती दोनेत्स स्तपी के ऊपर फैलती जा रही थी। वे अपमानजनक दिन किसी को भुलाये न भूल सकते थे। पर जिन लोगो के साथ भाग्य ने कात्या का अब मिला दिया था उन्हे देखकर वह और भी दग रह गयी

थी। हा, जिन लोगो के साथ वह समय समय पर सपर्क मे आयी थी, वे नयी किस्म के लाग थे। ये लोग न सिफ अपने नये और शक्तिशाली शस्त्रास्त्रा पर ही नियत्रण रख सकते थे बल्कि लगता था जैसे मानसिक रूप से भी वे मानवता के इतिहास मे एक नये और विशाल दौर मे प्रवेश कर चुके थे।

कात्या को लगता था कि य लोग उससे इतने बढे-चढे हैं कि वह कभी उनकी बराबरी नही कर सकती।

टक में सभी तरह के विलक्षण कमचारी बठे थे। इसकी कमान एक सीनियर लेफ्टिनेट के हाथ में थी जिसके सिर और बाह दोना घायल हो चुके थे। इस टक में बठकर कात्या टैंक-ब्रिगेड के हेडक्वाटर मे पहुची। वस्तुत यह उनके रास्ते में था। सच कहा जाय तो यह हेडक्वाटर न था। वहा मार्चे पर काम करनेवाले कुछ फौजी अफसरा के साथ केवल एक ब्रिगेड कमाडर रहता था। ये लोग एक छोटी-सी बस्ती मे जमे हुए थे जिस अभी पिछली सुबह को ही दुश्मन से मोर्चा लेने के कारण काफी क्षति उठानी पडी थी। वहा रहनेवाले युवक कनल की आखें जलते हुए अगारा जैसी हो रही थी और चेहरा अपने ही स्टाफ अफसरा की भाति नींद की कमी के कारण मुरझाया हुआ सा। कनल कात्या से इस छोटे-से मकान में मिला। वस्तुत बस्ती में यही एक मकान था जिसपर कोई आच न आयी थी। उसने उससे इस बात की क्षमा मागी कि वह उसकी अच्छी तरह खातिर न कर सका क्योकि वह बस एक ही मिनट के लिए आया है और उसे तुरत लौट जाना है। फिर भी उसने सुझाव दिया कि कात्या को यहा रुककर कुछ देर सो लेना चाहिए।

"हमारी दूसरी टुकडी शीघ्र ही यहा आयेगी। उनमें से कोई न कोई तुम्हारी जरूरतो का ध्यान रखेगा और तुम्हारी देख-रेख करेगा," वह बोला।

इस छोटे-से मकान में गर्मी की अच्छी व्यवस्था थी। अफसरो ने

कात्या से भेड की खाल वाला कोट उतार डालने और कुछ गम हो जन का मनुराव किया।

गाव का बुरी तरह नष्ट किया गया था किन्तु अब भी वहा बहुत-से गाव वाले टिके हुए थ, जिनमे मे अधिकाश स्त्रिया, बच्चे और बूढे थे। उनके लिए सावियत सैनिका को विशपकर टैंक चालका को देखना, नयी बात थी। और वे बेहद खुश थे। भीडें सनिका और खासकर अफ्सरा के इद गिद जमा हो जाती थी। कमचारिया की सुविधा आदि के लिए सिगनलर उस छाटे-से मकान तथा पास-पडास के कम टूटे-फूटे मकानो में टेलीफोन के तार दौडा रहे थे।

कात्या ने एक प्याली चाय ली—बहुत बढ़िया चाय थी। कोई आध घटे बाद कमाडर की बन्द जीपगाडी उसे तेजी के साथ कोर हेडक्वाटर की ओर लिये जा रही थी। इस समय वह टामी-गन से लैस एक सर्जेंट के साथ थी। बधे हुए सिर वाले सीनियर टक लफ्टिनेंट, अगारे जमी आखो और थके हुए चेहरे वाले कनल और दजनो दूसरे लोगा के चेहरे कात्या की स्मृति से उतर चुके थे।

प्रात काल कसकर पाला पडा और कोहरे न सभी चीजें आखा से ओझल कर दी। कोहरे के उस पार कही सूरज निकल रहा था और कात्या ठीक उसी की ओर बढ रही थी।

वे एक पक्की सडक पर जा रहे थे, जिसपर उन्हे विपरीत दिशा मे फौजी टुकडिया माच करती हुई मिली। कात्या की जीप बार बार सडक पर से उतरकर सीधी स्तपी मे बर्फ़ की पतली चादर रौंदती हुई बराबर आगे बढती जा रही थी। यदि वह जीप मे न होती तो उसे अपनी मंज़िल तक पहुचने मे बहुत समय लग गया होता। शीघ्र ही कार कमीश्नाया नदी के छिछले, गदले पानी को पार करने लगी। नदी क्या थी मानो बर्फ़, हिम और बालू का मिश्रण थी। उसपर निरन्तर, और जगह जगह पर, तोपें

ग्रौर टैंक चलते रहने के कारण बर्फ, हिम ग्रौर बालू पिसकर एकाकार हो गये थे।

कोहरा छितरने लगा ग्रौर सूर्य क्षितिज के कुछ ही ऊपर नजर ग्राने लगा। इस समय सूर्य की ग्रोर देखने से ग्राखें चुंधियाती नही थी। इस छोटी-सी नदी के दोनो ग्रोर कात्या ने जर्मनो की वह किलेबन्दी देखी जो ग्रब सोवियत सेना के अधिकार मे ग्रा चुकी थी। सारी धरती को गोलो, टैको ग्रौर भारी भारी तोपे ले जानेवाले ट्रैक्टरो ने मथ डाला था।

नदी की दूसरी ग्रोर तो ग्रागे बढना ग्रौर भी मुश्किल हो गया था, क्योकि ग्रसख्य सैनिक दक्षिण-पश्चिम की ग्रोर बढ रहे थे ग्रौर गिरफ्तार शत्रु-सैनिक विपरीत दिशा में ले जाये जा रहे थे। ये बन्दी सैनिक छोटे छोटे दलो ग्रौर बडे बडे दस्तो के रूप मे पहरे मे चल रहे थे। गन्दे, ग्रौर बढी हुई दाढी वाले ये लोग, मैले-कुचैले ग्रोवरकोट पहने कीचड मे से होकर, सडक पर या स्तेपी पार करते हुए चले जा रहे थे। पराजय ग्रौर कैद की लाज न जसे उनकी कमर तोड दी थी। जिस क्षेत्र से होकर उन्हे ले जाया जा रहा था उसपर उनके ग्रपने विध्वस ग्रौर सहार के चिह्न थे। जो उपजाऊ स्तेपी शताब्दियो से ग्रन्न का भडार रही थी, उसकी ग्रब बुरी हालत थी। गाव जलकर राख हो चुके थे। जहा तहा जले हुए टको या टूटी फूटी लारियो के ढाचें, बेकार तोपो की नलिया ग्रौर काले स्वस्तिका चिह्न से ग्रकित हवाई जहाजो के डैने, जमीन चाट रहे थे। दुश्मन की ग्रनगिनत लाशे स्तेपी मे ग्रौर सडक पर विकृत ग्रौर पाले से जमी हुई पडी थी। उन्हे उठा ले जाने के लिए न कोई था वहा, ग्रौर न ही किसी को समय मिला था। टको ग्रौर भारी तोपो ने उनके ऊपर से निकलकर उनका भुरता बना दिया था।

बढती हुई पक्तियो में मार्च करते या टैंको ग्रौर लारियो में बैठे हुए

इन थके माद व्यक्तियो के चेहरा पर आह्लाद और उत्साह झलक रहा था क्योकि युद्ध की कठोर परीक्षाओ में उन्हे सफलता मिली थी, विजय मिली थी। इस समय उनका ध्यान दुश्मना की लाशा पर न था। किन्तु कात्या जरूर इन लाशा की ओर नकचढी तटस्थता के साथ देख लेती थी।

यह युद्ध इतिहास के सबसे बडे युद्धा में से एक था और स्तालिनग्राद में हिटलर की फौज को परास्त करने में काम आनेवाली एक कडी। जसे ही युद्ध दक्षिण-पश्चिम की ओर बढता गया, उसका अनुपात और भयानकता बढती गयी। छटते हुए कोहरे में जहा-तहा हवाई लडाइया शुरू हो गयी थी, स्तपी के विशाल क्षेत्र में भारी भारी तोपें आग उगल रही थी और जहा तक नजर जा सकती थी, मार्च करती सेना, रसद, सामान और शस्त्रास्त्रा का ही दृश्य दिखाई पडता था क्योकि बडे पैमाने पर होनेवाली फौजी कारवाइयो के साथ इनका चोली-दामन का सबब होता है।

दोपहर के समय, जब कोहरा बहुत कुछ छट चुका था, लेकिन अग्नि-दग्ध स्थाना का धुआ अब भी हवा में अटा हुआ था कात्या गार्ड्स टैंक कोर के हेडक्वाटर में पहुची। वस्तुत यह भी मुख्य हेडक्वाटर न था, बल्कि कोर कमाडर की अस्थायी कमान चौकी थी, जो मील्लेरोवो के उत्तर में, ईटा के बने एक रेलवे स्टेशन में बना ली गयी थी। यह सचमुच आश्चर्य की बात थी कि यह स्टेशन गोलो का निशाना बनने से बच गया था। पास वाले गाव की तो ईट ईट गिर गयी थी। किन्तु जैसा सभी नवमुक्त स्थाना में देखने को मिलता है, यहा भी अविराम सैनिक तथा सोवियत नागरिक जीवन की कारवाइया साथ साथ चल रही थी। सोवियत नागरिक जीवन फिर से सामान्य स्तर पर आने लगा था।

कमान-चौकी में रहनेवाले व्यक्तियो में से जिस पहले व्यक्ति पर कात्या की नजर पडी, उसने उसके मस्तिष्क में युद्धपूर्व जीवन का, अपने पति का, अपने परिवार का, और पहले अध्यापिका के पद पर और बाद

में शिक्षा विभाग की एक साधारण कर्मचारिणी के रूप में अपने कार्यों का चित्र खड़ा कर दिया था।

"अन्द्रेई येफ़ीमोविच! तुम!" यह चीख जैसे उसके मुह से अनायास निकल गयी और उसने दौड़कर उसके गले में बाह डाल दीं।

वह उन्इनी छापामार हेडक्वाटर का एक नेता था जिसने पाच महीने पहले अपनी खुफिया कारवाइया शुरु करने के पूव, प्रात्सेको को निर्देश दिये थे।

"अब तुम्ह चाहिए कि हम सभी को सीने से लगाग्रो," अपनी लम्बी लम्बी बरौनिम्रो के पीछे से शात, भूरी आखो से देखत हुए एक दुबले-पतले युवक जनरल ने कहा।

कात्या ने इस जनरल पर एक निगाह डाली। उसका चेहरा तपा हुआ और रूखा था। दाढी बडी सावधानी से बनायी गयी थी। कनपटी पर उसके बाल सफेद पड रहे थे। सहसा कात्या झेप गयी। उसने दोना हाथो से अपना चेहरा ढक लिया और अपने गम किसानी शॉल मे मुह दुबका लिया। इसी मुद्रा में—भेड की खाल की जैकेट पहने और पैरा में फल्ट बूट लगाये, दोना हाथा से मुह ढापे—कात्या खडी रही। उसके आस-पास चुस्त-दुरुस्त सैनिक खडे थे।

"देखो न, तुमने उसे आते ही परेशानी मे डाल दिया। तुम्हे यह भी नही मालूम कि औरता के साथ कसे व्यवहार करना चाहिए?" मुस्कराते हुए अन्द्रेई येफीमोविच ने कहा। सभी अफसर हस दिये।

"माफ कीजिये," जनरल बोला और अपने पतले हाथ से धीरे-से कात्या का कधा छू दिया। कात्या ने भी अपने चेहरे पर से हाथ हटा लिये। उसकी आखें चमक रही थी।

"नही, नही, कोई बात नही," वह बाली और जनरल कात्या की जकेट उतारने में उसकी मदद करने लगा।

उन दिनो के अधिकाश सोवियत अफसरो की भाति, कोर-कमाडर भी, अपने पद और कर्त्तव्य को देखते हुए, अभी तरुण ही था। परिस्थितिया के बावजूद वह स्वाभाविक रूप से शात, गभीर, विश्वस्त, व्यवहार कुशल विनोदप्रिय और शिष्ट था। उसके साथ के सभी सनिको पर भी उसी स्थिरता, शिष्टता और करीने की छाप थी।

इधर प्रोत्सेंको की रिपोर्ट की सकेतभाषा का रूपान्तर किया जा रहा था और उधर जनरल ने महीन कागज पर बने वारोशीलावग्राद प्रदेश के छोटे-से नक्शे को मेज पर फैले हुए एक बडे-से फौजी नक्शे पर रख दिया। यही काम प्रोत्सेको ने कात्या की आखो के सामने केवल दो रात पहले किया था। हा, केवल दो राते पहले! अब यह सोचना भी कठिन था! जनरल की पतली अगुलियो ने महीन कागज को सीधा किया।

"यह काम कितना अच्छा और नाजुक है!" वह खुशी से भरकर बोल उठा, 'भाड में जाये! जरा देखना तो अन्द्रेई येफीमोविच, ये फिर मिऊस पर किलेबदी कर रहे है।"

अन्द्रेई येफीमोविच नक्शे पर झुक गया। उसके चेहरे की अनगिनत झुरिया गहराने लगी और वह अपनी उम्र से अधिक बडा लगने लगा। दूसर अधिकारी भी महीन कागज के नक्शे के इर्द गिर्द खडे हो गये।

"बात यह है कि मिऊस के किनारे किनारे हमारा उनका सामना न होगा, पर जानते हो इसके माने क्या है?" अन्द्रेई येफीमोविच पर एक प्रसन्नतापूर्ण दृष्टि डालते हुए जनरल बोला, "वे इतने बेवकूफ नही कि यह भी न समझें कि उन्हे उत्तरी काकेशिया और कुबान से हटना होगा!"

जनरल हस दिया। कात्या का चेहरा खुशी से लाल हो गया क्योकि जनरल के शब्दो और उसके पति की भविष्यवाणी का अर्थ एक ही था।

"अच्छा अब हम यह देखें कि यहा हमारे लिए नयी कौन-सी बात है।' जनरल न नक्शे पर पडा हुआ एक वडा-सा आतशी शीशा उठाया और छोटे-से नक्शे पर प्रोत्मेको के कुशल हाथ से बने चिह्नो और वृत्तो की जाच करने लगा। "यह हम पहले से ही जानते है, हूह, यह भी जानते हैं हूह था " उसने टिप्पणिया देखे बिना ही प्रोत्सका के सकेत चिह्न समझ लिये थे। टिप्पणियो को अभी तक सकेत भाषा में रूपान्तरित नही किया गया था। "इसके माने हैं कि हमारे वसीली प्रोखोरोविच का काम बुरा नही है, फिर भी तुम हमेशा यही कहते रहे—'खुफिया विभाग वाले अच्छा काम नही करते,'" जनरल ने हल्के व्यग्य से अपनी बात समाप्त की। वह अपनी बगल में खडे हुए कोर के स्टाफ चीफ, कर्नल को सबोधित करते हुए कह रहा था जिसका डील-डौल भारी और मूछे काली थी।

एक गजे मोटे और नाटे अधिकारी ने, जिसकी पीली किन्तु सजीव सी आखो में चतुराई झलक रही थी कर्नल के उत्तर का अनुमान पहले से ही लगा लिया था।

"कामरेड कमाडर, यह सूचना भी हमे ठीक उसी सूत्र से मिली थी" उसने बिना किसी झेप के कहा। वस्तुत यही अधिकारी, कोर-हेडक्वाटर का खुफिया चीफ, वसीली प्रोखोरोविच था।

"अरे! और मने समझा था कि यह सूचना तुमने खुद मालूम की है," निराश होकर जनरल बोला।

अफसर हस पडे। किन्तु वसीली प्रोखोरोविच ने न तो जनरल के ताने पर ही ध्यान दिया था और न अपने साथियो की हसी पर ही। प्रत्यक्षत वह इन बातो का आदी हो चुका था।

"नही, कामरेड जनरल, आप उन सूचनाओ की ओर विशेष ध्यान दीजिये जो उन्होने देकूल के आस-पास के इलाके के बारे में भेजी

है " वह आश्वस्त लहजे में बाला। "मैं सोचता हू, इस इलाक़े के बारे में हम अधिक जानकारी रखते हैं।"

कात्या का लगा जैसे वसीली प्रोखोरोविच की बातों से उस सूचना का महत्त्व कम हो गया था जो प्रोत्सका ने भेजी है और जिसके लिए उसने स्वय भी इतना लम्बा सफर तय किया है।

"जिस साथी ने मुझे यह रिपोर्ट दी है," उसने तीखेपन से कहना शुरू किया, "उसने मुझे इस बात के लिए आगाह कर देने को कहा है कि वह आपको दुश्मन के मामले के सबध में और भी विस्तृत सूचना देगा। मुझे आशा है कि वह इसी क्षण यह सूचना भेज रहा होगा। टिप्पणियों सहित इस नक्शे से तो प्रदेश की सामान्य स्थिति का ही पता चलता है।"

"ठीक है," जनरल बोला, "इस सूचना की जरूरत कामरेड वतूतिन और कामरेड ख्रुश्चेव को अधिक होगी। हम यह नक्शा उन्हीं को भेज देंगे। इसमें जिस सूचना का सबध सीधे हमसे है, हम उसी का इस्तेमाल करेंगे।"

रात में काफी विलब से, कात्या को अन्द्रेई येफीमोविच से अकेले बातचीत करने का मौका मिला।

वे बैठे नहीं, बल्कि उस गर्म और खाली कमरे में टहलते रहे थे। कमरे में, जमीन से हाथ लगी हुई बत्तियां जल रही थीं। कात्या पूछ रही थी

'यह तुम यहा कैसे आ पड़े, अन्द्रेई येफ़ीमोविच?"

'इससे तुम्हें ताज्जुब क्यों होता है? हम फिर अपनी उक्राइनी धरती पर लौट आये। अभी इसके अधिकांश भाग पर दुश्मन का अधिकार बना हुआ है पर जिस जमीन पर आ हो चुका है वह हमारा है, अपनी है। हमारी मातृभूमि में शान्ति यहां फिर से लौट रही है और यहां

सोवियत व्यवस्था की पुन स्थापना होने लगी है।" अन्द्रेई येफीमोविच मुस्कराया और उसके मजबूत और कुछ कुछ झुरियोवाले चेहरे पर सहमा तरुणाई झलकने लगी। "तुम तो जानती ही हो कि हमारी सेना उऋइनी छापामारा के साथ कधे से कधा मिलाकर ही आग बढ रही है। बिना हमारे व कर भी तो क्या सक्ते थे!" उसने कात्या पर एक निगाह डाली। उसकी आखा मे पहले चमक आयी और तब उसका चेहरा गभीर हो गया। "म चाहता था कि तुम कुछ आराम कर लेती और कल बातचीत करते। पर तुम वडी बहादुर हो," उसने कुछ शर्माते हुए कहा, किन्तु उसकी आखे कात्या की आखो मे गडी थी। "हम तुम्हे फिर वोरोशीलावग्राद भेजना चाहगे। हमे बहुत कुछ जानने की जरूरत है और यह सूचना केवल तुम्ही एकत्र कर सक्ती हो।" वह रुका और तब प्रश्नसूचक मुद्रा में, धीरे-से बोला, "हा, यदि तुम बहुत अधिक थक गयी हो "

किन्तु कात्या ने उसे अपनी बात पूरी न करने दी। उसका हृदय गव और आभार से दबा जा रहा था।

"धन्यवाद," वह फुसफुसायी, "धन्यवाद, अन्द्रेई यफ़ीमोविच! आगे कुछ मत कहो। इससे अधिक प्रसन्नता की बात मेरे लिए और कोई भी नहीं हो सक्ती," उसके शब्दो मे उत्तेजना थी और उसका सुनहरी बालोवाला धूप में तपा, सुन्दर चेहरा और भी खूबसूरत लगने लगा था—"मैं तुमसे केवल एक प्रश्न पूछना चाहती हू—कल मुझे जाने दो, मुझे मोर्चे के राजनीतिक विभाग में मत भेजो। मुझे आराम नही चाहिए।"

अन्द्रेई येफीमोविच ने एक क्षण तक सोचा, सिर हिलाया और मुस्करा दिया।

"हम इतनी जल्दी में नही है," वह बोला, "जो इलाके हमने ले

लिये है उन्हें ठीक करेंगे। देकूल और खास तौर से दोनेत्स पर हम आसानी से विजय न प्राप्त कर सकेंगे – मील्लेरोवो और वार्मेस्क जो हम रोके हुए हैं। और तुम्हें राजनीतिक विभाग को बहुत कुछ बताना है। इसलिए हमें कोई खास जल्दी नहीं है। तुम दो-तीन दिनों में जा सकती हो।"

"पर कल क्यों नहीं?" कात्या बोली। उसके हृदय में अभिलाषा और प्रेम उमड़-घुमड़ रहे थे।

तीन दिन बाद, रात के समय कात्या फिर गाल्या के मकान में आ गयी। वह भेड़ की खाल वाली वही जैकेट और काली शॉल डाले थी। उसके पास वही पासपोर्ट था जिसमें वह चीर की अध्यापिका के रूप में दर्ज थी।

सोवियत सेना उस छोटे-से गांव में छावनी डाले थी, किन्तु उत्तर और दक्षिण की पहाड़ियां अभी तक दुश्मनों के हाथ में थीं। जर्मन प्रतिरक्षा-पंक्तियां कमेन्स्काया और देकूल के बीच वाटरशेड के साथ साथ तथा देकूल पर दूर पश्चिम तक चली गयी थीं।

रात में नन्हा साशा, पहले की ही तरह गुप-चुप्प और आश्वस्त कात्या को उसी सड़क पर ले गया, जिसपर वह पहले बूढ़े फोमा के साथ आयी थी। और अन्ततः वह उस मकान में भी पहुंच गयी जहां से कुछ दिन पहले प्रोत्सको ने उसे उसकी महान यात्रा पर भेजा था।

वहां कोनियेंको नाम के अनेक लोगों में से एक ने बताया कि उसके पति को उसकी वापसी की सूचना दे दी गयी है और उसका पति सुरक्षित है किन्तु अभी उससे मिल न सकेगा।

इसके पश्चात् कात्या ने मार्फा कोनियेंको के पास जाने की तयारी की, और बिलकुल अकेली, रात दिन चलती रही। चौबीस घंटों में वह मुश्किल से दो-तीन घंटे आराम करती। किन्तु अपनी मंजिल पर पहुंचने

पर उसे यह हृदयविदारक समाचार सुनने का मिला कि माशा यूविना को मार डाला गया है।

जमना को उस्पेस्कोय गाव के प्रथम [illegible] केन्द्र पर सम्पर्क [illegible] का पता चल गया था। इस बात की सूचना जमन पुलिस मे काम करनेवाले अपने ही एक आदमी ने कातोवा बहनो का दी जिन्होने किसी प्रकार वहा से निकलकर इसकी इत्तिला उन खुफिया सघटना का दी जिनके सम्पक में वे थी। किन्तु माशा के उस्पेस्कोये की ओर रवाना होने तक यह खबर मार्फा कोर्नियेंका को न मिल सकी थी। सडक पर भी माशा का पता चलाने की सारी कोशिशें बेकार सिद्ध हुई थी। माशा जमन सशस्त्र पुलिस के हाथ मे पड गयी थी और उस्पेस्कोये में उसपर बडे बडे जुल्म किये गये थे। पुलिस के उसी अपने आदमी स बाद में यह पता भी चला कि माशा यूविना बराबर यही कहती रही कि उसका सबध किसी भी खुफिया सघटन से नहा है। उसने किसी के साथ विश्वासघात नही किया।

सचमुच यह हृदयविदारक समाचार था। किन्तु कात्या को दुखी होने का काई अधिकार न था—उसे अपनी सारी ताकत से काम लेना होगा।

दो दिन बाद वह वोरोशीलोवग्राद पहुच गयी।

अध्याय २१

इस समय तक जमन अधिकृत क्षेत्र के उन लागा तक को, जा समाचारा से अनभिज्ञ थे, और सैनिक कारवाइया के बारे मे तनिक भी न जानते थे, यह पता चल गया था कि हिटलरवादियो का अन्त निकट है।

नास्नादान जमे स्थाना में भी जा मार्चे से बहुत दूर थे, इस बात का पता यह दखकर चल रहा था कि हिटलरवादियो के लूट के साथी—

हगरियन और इतालवी भाडे के टट्टू और अन्तानस्कू की सेना के बचे-खुचे लाग जान बचा बचाकर भाग रहे थे।

रूमानियाई अफसर और सैनिक तक, बिना मोटर की सवारी या शस्त्रास्त्रा के, सभी सडका पर भागते नजर आते थे। रातदिन अपनी बग्घिया पर, जिनमें मरियल घोडे जुते होते थे, या पदल, अपने जजर ओवरकोटा की आस्तीना में हाथ डाले, फौजी टोपिया या बकरे की खाल के हैट लगाये, पाले से सुन्न हुए चेहरा पर तौलिये या औरता के भीतर पहनने के ऊनी कपडे लपेटे, भागते नजर आते थे।

इस तरह की एक बग्घी कोशेवोई के घर के दरवाजे पर आकर खडी हो गयी। उसमें से एक परिचित अफसर कूदा और घर में घुस गया। उसके पीछे उसका अदली था जो अपना और अपने अफसर का सूटकेस लिये था। अफसर का सूटकेस बडा और अदली का छोटा था। अदली का चेहरा एक ओर घूमा हुआ था और लग रहा था जैसे वह पाले से मारा हुआ अपना कान छिपा रहा हो।

अफसर का चेहरा दान्ता में दद के कारण सूजा हुआ था। वह कधो पर सुनहरी रग की पट्टिया भी नही लगाये था। वह दौडता हुआ रसोईघर में गया और स्टोव पर तुरन्त अपने हाथ सेकने लगा।

"हा, तो क्या मामला है?" मामा कोल्या ने उससे पूछा।

अफसर के चेहरे पर वही भाव आया, जिसके साथ ही साथ उसकी नाक की चाच भी हमेशा हिलने लगती थी, किन्तु इस समय तो उसकी नाक को पाला मार गया था। इसी लिए उसका हिलना बन्द हो गया था। उसने सहसा हिटलर की नकल करते हुए अपना मुह बनाया। वह उसमें कामयाब भी हुआ। क्योकि उसकी मूछ छोटी छोटी और आखा मे पागला का सा भाव था। फिर वह अपने पजा पर खडा हुआ और

भागने का स्वाग करने लगा। उसके चेहरे पर कोई मुस्कराहट न थी क्योकि वस्तुत वह मजाक न कर रहा था।

"हम अपनी पत्नी के पास घर जा रहे ह," अदली ने मौज म आकर कहा और अफसर पर एक सतक निगाह डालते हुए मामा कोल्या को आख मारी।

उन्होने कुछ आग तापी, कुछ पट मे डाला और अपने सूटकेस लेकर घर से निकले ही थे कि, जैसे अन्तर्प्रेरणावश, नानी ने येलेना निकालायेव्ना क पलग के कम्बल पलटे और देखा कि पलग की दोनो चादरे गायब ह।

नानी को इतना ताव आ गया था मानो उसकी जवानी ही लौट आयी हा। वह मेहमाना के पीछे पीछे दौडी और दरवाजे पर आकर उन पर इस बुरी तरह बरस पडी कि अफसर ने समझ लिया था कि किसी भी समय चिल्लपा करती हुई औरतो का झुड का झुड वहा इकट्ठा हो सकता है। उसने अर्दली को अपना छोटा सूटकेस खोलने का हुक्म दिया। एक चादर सूटकेस मे से निकली। नानी ने उसे हाथो मे लिया और चीखने लगी।

"दूसरी कहा है?"

अदली ने अपने मालिक की दिशा मे आखे मिचकायी, किन्तु मालिक ने अपना सूटकेस छीन लिया था और बग्घी म चढने लगा था। ता सचमुच वह उस चादर का रूमानिया लेता गया था, पर कौन जाने रास्ते में किसी उनइनी या माल्दावान छापामार ने प्राचीन रोमनो के इस वारिस और उसके अदली को दूसरी दुनिया का टिकट कटाकर खुद चादर वापिस ले ली हो।

कभी कभी कई घटनाए सहसा घट जाती है और उनसे कई जोखम के काम सर हो जाते है। दूसरी तरफ कई बार ऐसे कामा में

अधिक सफलता नही मिल पाती जिनके लिए बडी तैयारी की गयी होती है। और प्राय यह होता है कि एक भी गलत कदम उठ जाने से वडे से वडे कामो का भयकर परिणाम निकलता है।

३० दिसम्बर की शाम को, सेर्गेई, वाल्या और कुछ अन्य साथी क्लव को जा रहे थे कि उन्हाने देखा कि वारा से लदी एक जमन लारी एक मकान के सामने खडी है। लारी पर न ड्राइवर था और न कोई पहरेदार ही।

सेर्गेई और वाल्या लारी पर चढे, वोरे टटोले और इस निष्कष पर पहुचे कि उनमें नव वप के उपहार भरे हुए हैं। पिछली रात थोडी सी वफ पडी थी, और वह जम गयी थी। और वफ ने जैसे प्रकाश का दान किया था। लोग अभी तक सडका पर घूम रहे थे, फिर भी इन जवाना ने मौका पाकर कई वोरे लारी से नीचे गिराये और उन्हें घसीटते हुए पडोस के अहातो और सायवानो में ले आये।

क्लव डाइरेक्टर जेन्या मोश्कोव और आट मनेजर वान्या जेम्नुखोव ने यह सुझाव दिया था कि जैसे ही रात में क्लव से सभी लोग चल जाय कि वोरा को वही पहुचा दिया जाय, क्योकि क्लव के तहखाने में चीजें छिपाये जाने के लिए सभी तरह की जगहे मौजूद थी।

जमन सिपाही लारी के इद-गिद इकट्ठे हो गये और नशे में गालिया वकने लगे। खास कर कुत्ते की खाल क कालर वाला काट और वनावटी फेल्ट के वूट पहने हुए एक कार्पोरल तो आपे से वाहर हुआ जा रहा था। घर की मालिकिन वहा विना काट पहने खडी थी और जमना से वार वार कह रही थी कि वह कुछ भी नही जानती। वेशक जमन यह देख सकते थे कि उसका इस मामले से कोई सवध नही। आखिर जमन कूदकर लारी पर वठे, वह औरत घर में भागी और लारी सडक की ओर वढती हुई सशस्त्र पुलिस के थाने को चल दी।

इसके बाद छोकर बारे खींच कर क्लब म लाये और तहखाने में छिपा दिय।

सुबह वान्या जेम्नुखाव और मारकोव क्लब में मिले। उन्होंने उपहारा के एक भाग, खास कर सिगरेटा का तुरन्त ही बाजार में बेच डालने का निश्चय किया। दूसरे दिन नववर्ष दिवस था और सघटन को पसे की जरूरत थी। स्तखाविच भी क्लब में था। उसने इस प्रस्ताव का समर्थन किया।

बाजार में जमन चीजा के सौदे लुक छिपकर खूब हुआ करते थे। दूसरा म अधिक यह काम जमन सिपाही करते थे। वे वादका, गम कपडे और खाने की चीजा के बदले मे सिगरेटें, तम्बाकू, मामबत्तिया और पेट्रोल दिया करते थे। जमन सामान हाथा हाथ बिकत रहत और पुलिस वाले उन अनदेखा कर देते। मोस्कोव के पास एसे बहुत-से लडके थे, जो कुछ कमीशन लेकर सिगरेटें बेचने का तैयार हो गय।

उस दिन पुलिस वाला न घटनास्थल के पास-पडोस के मकाना की तलाशी ली थी किन्तु उन्ह नववर्ष के उपहारा का कोई सुराग न लगा था। अब वे इन व्यापारिया पर निगाह रख रहे थे। आखिर खुद पुलिस चीफ सोलिकोव्स्की ने एक लडके को पकड लिया जिसके पास सिगरेटें थी।

जब उससे पूछ-ताछ की गयी तो उसने बताया कि मने एक बूढे को कुछ रोटी देकर यह सिगरेटे प्राप्त की ह। उस लडके पर कोडे बरसाये गये। किन्तु उसे ता जिन्दगी म एक से अधिक बार कोडे पड चुके थे—उसने अपने साथिया के साथ कभी गद्दारी नही की थी। मारपीट कर, उस रात हुए लडके को रात तक जेल की एक कोठरी मे रखा गया।

दूसरे कामा के सिलसिले में बताते हुए पुलिस चीफ ने मिस्टर ब्रूक्नेर को उस लडके की गिरफ्तारी की भी बात बतायी जिसके पास से

जमन सिगरेटे निकली थी। उसने इस घटना का सवध लारिया से हुई दूसरी चारिया से भी जोड दिया था। मिस्टर ब्रूक्नेर ने स्वय ही उस बालक से पूछ-ताछ करने का निश्चय किया।

बालक कोठरी में ही सो गया था। रात काफी हो चुकी थी जब उसे जगाया गया और ब्रूक्नेर के कमरे में लाया गया। वहा दो जमन और भी खडे थे--एक था पुलिस चीफ और दूसरा दुभाषिया।

उस लडके ने नकियाते हुए सारी कहानी दुहरा दी।

मिस्टर ब्रूक्नेर को क्रोध आ गया। उसने लडके का कान पकडा और उसे दालान से खीचते हुए ले गया।

लडके को एक कोठरी में डाल दिया गया, जहा ऊचे ऊचे पायोवाले खून से सने दो तख्त रखे थे। छत पर से रस्सिया लटक रही थी। एक लम्बे मेज़ पर लोहे की छड बरमे, बिजली के तारा के बल पडे हुए कोडे, एक कुल्हाडी और जाने क्या क्या भयकर चीजे रखी थी। लोहे के एक स्टोव म आग जल रही थी। एक कोने मे बाल्टी म पानी रखा था। कमरे के दो ओर वैसी ही नालिया बनी थी जैसी हमामा में देखने को मिलती है।

एक मोटा और गजा जमन सिपाही एक मेज के पास बैठा सिगरेट पी रहा था। उसके हाथो पर उजले रोयें थे, हाथ बडे बडे और लाल थे। वह काली पोशाक पहने था और सीग वाले हल्के फ्रेम का चश्मा लगाये था।

छोटे लडके ने उसकी ओर देखा और डर से कापते हुए बता दिया कि ये सिगरेटें उस मोस्कोव, ज़ेम्नुखोव और स्तख़ोविच ने दी थी।

उसी दिन पेर्वोमाइका की वीरिकोवा नामक एक लडकी की बाज़ार में अपनी एक सहेली ल्यादुस्काया से अचानक मुलाकात हो गयी। दोना एक ही स्कूल में, एक ही कक्षा की एक ही बेंच पर बैठकर पढा करती

थी। किन्तु लडाई के आरम्भ में, जब से ल्यादुस्काया के पिता का तबादला आस्नोदोन बस्ती में किसी पद पर हुआ था, दोना एक दूसरे से बिछुड गयी थी।

उनकी आपसी मित्रता उतनी अधिक नही थी। दोनो ऐसे माहौल मे पली थी कि उन्हाने मौके का महत्त्व समझना सीख लिया था। और इस प्रकार की शिक्षा से दोस्ती का बल नही मिलता। दोना एक दूसरी को जानती-समझती थी, दोना की रुचिया एक-सी थी, और दोना इस सम्बध से लाभ उठाती थी। दोनो ही को अपने बचपन से ही, अपने माता पिता और उनसे सबद्ध लागो से दुनिया की जो जानकारी हुई थी उससे उनका यह विश्वास जमने लगा था कि सभी लोग स्वाथ के लिए जीते है, और जिन्दगी का लक्ष्य और उद्देश्य नुक्सान उठाना नही बल्कि दूसरो के मत्थे फलना-फूलना है।

स्कूल में वीरिकोवा और ल्यादुस्काया भिन्न भिन्न सामाजिक कार्यो में लगी रहती थी और अभ्यासवश और निर्बाध रूप से ऐसी ऐसी शब्दावली का प्रयाग करती थी जिसमें समसामयिक सभी सामाजिक और नतिक धारणाओ का समावेश हा जाता था। किन्तु उन्ह यह विश्वास था कि उनका फज उनके द्वारा प्रयुक्त की जानेवाली शब्दावली और स्कूल मे प्राप्त उनका ज्ञान—इन सब की व्यवस्था लोगो ने इसलिए की है कि वे अपने स्वाथ प्रयासो पर, और अपना मतलब गाठने के लिए दूसरो का इस्तेमाल करने पर, परदा डाल सके।

जब दोना एक दूसरे से मिलती तो कोई खास उत्साह न दिखाती, फिर भी उन्ह एक दूसरे से मिलकर प्रसन्नता होती। दोनो एक दूसरे स अपने कडे हाथ मिलाती। छोटी वीरिकोवा कनफटी वाली टोपी पहनती और उसकी छाटी छोटी चोटिया उसके कोट के भारी कालर पर लहराया करती। ल्यादुस्काया का क़द लम्बा, हड्डिया बडी, बाल लाल और

उगलिया के नाखून रग हुए थे। वे बातचीत करने के लिए बाजार की भीड मे एक ओर हट आयी।

"जमन! वाह! हमे आजाद करवाने आये थे!" ल्यादुस्काया बोली। "तहजीब तहजीब की रट लगाये रहते है, लेकिन वे एक ही बात सोच सकते है—अपना पेट कैसे भरा जाय और मुफ्त में मौज कैसे उडायी जाय। नही, म यह जरूर कहूगी कि मुझे उनस यह आशा न थी। तुम काम कहा करती हो?"

"वहा जहा कभी मवेशी कार्यालय हुआ करता था।" वीरिकोवा के चेहरे पर क्षोभ और क्रोध का भाव झलक उठा। आखिर वह किसी ऐसे से बातचीत कर सकती थी जो सही दृष्टिकोण से जमनो की आलोचना करना जानता था। "मुझे सिफ रोटी और २०० माक मिलते है, बस! व गधे है। यदि कोई स्वत उनके लिए काम करने आता भी है तो भी व जैसे आखे मूदे रहते है। अब मेरा भ्रम दूर हो गया है," वीरिकोवा बोली।

"मैंने तुरन्त समझ लिया था कि इस काम मे कोई लाभ नही। इसी लिए तो मैंने कोई काम हाथ में नही लिया," ल्यादुस्काया बोली, 'पहले मेरी जिन्दगी कोई बुरी नही कटती थी। हम थोडे-से लोग थे जो एक ही तरह मे सोचते विचारते थे और म चीजे खरीदने-बेचने के लिए गावो का दौरा कर लेती थी। किसी लडकी ने यह रिपोट कर दी कि म श्रम केन्द्र मे रजिस्टर नही हू। बडी शिकायत करने चली थी! म श्रम-केन्द्र के एक पुराने आदमी को जानती थी। बडा मजेदार आदमी था। वह जमन न था, लारेन या ऐसी ही किसी जगह का रहनेवाला था। मै कुछ समय तक उसके साथ घूमती फिरती रही। अन्त में वह मुझे पीने को शराब और सिगरेट देता था। इसके बाद वह बीमार पड गया और उसकी जगह काम करने के लिए एक मूरख आ गया। उसने मुझे आनाशासनन गान के काम पर भेज दिया। मुझ दिन भर बाग

उठानेवाली मशीन या हुंडिल घुमाना पडता था। यह मजाक नही है इसी लिए म यहा आयी हू, शायद श्रम-केन्द्र वाले मुझे किसी अच्छे काम पर लगा दें। तुम्हारी वहा काई सिफारिश लड सकती है?"

वीरिकोवा न घृणा स ओठ फुला लिय।

' मुझे इसस क्या लाभ हागा? " पर म तुम्ह यह बता दू-फौजियो के साथ रहन में बडा लाभ है। व यहा थाडे समय के लिए है। आगे-पीछे उन्ह जाना ही हागा। फिर तुम्ह उनस कुछ लेना-दना नही, काई जिम्मदारी नही। और व कजूस भी नही ह। व जानत है कि किसी दिन भी वे मौत के मुह म जा सकत ह, इसलिए कुछ मौज मजा कर लना उन्ह बुरा नही लगता। कभी आओ न! "

"कैसे आ सकती हू? नगर में और फिर सारे रास्ते तुम्हारे पर्वोमाइस्क तक आना-पन्द्रह मील का सफर है यह! "

"मेरा पर्वोमाइस्का! कुछ दिन पहले यह तुम्हारा भी ता था न! किसी तरह काशिश करके आ ही जाओ। फिर तुम मुझे अपने नय काम के बारे में भी बताना। म तुम्ह कुछ दिखाऊगी शायद दूगी भी। मरा मतलब समझ गयी न। ता आने की काशिश करना," और वीरिकोवा ने अपना छाटा-सा कडा हाथ बढा दिया।

शाम का एक पडासिन ने, जो उस दिन श्रम-केन्द्र म गयी थी, वीरिकोवा का एक पत्र थमा दिया-"श्रम केन्द्र मे तुम्हारे मूरख, बस्ती क हमारे मूर्खों से ज्यादा गधे है।" ल्यादस्काया ने यह भी लिखा था कि उसकी याजनाए पूरी नही हुइ और वह 'निराश' घर जा रही है।

नववर्ष के एक दिन पहले पेर्वोमाइस्का के चुने हुए घरा और नगर भर में अनेक तलाशिया ली गयी। वीरिकोवा के घर में पुलिस को ल्यादस्काया का पत्र मिल गया, जा उसने स्कूल की किसी पुरानी कापी में असावधानी

स डाल दिया था। परीक्षण-जज कुलशोव को, वीरिकोवा से उसकी सहेला के भाम का पता चलाने में कोई तकलीफ न हुई। वीरिकोवा ने, डरकर, ल्यादस्काया की 'जमन विरोधी' भावनाम्रा का मनगढन्त वणन करना शुरू किया।

कुलेशाव ने वारिकावा स, छुट्टी के वाद, थाने पर आने का कहा। उसने पत्र अपने पास रख लिया था।

मास्कोव, जेम्नुखोव और स्तखोविच की गिरफ्तारी की खवर सवस पहले सेर्गेई त्युलेनिन को मिली। उसने यह वात अपनी वहना, नादया और दाशा स कही, अपने मित्र वोल्का लुक्याचेंका को आगाह किया और भागा भागा ओलेग से मिलने गया। वहा उसे वाल्या और इवान्त्सोवा वहनें मिल गयी। वे दिन भर का काम समझने के लिए प्रतिदिन सुवह ओलेग के घर आती थी।

पिछली रात, ओलेग और मामा कोल्या ने सोवियत सूचना केन्द्र की विज्ञप्ति लिख ली थी। विज्ञप्ति में स्तालिनग्राद क्षेत्र मे लाल सेना के छ सप्ताह के आक्रमण के परिणाम वताये गये थे और यह भी वताया गया था कि स्तालिनग्राद के प्रवेश-मार्गों पर वडा वडी जमन सेनाओं पर दुहरा घेरा डाल दिया गया है।

लडकिया ने हसते हुए, सेर्गेई के हाथ पकड लिये और यह समाचार सुनाने के लिए सेर्गेई पर झपट पडी। वशक सेर्गेई पक्के दिल का आदमी था फिर भी जव उसने उन्ह गिरफ्तारी की भयानक खवर सुनायी ता उसके ओठ काप गये।

कुछ क्षणो तक ओलेग निश्चेष्ट वैठा रहा। उसके चेहरे का रग उड गया था, उसके वडे वडे हाथो की लम्वी लम्वो उगलिया वध गयी थी और उसके माथे पर गहरी रेखाए उभर आयी थीं।

आखिर वह उठ खडा हुआ और उसके चेहरे पर जैसे व्यवहारोचित भाव छा गया।

"सुना लडकियो," वह धीरे-से बोला, "तुर्केनिच और ऊल्या का पता चलाओ। फिर 'तरुण गाड' हेडक्वाटर के निकट सम्पक में आनवाले लोगो के पास जाकर कहो कि वे सभी चीजे छिपा ल और जो कुछ न छिपा सके उन्हे नष्ट कर डाले। उनसे यह भी कहना कि आगे क्या करना है यह हम उन्हे दो घटे के भीतर ही बता देंगे। अपने रिश्तेदारा को भी आगाह कर दना। और हा, ल्यूबा की मा को मत भूलना," वह बोला (ल्यूबा वोरोशीलोवग्राद में थी), "अब कुछ देर के लिए मुझे भी जाना होगा।"

सेर्गेई ने अपनी रुई की जैकेट और टोपी पहन ली। कडी सर्दी के बावजूद सिर पर वह एक मामूली टोपी पहने था।

"कहा जा रहे हो?" ओलेग ने पूछा।

वाल्या का सहसा यह सोचकर शम आयी कि सेर्गेई उसके साथ जाने की तैयारी कर रहा है।

"म सडक पर निगाह रखने के लिए बाहर निकल रहा हू। इस बीच तुम सब तयार हो जाओ," वह बोला।

और फिर पहली बार उन सब को लगा कि जो घटना वान्या, मोश्कोव और स्तखोविच के साथ घटी है वह किसी भी समय, खुद इस समय उनके साथ भी घट सकती है।

लडकिया परस्पर यह निश्चय करने के बाद कि कौन किस घर में जायेगा, घर से बाहर निकल पडी।

जब वाल्या अहाता पार कर रही थी तो सेर्गेई ने उसे रोककर कहा—

"अब से होशियारी बरतना। अगर हम तुम्हे यहा न मिल, तो अस्पताल में नताल्या अलेक्सेयेव्ना से मिलना। फिर म वही तुमसे मिल

जाऊगा। तुम्हारे बिना मैं कही न जाऊगा।" वाल्या ने चुपचाप सिर हिलाया और तुर्केनिच के पास दौड गयी।

ओलेग अपनी सामान्य चाल से चलते रहने का प्रयत्न करता हुआ पोलीना गेओर्गियेव्ना के पास गया, जो श्रम-केन्द्र के निकट एक सडक पर रहती थी।

जिस समय उसने उसके घर में प्रवेश किया वह आलू छाल छीलकर उन्हे, स्टोव पर चढा एक कढाई में, डाल रही थी। जब ओलेग ने उसे अपने साथियो की गिरफ्तारी की बात बतायी तो उसके चेहरे का रग उड गया। औरत में स्वभावत बडा धैर्य और अनुशासन था। परन्तु इस समय उसके हाथ से चाकू छूट पडा और कुछ क्षणो के लिए वह मूक-सी बनी रह गयी। फिर उसने अपने को सभाला।

उस दिन नववर्ष की छुट्टी थी, अत कोई भी काम पर न गया था। सचमुच ल्यूतिकोव घर ही मे होगा, पर सुबह दूध दे आने के बाद अब दिन में वहा जाना ठीक नही – उसने सोचा। साथ ही देर करना भी उचित नही। बहुत-सी चीजें ऐसी है जो घटो में नही, मिनटो में तय होती ह, मिनटो में।

अगरचे पोलीना गेओर्गियेव्ना 'तरुण गार्ड' के मामलो से अवगत थी, फिर भी उसने ओलेग से यह दरियाफ्त किया कि क्या गिरफ्तार व्यक्तियो मे से कोई यह भी जानता है कि ओलेग और तुर्केनिच का सबध जिला पार्टी कमिटी मे भी है। बेशक वे सभी इस सबध के बारे म तो जानते थे किन्तु यह सबध व्यक्तिगत रूप से किस किस के साथ था यह कोई न जानता था। मोश्कोव स्वय जिला पार्टी कमिटी के सम्पर्क में रहता था लेकिन उसपर हर दशा में भरोसा किया जा सकता था। जेम्नुखोव केवल पोलीना गेओर्गियेव्ना की मार्फत जिला पार्टी कमिटी के सम्पर्क में था। वह वान्या को इतनी अच्छी तरह जानती थी कि वह खुद भी किसी खतरे में पड सकती है इसका उसे विचार भी न आया।

बेशक यह दुर्भाग्य की बात थी कि स्तखोविच को 'तरुण गार्ड' दल की इतनी अधिक जानकारी थी। ओलेग का कहना था कि वह ईमानदार तो है किन्तु कमजोर है।

पालीना गेग्रोगियेव्ना ओलेग को अपने घर पर बिठाकर बाहर चली गयी और यह समझाती गयी कि यदि कोई उसे पूछने आये तो वह क्या उत्तर दे।

यह कल्पना करना कठिन नहीं है कि ओलेग के लिए वह घटा कितना पहाड़ हो गया था। सौभाग्य से कोई पोलीना गेग्रोगियेव्ना का पूछने न आया। वह दीवाल के दूसरी ओर पड़ोसियों के इधर-उधर आने-जाने की खटपट सुन रहा था। इस बीच कोई खास बात न हुई।

आखिर पोलीना गेग्रोगियेव्ना लौट आयी। बाहर की ठंडक से उसके गाल फिर लाल हो गये थे। ल्यूतिकाव ने प्रत्यक्षत अपनी बातों से उसके हृदय में आशाएं भर दी थी।

"अब सुनो।" उसने अपना शॉल उतारा और कोट के बटन तक खोले बिना ओलेग के सामने बैठ गयी। "उसने कहा है कि मैं तुम्हें समझा दूं कि तुम निराश न हो। और उसने तुम सब को यह निर्देश दिया है कि तुम सब फौरन नगर छोड़कर चले जाओ। यह बात 'तरुण गार्ड' के हेडक्वाटर के सभी सदस्यों और दल अथवा गिरफ्तार लोगों से सम्पर्क रखनेवाले सभी लोगों के लिए है। दो तीन भरोसे के आदमियों को संघटन का चार्ज दे दो, उसके लीडर को मेरे सम्पर्क में कर दो और चले जाओ। अगर तुममें से किसी को यहां से कुछ दूर के किसी नगर या गांव में पनाह मिल सके तो वह वहां छिप रहे। वह हेडक्वाटर के सदस्यों और उनसे सम्पर्क रखनेवालों को उत्तरी जिला में, दोनेत्स के दूसरी ओर चले जाने की राय देता है। शायद वहां से वे प्रतिरक्षा पंक्तियों के उस पार जा सकेंगे या फिर लाल सेना के आने तक प्रतीक्षा करेंगे। ठहरो, इतना ही

"अनातोली पापाव यहा रहगा," एक क्षण विचार करने क बाद ग्रोलेग बोला, "यदि उस कुछ हो गया तो फिर कोल्या सुम्स्काई काम करेगा। उस जानती हो?"

दोनो कुछ मिनटो तक चुपचाप बैठे रहे। अब उसे अपने रास्ते चल देना चाहिए।

"कहा जाने की सोच रहे हो?" पोलीना गग्रोगियेव्ना ने धीरे-से पूछा। वह उसके और उसके परिवार के हितैषी के नाते पूछ रही थी। ग्रोलेग भी यह अच्छी तरह समझ रहा था कि वह कितनी अधिक परेशान हो उठी है।

ग्रोलेग का चेहरा इतना उतर गया और उदास हो उठा कि उसको अपने प्रश्न पर पछतावा होने लगा। फिर जसे बडी कठिनाई से वह धीरे-से बोला—

"तुम तो जानती हो म इस पते का इस्तेमाल क्यो नही कर सकता।"

बेशक वह जानती थी—नीना! वह बिना नीना के नही जा सकता था।

"हम मोर्चा साथ साथ पार करने का प्रयत्न करेगे," ग्रोलेग बोला, "अच्छा नमस्ते।"

दोनो एक दूसरे से गले मिले।

ग्रोलेग घर पर नही था जब वान्या तुर्केनिच उसके घर आया। कुछ समय बाद स्त्योपा सफोनोव और सेर्गेई लेवाशोव भी आये यद्यपि उन्हे नही बुलाया गया था। तत्पश्चात जोरा अरुत्युन्यान्त्स आया, पर बिना ओस्मूखिन को लिये हुए। नये वर्ष के दिन वोलोद्या ओस्मूखिन की अठारहवी वर्षगाठ पडती थी। इस अवसर पर उसकी बहन लुदमीला ने उसे उपहार में एक जोडी बने हुए ऊनी मोजे दिये थे। इसके बाद वे अपने बाबा से मिलने गाव चले गये थे।

तुर्केनिच ने घर के इर्द-गिर्द निगरानी रखने के लिए कुछ छोकरों को बाहर भेज दिया था। फिर वह और सेर्गेई, बिना ऊल्या की प्रतीक्षा किये हुए, आपस में परामर्श करने लगे। ऊल्या को अभी बहुत दूर से आना था।

उनका अगला क़दम क्या हो? इस प्रश्न का उत्तर उन्हें फ़ौरन ढूंढना था। उन्होंने समझ लिया था कि इससे न सिर्फ़ उनके गिरफ़्तार साथियों का ही, बल्कि सारे संघटन का भाग्य बंधा है। तो क्या उन्हें यह देखने तक इन्तज़ार करना चाहिए कि आगे क्या होता है। उन्हें किसी भी क्षण गिरफ़्तार किया जा सकता है। तो वे छिप जायें क्या? किन्तु उन्हें छिपने की भी तो कोई जगह न थी। सभी तो उन्हें जानते थे।

वाल्या लौट आयी, फिर आल्या इवान्त्सोवा ऊल्या के साथ और नीना भी आ गयी। नीना उन्हें रास्ते में मिल गयी थी। नीना ने आकर खबर दी कि इस समय क्लब पर जर्मन सशस्त्र पुलिस और पुलिस वालों का पहरा है और किसी को भी अन्दर नहीं जाने दिया जा रहा है। पास-पड़ोस के सभी लोगों को क्लब लीडरों की गिरफ़्तारी और इस बात का पता चल गया है कि जर्मनों के नववर्ष के उपहार क्लब के तहख़ाने से बरामद हुए थे।

तुर्केनिच और नीना ने यह मत ज़ाहिर किया कि छोकरों के पकड़े जाने का सिवा इसके और कोई कारण नहीं। ख़ैर घटना गम्भीर थी किन्तु इसका यह अर्थ न था कि सारे संघटन का दफ़नाया जाना सन्निकट है।

"ये लोग हमारे साथ ग़द्दारी नहीं करेंगे," तुर्केनिच उसी विश्वास से बोला, जो उसके स्वभाव का अंग बन गया था।

इसी समय ओलेग आ गया और बिना कुछ कहे-सुने सब के पास बैठ गया। उसके चेहरे की मुद्रा गम्भीर थी। उसने तुर्केनिच को आंखों ही आंखों में बुलाया और उसे पोलीना गेओर्गियेव्ना का लिखा हुआ पर्चा थमा दिया। उन्होंने धीमे-धीमे बातचीत की, फिर सेर्गेई और तर्केनिच

के पास लौट आये। सभी चुपचाप उनका इन्तज़ार कर रहे थे। सभी के मन आशा और दुख से भर गये थे। वे प्रश्नसूचक मुद्रा में ओलेग की ओर टकटकी लगाये थे।

बोलते समय ओलेग के चेहरे पर कठोरता झलकने लगी।

"हमें समझ लेना च   चाहिए कि हमारे लिए सुरक्षा की कोई आशा नही," उनकी ओर सीधा और साहस के साथ देखते हुए उसने कहना शुरू किया। "भले ही इसस हमें कितनी ही चोट क्यो न पहुचे, भले ही यह हमारे लिए कितना ही कड़ुवा घूट क्यो न हो, हमें यह विचार तक कर देना चाहिए कि हम यहा ल   लाल सेना के आने तक ठहरे रहगे, पीछे से उसकी म   मदद करेंगे, या वे काम ही कर सकेग जिनकी योजना हमने कल के लिए बनायी है। वरना यह हमारी और हमारे लोगो की आखिरी घडी होगी।" वह मुश्किल से ही अपने को सभाल पा रहा था। सब के सब, मूक, उसकी बात सुनते रहे। उनके चेहरे कठोर पड गये थे और रग उड चुके थे। "पिछले कई महीनो मे जमन हमारी तलाश में है। वे जानत है कि हम जिन्दा ह। अचानक ही उनका हाथ सीधा हमारे सगठन के केद्र पर पड गया है। अगर उन्हे इन उपहारो के अतिरिक्त कुछ मालूम न हो और आगे भी किसी बात का पता न चले," उसने ज़ोर देकर कहा, "तो भी वे उन लोगा पर झपटेंगे जिनका किसी न किसी रूप मे क्लब मे सम्पक था। वे दजनो निरपराध लोगा को भी गिरफ्तार कर लेग। तो किया क्या जाय?" उसने कुछ सोचा और बोला—"हमें ज़रूर चले जाना चाहिए। नगर से चले जाना चाहिए बेशक हम सबो को नही। क्रास्नादोन बस्ती क लोगो को इस आघात से कोई ख़ास चोट नही पहुची है। यही बात पेर्वोमाइका के साथियो के लिए कही जा सकती है। वे अपना काम चालू रख सकते हैं।" सहसा उसने ऊल्या पर एक गम्भीर दृष्टि डाली, "ऊल्या को छोडकर क्योकि हमारे

हेडक्वाटर की सदस्या होने के नाते उसे किसी भी समय गिरफ्तार किया जा सकता है। हमने अपनी लड़ाई इज्जत के साथ लडी है," वह कहता गया। "और हम इस भावना से एक दूसरे से अलग हो सकते है कि हमने अपना कर्त्तव्य पूरा किया। हमे अपने तीन साथियो से हाथ धोना पड़ा, जिनमें हमारा सबसे अच्छा साथी, वान्या जेम्नुखोव भी शामिल था। किन्तु हमें, निराशा के आगे घुटने टेके बिना अपने रास्ते पर चलना चाहिए। हमसे जो भी हो सकता था वह हमने किया।"

उसने अपनी बात पूरी की। दूसरे लोग न कुछ कहना ही चाहते थे, न कहने के काबिल ही रह रहे थे।

उन्होंने पाच महीनो तक एक दूसरे से कधे से कधा भिडाकर सामजस्य के साथ काम किया था। जर्मन शासन के अधीन पाच महीनो तक। इन महीनो का प्रत्येक दिन, शारीरिक और नैतिक अत्याचार से दबकर, सप्ताह के सामान्य दिवस की अपेक्षा कही अधिक भारी हो गया था। पाच लम्बे लम्बे महीने–वे कितनी जल्दी बीत गये थे। और इस बीच वे सब के सब खुद कितने बदल गये थे। इन पाच महीनो में उन्होने अच्छे, बुरे का महान और बीभत्स का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था। सब के हितो के लिए तथा एक दूसरे के हित के लिए इन महीनो मे उन्होने कितने विलक्षण प्रयास किये थे, कितना कुछ सोचा, विचारा था। अब उन्हे पता चला था कि यह 'तरुण गार्ड' सघटन उनके लिए कितने महत्त्व की चीज है, कि वे उसके कितने ऋणी है। फिर भी, उन्हे इस सघटन से नाता तोड़ना पड रहा था।

वाल्या, नीना और ओल्या चुपचाप रो उठी। ऊल्या बाहर से शान्त लग रही थी, किन्तु उसकी आखो में एक शक्तिशाली और भयकर चमक थी। सेर्गेई का सिर मेज पर झुक गया और उसकी उगली का नाखून मेजपोश पर कुछ रेखाए खीचने लगा। तुर्केनिच की स्वच्छ आखें सीधी

अपने सामने की ओर देखे जा रही थी—उसके सुन्दर ओठो व इद गिद की रेखाए, जिनसे दृढता झलकती थी, गहरा गयी थी।

'कोई और सु-सुझाव ?" ओलेग ने पूछा।

किसी को कोई सुझाव न देने थे। किन्तु तभी ऊल्या बाल उठी।

"इस समय म अपने जाने की जरूरत नही समझती। पेर्वोमाइस्की बस्ती मे हमे क्लब से बहुत कम काम करना पडता था। म यहा कुछ ठहरूगी, शायद कुछ और काम कर सकू यहा। मै सतक रहूगी।"

"तुम्ह जरूर चली जाना चाहिए," ओलेग ने कहा और उसपर फिर बडी गम्भीर निगाह डाली।

सेर्गेई बराबर चुप रहा था। अब बाला—

"उसे निश्चय ही जाना होगा!"

"म सतक रहूगी," ऊल्या ने एक बार फिर कहा।

उन्हाने भारी दिल से, और एक दूसरे की आखे बचाते हुए, हेडक्वाटर के तीन सदस्या को छोड जाने का निश्चय किया—अनातोली, पोपोव, सुम्स्काई और यदि ऊल्या न जाय ता वह भी। यदि ल्यूबा लौट आये और यह पता चले कि वह ठहर सक्ती है तो वह चौथी होगी। उन्हाने एक प्रस्ताव पास किया—हर शख्स जल्द से जल्द यहा से निकल जाय। ओलेग ने बताया कि वह और सदेशवाहिकाए तब तक रहेगी जब तक सब को आगाह नही कर दिया जाता और जब तक पोपाव और सुम्स्कोई से सम्पक स्थापित नही हो जाता। किन्तु 'तरुण गाड' हडक्वाटर का कोई भी सदस्य और हेडक्वाटर से निकट से सबधित कोई भी व्यक्ति रात अपने घर पर न बितायेगा।

उन्हाने जोरा, सेर्गेई लेवाशोव और स्त्योपा सफोनोव का बुलाया और उन्ह हेडक्वाटर के निश्चयो की सूचना दी।

अब विदा लेने की बारी आयी। ऊल्या ने ओलेग का गले लगाया।

"ध-धयवाद," ओलेग बोला, "इस बात के लिए कि तुम मौजूद गी और अब भी मौजूद हो।"

ऊल्या उसके बाल सहलाने लगी।

किन्तु जब लडकिया ऊल्या से विदा होने लगी तो ओलेग का मन भारी हो गया और वह बाहर अहाते में निकल आया। उसके पीछे पीछे सेर्गेई त्युलेनिन भी चला गया। दोनो १९४३ के पाले और चौंधिया देनवाली धूप में बिना कोट पहने हुए बाहर जा खडे हुए।

"सब कुछ समझ लिया?" ओलेग ने धीरे-से पूछा।

सेर्गेई ने हामी भरी। "सब साफ है। तो स्तखोविच शायद कमजोर साबित हुआ। है न?"

"हा। पर इसका जिक्र करना ठीक न होगा। जब हम असलियत जानते ही नही, तो विश्वास न करना भी गलती ही होगी। शायद जमन उसपर अत्याचार कर रहे है और हम अब भी आजाद है।"

दोनो कुछ क्षणो तक मौन रहे।

"तुम कहा जाने की सोच रहे हो?"

"मोर्चा लाघकर जाने का प्रयत्न करूगा।"

'वही म भी करना चाहता हू। चलो हम सब साथ चले।"

"अच्छी बात है। सिफ मेरे साथ नीना और आल्या रहेगी।"

"म समझता हू वाल्या भी हमारे ही साथ चलेगी," सर्गेई बोला।

इस बीच सेर्गेई लेवाशोव, तुर्केनिच से विदा ले रहा था। उसके चेहरे पर झेंप और उदासी का भाव था।

"ठहरो! तुम क्या सोच रहे हो?" उसके चेहरे की ओर घूरते हुए तुर्केनिच ने पूछा।

'मैं कुछ समय यहा ठहरूगा," लेवाशोव ने दुखी होकर उत्तर दिया।

"ऐसा करना समझदारी न होगी," तुर्केनिच न धीरे-से कहा,

"तुम उसकी सहायता या रक्षा न कर सकोगे। और इधर तुम उसकी प्रतीक्षा करोगे, उधर वे तुम्हे धर लेगे। वह होशियार लडकी है—या तो भाग निकलेगी, या उन्हे बेवकूफ बनायेगी।"

"म नही जाऊगा," लेवाशोव ने कहा।

"नुम्हे लाल सेना से मिलने के लिए मोर्चा लाघकर जाना ही पडेगा।" तुर्केनिच की आवाज मे तीखापन चलक उठा। "अभी मुझे मेरे पद से नही हटाया गया है! मैं तुम्हे हुक्म देता हू।"

लेवाशोव ने कोई उत्तर नही दिया।

"तो, साथी कमीसार, तुम मोर्चा पार करने जा रहे हो। यह निश्चित है न?" ओलेग के फिर कमरे में आ जाने पर तुर्केनिच ने उससे पूछा। ओलेग ने उस पते का इस्तेमाल करने से इनकार कर दिया था जो उन दोनो को दिया गया था। इससे तुर्केनिच चिडचिडा उठा किन्तु वह जानता था कि ओलेग के निश्चय को बदलना सम्भव नही। जब उसने सुना कि ओलेग के दल मे पाच लोग रहेगे तो सिर हिलाता हुआ बोला—

"यह तो बहुत लोग हो गये। हमें तो लगता है जब तक हम यहा फिर एक बार मिलेगे तब तक हम सब के सब लाल सेना में होगे!"

दानो ने हाथ मिलाये और गले लगने ही वाले थे कि सहसा तुर्केनिच एक ओर हटा, और अपने दोना हाथ झुलाता हुआ मकान के बाहर निकल गया। सर्गेई लेवाशाव ने ओलेग को गले लगाया और तुर्केनिच के पीछे चल दिया।

स्त्योपा सफोनोव के रिश्तेदार कामेंस्क म रहते थे। उसने उनके पास जाने और वही लाल सेना के आने तक इन्तजार करते रहने का निश्चय किया। जोरा के दिमाग में एक सघर्ष चल रहा था जिसे वह क्सिी को भी बताने मे असमथ था। पर वह जानता था कि उसे ठहरना न चाहिए। शायद उसे नोवोचेर्कास्क मे अपने उसी चाचा के पास जाना

पड़े, जिसके पास पिछले अवसर पर यह और वान्या ज़ेम्नुखोव न पहुंच सके थे। जब जारा को वान्या के साथ अपने उस सफर की याद आयी तो उसकी आखो में आसू छलछला आये और वह सड़क पर निकल आया।

इसके बाद कुछ मिनटो तक पाचो कमरे में बैठे रहे—ओलेग, सेर्गेई त्युलेनिन तथा सदेशवाहिकाए। उन्होने यह निश्चय किया कि अच्छा हो यदि सर्गेई घर न जाय और आल्या, वीत्या लुक्याचेको की मार्फत, उसके घर वालो को आगाह कर दे। इसके बाद वाल्या, नीना और ओल्या सबधित लोगो को अपने निश्चयो की सूचना देने के लिए कमरे से निकल गयी। इधर सेर्गेई ने अपना ओवरकोट पहना और निगरानी रखने बाहर चला गया। वह समझ गया कि ओलेग को कुछ देर के लिए अपने परिवार वालो के साथ बैठना जरूरी है।

ओलेग के घर वाले ज़ेम्नुखोव तथा दूसरे लोगो की गिरफ्तारी की बात जानते थे। उन्हे यह भी मालूम था कि खाने के कमरे और नानी के कमरे में होनेवाली बैठक में तरुण लोग इसी मामले पर विचार कर रहे हैं।

यलेना निकोलायेव्ना और मामा कोल्या ने घर में रखी हुई बन्दूके, परचे और झडे बनाने का लाल कपडा पहले से ही छिपा या जला दिये थे। मामा कोल्या ने अपना रेडियो-सेट रसोईघर के फर्श के नीचे छिपा दिया था और उसके ऊपर मिट्टी हमवार कर के खट्टी बन्द गोभी का पीपा रख दिया था।

यह सब कर चुकने के बाद सारा परिवार मामा कोल्या के कमरे में एकत्र हुआ और हमेशा की तरह, मरीना के तीन साल के बेटे की चटर चटर सुनता रहा और खेल से मन बहलाता रहा था। किन्तु, सभी जैसे बदहवास थे और अभिशप्तो की भाति बैठक के परिणाम की प्रतीक्षा कर रहे थे।

आखिरी साथी के बाहर चले जाने के बाद दरवाज़ा बन्द हुआ और ओलेग कमरे में दाखिल हुआ। सभी उसकी ओर मुखातिब हुए। इस समय उसके चेहरे पर मानसिक द्वन्द्व और सघप के काई चिह्न न थे, साथ ही वह बाल-सुलभ भाव भी न रह गया था, जो प्राय उसके मुह पर खेला करता था। हा चहरे पर दुख की छाया ज़रूर मडरा रही थी।

"मा," वह बोला, "नानी, तुम, कोल्या, मरीना।" बच्चा भागता हुआ उसके पास पहुचा और खुशी से चीखता हुआ उसकी टागो से चिपट गया। ओलेग ने अपना हाथ बच्चे के सिर पर रख दिया। "म तुम सब से विदा लेने आया हू। कुछ चीज़े इकट्ठा करने मे मेरी मदद करो। इसके बाद हम कुछ क्षण साथ साथ बैठेंगे, जसे उस रोज़ बैठे थे   बहुत दिन पहले।" और उसकी आखा मे और आठो पर एक हल्की-सी मृदु मुस्कान बिखर गयी।

सब लोग उसके इद गिद खडे हो गये

मा के हाथ हमेशा व्यस्त रहते ह। उसके हाथ चहचहाती चिडियो की भाति नन्हे नन्हे कपडा पर दौडते हैं और तब जब उन्हे पहननेवाला अभी ससार मे प्रकट भी नही हुआ हाता और मा के शरीर मे हिल-डुल रहा होता है। जब बच्चा पहली बार हवाख़ोरी के लिए भजा जाता है, तब, जब पहली बार स्कूल जाता है, तब   हा, तब भी यही हाथ उस सवारते है। और तब भी जब वह पहली बार घर से बिछुडकर दूर देशा की यात्रा करता है, ज़िन्दगी भर के लिए बिछुडता है, फिर मिलता है और इसी तरह बिछुडने और मिलने का क्रम बरसा तक चलता रहता ह। जब हृदय मे सुख नही समाता, जब वह दुख से फटने लगता हे। ये हाथ व्यस्त रहते ह, उस समय जब मा का लाडला मा क सामने होता है या मा के दिल मे आशाए हिलारती ह, और तब भी जब वह उसे कब्र में रखती है कब्र में।

हरेक को कुछ न कुछ काम मिल ही गया था। मामा काल्या को कागजात छाटने थे, डायरी को आग में झापना था। किसी न उसका कामसामाल का काड और सदस्यता के कुछ अस्थायी काड उसकी जकट में सी दिय।

उसे एक अतिरिक्त जाघिया, और बनियाइन साथ ल जानी था—उनमें सिलाई की आवश्यकता थी। सभी जरूरी सामान उसके थल में भरा जा चुका था—खाना, साबुन, ब्रुश, सूई, काला-सफेद धागा। सेर्गेई त्युलेनिन के लिए भी कनपटियावाली फर की एक पुरानी टोपी मिल गयी थी। सेर्गेई के साथ एक दूसरे थले में भी खाना रख दिया गया था—आखिर पाच लोग एक साथ जा रह थे न।

पर पहले की तरह वे मिल-जुलकर कुछ मिनटो के लिए भी एक साथ न बठ सके। सर्गेई बराबर अन्दर-बाहर चक्कर लगाता रहा। फिर वाल्या, नीना और आल्या आयी, रात पड चुकी थी। अब उन्ह विदा लेनी थी।

उस समय आसू नही बहाये गये। नानी वरा ने उनपर एक निगाह डाली, किसी का बटन टाका, किसी का थला ठीक किया। फिर भावावश में उसन एक एक को गल लगाया। पर आलेग का वह दर तक छाती से चिपकाये रही। उसकी नुकीली ठुड्डी ओलेग की टोपी से सटी थी।

आलेग ने मा का हाथ पकडा और दाना बगल वाले कमरे मे चले गय।

"मुझे माफ करना, मा," वह बोला।

ओलेग की मा दाडकर अहात में आ गयी। पाला उसके चेहर और पैरा मे तीर को तरह घुस रहा था। अब वह युवका को देख न पा रही थी। उसे ता बफ पर कटर कटर चलत उनके बूटा की आवाज भर सुन पडती थी। धीर धीर यह आवाज भी हल्की पडकर विलीन हो गयी। पर वह बहुत समय तक अधरे और ताराच्छादित आकाश के नीचे खडी रही।

भार हो चुकी थी पर येलेना निकोलायेव्ना की आख न लगी थी। उसने दरवाज़े पर दस्तक सुनी। फिर जल्दी-से कपडे पहने और पूछने लगी—"कौन ?"

बाहर चार आदमी थे—पुलिस चीफ सोलिकाव्स्की, एन० सी० ओ० फेनबाग और दो सिपाही। आते ही उन्होंने ओलग के बारे मे पूछा। येलेना निकोलायेव्ना ने बताया कि वह खाने की कुछ चीजो का सौदा करने गाव में गया है।

उन्होंने मकान की तलाशी ली और वहा रहनेवाले सभी लोगो का गिरफ्तार कर लिया—नानी वेरा, मरीना और उसके नन्हे बेटे का भी। नानी को मुश्किल से इतना भर मौका मिल सका कि वह पडोसियो स यह कह पायी कि वे घर पर निगाह रखें।

जेल मे उन्हें अलग अलग कोठरियो में रखा गया। मरीना और उसके नन्हे को उस कोठरी में डाला गया जहा 'तरुण गार्ड' दल स असबद्ध बहुत-सी औरते भरी थी। उनमें मरीया अन्द्रेयेव्ना बोर्त्स और सेर्गेई त्युलेनिन की बहन फेन्या भी थी, जो माता पिता से अलग अपने निजी मकान में बच्चा के साथ रहती थी। मरीना को उससे पता चला कि फ़ेन्या की बूढी मा अलेक्सान्द्रा वसील्येव्ना और उसके बढे बाप तक को, मय उसकी बैसाखी के, गिरफ्तार कर लिया गया है। सेर्गेई की बहन, नादया और दाशा, समय रहते निकल भागी थी।

अध्याय २२

वान्या जम्नुख़ोव को प्रभात के समय गिरफ्तार किया गया था। वह क्लावा से मिलने के लिए नीज्नी अलेक्सान्द्रोव्स्की जाना चाहता था और मुह अधेरे ही उठ पडा था। उसने अपने साथ रोटी का एक टुकडा

हरेक को कुछ न कुछ काम मिल ही गया था। मामा कोल्या को कागज़ात छाटने थे, डायरी को आग मे झाकना था। किसी ने उसका कामसामोल का कार्ड और सदस्यता के कुछ अस्थायी कार्ड उसकी जाकेट में सी दिये।

उसे एक अतिरिक्त जाघिया, और बनियाइन साथ ले जानी थी— उनमे सिलाई की आवश्यकता थी। सभी ज़रूरी सामान उसके थैले में भरा जा चुका था—खाना, साबुन, ब्रुश, सूई, काला-सफ़ेद धागा। सर्गेई त्युलेनिन के लिए भी कनपटियावाली फर की एक पुरानी टोपी मिल गयी थी। सेर्गेई के साथ एक दूसरे थैले में भी खाना रख दिया गया था—आखिर पाच लोग एक साथ जा रहे थे न।

पर पहले की तरह वे मिल-जुलकर कुछ मिनटो के लिए भी एक साथ न बैठ सके। सर्गेई बराबर अन्दर-बाहर चक्कर लगाता रहा। फिर वाल्या, नीना और ओल्या आयी, रात पड चुकी थी। अब उन्हे विदा लेनी थी।

उस समय आसू नही बहाये गये। नानी वेरा ने उनपर एक निगाह डाली, किसी का बटन टाका, किसी का थैला ठीक किया। फिर भावावेश में उसने एक एक को गले लगाया। पर ओलेग का वह देर तक छाती से चिपकाये रही। उसकी नुकीली ठुड्डी ओलेग की टोपी से सटी थी।

ओलेग ने मा का हाथ पकडा और दोनो बगल वाले कमरे में चले गये।

"मुझे माफ करना, मा," वह बोला।

ओलेग की मा दौडकर अहाते में आ गयी। पाला उसके चेहरे और परो में तीर की तरह घुस रहा था। अब वह युवको को देख न पा रही थी। उसे तो बर्फ पर कटर कटर चलते उनके बूटो की आवाज़ भर सुन पडती थी। धीरे धीरे यह आवाज़ भी हल्की पडकर विलीन हो गयी। पर वह बहुत समय तक अधेरे और ताराच्छादित आकाश के नीचे खडी रही।

भोर हो चुकी थी पर येलेना निकोलायेव्ना की आख न लगी थी। उसने दरवाज़े पर दस्तक सुनी। फिर जल्दी-से कपडे पहने और पूछने लगी – "कौन ?"

बाहर चार आदमी थे – पुलिस चीफ सोलिकोव्स्की, एन० सी० ओ० फेनबाग और दो सिपाही। आते ही उन्होंने ओलेग के बारे मे पूछा। येलेना निकोलायेव्ना ने बताया कि वह खाने की कुछ चीज़ो का सौदा करने गाव में गया है।

उन्होने मकान की तलाशी ली और वहा रहनेवाले सभी लोगो को गिरफ्तार कर लिया – नानी वेरा, मरीना और उसके नन्हे बेटे को भी। नानी को मुश्किल से इतना भर मौका मिल सका कि वह पडोसियो से यह कह पायी कि वे घर पर निगाह रखे।

जेल मे उन्हे अलग अलग कोठरियो में रखा गया। मरीना और उसके नन्हे को उस कोठरी में डाला गया जहा 'तरुण गार्ड' दल से असबद्ध बहुत-सी औरते भरी थी। उनमें मरीया अन्द्रेयेव्ना बोर्त्स और सेर्गेई त्युलेनिन की बहन फेन्या भी थी, जो माता पिता से अलग अपने निजी मकान में बच्चो के साथ रहती थी। मरीना को उससे पता चला कि फेन्या की बूढी मा अलेक्सान्द्रा वसील्येव्ना और उसके बूढे बाप तक को, मय उसकी बैसाखी के, गिरफ्तार कर लिया गया है। सेर्गेई की बहन, नाद्या और दाशा, समय रहते निकल भागी थी।

अध्याय २२

वान्या ज़ेम्नुखोव को प्रभात के समय गिरफ्तार किया गया था। वह क्लावा से मिलने के लिए नीज्नी अलेक्सान्द्रोव्स्की जाना चाहता था और मुह-अधेरे ही उठ पडा था। उसने अपने साथ रोटी का एक टुकडा

लिया अपना ग्रावरकोट पहना, कनपटियोवाली टोपी पहनी और सडक पर निकल आया।

स्वच्छ, पील आकाश मे घुलते हुए हल्के गुलाबी कोहरे के नीचे, क्षितिज पर जगमगाता हुआ भोर दिखाई पडने लगा था, और यत्र तत्र पीले और गुलाबी काहरे के छोटे छाटे पुज–जो दखने मे अलौकिक लगते थे–नगर पर लटक आये थे।

वान्या ने यह सब कुछ न देखा। उसने अपना चश्मा अपनी भीतर की जब मे रख लिया था, क्याकि उसपर अब तब धुध जम जाती थी। किन्तु इस स्वच्छ, काहरा भगे भार का सौन्दय बचपन से ही उसके मन पर छाया हुआ था। उसके चेहरे पर खुशी का भाव झलक उठा। तभी उसने चार व्यक्तियो को अपने घर की ओर आते देखा। तब भी उसके चेहरे पर वही खुशी का भाव बना रहा। उसने उन्हे निकट मे देखा और पहचान लिया–वे जमन सशस्त्र पुलिस के सिपाही थ, उनमे थाने का नया परीक्षण-जज कुलशोव भी था।

जब तक वे उसके पास आयें और वान्या उन्ह पहचाने तब तक कुलेशाव उसे सबाधित करने लगा था। वान्या ने तुरन्त समझ लिया था कि वे लोग उसी के लिए आय ह। और जैसे किसी निश्चयात्मक क्षण मे उसके जीवन मे हमेशा होता था, वान्या एक दम शान्त और स्थिर हा गया और कुलेशाव के प्रश्ना से उसे कोई परेशानी न हुई।

"हा, म ही हू," वह बाला।

"अब लो मजा!" कुलेशाव बाला।

"मै अपने लोगा का खबर तो कर दू," वान्या न कहा, पर वह अच्छी तरह जानता था कि वे उस घर में न घुसने देंग। वह घूमा और मुट्ठी स सबस पास का खिडका खटखटाने लगा। उसने खिडकी क पल्ला पर नहीं, बल्कि खिडकी की चौखट के बीचाबीच लगी हुई लकडी पर दस्तक दी।

कुलेशोव और एक सिपाही ने तुरन्त उसके हाथ पकड और कुलेशोव उसके ओवरकोट की और ओवरकाट के नीचे, पतलून की जेबो पर हाथ फेरने लगा। खिडकी की ऊपर वाली छोटी-सी ताकी खुली और वान्या की बहन बाहर देखने लगी। उसके चेहरे पर क्या भाव था, यह वान्या न देख सका।

"मां और पिता जी से कह देना मुझे थाने पर बुलाया है और वे मेरे लिए परेशान न हो। मुझे देर न लगेगी," वह बोला।

कुलेशोव हिनहिनाया, अपना सिर हिलाया और एक सशस्त्र सिपाही के साथ घर की ड्योढी तक चला गया। उन्हे तलाशी लेनी थी। जमन सर्जेंट और दूसरा सिपाही वान्या को लेकर, बाहर आ गये और सडक पर चलते हुए मकानो की पक्ति के सामने से होकर जाने लगे। इस सडक पर बहुत कम लोग आत जाते थे। सडक पर बरफ की चादर बिछी थी, केवल बीचोबीच लोगो के चलने से एक पगडण्डी-सी बन गयी थी। उसी पर वे चलते जा रहे थे। बर्फ पर लडखडाने से बचने के लिए सर्जेंट और सिपाही ने वान्या को छोड दिया और उसके ठीक पीछे पीछे चलने लगे।

सिपाहियो ने उसे एक छोटी-सी अधेरी कोठरी मे डाल दिया, जिस दशा में था उसी दशा मे--शरीर पर ओवरकोट, सिर पर फर की टोपी और पैरो में घिसी हुई एडी वाले फटे हुए जूते। कोठरी की दीवालो पर पाला जम रहा था और फर्श लसलसा रहा था। दरवाजा खट से बन्द कर दिया गया और उसपर ताला चढ़ा दिया गया। वह वहा बिलकुल अकेला था।

छत के नीचे की एक सकरी-सी दरार से प्रात काल का प्रकाश कोठरी मे आने का प्रयास कर रहा था। कोठरी मे न कोई तख्ता था, न बेच। एक कोने में रखी हुई एक बाल्टी मे से बदबू निकल रही थी।

वह अपना गिरफ्तारी के कारणा की उधेड-बुन में मग्न था—क्या उन्हे उसके कामो का पता चल गया है, या सिर्फ शक ही है, अथवा किसी ने गद्दारी की है। उसे बार बार वलावा, अपने माता पिता और साथियो का ख्याल आने लगा। फिर पूरी दृढता के साथ, जो उसके चरित्र की विशेषता थी, मानो मन ही मन कह रहा हो—"वान्या, शान्त रहो, स्थिर रहो," वान्या ने अपना सारा ध्यान एक ही बात पर केंद्रित कर दिया जो इस समय उसके लिए महत्त्वपूर्ण थी—"इस समय धीरज रखो! देखो, आगे क्या होता है।"

वान्या के हाथ सरदी से जकडे जा रहे थे। उसने उन्हे अपने ओवरकोट की जेबो मे डाल लिया। और दीवार का सहारा लेकर खडा हो गया। फर का टोपी पहने उसका सिर आगे की ओर झुका हुआ था। वह बडे धैर्य के साथ बडी देर तक खडा रहा। कितनी देर तक यह वह स्वय न जानता था, शायद कई घटे।

सारा वक्त गलियारे में कभी एक आदमी के, कभी कई लोगो के, पैरो की आहट बराबर सुनाई पडती रही। फिर कोठरियो के दरवाजे जोर से खुलने-मुदने की आवाजें आयीं। दूर और पास से आती हुई बातचीत की ध्वनिया उसकी कोठरी में प्रवेश करने लगी।

उसकी कोठरी के बाहर कई लोग आकर रुक गये और एक भारी सी आवाज सुनाई पडी।

"इसी कोठरी में? उसे मिस्टर के पास भेजो!"

एक आदमी आगे बढा और ताले में एक चाभी कुडमुडायी।

वान्या दीवाल से हटकर खडा हो गया और उसने घूमकर देखा। एक जर्मन सिपाही भीतर आया। यह वह आदमी नही था जिसके पहरे में वान्या यहा आया था। उसके हाथ में एक चाभी थी और शायद वह इस गलियारे में कोठरियो का पहरा दे रहा था। उसके साथ एक

पुलिस का सिपाही भी था जिसके चेहरे से वान्या परिचित था। सभी पुलिस वाला के चेहरों को याद रखना वान्या और उसके साथियो का एक काम था। वह वान्या को मिस्टर ब्रूक्नेर के दफ्तर के प्रतीक्षा-कक्ष में ले गया। वहा वान्या ने उन लडको में से एक लडके को देखा जिसे उसने और उसके साथियो ने सिगरेटें बेचने बाजार भेजा था। एक पुलिस वाला अकेले उसी पर पहरा दे रहा था।

वह लडका गन्दा और दुबला पतला-सा लग रहा था। उसने वान्या को क्षण भर देखा, फिर कधे झटके, नाक बजायी और मुह फेर लिया।

वान्या को कुछ राहत मिली। फिर भी उसे सभी बातो से इनकार करना होगा। अगर वह यह मान भी लेगा कि उसने अपनी आमदनी में कुछ वृद्धि करने के लिए जर्मनो के नये वर्ष के उपहार चुराये थे तो उसे अपने साथियो के नाम बताने का हुक्म दिया जायेगा। नही, यह सोचना बेकार है कि यह घटना उसके लिए अनुकूल सिद्ध होगी।

मिस्टर ब्रूक्नेर के दफ्तर से एक जर्मन क्लर्क बाहर आया और एक ओर खडे होकर दरवाजा खोल दिया।

"चलो, चलो, अन्दर चलो," पुलिस वाला जल्दी जल्दी बोला और वान्या को दरवाजे की ओर ढकेला। पुलिस वाले के चेहरे पर भय की छाप थी। दूसरे सिपाही ने उस लडके की गरदन पकडी और उसे भी दरवाजे की ओर ढकेला। दोनो प्राय एक ही समय दफ्तर में दाखिल हुए। उनके पीछे दरवाजा बन्द हो गया। वान्या ने अपनी टोपी उतार ली।

दफ्तर मे कई लोग थे। वान्या ने मिस्टर ब्रूक्नेर को पहचान लिया जो मेज के पीछे कुर्सी पर टेक लगाये बैठा था। उसकी गर्दन की मोटी भोटी परत उसकी वर्दी के कालर पर गिर रही थी। उसकी गोल और उल्लू जैसी आखें सीधे वान्या पर लगी थी।

"आगे बढो। इस वक्त कस सीधे दिख रहे हो," खरखराहट
ती आवाज़ मे, मानो गले में कुछ फस गया हो, सोलिकोव्स्की बोला।
ह मिस्टर की मेज के एक ओर खडा था। उसकी बडी-सी मुट्ठी में
ाडे का चाबुक था।

परीक्षण जज कुलेशोव सोलिकोव्स्की के ठीक सामने खडा था। अपनी
लम्बी-सी बाह आगे बढाकर, उसने उस लडके की कोहनी पकडी और
झटके से उसे मेज के पास खीच लिया।

"यही है वह आदमी?" कुलेशोव ने दात दिखाते हुए पूछा और
वान्या की ओर इशारा करके आख मिचकायी।

"हा," उस लडके ने एक सास में कहा, फिर नाक बजायी और
जमीन पर जड-वत् खडा हो गया।

कुलेशोव ने खुश होकर पहले मिस्टर की ओर फिर सोलिकोव्स्की
की ओर देखा। मेज के पीछे दुभाषिया सिर नीचा किये, बडी विनम्रता
के साथ मिस्टर को जर्मन भाषा में कुछ समझा रहा था। वान्या ने
शूका रैबन्द को भी पहचाना। क्रास्नोदोन में रहनेवाले दूसरे लोगो ही
की तरह वान्या उसे भी अच्छी तरह जानता था।

"सुन लिया?" सोलिकोव्स्की ने आखे सिकाडते हुए वान्या
की ओर घूरकर देखा। उसकी आखें उसकी गालो की हड्डियो से
छिप-सी गयी थी और पहाड की चोटी के ऊपर झाकती सी लग रही
थी। "हर मिस्टर को बताओ कि तुम्हारे साथ कौन काम कर रहा था।
जल्दी करो।"

"आप किस बारे म बात कर रहे ह मैं नही जानता," वान्या
अपनी धीर-गम्भीर आवाज़ में बोला और आखें सीधी सोलिकोव्स्की क
चेहरे पर गडा दी।

"तुम देखते हो न?" सोलिकोव्स्की कुलेशोव की ओर घूमा।

क्रोध से उसका चेहरा तमतमा रहा था। "सोवियत राज्य में इन्हें यही शिक्षा मिली!"

ज़ेम्नुख़ोव का उत्तर सुनकर वह लड़का घबराकर उसकी ओर देखने लगा और ऐसे सिकुड़ गया मानो सर्दी से बचना चाहता हो।

"तुम्हें शर्म नहीं आती? इस लड़के का तो कुछ ख्याल करना चाहिए! वह कष्ट झेल रहा है तुम्हारी वजह से," कुलेशोव ने थोड़ी भर्त्सना करते हुए कहा, "ज़रा इधर देखो—इसे तुम क्या कहोगे?"

वान्या कुलेशोव की दृष्टि की दिशा में देखने लगा। दीवाल के सहारे उपहारों का एक खुला हुआ बोरा पड़ा था—उसकी कुछ चीज़ें फ़र्श पर भी बिखरी पड़ी थीं।

"इस सबसे मुझे क्या लेना देना, मैं नहीं समझ पाया। मैंने इस लड़के को पहले कभी नहीं देखा," वान्या बोला। प्रतिक्षण वह अधिकाधिक शान्त और स्थिर महसूस कर रहा था।

मिस्टर ब्रूक्नेर ने दुभाषिये शूर्का रेन्द की माफ़त वान्या के सभी उत्तर सुन-समझ लिये थे और इन सब से प्रत्यक्षतः उकता गया था। उसने रेन्द पर एक सरसरी निगाह डाली और कुछ बुदबुदाया। कुलेशोव, बड़े अदब से, चुप हो गया। सालिकोव्स्का सीधा तनकर खड़ा हो गया। उसके हाथ पतलून की सीवन के साथ लगे हुए थे।

"हर मिस्टर चाहते हैं कि तुम उन्हें बताओ कि तुमने कितनी बार लारियों को लूटा है, और किस लिए। तुम्हारी मदद किसने की, और इसके अलावा तुम और क्या क्या करते रहे—वह सब कुछ जानना चाहते हैं," शूर्का ने, वान्या से आँखें चुराते हुए, रुखाई से कहा।

"मैं लारियों को कैसे लूट सकता हूँ? मैं तुमको वहाँ खड़े हुए तो देख नहीं सकता। तुम यह अच्छी तरह जानते हो!" वान्या बोला।

"हर मिस्टर के सवाल का जवाब दो!"

किन्तु हर मिस्टर मामले की तह तक पहुच चुका था। उसने उगलिया दिखाते हुए कहा—

"फेनबोग के पास!"

पलक मारते सभी कुछ बदल गया। सोलिकोव्स्की की बडी बडी मुट्ठिया ने वान्या का कालर पकडा, उसे वहशियाना ढग से झपाडते हुए प्रतीक्षा-कक्ष मे लाया, फिर उसे घुमाते हुए अपने सामने किया, फिर उसके दोना गालो पर कसकर हटर जमाये। वान्या के चेहरे पर लाल बरत पड गयी। एक चोट तो उसकी बाइ आख के कोने पर पडी, जिससे वह तजी से बन्द होती जा रही थी। जो पुलिस वाला उसे लाया था उसने उसका कालर पकडा और सोलिकाव्स्की के ही साथ उसे गलियारे में खीचने और लतियाने लगा।

एन० सी० ओ० फेनबोग और एस० एस० के दो आदमी उसी कमरे में जमे था जहा वान्या को घसीटकर लाया गया। उनके चेहरे थके हुए थे और वे सिगरेट पी रहे थे।

"बदमाश, अगर तू मुझे तुरन्त यह नहीं बताता कि तेरे साथ दूसरे कौन कौन लोग थे तो " सोलिकोव्स्की चीखा। वह बड़े भयानक ढग से फूकार रहा था। उसके बडे-से हाथ के फौलादी पजे वान्या का चेहरा नाच रहे थे।

सिपाहिया ने सिगरेट खत्म की, बूटा से सिगरेट के टुकडे मसल दिये और फिर जमे सध हुए हाथा से वान्या का ओवरकोट और उसके बाक़ी कपडे उतारने लगे। फिर वे, उसे नगा कर उसे खून से सन तख्त पर घसीट ले गये।

फनबोग ने लाल लाल और बालदार हाथ ने मेज पर से बिजली के तारोवाले दो हटर उठाये, एक सोलिकोव्स्की को थमाया और दूसरा वान्या को देखने के लिए हवा में आजमाया। अब दोनो बारी बारी से

वाया पर हूटर बरसाने लगे, साथ ही प्रत्येक चोट के बाद वे हटर को उसके शरीर पर से खींचकर हटाते। दोनो सिपाही कसकर उसके पैर और सिर पकड़े हुए थे। खून तो पहले ही प्रहार में बहने लगा था।

जैसे ही वाया पर हटर बरसने शुरू हुए थे कि उसने एक भी प्रश्न का उत्तर न देने और एक भी आह न निकालने की जैसे कसम खा ली।

और सचमुच वह सारा वक्त चुप रहा। कभी कभी दोनो जल्लाद दम लेने के लिए रुक जाते और सोलिकोव्स्की पूछता—

"अभी होश ठिकाने नही आया?" वान्या न कोई जवाब ही देता, न सिर ही उठाता, और हटरबाजी फिर शुरू हो जाती।

इसी तख्त पर कोई आधा घंटा पहले मोश्कोव को भी इसी तरह पीटा गया था। वाया की तरह मोश्कोव ने भी उपहारो की चोरी मे भाग लेने से साफ इनकार कर दिया था।

स्तखाविच का मकान नगर से दूर के इलाके मे था। उसे बाद में गिरफ्तार किया गया।

अपने ढग के अन्य युवको की तरह, जिनके जीवन की चालक शक्ति स्वाभिमान होता है, स्तखाविच कम ज्यादा स्थिर भी बना रह सकता था और वीरता के बड़े बड़े काम भी कर सकता था, बशर्ते कि उसे लोगो की, और खासकर अपने हल्के के लोगो की, अथवा अपने ऊपर नैतिक प्रभाव डालनेवाले लोगो की प्रशसा मिलती रहे। पर अकेले रहने पर, जब उसे खतरे या कठिनाई का सामना करना पडता तो वह निरा बुजदिल साबित होता था।

जसे ही उसे गिरफ्तार किया गया कि उसकी सिट्टी पिट्टी गुम हो गयी। किन्तु उसमें कोई न कोई ऐसी बात सोच लेने की अद्भुत् सूझ थी कि वह अपनी स्थिति को सुगम बनाने के लिए, मिनटो में, दसियो क्या सैकड़ो नैतिक औचित्य सोच सकता था।

जिस समय उसका सामना सिगरेट बेचनेवाले लडके से हुआ कि उसने तुरन्त समझ लिया कि नये वष के उपहार ही वे प्रमाण थे जो उसके और उसके साथियो के खिलाफ रखे जा सकते थे। उसका अनुमान था कि उसके साथी भी गिरफ्तार होने से न बचे होगे। एक ही क्षण में उसने सारे मामले को एक साधारण अपराध का रूप देने और साफ साफ यह स्वीकार कर लेने का निश्चय कर लिया था कि इस चोरी म तीन आदमी शरीक थे, कि वह अपनी गरीबी और भूख का रोना रोयेगा, और यह कहेगा कि अब से वह ईमानदारी से काम करक अपन पापो का प्रायश्चित करेगा। और सचमुच जिस सच्चाई के साथ उसन मिस्टर ब्रूक्नेर और दूसरे जमनो के सामने ये बातें कही उससे उन्हे फौरन पता चल गया कि उनका सामना कैसे आदमी से पडा है। उन्होने उसे दफ्तर ही में पटवा और उसके साथिया का नाम जानना चाहा। उनका कहना था कि शाम का वक्त उन तीनो ने क्लब में बिताया इसलिए वे स्वय, कैसे लारी लूट सकते थे।

उसके भाग्य से मिस्टर ब्रूक्नेर और वाह टमिस्टर वाल्डेर के दोपहर के खाने का वक्त हो गया। अतएव उसे शाम तक के लिए शान्ति से रहने दिया गया।

शाम के समय पहले तो लोगो ने उसके साथ नरमी का बरताव किया और वादा किया कि जसे ही वह अपने उन साथियो के नाम बता देगा जिन्होने उपहारो की चोरी में भाग लिया था, वसे ही वे उसे छोड देगे। उसने फिर वही बात दुहरायी—चोरी मने और मेरे दो साथिया ने की है। फिर उसे फेनवाग के सुपुद किया गया और उसकी तब तक मरम्मत हुई जब तक उसने ल्युलनिन का नाम न बता दिया। इसके बाद उसने बताया कि अधेरे के कारण वह दूसरे लोगो के चहरे न पहचान सका था।

वह नीच न जानता था कि त्युलेनिन का नाम लेकर उसने अपने को और भी मुसीबत में डाल लिया था, और उसे अब और भी जुल्मों का सामना करना पडेगा, क्योंकि वह जिन लोगो के हाथ मे था वे जानते थे कि जब उसने कमज़ोरी दिखायी ही है तो वे उससे कबुलवा कर ही छोडेंगे।

उन्होंने उसे बुरी तरह मारा, फिर उसपर पानी उडला और फिर मारा। और सुबह होने के पहले पहले, उसकी मर्दानगी खत्म हो गयी और उसने उनसे दया की भीख मागी। कहने लगा कि वह इस सारी यातना का पात्र न था, कि वह दूसरो के हाथ की कठपुतली ही बना रहा, दूसरो ने उसे चोरी करने का हुक्म दिया था अत खबर उनकी ली जानी चाहिए। और इस प्रकार उसने 'तरुण गार्ड' के हेडक्वाटर के सभी सदस्यो और संदेशवाहिकाओ के साथ गद्दारी की और उनके नाम बता दिये। न जाने क्यो अकेले उल्याना ग्रोमोवा का ही नाम उसने न लिया। शायद पल भर के लिए उसे उसकी खूबसूरत काली काली आखे याद आ गयी थी, इसी लिए यह नाम उसके मुह पर न आया।

इसी काल में किसी दिन ल्यादस्काया को भी क्रास्नोदोन की खनिज बस्ती से सशस्त्र पुलिस-कार्यालय लाया गया, जहा उसका सामना वीरिकोवा से हो गया। दोनो ही अपने अपने दुर्भाग्य के लिए एक दूसरे को दोष देने लगी। दोनो ही बाल्डेर और कुलेशोव के सामने एक दूसरे पर दोषारोपण करती हुई कुजडिनो की तरह लड रही थी और एक दूसरी के भेद बता रही थी। बाल्डेर सारा वक्त गभीर बना बैठा रहा पर कुलेशोव की बाछें खिल रही थी।

'अरी चुडैल! तू ही तो थी आस्तीन की साप। तू ही तो पायोनियरो की लीडर थी।" ल्यादस्काया खौखियाई। उत्तेजना से उसका चेहरा इतना लाल हो गया था कि उसके दाग तक न दिखाई दे रहे थे।

" तुम! मारा पेर्वोमाइका जानता है कि तुम ओसोविग्राखिम* के लिए चन्दा मागा करती थी," मुट्ठिया भीचती हुई वीरिकोवा गुर्रायी। उसकी चोटिया भी इस जबानी लडाई मे भाग ले रही थी।

वे तो हाथापाई पर भी उतर आती किन्तु उन्हे छुडा दिया गया और दिन भर के लिए हिरासत मे रखा गया। फिर उन्हे वाह्‌टमिस्टर बाल्डेर के सामने एक एक कर लाया गया। कुलेशोव पहले वीरिकोवा से निपटा (और बाद में वैसे ही ल्याद्स्काया से)। उसने उसका हाथ पकडा और फुफकारकर बोला—"बहुत भोली बनने की कोशिश मत करो। सघटन के सदस्यो के नाम बताओ।"

पहले वीरिकोवा, और बाद मे ल्यादस्काया, फूट फूटकर रोयी और कसमें खा खाकर बोली कि सघटन की सदस्या होने की बात तो दूर हम तो जिन्दगी भर बोल्शेविको से वैसे ही नफरत करती रही जैसी वे हमसे करते थे। उन्होने पर्वोमाइका और नास्नोदोन खनिक बस्ती में रहनेवाले सभी कोमसोमोल मेम्बरो और सक्रिय काम करनेवाले तरुणो के नाम गिना डाले। बेशक वे जिस स्कूल मे पढती थी वहा की अपनी सभी सहेलियो को जानती थी। कौन किस विचार की थी और किसने कौन-सा सामाजिक काय किया था—यह सब भी वे जानती थी। दोनो ने कोई बीस बीस नाम बताये। और इस प्रकार, 'तरुण गार्ड' दल से सम्बधित तरुणो की सूची काफी बडी हो गयी।

वाह्‌टमिस्टर बाल्डेर ने भयानक ढग से आखें नचाते हुए, दोनो से साफ साफ कह दिया कि वह उनके सघटन में न होने की बात नहा मानता। वस्तुत उन्हे भी वैसी ही सख्त सजा मिलनी चाहिए जैसी कि उन अपराधियो को मिलेगी जिनके नाम उन्होने लिये है। पर उसने वहा,

---

*हवाई और रसायन प्रतिरक्षा का स्वय सेवी समाज

"मुझे तुम्हारे लिए अफसोस है। हा, बचने का एक रास्ता जरूर है "

वीरिकोवा और ल्याद्स्काया का जेल से एक साथ ही छोडा गया। यद्यपि दाना में से किसी का भी कुछ मालम न था, फिर भी अपनी अपनी जगह वे यह समझ रही थी कि दूसरी वहा से निर्दोष नही जा रही है। प्रत्येक को तेईस माक माहवार का वेतन वाध दिया गया था। बिछुडते समय उन्होने एक दूसरे के साथ उपेक्षा से हाथ मिलाये, मानो उनके बीच कुछ हुआ ही न हो।

"सस्ते छूटे," वीरिकोवा बोली, "किसी समय आओ न"।

"हा सस्ते छूटे। मिलूगी तुमसे," ल्याद्स्काया ने उत्तर दिया। फिर दोना अपने अपने रास्ते हो ली।

अध्याय २३

जिस ढग से गिरफ्तारिया की गयी थी उसमें विचित्र क्रमबद्धता थी। इन गिरफ्तारियो की खबर नगर भर मे दावाग्नि की तरह फल गयी थी। पहले 'तरुण गाड' हेडक्वाटर के उन सदस्या के माता पिताओ को गिरफ्तार किया गया था, जो शहर छोडकर भाग चुके थे। फिर अरुत्युन्यान्त्स, सफोनोव और लेवाशोव के माता पिताओ को गिरफ्तार किया गया, अर्थात् उन युवका के माता पिताओ को जो हेडक्वाटर के निकट सम्पक में रहते थे और नगर छोडकर जा चुके थे।

फिर सहसा तोस्या मास्चेंको, और 'तरुण गाड' दल के अन्य साधारण सदस्य गिरफ्तार किये गये। पर खास तौर पर इन लोगा को ही क्या पकडा गया, और दूसरे लोगो को क्यो नही पकडा गया?

जा लोग अभी तक आजाद थे उन्हे यह अनुमान तक न हुआ था कि जिस क्रम से गिरफ्तारिया हो रही थी—कभा कम, कभी ज्यादा—

उनके पीछे स्तखोविच की गद्दारी है। बात थी कि जैसे ही वह किसी एक आदमी का नाम बताता कि वे उसे कुछ सुस्ताने का मौका देते, और फिर उसपर अत्याचार करने लगते, और वह फिर कुछ नाम बता देता।

मोश्कोव, ज़ेम्नुखोव और स्तखोविच को गिरफ्तार हुए कई दिन बीत चुके थे फिर भी ल्यूतिकोव और बराकोव के नेतृत्व में काम करनेवाले खुफिया संघटन का एक भी आदमी गिरफ्तार न हुआ था। केन्द्रीय वर्कशाप में सारा काम वही पुराने ढंग से होता रहा।

वोलोद्या ओसमूखिन ने नये साल के पहले तीन दिन गांव में अपने बाबा के साथ बिताये थे। चार जनवरी को वह वापस काम पर आया था। पिछली रात को घर आते ही उसकी मां ने उसे गिरफ्तारियों के बारे में बताया और यह सूचना दी थी कि 'तरुण गार्ड' हेडक्वाटर ने आदेश दिया है कि वह फौरन नगर छोड़कर निकल जाय। उसने जाने से इनकार कर दिया।

"कोई भी दोस्त गद्दारी नहीं करेगा," उसने मां को समझाया। अब मां से कोई बात छिपानी बेकार थी।

वोलोद्या क्यों नहीं जाना चाहता था इसके अनेक कारण थे। उसे अपनी मां और बहन को अकेले छोड़ने में दुःख हो रहा था, खासकर यह याद करके कि उन्हें उसी की बीमारी के कारण अन्यत्र न जाकर यहां रह जाना पड़ा था। किन्तु खास कारण यह था कि ओलेग के घर में होनेवाली बैठक में उपस्थित न होने के कारण वोलोद्या न सिर्फ़ अपने सिर पर मंडराते हुए खतरे को ही न देख पा रहा था बल्कि अपने दिल में यह भी समझ रहा था कि हेडक्वाटर के सदस्यों ने अपने निर्णयों में जल्दबाजी की थी। जो तीन छोकरे गिरफ्तार हुए थे वे वोलोद्या के गहरे दोस्त थे और वोलोद्या को उनपर पूरा विश्वास था। वह बहादुर था इसी

लिए उसके दिमाग में उन्हे छुडाने के लिए तरह तरह की योजनाए चल रही थी। प्रत्येक योजना पिछली से अधिक काल्पनिक होती।

वालोद्या ने कारखाने में कदम रखा ही था कि किसी बहाने ल्यूतिकोव ने उसे अपने दफ्तर मे बुलाया।

ग्रोस्मूखिन परिवार के साथ उसकी पुरानी दोस्ती थी। वह दूसरे किसी भी तरुण व्यक्ति की अपेक्षा वोलोद्या को अधिक जानता था, उसे बहुत चाहता था। बूढे के न केवल तर्क और विवेक ने ही बल्कि उसके दिल तक ने उसे यह बता दिया था कि उसके इस तरुण मित्र और शिष्य पर कितना जबरदस्त खतरा मडरा रहा है। उसने वोलोद्या को सुझाव दिया कि वह तुरन्त ही नगर छोडकर चला जाय। वह इतना कठोर और निष्ठुर हो रहा था कि वोलोद्या की बात न सुनना चाहता था। वह उसे सलाह नही, हुक्म दे रहा था।

पर, इस समय तक काफी देर हो चुकी थी। इसके पहले कि वोलोद्या सोचे कि वह कब और कहा जाय, उसे उसी के कारखाने मे, उसकी अपनी बेच पर, गिरफ्तार कर लिया गया।

स्तखोविच पर जोर-जुल्म करनेवाले उससे केवल 'तरुण गार्ड' के सदस्यो के नाम ही नही कबुलवा रहे थे, वे कोई ऐसा सूत्र भी जान लेना चाहते थे जिससे उन्हे नगर मे काम करनेवाले खुफ़िया कम्युनिस्ट सघटन का पता चल जाय। अनेको तथ्यो, और स्वय अपनी सूझ-बूझ से भी, जर्मन पुलिस के सीनियर और जूनियर अफसरो का यह अनुमान हो रहा था कि तरुण लोग प्रौढो के नेतृत्व में काम कर रहे थे और इसी लिए क्रास्नोदोन साज़िश का केन्द्र था—वास्तविक खुफ़िया सघटन।

किन्तु स्तखोविच को सचमुच यह पता न था कि ओलेग किस प्रकार ज़िला पार्टी कमिटी से सम्पर्क स्थापित किये हुए था। वह सिर्फ़ यही कह सकता था कि इस प्रकार का सम्पर्क था ज़रूर। जब उन्होने

उससे यह जानना चाहा कि काशेवाई परिवार में कौन कौन-से प्रौढ़ लोग आते जाते थे तो बहुत सोच विचारने के बाद आखिर उसे सोकोलोवा का नाम सूझा। यह ठीक था कि उसने वहां दूसरों की अपेक्षा पोलीना गेओर्गियेव्ना को अधिकतर आते जाते देखा था, शुरू शुरू के उन दिनों में ही नहीं जब वह 'तरुण गार्ड' हेडक्वार्टर का सदस्य था, किन्तु बाद में भी जब वह संघटन से संबंधित मामलों को लेकर ओलेग से मिलने आता था। उस समय उसने पोलीना गेओर्गियेव्ना के आने जाने से यह न समझा था कि उसका 'तरुण गार्ड' दल से कोई संबंध भी होगा। पर इस समय उसे याद आ रहा था कि ओलेग उसके साथ प्रायः एक कोने में जाकर फुसफुसाया करता था। इसी लिए उसने पोलीना गेओर्गियेव्ना का नाम ले दिया।

सोकोलोवा की गिरफ्तारी से प्रायः शान्त रहस्यपूर्ण और चुप रहनेवाले ल्यूतिकोव का भी सीधा सूत्र मिल गया। मिस्टर ब्रूक्नेर ने यह देखकर, कि कैदी मोश्कोव और ओस्मूखिन, ल्यूतिकोव की मातहती में, एक ही मशीन शाप में काम करते थे, इतना ज़रूर समझ लिया था कि यह बात संयोग मात्र नहीं है। उन्होंने ल्यूतिकोव के सारे पिछले जीवन के ब्यौरों की जांच की और कारखाने में होनेवाली पिछली सभी टूट फूटों की असली परिस्थितियों पर गौर किया।

५ जनवरी को सुबह पोलीना गेओर्गियेव्ना हमेशा की तरह ल्यूतिकोव को दूध देने गयी और लौटते समय अपनी ब्लाउज़ में एक परचा छिपाकर लेती आयी। परचा 'तरुण गार्ड' के नाम से स्वयं ल्यूतिकोव ने लिखा था। परचे में तरुणों की गिरफ्तारी के बारे में एक शब्द भी न कहा गया था। परचे द्वारा ल्यूतिकोव यह दिखाना चाहता था कि दुश्मन निशाना चूक गया है और तरुण गार्ड' अब भी ज़िन्दा और सक्रिय है।

जब वह शाम को काम पर से घर लौटा तो उसकी पत्नी और

बटी, राया, रसाईघर मे पलगेया इल्यीनिच्ना के साथ बैठी थी। वे वस्तुत फाम से जहा वे रहती थी उमे मिलने नगर मे श्रायी थी। यह ल्यूतिकोव के लिए कितनी प्रसन्नता की बात थी। उसन काम वाले कपडे उतारे, धुली हुई सफेद कमीज पहनी, भूरी धारी वाली नीले रग की टाई लगायी और सबसे अच्छा सूट डाट लिया, जिसे पलगेया इल्यीनिच्ना ने उसके लिए धोकर साफ किया था। इस प्रकार छुट्टी के कपडे पहनकर इस शान्त, स्थिर और विनम्र स्वभाव वाले व्यक्ति ने यह शाम अपने सबसे प्रिय जनो के मध्य बितायी और उनसे इस प्रकार हसी मज़ाक करता रहा मानो कुछ हुश्रा ही न हो।

क्या फिलीप्प पेनाविच को पता था कि उसके सिर पर घोर विपत्ति मडरा रही है? नही, और न उसे पता चल ही सकता था। किन्तु इसकी सम्भावना उसे बराबर बनी रहती थी, वह हमेशा उसका सामना करने का तैयार रहता था और पिछले कुछ दिना से तो वह यह भी समझ रहा था कि यह खतरा बढ गया है।

श्वदे अब बार बार बराकाव की कटु श्रालाचना करने लगा था। एक बार ता श्रापे से बाहर होकर वह उसपर तोड फाड का दोष लगाने लगा। यही श्वद पहले बहुत कम बोला करता था। इस बात की क्या गारटी थी कि अनजाने मे ही उसे हमारा सुराग नही मिलने लग गया?

कुछ दिन पहले कायले की चार गाडिया अनाज के एवज़ में कोयले का सौदा करने के बहाने पडोस के गावो मे भेजी गयी थी। केन्द्रीय कारखाने की ज़मीना से कायले का हटाया जाना ही 'नयी व्यवस्था' का अभूतपूर्व उल्लघन था। किन्तु ल्यूतिकाव और बराकाव के आगे और कोई रास्ता न था, फिर उन्ह और अधिक प्रतीक्षा करने का अधिकार भी न था। कोयले के नीचे बन्दूके छिपाकर भेजी गयी थी। ये बन्दूके क्रास्नादान के छापामार दल के लिए थी। इस दल को

मित्याक्रिन्स्काया दस्त के साथ मिलकर काम करना था। और इस बात को भी क्या गारंटी हो सकती थी कि उस जोखम भरी कारवाही का और किसी का ध्यान ही न गया हो?

दुश्मन 'तरुण गार्ड' दल के, एक के बाद एक, कई सदस्यों को गिरफ़्तार कर चुका था। कौन जाने कि छिपे हुए सूत्र ने एक ही झटके में संघटन के सभी दलों को मुसीबत में डाल दिया हो।

बूढ़ा फिलीप्प पेत्रोविच स्थिति जानता था, समझता था। किन्तु उसके लिए पीछे हटने का कोई कारण अथवा कोई सम्भावना न थी। वस्तुतः उसकी महान आत्मा वहां न थी, वह तो नदियों और स्तेपी, बर्फ़ और हिम को पार करती हुई मुक्ति की विशाल सेना के साथ मार्च कर रही थी। और भले ही वह अपनी पत्नी और बेटी के साथ किसी भी विषय पर कोई भी बात क्यों न करता रहा हो, वह घूम फिरकर एक ही विषय पर आ जाता था—सोवियत सेनाओं ने कितना जबरदस्त हमला किया है। वह केवल कल्पनाओं के आधार पर ही अपना स्थान कैसे छोड़ सकता था और उस समय, जब उसे अपनी पूरी ताकत से काम लेना था! कुछ ही हफ्तों के भीतर शायद कुछ ही दिनों में, वह अन्ततः अपना झूठा बाना उतारकर जनता के सामने अपने असली रूप में आयेगा और हां, अगर उसके भाग्य में उस दिन का सुख देखना बदा ही नहीं है तो, उसके बिना भी, उसके काम को पूरा करने के लिए दूसरे लोग मौजूद हैं। बराकोव के दफ्तर में हुई उस स्मरणीय बातचीत के बाद से एक दूसरी अर्थात् 'रिज़र्व' ज़िला पार्टी कमिटी का निर्माण हुआ था जिसके पास सम्प्रति सभी गुप्त पते और सम्पर्क ठिकाने थे।

फिलीप्प पेत्रोविच अपने छुट्टी के कपड़े पहने बड़ा खुश और अपने स्वभाव से कुछ अधिक विनम्र और बातूनी मूड में बैठा था। उसकी बेटी, आंखों में हंसी बटोरे, अपने पिता को देख रही थी। किन्तु उसका

पत्नी येव्दोकीया फेदोतोव्ना ने तो उसके साथ ज़िन्दगी का सफ़र किया था। वह उसके मूड के छोटे-से छोटे परिवर्तन तक को समझती थी। वह अब तक उसपर एक पैनी और चिन्तित-सी दृष्टि डालती मानो कह रही हो—"यह भड़कीली पोशाक, ये मीठी मीठी बातें—मुझे ये सब कुछ अच्छा नहीं लगता।"

उसकी पत्नी पेलगेया इल्यीनिच्ना से बात करने रसोईघर में गयी ही थी कि फिलीप्प पेत्रोविच को कुछ क्षणों का मौका मिला और उसने अपनी बेटी से 'तरुण गार्ड' दल की गिरफ्तारियों के बारे में बताया। रायां सिर्फ तेरह बरस की ही थी। उसने 'तरुण गार्ड' दल के अस्तित्व की कहानियां सुनी थीं। उसे अपने पिता के कामों का भी थोड़ा थोड़ा पता था। वह उनकी मदद करने के सपने भी देखती थी, किन्तु उसे उसके बारे में कुछ कहने का साहस न होता था।

"सुन रही हो, यहां ज़्यादा मत ठहरो! मैं तुम लोगों को यहां रात में नहीं रहने दूंगा। तुम यहां से सीधे स्तेपी में चली जाओ। अंधेरे में तुम्हें कोई न देख सकेगा," आवाज़ धीमी करता हुआ फिलीप्प पेत्रोविच बोला, "मां से कहना यही ठीक होगा। उसके सामने लम्बी-चौड़ी व्याख्या नहीं की जा सकती। तुम तो खुद ही सब कुछ समझती हो न," उसने जैसे मज़ाक में मुस्कराते हुए कहा।

"तो तुम ख़तरे में हो?" राया ने पूछा और उसका चेहरा उतर गया।

"कोई ठीक नहीं। हम जैसे लोग हमेशा ख़तरे में रहते हैं। फिर मैं तो उसका आदी हो चुका हूं। मैंने तो अपनी ज़िन्दगी ऐसे कामों में लगा दी। मैं चाहता हूं तुम भी वैसी ही बनो," वह धीरे-से बोला।

लड़की सोच में पड़ गयी, फिर अपनी पतली पतली बांहें उसके गले में डालकर अपना चेहरा उसके चेहरे से सटा दिया। मां आयी और

उन्हे आश्चर्य देखने लगी। ल्यतिकोव हमी मज़ाक करते हुए, उन्हे वहा से रवाना करने की कोशिश करने लगा। जब से जमन आये थे, तब से उन दोनो ने एक दूसरे को भी काफी देखा समझा था। जब कभी ल्यूनिकोव के कार्यो मे घरेलू मामले बाधक बनते तो वह कर्कश हो उठता था और येव्दोकीया फेदोताव्ना इन सबकी आदी हो चुकी थी। और चूकि वह यह नही जानती थी कि वह गलती पर है या ठीक काम कर रही है, वह चुप हो जाती हालाकि इससे कभी कभी उसे क्लेश होता था।

अब उसे लग रहा था मानो वह, अपने सामने खडे हुए अपने पति को नयी दृष्टि से देख रही है। उसकी साफ और इस्त्री की हुई जकेट उसके शरीर पर खूब फबती थी। सहसा उसने पति का मुह चूम लिया—पति ने अभी अभी तो हजामत बनायी थी, फिर भी उसके मुह पर ठूठ गड रहे थे। उसने कही उसकी टाई के पास उसे चूमा और फिर सिर उसकी छाती से सटा दिया। ल्यतिकोव के भारी जबडो मे हल्का सा कपन हुआ, उसने धीरे-से उसे एक ओर हटाया और हसी मज़ाक करने लगा। उसकी बेटी की आखो म आसू आ गये। वह एक ओर हटी और मा की आस्तीन खीचने लगी।

उस रात पोलीना गेओर्गियेव्ना को गिरफ्तार किया गया। ल्यूतिकोव और बराकोव को अगले दिन यानी छ जनवरी को, उनके कार्यस्थल पर गिरफ्तार किया गया। और भी कई दजन लोग कारखाने में पकड गये। जसी कि ल्यूतिकोव ने पहले ही स भविष्यवाणी कर दी थी, दुश्मन के लिए साक्ष्य का कोई महत्त्व न रह गया था—गिरफ्तार हुए बहुत-से लोगो का सघटन से कोई भी सबध न था।

जिस समय वालाेया को ले जाया गया उस समय भी 'घपरक' तोल्या को गिरफ्तार न किया गया था। बाद में कारखाने में इतने बड पैमाने पर गिरफ्तारिया हुइ, फिर भी उसे नही पकडा गया। वह सारे दिन

भौचक्का-सा बना रहा और जैसे ही काम स छूटा कि सीधे ग्रास्मूखिन के घर पहुचा। उन्हें पहले से ही यह खबर सुनने को मिल गयी थी।

"अभी तक तुम यहा कर क्या रहे हो? दुश्मन तुम्हे यहाँ का न छोडेंगे। भागो यहा से, जल्दी करो!" ममता और निराशा की भावना से भरकर येलिजवेता अलक्सेयेव्ना बोल उठी।

"म नहीं जाऊगा," ताल्या ने धीरे-स कहा, "म क्यो जाऊ?" उसने अपनी टोपी खुलाते हुए कहा।

नहीं, जब तक वोलोद्या जेल म है सम्भवत वह नहीं जा सकता।

उन्होंने तोल्या को रात मे रह जाने को कहा, पहले तो वह मान गया लेकिन फिर निकल भागा और सीधा वीत्या लुक्यार्चेको के पास जा पहुचा। वह अपने साथियो को जेल से छुडाने के लिए कुछ न कुछ किये जाने के सबध में बातचीत करना चाहता था। जिस समय वह गया, अधेरा हो चुका था। हमेशा की तरह वह पुलिस की गश्ती चौकिया से दूर, चक्कर काटकर गया। उसे वोलोद्या, जम्नुखाव मास्कोव, जोरा अरुत्युन्यान्त्स तथा दूसरे साथियो के अभाव मे अपने ही नगर में कितना अकेलापन महसूस हो रहा था। उसके मस्तिष्क मे निराशा और प्रतिकार की भावनाए भर गयी थी।

दूसरे दिन सुबह ओस्मूखिन परिवार के दरवाजे पर भी जोरो की खटखट हुई। येलिजवेता अलेक्सयेव्ना ने स्वभावानुसार, बिना किसी डर के, और बिना यह पूछे कि कौन हे, दरवाजा खोल दिया। वह तो तोल्या ओर्लोव को देखते ही भौचक्की-सी रह गयी। वह इतना थका-मादा, सर्दी से इतना जकडा हुआ था और उसकी आख इतनी जल-सी रही थी कि उसे पहचानना तक प्राय असम्भव हो रहा था।

इसे पढो," एक मुडा-मुडा कागज़ येलिजवेता अलक्सेयेव्ना और ल्यूस्या को थमाते हुए वह बोला।

वह बड़ा उत्तेजित हो रहा था और जैसे ही उन्होंने वह कागज पढ़ना शुरू किया कि वह बोला—

"अब मैं तुम्हें सारी सच्ची बात बता सकता हूं और मुझे बताना भी है। यह कागज एक सिपाही ने वील्या को दिया था। जिस समय इस सिपाही के घाव भर रहे थे, वील्या ने उसके छिपने का ठिकाना ढूंढ़कर कभी उसकी मदद की थी। मैं और वील्या सारी रात इन कागजों को नगर भर में चिपकाते रहे। यह जिला पार्टी कमिटी का निर्देश है। पिछली रात दजनों लोगों ने उन्हें जगह जगह चिपकाया है। इस समय तक सारे शहर, सारे फार्म और गांवों के लोग इसे पढ़ रहे होंगे।" ये शब्द तोल्या के मुंह से झरते से चले जा रहे थे, क्योंकि हर समय तोल्या को यही लग रहा था कि उसने उन्हें सबसे जरूरी बात अभी तक नहीं बतायी।

किंतु येलिज़वेता अलेक्सेयेव्ना और ल्यूस्या उसकी बातों पर कोई ध्यान न देकर परचा पढ़ने में लगी थीं।

"क्रास्नादोन के नागरिको! खनिज श्रमिको, सामूहिक किसानो, दफ्तर के कर्मचारियो! सोवियत लोगो! भाइयो और बहनो!

"शक्तिशाली लाल सेना ने दुश्मन को मसलकर रख दिया है। दुश्मन भाग रहा है। वह अपने नपुंसक एवं पाशविक क्रोध में निरीह, निरपराध लोगों पर झपट रहा है। उनपर अमानुषिक अत्याचार कर रहा है। ये राक्षस इस बात का ध्यान रखें कि हम अभी तक यहीं मौजूद हैं! उन्हें सोवियत खून की एक एक बूंद की कीमत अपनी नापाक जिन्दगी से चुकानी पड़ेगी। हमारे प्रतिकार के डर से दुश्मन के कलेजे हिल जायेंगे। दुश्मन पर कोई दया मत दिखाओ, जहां पाओ उसका सफाया करो! खून का बदला खून! मौत का बदला मौत!

"हमारी सेना आ रही है! हमारी सेना आ रही है! वह रास्ते में है!

"सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की क्रास्नादोन सुफिया ज़िला कमिटी (बोल्शेविक)।"

अध्याय २४

गिरफ्तारियां शुरू होने के बाद कुछ रातों तक ऊल्या घर से बाहर रहती रही। किन्तु, जैसी ओलेग ने भविष्यवाणी की थी, इन गिरफ्तारियों से न तो पेर्वोमाइका पर ही कोई प्रभाव पड़ा था, न क्रास्नादोन की खनिक बस्ती पर ही। इसी लिए ऊल्या घर लौट आयी।

इतनी रातों तक घर से बाहर रहकर, ऊल्या एक बार फिर अपने ही बिस्तर पर जगी। उसकी इच्छा हुई कि वह अपने दिमाग से उन सारे विचारों को निकाल फेंके जो उसे भीतर ही भीतर घोट रहे थे। अतएव वह पूरे उत्साह के साथ घरेलू कामों में जुट गयी—उसने फर्श साफ किया, नाश्ता तैयार किया। उसकी मां, उसकी उपस्थिति से फूली न समा रही थी। वह अपने बिस्तर से उठी और नाश्ते के लिए मेज़ पर बैठ गयी। उसके पिता चिड़चिड़े हो उठे थे, पर चुप थे। इन दिनों ऊल्या प्रायः गायब रहती थी। हां कभी कभी दो एक घंटे के लिए अपने माता-पिता से मिलने-जुलने अथवा कुछ लेने आ जाया करती। उसकी अनुपस्थिति में मत्वेई मक्सीमोविच और मत्र्योना सवेल्येव्ना सिवा गिरफ्तारियों के और किसी विषय पर प्रायः कोई बात न करते। किन्तु ऐसी बात करते समय उन्हें एक दूसरे से आंखें मिलाने की हिम्मत न होती।

नाश्ते के समय ऊल्या ने कुछ इधर उधर की बात करने का प्रयत्न किया और उसकी मां ने अटपटे ढंग से उसकी हां में हां मिलायी, किन्तु

ये बात कुछ इतनी बनावटी सी लग रही थी कि दोनो चुप हो गया। ऊल्या विचारो मे खो चुकी थी। उसे मेज साफ करने और बरतन धोने तक की भी याद न रही। उसके पिता अपना काम करने लगे।

ऊल्या, सफेद बुन्दियावाला अपना प्रिय नीले रग का हाउस-कोट पहने खिडकी के पास खडी हो गयी। उसकी पीठ अपनी मा की तरफ थी। उसकी भारी, लहराती हुई चोटिया उसकी पीठ से होकर उसकी सुडौल कमर तक आ गयी थी। चमचमाती हुई धूप खिडकी से होकर कमरे मे प्रवेश कर रही थी। खिडकी पर पडी बर्फ पिघल रही थी और लडकी के घुघराले बाल चमक रहे थे।

ऊल्या खिडकी पर खडी हुई बाहर स्तपी की ओर देख रही थी और धीरे धीरे गीत गा रही थी। जर्मनो के आने के बाद से एक बार भी उसके मुह से गाना नही फूटा था। उसकी मा बिस्तर पर बैठी कुछ रफू कर रही थी। उसे अपनी बेटी का गाना सुनकर इतना आश्चर्य हुआ कि उसने अपना काम एक तरफ रख दिया। बेटी अपनी मीठी गहरी आवाज में कोई ऐसी चीज गा रही थी, जिससे वह बिलकुल अपरिचित था।

> जूझे तुम स्वदेश के हित औ' तुम्हे वीर-गति मिली—
> यश कि तुम्हारा अजर अमर है, अविनश्वर है!

उसकी मा ने ये बोल कभी न सुने थे। उसकी बेटी के गाने में करुणा और उदासी की झलक थी—

> प्रतिघाती उठ रहा कि ममता नहीं जानता—
> शक्तिवान है वह तुमसे भी औ' मुझसे भी!

ऊल्या ने गाना बन्द कर दिया और स्तपी की ओर ताकती हुई खिडकी के पास खडी रही।

"तुम क्या गा रही थी?" उसकी मा ने पूछा।

"बस, जो मुह मे आया गाने लगी मुझे इस गीत के बोल याद थे और गाने लगी," बिना घूम हुए ऊल्या ने उत्तर दिया।

दरवाज़ा खुला और हाफते हुए ऊल्या की बडी बहन कमरे में आ गयी। वह ऊल्या से गठीली थी। लाल लाल गाल। खूबसूरत चेहरा। वह अपने पिता पर पडी थी, पर उस समय उसका चेहरा पीला पड गया था।

"जमन सिपाही पोपोव के यहा आ धमके है!" उसने इतने फुसफुसाते हुए कहा कि कही उसकी आवाज़ पोपोव के घर न सुनाई पड जाय।

ऊल्या घूम पडी।

"सचमुच? और इन्ही लोगो से अलग रहना बेहतर है," ऊल्या ने स्थिरता से कहा। उसके चेहरे पर किसी भी तरह का परिवत्तन नही आया। वह दरवाज़े के पास गयी, धीरे-से कोट पहना और शाल से अपने बाल ढक लिये। किन्तु उसने ड्योढी की सीढियो की ओर आते हुए भारी भारी बूटो की आवाज़ पहले ही सुन ली थी। वह कुछ कदम पीछे हटकर उस फूलदार परदे से सटी जिसके पीछे परिवार भर के कोट टगे थे और दरवाज़े की ओर घूम पडी।

उसकी मा अपनी बेटी की उस समय की शक्ल सूरत जिन्दगी भर न भूली—फूलदार परदे की पष्ठभूमि में तीखे नाक-नक्श वह खडी थी—कापते हुए नथुन, अधमुदी लम्बी लम्बी बरौनिया जो मानो उसकी आखो की जलती हुई लपटे बुझाने की कोशिश कर रही हो, सफ़ेद गाल, जो वह बाध न पायी थी और जो ढीला-ढाला उसके कधो पर पडा था।

पुलिस चीफ सालिकोव्स्की, एन० सी० आ० फ़ेनबाग तथा एक सिपाही न कमरे मे प्रवेश किया। सिपाही के हाथ में बन्दूक थी।

"वह रही नन्ही-सी मासूम!" सालिकोस्की चीख पडा, "तुम्हे देर हो गयी है, मेरी नन्ही", उसके सुगठित शरीर को घूरता हुआ वह बोला। ऊल्या अभी तक उसी कोट म थी। उसके सिर पर वसा ही ढीला-ढाला शाल पडा था।

"दया करो, हमपर दया करो " मा गिडगिडायी और पलग स उठने का प्रयत्न करने लगी। ऊल्या ने मा को क्रोधपूण नजरा से देखा। मा की ज़बान रुक गयी और वह आगे कुछ भी न कह सकी। उसका जबडा कापने लगा।

तलाशी शुरू हो गयी। ऊल्या का पिता दरवाज़े की ओर बढा किन्तु सनिक ने उसे भीतर न आने दिया।

उसी समय अनातोली के मकान में भी तलाशी हो रही थी। तलाशी लेनेवाला था—परीक्षण जज कुलेशोव।

अनातोली के सिर पर टोपी न थी, उसके बटन खुले थे और वह कमरे के बीचोबीच खडा था। एक जमन सिपाही उसकी पीठ पीछे उसके हाथ पकडे हुए था। एक पुलिसमैन ताईस्या प्रोकोफ्येना की ओर बढा और चिल्लाकर बोला—

"तुमने सुना नही मैंने क्या कहा! रस्सा लाओ!"

लम्बे कद की ताईस्या प्रोकोफ्येव्ना का मुह क्रोध से तमतमा उठा। वह सिपाही पर खौखिया पडी।

"तुम्हारा दिमाग ता नहा फिर गया? मै तुम्हे रस्सा दू कि तुम मेरे ही बेटे को बाधो, ऐ!"

"इसकी बकवास बन्द करने के लिए इसे रस्सा दे दो, मा," अनातोली बोला। उसके नथुने फैल गये थे। "ये बेचारे छ तो आदमी ह। अगर मुझे बाधा न गया तो ये मुझे सभाल कैसे पायेंगे?'

ताईस्या प्रोकोफ्येव्ना क आसू निकल पडे, वह गलियारे में स

एक रस्सा उठा लायी और उसे अपने बेटे के पैरो के पास फर्श पर पटक दिया।

ऊल्या को उस काठरी में डाल दिया गया था, जिसमे मरीना और उसका नन्हा बेटा, मरीया अन्द्रेयव्ना बाल्त्स और ल्युलेनिन की बहन फेया तथा 'तरुण गार्ड' दल की एक सदस्या थी, जो स्तख्नोविच के पाच के दल में काम करती थी। वह पीले रग की, फूले हुए गालो और उभरे वक्ष वाली लडकी थी। उसका नाम था–आन्ना सोपोवा। उसकी इस बुरी तरह से मरम्मत की गयी थी कि बेचारी लेट तक न सकती थी। उस कोठरी से बाकी सभी कैदी हटा दिये गये थे। और दिन के समय वहा पेर्वोमाइस्क का लडकिया भर दी गयी थी जिनमें माया पेग्लिवानोवा, साशा बोन्दरेवा, शूरा दुब्रोविना, बहने लील्या और तोन्या इवानीखिना–आदि भी थी।

इस कोठरी में न बेंचें थी, न तख्त। औरत तथा लडकिया या तो खडी रहती थी या फर्श पर बैठती थी। काठरी में इतने लोग भरे थे कि वहा का तापमान पानी जमने के तापमान से अधिक हो गया था और छत से बराबर पानी की बूदें चू रही थी।

पास की कोठरी भी काफी बडी थी। वह शायद लडको के लिए रिज़र्व कर दी गयी थी। बराबर नये नये लोग आत जा रह थे। ऊल्या नें सकेत भाषा मे खटखट की– "उधर कौन है?" और उसे तुरन्त उत्तर मिला–"कौन यह बात जानना चाहता है?" ऊल्या ने अपना नाम बताया। उसे अनातोली का उत्तर मिला। पर्वोमाइस्का के बहुत-से छोकरे पास के कमरे में थे–वीक्तार पेत्राव, बार्या ग्लवान, रगोज़िन, जेन्या शेपेल्योव और वास्या बोन्दरेव जिस उसी काल में गिरफ्तार किया गया था जब उसकी बहन साशा को किया गया था। चूकि यह घटना अनिवाय थी, अतएव लडकिया को एक यही सन्ताप था कि पेर्वोमाइस्का के लडके उनके नज़दीक ही है।

"मुझे मार पिटाई से बेहद डर लगता है," ताया इवानोखिना ने स्वीकार किया। वह लम्बी टागो और बच्चो की सी सूरत शक्ल वाली लड़की थी। वह खडी खडी उन लड़कियो को देखे जा रही थी जो दीवाल के सहारे फर्श पर बैठी थी। "बेशक मुझे मार भी डालेंगे तो भी मैं उन्हें कुछ नही बताऊँगी, पर मुझे बेहद डर लग रहा है।"

"डरने की कोई जरूरत नही। हमारी सेनाए दूर नहीं हैं और शायद अब भी यहा से निकल भागने का मौका हाथ लग जाय," साशा बान्दरेवा बोली।

'तुम लड़कियो के साथ एक मुसीबत तो यह है कि तुम द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का एक अक्षर नही जानती " सहसा माया ने कहना शुरू किया और भले ही मन ही मन सभी लड़कियां दुखी थी फिर भी सभी ठहाका मारकर हस पडी। क्योकि ऐसी बात यहा जेल में बडी अजीब लग रही थी। पर माया जरा भी न झिझकी, "बेशक ऐसी कोई पीडा नही जिसका आदमी अभ्यस्त न हो सकता हो!"

शाम होते होते कोठरी में सन्नाटा छा गया। छत से, तार के सहारे एक छोटी-सी जालीदार बत्ती लटक रही थी जिसमे थोडा-सा प्रकाश झरता था। कोठरी के कोने फिर भी अधकार मे पडते थे। किसी किसी वक्त दूर से किसी आदमी की ऊची, कडी आवाज सुनाई देती। वह जर्मन भाषा मे कोई आदेश दे रहा होता। जवाब में कोठरी के बाहर भागते कदमो की आवाज आती। कभी कभी कई पैर खटपटाते हुए हथियारो की लय पर गलियारे में कदम-ब-कदम आगे-पीछे बढ रहे थे। सहसा उनके कानो में पशु जैसी एक भयकर चीख सुनाई पडी और वे उछल पडी—सचमुच कोई आदमी बुरी तरह चीख पडा था। आदमी की चीख होने के कारण वह और भी भयानक लग रही थी।

ऊल्या ने दीवार खटखटाकर सकेत भाषा में पूछा—

"यह आवाज तुम्हारी कोठरी की थी?"

और उत्तर मिला—

"नही। वडा की " प्रौढ खुफिया कायकर्त्ताओं के लिए वे इसी गुप्त नाम का प्रयोग करते थे।

फिर बगल वाली काठरी से किसी का ले जाया गया। लडकिया यह आवाज सुन सकती थी। तुरन्त सटखट सुनाई दी—

"ऊल्या ऊल्या "

ऊल्या ने जवाब दिया।

"यह चीक्तार वाल रहा है व ताल्या को ले गये है '

ऊल्या की कल्पना के समक्ष अनातोली का चेहरा घूम गया और उसकी वे आखे भी जो हमेशा गम्भीर रहने के साथ ही साथ सहसा चमक उठती थी और शक्ति का प्रदशन करने लगती थी। यह सोचकर कि अब उसे किस मुसीवत का सामना करना पडेगा, वह सिर से पैर तक काप उठी। पर, तभी ताले में एक चाभी घूमी, कोठरी का दरवाजा खुला और एक थकी-सी आवाज सुनाई दी—

"ग्रोमावा! "

उसके मस्तिष्क मे वाद की घटनाओं की केवल यही स्मृति रह गयी थी।

कुछ समय तक उसे मोलिकोस्की के प्रतीक्षालय मे खडा रखा गया। दफ्तर में किसी की पिटाई हो रही थी। प्रतीक्षालय के सोफे पर बैठी हुई सोलिकाव्स्की की पत्नी अपने पति की प्रतीक्षा करती हुई जम्भाइया ले रही थी। उसके लहरदार वाल सन के रग के थे। उसकी गोद म एक वडल था और पास मे एक नन्ही-सी लडकी-थी जिसकी आखें उनीदी थी, जिसके वाल अपनी मा जस थे और वह सेव का मुरब्बे वाला समासा खा रही थी। दरवाजा खुला और वान्या जेम्नुखोव का वाहर निकाला

गया। उसका चेहरा इतना सूजा हुआ था कि पहचाना तक न जा रहा था।
गुजरत समय वह उल्या से टकराते टकराते वचा। ऊल्या तो चीखत
रह गयी।

इसके वाद वह स्वय मिस्टर ब्रूक्नेर के ठीक सामने सोलिकोव्स्की
के साथ खडी थी। मिस्टर ब्रूक्नेर ने उससे एक प्रश्न पूछा। और उसका
तटस्थ रुख देखकर कहा जा सकता था कि वह प्रश्न वह पहली बार नहा
पूछ रहा है। शूर्का रैवन्द वही खडा था। लडाई पूर्व के दिनो में शूर्का
रैवन्द के साथ वह क्लब में नाची थी और शूर्का ने उसपर डोरे डालन
का भी प्रयत्न किया था, पर इस समय वह भी ऐसा वन गया था मानो
उसे जानता ही न हो। उसने सवाल का सीधा सीधा रूसी में अनुवाद
कर दिया। किन्तु शूर्का ने क्या कहा यह ऊल्या ने न सुना क्योकि अपनी
गिरफ्तारी से पहले उसने निश्चय कर लिया था कि अगर उसे गिरफ्तार किया
गया तो वह एक ही वात कहेगी। उसने चेहरे पर रुखाई का भाव लात
हुए कहा—

"मै तुम्हारे एक भी सवाल का जवाव न दूगी, क्याकि म तुम्हारे
इस अधिकार को नही मानती कि तुम मेरा फैसला करो। मेरे साथ तुम
जो कारवाई करना चाहो कर सकते हो, पर मेरे मुह से दूसरा शब्द तुम
न सुन सकागे।"

पिछले कुछ दिना में मिस्टर ब्रूक्नेर को सम्भवत इस प्रकार के वाक्य
कई वार सुनने को मिले थे। उसे क्रोध नही आया, पर उगलिया चटकाता
हुआ वोला—

"इसे फेनवाग के हवाले करो।"

वेदाक जुल्म की पीडा भयानक थी। हर तरह की पीडा किस
प्रकार कैसे सहन करनी चाहिए यह वह जानती था। उसे ता यह भी या
न रही कि उसे कब पटका गया था। नही, सबसे वुरी वात उस समय हुई

जब वे उसके कपडे नोचने के लिए झपटे और उनके हाथो में पड़ने से बचने के लिए उसे उन्ही के सामने कपडे उतारने पडे।

जब उसे वापस कोठरी में ले जाया जा रहा था तो अनातोली पोपोव को भी, उसी के पास से होकर, घसीटकर ले जाया गया। उसका सुनहरे बालोवाला सिर पीछे लटका था, उसके हाथ फर्श पर घसिट रहे थे, उसके मुह के एक कोने से खून बह रहा था।

फिर भी, ऊल्या को याद आयी कि कोठरी में जाते समय उसे अपनी अनुभूतियो पर नियत्रण करना होगा और सम्भवत वह इसमें सफल भी हुई। वह कोठरी में घुसी और पुलिस वाला चिल्ला उठा--

"अन्तोनीना इवानोविना ! "

ऊल्या दरवाज़े पर तोन्या के पास से होकर गुज़र गयी। तान्या की भयग्रस्त आखें एक क्षण के लिए उसपर टिकी और ऊल्या के पीछे दरवाज़ा बन्द हो गया ! ठीक उसी समय जेल में एक बच्चे की चीख़ गूज गयी। यह तोन्या की नही, एक नन्ही बच्ची की आवाज थी।

"ले गये वे मेरी नन्ही बच्ची को," मरीया अन्द्रेयेव्ना बोलते चीख़ उठी और शेरनी की भाति दरवाज़े तक दौडी और उसे पटपटा पटपटाकर चिल्लाने लगी--"ल्यूस्या ! वे तुम्हे ले गये है, मेरी बेटी ! उसे छोड दो, उसे छोड दो ! "

मरीना का नन्हा बच्चा जग पडा और रोने लगा।

अध्याय २५

इस बीच ल्यूबा वोरोशीलोवग्राद मे, फिर कामेस्क और रोवेन्की में और एक अवसर पर मील्लेरोवो मे भी रही। मील्लेरोवो के इद गिद तो दुश्मन घेरा डाले हुए था। शत्रु अफसरो के बीच उसकी जान-पहचान का

दायरा भी काफी बढ़ गया था। उसकी जेब सदा बिस्कुट, मिठाइयाँ और चाकलेटो से भरी रहती थीं। ये चीजें उसे उन अफसरो से मिलती थी और वह उन्हें सभी मिलनेवालो में बांटती रहती थी।

बडी निडरता और लापरवाही से वह जैसे तलवार की धार पर चल रही थी। उसके अधरो पर एक निष्कपट मुस्कराहट खेलती रहती और उसकी आखें, जिनमें कभी कभी निदयता भी झलक उठती थी, सिकुडी-सी रहती थीं।

वोरोशीलावग्राद म अन्तिम बार रुकने के समय उसने एक बार फिर उस व्यक्ति से सम्पर्क स्थापित किया जो उसका सबसे निकटस्थ चीफ था। चीफ ने उसे बताया कि जमन नगर के लोगो के साथ ज्यादा पाशविक व्यवहार कर रहे है। चीफ प्राय प्रतिदिन ही अपने रहने की जगह बदलता रहता था। नींद की कमी के कारण उसकी आखें सुर्ख रहती थी। दाढी बढी हुई, कपडे गन्दे। फिर भी मोर्चे से आनेवाली खबरो के कारण वह बडा उत्साहित रहता था। सबसे निकट क्षेत्र में जमन रिजव, कितनी सख्या में है, उनकी सप्लाई लाइनो की स्थिति कैसी है कौन कौन-से जमन यूनिट छावनी डाले हुए है—मतलब यह कि उसे बहुत-सी बातो के बारे में सूचना एकत्र करने की आवश्यकता थी।

ल्यूबा को एक बार फिर क्वाटरमास्टर कनल के साथ सम्पक स्थापित करना पडा। और एक मौके पर तो ऐसा लगा कि वह उनके बीच से निर्बाध निकल भी न सकेगी। क्वाटरमास्टर का सारा का सारा विभाग और उसका चीफ—पिलपिल और लटके हुए गालोवाला कनल वोरोशीलावग्राद छोडकर भाग जा रहे थे। फलत सभी अफसरो के हसी-मजाक मे भी एक तरह की उद्दण्डता आ गयी थी। पियक्कड कनल शराब के हर जाम के बाद अधिकाधिक निश्चेष्ट होता जा रहा था।

ल्यूबा इसी लिए वहा से बचकर निकल सकी कि वहा बहुत-से लोग

थे। वे उसे लेकर एक दूसरे से झगडने लगते थे। अन्तत वह उस मकान मे फिर आ गयी जहा गोल मटोल, फूले हुए गालोवाली लडकी रहती थी। ल्यूबा अपने साथ लेफ्टिनेंट द्वारा भेट मे दिया गया बढिया जैम का डिब्बा भी लेती आयी थी—लेफ्टिनेंट अब भी ल्यूबा को पा जाने की आशा लगाये बैठा था।

ल्यूबा ने कपडे उतारे और सद और ऊची छत वाले कमरे में बिस्तर पर लेट रही। सहसा कोई सामने वाला दरवाज़ा गुस्से से खटखटाने लगा। ल्यूबा ने सिर उठाया। उसके बगल वाले कमरे में लडकी और उसकी मा के चलने फिरने की आवाज़ें आ रही थी। दरवाजे पर बराबर घूसे पड रहे थे मानो कोई उसे तोड देना चाहता हो। ल्यूबा ने कम्बल उतार फेंके, अपनी चोली और लम्बे मोज़ो के ऊपर—सर्दी के कारण वह यह दोनो चीज़ पहने ही लेट गयी थी—अपनी ड्रेस डाली और पैरो मे जूते पहन लिये। कमरे में घुप अधेरा था। हाल मे से मकान मालकिन की डरी हुई आवाज़ सुनाई पड रही थी। वह पूछ रही थी—"कौन है?" कई रूखी-सी आवाज़ें उसका उत्तर दे रही थी। जर्मन आ गये थे। ल्यूबा ने समझ लिया था कि नशे में धुत्त अफसर उससे मिलने आये होंगे और उसकी सुध-बुध जाती रही।

इससे पहले कि वह यह सोच कि उसे क्या करना चाहिए, भारी और मोटे तल वाले बूटो की आहट उसके दरवाज़े तक पहुच गयी। तीन आदमियो ने कमरे मे प्रवेश किया। उनमें से एक उसपर टार्च की रोशनी फेंक रहा था।

'Licht!'* कोई चिल्लाया और ल्यूबा ने लेफ्टिनेंट की आवाज़ पहचान ली।

---

* रोशनी

हाँ वह लेफ्टिनेंट ही था। उसके साथ जमन सशस्त्र पुलिस के दो सिपाही और थे। उन्होंने ल्यूबा को उस मोमबत्ती की रोशनी में देखा जो मकान मालिकिन ने उस दरवाजे के पीछे से थमा दी थी। लेफ्टिनेंट का चेहरा क्रोध से तमतमा रहा था। उसने मोमबत्ती एक सिपाही को थमाया और ल्यूबा के गालों पर कसकर तमाचा जड दिया। फिर वह किसी चीज की तलाश में ल्यूबा का टेल-पाउडर वगैरह इधर उधर फेंकने लगा। एक रूमाल के नीचे पडा हुआ, मुह से बजानेवाला बाजा, फर्श पर गिरा। उसने क्रोध में आकर उसपर पैर रखा और उसे मसल डाला।

फिर वह सिपाहियों को सारे फ्लैट की तलाशी लेने के लिए छोड वहा से चला गया। ल्यूबा ने समझ लिया था कि वह स्वयं इन पुलिस वालों को न लाया था किन्तु उन्होंने लेफ्टिनेंट की मार्फत उसका पता चलाया था। कहीं किसी बात का पता चल गया होगा। पर किस बात का—यह वह न जान सकी।

मकान मालिकिन और फूले हुए गाल गालोंवाली लडकी ने कपडे पहन लिये थे और सर्दी से कांपती हुई, इस तलाशी को देख रही थी, या यह कहना चाहिए कि मकान मालिकिन देख रही थी और लडकी अत्यधिक उत्सुकता और रुचि के साथ ल्यूबा पर नजर गडाये थी। आखिरी क्षणों मे, ल्यूबा ने उस लडकी को गले से लगाया और उसके गुलाबी गाल चूम लिये।

ल्यूबा को वोरोशीलावग्राद मे सशस्त्र पुलिस के थाने में ले जाया गया। वहा एक अधिकारी ने उसके कागजों की जाच की और, एक दुभाषिये की मार्फत उससे पूछा—"तुम्हीं ल्युबोव शेव्त्सोवा हो, तुम किस नगर मे रहती थी?" उससे सवाल-जवाब के समय वहा एक युवक भी मौजूद था। वह एक कोने मे बैठा था जिससे ल्यूबा उसका चेहरा न देख सकी। वह सारा वक्त घबराहट से कांपता रहा। ल्यूबा के पास से

उसकी सन्दूकची, उसके सारे कपडे और निजी चीज़ें ले ली गयी। हा छाटी छोटी चीज़े, जैम का एक टीन और एक अच्छा रगीन स्काफ ज़रूर नही हथियाया गया था। यह स्काफ वह कभी कभी पहना करती थी। यह स्काफ उसने खुशामद करके उनसे माग लिया था, यह कहकर कि जो छाटा छोटी चीज़े उन्हाने उसके लिए छोड दी ह, वह उ ह उसी में बाध लेगी।

इस प्रकार रगीन चीनी क्रेप की अकेली एक फ्राक पहने और साबुन-तल वगरह का वडल और जैम का डिब्बा लिये हुए वह उसी कोठरी में लायी गयी जहा पेर्वोमाइका की लडकिया वन्द थी। दिन का वक्त था और जेल मे पूछ-ताछ चल रही थी।

पुलिस वाले ने कोठरी का दरवाज़ा खाला, उसे भीतर ढकेला और वाला–

"यह रही तुम्हारी वोरोशीलोवग्राद की अभिनेत्री!"

वाहर के पाले से ल्यूबा के गाल लाल हो रहे थे। उसने यह देखने क लिए कि कोठरी में कौन कौन है, आखे सिकोडे, कोठरी में चारा आर निगाह डाली। उसकी आखें चमक रही थी। वहा उसने ऊल्या, मरीना आर उसके वटे और साशा वोन्दरेवा का देखा। सभी उसकी सहलिया यहीं पर थीं। उसन हाथ गिरा लिये। वडल अब भी उसके हाथा में था, पर उसके चेहरे का रग उड गया था।

ल्यूबा के क्रास्नादोन जेल में आते आते, सारी जल प्रौढा और 'तरुण गाड' के सदस्या और उनके सबधिया से भर चुकी थी। यहा तक कि जगह न रह जाने स कुछ लागा और बच्चा का गलियार में भी रख दिया गया था। अभी क्रास्नादान की खनिज बस्ती मे क़ैदिया के लिए भी जगह का इन्तज़ाम किया जाना था।

स्तखोविच क जुम इकबाल में जैसी ही कमी-बेशी हाता रहती, उसी

के मुताविक शहर में गिरफ्तारिया चल रही थी। उसकी दशा उस जानवर
की सी हो गयी थी जिसपर बराबर जुल्म होते रहे हो। उसे तभी थोडा
आराम दिया जाता जब वह अपने किसी न किसी साथी का नाम बता
देता। पर, प्रत्येक गद्दारी के साथ उसपर होनेवाले जुल्मो की सम्भावना
बढती ही जाती, कम होने को न आती। कभी उसे कोवल्याव और
पिरोज्होक की सारी कहानी याद आती, फिर उसे यह याद आता कि
त्युलेनिन का एक दोस्त था—बेशक वह उसका नाम न जानता था, हा
उसका हुलिया जरूर बता सकता था और यह भी उसको याद था कि
उसका घर शाघाई मुहल्ले मे है।

तभी सहसा स्तखोविच को याद आया कि ओस्मूखिन का भी एक
मित्र हुआ करता था—तोल्या ओर्लाव। इसके कुछ ही समय बाद वोलोद्या
के सामने—जिसपर बेहद जुल्म किये जा चुके थे—वाह्टमिस्टर वाल्डेर के
दफ्तर में 'घपरक' तोल्या को लाकर खडा किया गया।

"नही मैने इसे पहले कभी नही देखा," तोल्या धीरे-से बोला।

"नही, मै इसे बिलकुल नही जानता," वोलोद्या बोला।

स्तखोविच को याद आया कि जेम्नुखोव की प्रेमिका नीना
अलेक्सान्द्रोव्स्की मे रहती है, और एक ही दो दिन बाद जेम्नुखोव और
क्लावा, मिस्टर ब्रूक्नेर के सामने, एक दूसरे के आमने-सामने खडे हुए।
जेम्नुखोव को पहचानना मुश्किल हो रहा था। क्लावा की आखें टेढी हो
रही थी। करीब करीब फुसफुसाहट की आवाज में क्लावा बोली—

"नही हम एक ही स्कूल मे पढते जरूर थे। पर लडाई शुरू
होने के बाद से मने उसे कभी नही देखा। म तो देहात में रहती रहा हू।"

जेम्नुखोव कुछ न बोला।

आस्तादान खनिक बस्ती के सारे के सारे दल को स्थानीय जेल मे
रखा गया था। उनके साथ गद्दारी की थी ल्यादस्काया ने, पर वह स्वय

न जानती थी कि सघटन में कौन सदस्य क्या काम करता था। पर वह यह जानती थी कि लीदा अद्रोसोवा, कोल्या सुम्स्कोई का प्यार करती थी।

लीदा अद्रासावा एक खूबसूरत लडकी थी, ठुड्डी नुकीली और आकृति लोमडी के बच्चे जैसी। उसे इसलिए बदूक के पट्टा से पीटा गया था कि वह सघटन म सुम्स्कोई के कामा के बारे में सभी कुछ बता दे। जब उसपर मार पडती तो वह ज़ोर ज़ोर से कोडो की गिनती गिनने लगती, किन्तु उसने कुछ भी बताने से साफ इनकार कर दिया।

प्रौढा को तरुणा से अलग रखा गया था ताकि वे तरुणा पर कोई प्रभाव न डाल सकें और इस बात की सख्त निगरानी रहती थी कि उनके बीच किसी प्रकार का सम्पक स्थापित न हा सके।

किन्तु हद तो जल्लादा के जुल्मा की भी हाती है। अनुभव की आग में तपकर निकले हुए बोल्शेविको अथवा गिरफ्तार 'तरुण गाड' के सदस्या ने न ता अपने साथियो के साथ गद्दारी ही की और न यही माना कि व सघटन के सदस्य हैं। कोई सौ लडके-लडकियो की यह दृढता–इन्हे बच्चे ही कहना चाहिए–इतिहास के लिए एक अभूतपूव चीज थी। उनकी इस दृढता के कारण धीरे धीरे उन्हे उनके माता पिता और रिश्तेदारा तथा निरपराध गिरफ्तार हुए लोगा से अलग करना आसान हो गया। अपना काम आसान बनाने के निमित्त जमन धीरे धीरे उन सभी को छोडने लगे जो इत्तिफाक से गिरफ्तार हुए थे। उन्होने उन रिश्तेदारा का भी छाड दिया जो एक प्रकार से ज़ामिना के रूप मे पकड रखे गये थे। इस प्रकार काशेवोई, ल्युतेनिन, अरुत्युन्यान्त्स तथा कुछ अन्य व्यक्तिया के सबधियो को, जिनमे मरीया अद्रेयेव्ना बोत्स भी थी, रिहा कर दिया गया। नन्ही ल्यूस्या का उसकी मा की रिहाई के एक दिन पहले मुक्त कर दिया गया था। जब मरीया अन्द्रेयेव्ना घर पर आयी तो उसे पता चला कि उसकी नन्ही बटी सचमुच जेल मे रखी गयी थी, कि मा के काना ने धोखा नही खाया था।

जो आवाज उसने जेल मे सुनी थी वह सचमुच ल्यूस्या की ही थी। अब कसाइयो की कैद में सुफिया सघपकारी प्राढ, उनके नेता ल्यूतिकाव और वराकोव और 'तरुण गाड' दल के सदस्य रह गये थे।

सुबह स लेकर रात तक इन कैदियो के रिश्तदार जेल के बाहर मजमा लगाये रहते, और भीतर जाने या बाहर आनेवाले पुलिस वालो और जमन सिपाहियो का हाथ पकड पकडकर उनसे चिरौरी करत कि वे उन्ह कदियो की खबर दें या उन्ह पागल पकडा दे। सनिक इन लागो को ढकेलकर पीछे हटा दत किन्तु वे फिर वहा जमा हो जाते और उन्हा में कुछ राहगीर या तमाशाई भी एकत्र हो जाते। कभी कभी उन कैदियो का चीख-पुकार भी लकडी की दीवाल के पीछे से सुनाई पडती जिन्ह पाटा जा रहा होता। जेल के भीतर दिन भर एक ग्रामोफोन इसलिए बजा करता था कि कैदियो की चीख पुकार बाहर न सुनाई पडे। सारे नगर मे सनसनी थी और वहा रहनेवाला एक भी व्यक्ति ऐसा न था जो दिन का कुछ हिस्सा जेल क पास खडे होकर न विताता हो। आखिर मिस्टर ब्रूकनेर न कदियो को पासल दिये जाने की अनुमति दी और इस प्रकार ल्यूतिकाव और वराकोव को यह सदेश भेजना सभव हो सका कि जिस जिला पार्टी कमिटी को वे बाहर छोड आये हैं वह काम कर रही है और वह 'बडा' और 'छोटो' सभी का मुक्त कराने के उपाय खोज रही है।

इस समय तक तरुण लोग कोई दो हफ्ता तक जेल में रह चुके थे। जमन अधिकृत प्रदेश की निमम कारावास-दशाओ में उनकी जिन्दगी बडी अस्वाभाविक थी, पर धीरे धीरे इसमें भी उसकी दिन चया निश्चित-सी हो गयी। इसमे उनके शरीर और मस्तिष्क पर होनेवाली निमम हिंसा, और साथ ही मानव सबध-प्रेम, मित्रता और अपने को खुश रखने के उनके पुराने तरीके—साथ साथ चल रहे थे।

"लडकि!, मुरब्बा खाओगी?" ल्यूबा ने कोठरी के बीचोबीच फश

पर पालथी मारकर बैठते हुए तथा अपनी गठरी खोलते हुए पूछा। "बदमाश ने मेरा मुह्-बाजा तोड डाला। यहा उसके बिना, मैं रह भी कैसे सकती हू।"

"कुछ इन्तज़ार करो, वे तुम्हारी पीठ पर ऐसा बाजा बजायेंगे कि मुह का बाजा भूल जाओगी," शूरा दुब्राविना ने गम हाते हुए कहा।

"तुम अपनी ल्यूबा का नही जानती। तुम्हारा ख्याल है कि जब वे मुझे पीटेंगे तो म चुप रहूगी, बोलूगी नही कुछ? मैं उनपर चीखूगी, उन्हे गालिया दूगी। इस तरह–'आ ओ आ। अरे मूर्खो! ल्यूबा को क्या मार रहे हो?'" वह चिल्लायी और लडकिया हस दी।

"पर सहेलियो, सच बात तो यह है कि हम शिकायत भी किस बात की कर? हमसे कही ज्यादा मुसीबत तो हमारे माता पिता का उठानी पड रही है। वे बेचारे ता यह भी नही जानत कि हमारा बना क्या है। और कौन जाने उन्हे क्या देखना बदा हा!" लील्या इवानीखिना बोली।

गोल चेहरे और सुनहरी बालावाली लील्या, बन्दी शिविरा की कठिनाइया बरदाश्त कर चुकी थी। वह किसी बात की शिकायत न करती, हर व्यक्ति का ध्यान रखती। वह तो कोठरी मे कद लडकिया के लिए फरिश्त के समान हो रही थी।

शाम को ल्यूबा को भी सवाल जवाब के लिए मिस्टर ब्रूक्नेर के आगे पेश किया गया। प्रत्यक्षत यह एक असाधारण मौका था, क्योकि वहा जमन सशस्त्र पुलिस के सभी अफसर मौजूद थे। उन्हाने उसे मारा-पीटा नही। वस्तुत उसके साथ नर्मी का व्यवहार किया। ल्यूबा ने उनके साथ वसा ही व्यवहार किया जसा वह हमेशा जमना के साथ करती थी– उसने बडे नाज़-नखरे स बातचीत की, हसती चहकती रही और जा कुछ वे जानना चाहते थे उसके प्रति पूर्णत अनभिज्ञ बन गयी। उन्हाने यह भी सकेत किया कि यदि वह उन्हे वायरलेस ट्रान्समिटर और उसके साथ

ही काड दे दे तो उसका अपना बडा लाभ होगा। सारा वक्त ल्यूबा का मन शान्त और स्थिर बना रहा।

यह तो केवल अधेरे में निशानेबाजी की गयी थी, क्योकि उनके पास इस बात का कोई प्रत्यक्ष प्रमाण न था। किन्तु उन्हें इस बात में कोई सदेह भी न रह गया था कि ऐसी चीजे उसके पास थी जरूर। उनकी यह सूचना कि वह सघटन की सदस्या थी, भिन्न भिन्न नगरो में आती-जाती थी, और साथ ही जमनो के साथ उसके अच्छे सबध थे, इस बात की ओर सकेत कर रही थी कि उसकी ये यात्राए निरुद्देश्य नहीं रही होगी। बेशक जर्मन जवाबी-जासूसो ने इस बात का पता चला लिया था कि इस इलाके में कई गुप्त ट्रान्समिटर काम कर रहे थे। वोरोशीलोवग्राद पुलिस कार्यालय में ल्यूबा से पूछ-ताछ के समय जो युवक मौजूद था, वह पहले कभी वार्का दुबीन्स्की के साथ रहा था। वोर्या वायरलेस स्कूल में ल्यूबा का एक मित्र था। उस युवक ने इस बात की पुष्टि की थी कि वह गुप्त-वायरलेस कोर्स में पढती थी।

ल्यूबा से कहा गया था कि वह इस बात पर विचार करे कि क्या सब कुछ स्वीकार कर लेना उसके लिए हितकर नहीं होगा। इसके बाद उसे अपनी कोठरी में वापस भेज दिया गया था।

उसकी मा ने उसके लिए एक थैले में खाने का सामान भेज दिया था। ल्यूबा थैला घुटनो के बीच दबाये, फर्श पर बैठी हुई, कभी उसमें से कोई रस्क निकालती, कभी कोई अण्डा और सिर झुलाती हुई गाती जाती

> ल्यूबा, ल्यूबा, प्यारी बडी दुलारी ल्यूबा,
> लगता है अब बहुत समय तक चल न सकेगा—
> मुझ पर तुम्हारा अब यह बल न सकेगा!

जो पुलिस वाला उसके लिए खाना लाया था, उससे ल्यूबा ने कहा—

खोल दिया गया था। दरवाजे के ठीक सामने एक स्टूल पर एक हमा सिपाही बैठा हुआ था। वह भी 'सत मगदालेन मठ के रहस्य' की कहानी सुन रहा था।

ल्यूबा की तबीयत कुछ सुधरने लगी। वह उठ बठी। उसके भी कान कुछ कुछ इस कहानी की ओर लगने लगे। उसने माया पब्लिवानोवा की ओर देखा जो कई दिना तक बिना हिले-डुले पडी हुई थी। बोरिसोवा न बताया था कि माया कभी स्कूल के कोमसोमोल दल की सेक्रेटरी थी, इसी लिए उसपर दूसरा से अधिक जुल्म किये जा रहे थे। जब ल्यूबा ने माया का देखा ता उसके हृदय में अत्याचारियो के खिलाफ प्रतिकार की अदम्य भावना उठी और क्रियात्मक रूप लेने के लिए मचलने लगी।

"साशा साशा " उसने धीरे-से साशा बोन्दरेवा को पुकारा, जो ऊल्या के इद गिद बैठी लडकिया में थी, "न जाने क्या लडके बिलकुल चुप हो गये है।"

"ठीक कहती हो।"

"तुम्हारा क्या ख्याल है, क्या उनकी हिम्मत टूट गयी है?"

"तुम जानती हो, उनपर हमसे ज्यादा जुल्म हो रहे है," साशा बोली और आह भरी।

या तो साशा के तौर-तरीके और आवाज लडका जैसी और रूखी थी, पर इधर जेल मे उसमे लडकियो जैसे कोमल गुण उभरने लगे थे। पर ये नारी-सुलभ गुण उसमे इतनी देर से उभरे थे कि उसे स्वय ही उनके लिए लज्जा होती थी।

"चलो, उनका मनोरजन ही किया जाय," ल्यूबा चहक उठी। "आओ, उनका व्यग्य चित्र बनायें।"

उसने अपनी गठरी मे से एक कागज और लाल नीली पेंसिल निकाल ली। फिर दोना ही एक दूसरे के पास पास पेट के बल लेटी और व्यग्य

चित्र के भाव के बारे में फुमफुमाने लगी। तब एक दूसरे से पेंसिल झपटते हुए, उन्होंने एक दुबले-पतले सिकिया से जवान की तस्वीर खीची जिसका सिर लटका था और जिसकी बडी-सी नाक जमीन छू रही थी। उन्होंने उसे नीली पेंसिल से रग दिया लेकिन चेहरा सफेद छोड दिया। उसकी नाक उन्होंने लाल पेंसिल से रग दी। चित्र के नीचे उन्होंने लिख दिया

ऐसी भी क्या बात कि लडका एसी भी क्या बात—
लटके हुए तुम्हारे चेहरो पर बजते ह सात!

ऊल्या अपनी कहानी की किस्त पूरी कर चुकी थी। लडकिया उठी, कमर सीधी की और अपने अपने कोना मे चली गयी। कुछेक ल्यूबा और साशा के पास आ गयी। व्यग्य चित्र हाथो हाथ घूमने लगा। लडकिया हस पडी—"तुम अपनी प्रतिभा नष्ट करती रही हो।'

"यह चित्र हम उन तक कैसे पहुचायें?'

ल्यूबा ने कागज लिया और दरवाजे तक चली आयी।

"दवीदोव! इन छोकरो की तस्वीर तो जरा उन्ह दे आओ।" उसने पुलिस वाले को जैसे पानी पर चढाते हुए कहा।

"तुम्ह यह कागज-पेन्सिल कहा से मिले? भगवान कसम मैं चीफ से तुम सब की तलाशी लेने को कहूगा!" वह क्रोध से भौहे चढाते हुए बोला।

शुर्का रवन्द गलियारे से होकर गुजर रहा था। उसने ल्यूबा को दरवाजे पर खडे देखा।

"हलो ल्यूबा! मेरे साथ वोरोशीलोवग्राद की सैर को कब चलोगी?" उसने मजाक किया।

"तुम्हारे साथ? कभी नही! पर अगर तुम यह कागज उन छोकरो को दे दोगे तो चलूगी तुम्हारे साथ—हमने यह उनकी तस्वीर खीची है।

रैवन्द ने चित्र पर एक निगाह डाली, उसके मुरझाये जस चहरे पर हसी दौड गयी और उसने कागज दवीदोव को थमा दिया।

"दे दो, इसमें कोई नुक्सान नही," उसने लापरवाही स कहा और गलियारे में निकल गया।

दवीदाव, चीफ के साथ रैवन्द के अच्छे सबधा का जानता था, साथ ही वह यह भी जानता था कि दूसरे सभी पुलिस वाला की तरह वह भी एक पिटठू है। फलत उसने विना कुछ कहे सुने वह कागज लिया, छोकरावाली कोठरी का दरवाजा थोडा-सा खोला और कागज अन्दर फेंक दिया। कोठरी से हा-हा हू-हू की आवाजे आने लगी और कुछ ही क्षणा के वाद दीवाल पर दस्तक सुनाई दी—

"यह तुम लडकियो की खाम-ख्याली है। हमारे सभी वाशिन्दे कायदे का वरताव कर रहे हैं यह वास्या वान्देरेव है। मेरी नन्ही बहन को शुभकामनाए।"

साशा जिस वडल को तकिये की जगह इस्तेमाल कर रही थी उसमें से उसने शीशे का एक खाली डिब्बा निकाला, जिसमे उसकी मा ने उसे दूध भेजा था, और दीवाल के पास जाकर खटखटाने लगी—

"वास्या, मेरी बात सुन रहे हो न?"

फिर उसने डिब्बे का पेदा दीवाल से सटाया, अपने ओठ उसके मुह पर रखे और अपने भाई का प्रिय गान—'सुलिका'—गाने लगी।

किन्तु कुछ ही पक्तिया बाद गाने के शब्दा ने उसके सामने अतीत के ऐसे एसे चित्र खडे कर दिये कि उसकी आवाज लडखडाने लगी। लील्या उसके पास गयी, उसका हाथ थपथपाया और विनम्र और मदु आवाज में बोला—

'नही, मेरी सखी, नहा! शान्त हो जाओ!"

"जब आसू गिरते है ता मैं अपने आप से घृणा करने लगता हूँ," साशा बोली। उसके ओठो पर मुस्कराहट काप रही थी।

"स्तखोविच!" सोलिकोव्स्की की भारी आवाज़ गलियारे भर में गूंज गयी।

"फिर शुरू हुआ," ऊल्या बोली।

पुलिस वाले ने दरवाजा बन्द किया और चाभी घूम गयी।

"अच्छा हो हम सुनें ही नहीं," लील्या बोली, "प्यारी ऊल्या, तुम तो मेरी प्रिय कविता जानती ही हो। तुमने पहले भी 'राक्षस' कविता सुनायी थी न! याद है? वैसे ही फिर सुनाओ!"

ऊल्या ने एक हाथ उठाया और कविता-पाठ करने लगी—

उफ, आखिर यह जीवन क्या है,
क्या है इसकी दुख-यातना
इसके क्षणिक कुटेव, कुकरनी?
क्या अब आशा शेष नहीं है?
क्या अब यह विश्वास नहीं है—
भले विचार करे न्यायालय क्षमा कि फिर भी मिल सकती है?
नहीं, बात मेरी कुछ और है—
मेरे ताप शाप का कोई अंत न होगा, कभी न होगा—
मेरे मन की पीर वेदना को न कभी कोई हर सकता—
उफ़ कि अंत यह नहीं जानती,
क्योंकि अंत यह नहीं जानता मेरा जीवन!
यह कि नाग है मार कुंडली घेरघारकर सारा अन्तर बैठ गया है—
यह कि नाग है जिससे कोई शक्ति नहीं लोहा ले सकती—
और, बराबर मेरी मनसा-वाचा यों दबती जाती है,
जैसे कोई भारी पत्थर बोझ डालता हो ऊपर से—
यह मेरी भग्नाशा की जलती समाधि है!!

किस प्रकार इन पक्तियो ने लडकियो के दिलो को झिंझोडा। लगता था वे साफ साफ उन्हे कह रही हो—"यह तुम्हारे बारे में है! तुम्हारी कुछ कुछ जगी हुई उत्तेजना के बारे में! तुम्हारी चूर आशाओं के बारे में!"

फिर ऊल्या ने वे पक्तिया पढी जिनमें इस बात का उल्लेख था कि देवदूत, तमारा की पापी आत्मा लिये जा रहा है। तोन्या इवानीखिना बोली—

"तुम्ही देखो न! आखिर देवदूत ने आकर तमारा को बचाया या नही! कितना अच्छा रहा!"

"नही!" ऊल्या बोली। उसकी आखो में वही स्थिर भाव था जैसा उस समय था जब वह पढ रही थी। "नही, मै तो उस राक्षस के ही साथ जाती जरा सोचो राक्षस ने खुद भगवान के खिलाफ विद्रोह किया था!"

"ठीक कहती हो! हमारे लोगो के सकल्प को तोड सकनेवाला कोई पैदा नही हुआ!" सहसा ल्यूबा बोली। उसकी आखो से चिनगारिया छूट रही थी। "क्या हमारे जैसे लोग कही और है दुनिया में? जिनकी आत्मा इतनी अच्छी हो? जिनकी सहन शक्ति इतनी अदम्य हो? हो सकता है मौत हमारे कदम चूम—मुझे उसका भी डर नही। जरा भी डर नही।' उसने यह बात इतने उत्साह से कही कि उसका सारा शरीर हिलने लगा। 'पर म मरना नही चाहती मैं अपना हिसाब उनसे चुकाना चाहती हू, उन बदमाशो से जा वहा बैठे है। मै गीत गाऊगी उन इलाको मे जहा दुश्मन के मनहूस कदम नही पहुचे है, जरूर इस बीच अच्छे अच्छे गीतो की रचना हुई है! जरा सोचो। हमने छ महीने जर्मनो की मातहती म बिताये हैं। हम तो जैसे कब्र में पडे रहे—न गाना, न हसी! सिर्फ आसू, रोना धोना खून!' ल्यूबा ने जोर देते हुए कहा—

'हम इसी समय एक गाना गायेगी! भाड में जाये ये सब!

साशा वोन्दरेवा बोली और अपने पतले, धूप से तपे हाथ से ताल देती हुई गाने लगी—

> फौजी कमानें सटी एक-दूसरे से आगे बढती गईं—
> कभी मदाना के बीच से गुज़री तो कभी ढूहो टीला के
> सिर पर चढती गई।*

लडकिया अपनी अपनी जगहा से उठी, उन्होने गीत की लडी पकडी और साशा के इर्द गिर्द खडी हो गयीं। सभी कठो से निकला हुआ यह गीत कदखाने की इमारत भर में गूज उठा। लडकियो ने सुना कि पास की कोठरी के लडको ने भी उसमें अपना कठ-स्वर मिलाया।

कोठरी का दरवाजा भडभडाकर खुला। सिपाही ने क्रोध और भय से सिर अन्दर किया और बुदबुदाया।

"यह क्या हो रहा है? तुम सब पागल हो गयी हो क्या? चुप हो जाओ!"

> आन थे पराक्रम की, वीरता की शान थे—
> लाल सूरमा, ये सभी, सभी पार्टीज़ान थे—
> उनका सुकृत्य दुनिया के लिए बह रहा—
> उनका सुयश जसे अजर अमर रहा।
> घुस आये अन्दर औ' अदभुत जादू किया—
> पूरा नगर अपने हाथो मे ले लिया!

पुलिस वाले ने दरवाज़ा जोर से बन्द किया और जल्दी जल्दी वहा से निकल गया।

कुछ ही समय बाद गलियारे में भारी भारी कदमो की आवाज़ सुनाई दी। दरवाज़े पर मिस्टर ब्रूकनेर खडा था—लम्बा कद, कसा हुआ पर नीचे

---

*देशभक्त छापामारो का गाना।

लटकता-सा तोंद, पीला चेहरा, आंखों के नीचे वाले काले गूमड़, गरदन पर कालर तक आती हुई मांस की परत। हाथ में पकड़े सिगार का धुआं छल्लों के रूप में ऊपर उठ रहा था।

"Platz nehmen! Ruhe! *" उसकी तेज़ आवाज़ सुनाई दी। कानों के परदे तक फाड़ देने वाली यह ध्वनि मानो नकली पिस्तौल दाग़कर निकाली गयी थी।

> वोलाच्येव्स्क नगर की रातें औ' वे अद्भुत से दिन—
> कौन भूल पायेगा उनको, अजर-अमर हैं छिन छिन—
> जैसे चिर उन्नत माथा हो—
> जैसे कोई जय-गाथा हो।

लड़कियां बराबर गाती जा रही थीं।

जर्मन सिपाही और पुलिस वाले कोठरी में घुस आये। लड़कों की पास वाली कोठरी में भी हलचल मच गयी। लड़कियों को फ़र्श पर दीवाल के साथ पटका जाने लगा।

अकेली ल्यूबा कोठरी के बीचोबीच खड़ी रही। उसके छोटे छोटे हाथ उसकी कमर पर थे और उसकी नफ़रतभरी आंखें अपने सामने घूर रही थीं। वह अपनी एड़ियां पटपटाकर नाचने लगी और सीधी ब्रूक्नेर की ओर बढ़ने लगी।

"अरी दुष्टा!" वह चीख पड़ा। उसका सांस फूल रहा था। अपने चौड़े हाथ से उसने ल्यूबा की बांह पकड़ी, और उसे मरोड़ते हुए गलियारे में घसीटने लगा।

ल्यूबा ने फुफ्कार भरी, सिर निकाला और उसके हाथ का पीला मांस कसकर काट लिया।

---

* अपनी अपनी जगह पर खड़े हो जाओ। चुप रहो।

"Verdammt noch mal!"* ब्रूक्नेर गरजा और अपनी दूसरी मुट्ठी से ल्यूबा के सिर पर घूंसे मारने लगा। पर वह बराबर उसका हाथ काटे जा रही थी।

सिपाहियों ने बड़ी कठिनाई से उसे अलग किया और फिर स्वयं ब्रूक्नेर की सहायता से, जो हवा में मुट्ठी नचा रहा था, वे उसे गलियारे में से घसीटते हुए ले गये।

सिपाही उसे कसकर पकड़े हुए थे और ब्रूक्नेर और फ़ेनबाग उसपर बिजली के कटे हुए तारोंवाले हंटर बरसाने लगे। हंटर उसकी पीठ के उन घावों पर पड़ रहे थे, जो कुछ कुछ भरने लगे थे। ल्यूबा ने कसकर अपने ओंठ भींच लिये पर मुंह से एक शब्द भी न निकाला। सहसा कैदखाने के ऊपर कहीं उसे हवाई जहाजों के इंजनों की भनभनाहट सुनाई दी। उसने यह आवाज़ पहचानी और उसका दिल जोश से भर गया।

"शैतान की औलाद! पीट लो मुझे, मन भरकर पीट लो! ऊपर हमारे साथियों की ललकार सुनाई देने लगी है!" वह चीख पड़ी।

एक हवाई जहाज ने गोता लगाया। उसकी आवाज कमरे में गूंज गयी। ब्रूक्नेर और फ़ेनबाग ने उसे मारना-पीटना बन्द कर दिया। किसी ने तुरन्त रोशनी बुझा दी। सिपाहियों ने ल्यूबा को छोड़ दिया।

"अरे बदमाशो! बुज़दिलो! तुम्हारी घड़ी आ गयी है। अरे राक्षसो आहा हा ," ल्यूबा चीखी। वह करवट तक लेने में असमर्थ हो रही थी। खून से सने तख्त पर उसके पैर क्रोध से कांप रहे थे।

एक विस्फोट से होनेवाली धमक ने कैदखाने की इमारत तक हिला दी थी। हवाई जहाज नगर पर बम बरसा रहा था।

वह दिन 'तरुण गार्ड' दल के सदस्यों के बंदी जीवन में एक नये

---

*लानत है!

मोड का दिन था। अब स उन्हाने सघटन की अपनी सदस्यता का छिपाना छोड दिया और अपने अत्याचारिया का खुलकर विरोध करने लगे। वे उनस रुखाई वे माथ पश आत, उनका उपहास करते। वे अपनी काठरिया में क्रान्तिकारी गीत गाते और जब कभी किसी पर जुल्म करने के लिए उस काठरी से घसीटत हुए ले जाया जाता, ता वे नाचत और जारा का हाहल्ला मचाते।

और इस समय उनपर जिस प्रकार के जुल्म होते थे उनकी मानव मस्तिष्क कल्पना तक नही कर सकता। मानव विवेक और अन्त करण कभी इन भयकर अत्याचारा के वारे मे सोच भी न सकता था।

अध्याय २६

अपने साथिया में ओलेग मोर्चे की गतिविधि का सब से बेहतर जानता था। जमी हुई उत्तरी दानेत्स को पार करने की दृष्टि से वह अपने दल को उत्तर की ओर गुदोरोव्स्काया क्षेत्र मे ले गया। वह चाहता था कि वोरानेज-रोस्तोव रेलवे पर स्थित ग्लुवोकाया स्टेशन तक पहुच जाय।

सभी अपने परिवार और साथिया के लिए चिन्तित थे। वे रात भर चलते रहे और परस्पर एक शब्द भी न बाले।

गुन्दोरोव्स्काया का चक्कर काटकर उन्हाने सुबह के समय, निवाध, दानेत्स पार की। फिर एक पुरानी देहाती पगडडी पर बनायी हुई एक चिकनी सनिक सडक पर चलत हुए दुवावाई खेतिहर वस्ती की दिशा में जाने लगे। उनकी आखें स्तपी में किसी ऐसी वस्ती की खाज में लगी थी जहा व थाडी गर्मी का सुख लेत, और पेट भरत।

हवा बद थी। सूय चढ़ता जा रहा था। धूप में गर्मी बढ़ रही थी। ओलेग और उसके माथिया के इद गिद ऊचा-नीचा स्तपी दूर दूर तक

चमचमा रहा था। सडक पर पडी हुई बर्फ़ की पतली परत पिघल रही थी। सडक से भाप उठ उठकर हवा में मिल रही थी और मिट्टी की सोधी सोधी महक तेज होती जा रही थी।

प्राय उन्हे जर्मन पैदलसेना, तोपखानें, आर्मी सर्विस और सप्लाई यूनिटो के आदमी जहा-तहा दिखाई पड जाते। उनकी टुकडिया स्तालिनग्राद के घेरे से किसी प्रकार निकल भागी थी और बाद के मुकाबले में बुरी तरह कुचल दी गयी थी। उन्हे इन जर्मन टुकडियो के सैनिक न सिर्फ फौजी सडक पर ही बल्कि पास-पडोस की देहाती सडको पर और दूर की सडको पर भी दिखाई पडते थे। ये सडके उन्हे विशेषकर उस समय साफ साफ दिखाई पडती थी जब वे अपने मार्ग से होकर किसी टीले की चोटी पर पहुच जाते थे। इस समय के जर्मन कोई साढे पाच महीने पहले के जर्मनो से बिलकुल भिन्न थे। उस समय वे इन्ही इलाको मे होकर हजारो लारियो पर शान से निकलते थे। पर, आज के जर्मनो के ओवरकोट चिथडे चिथडे हो गये थे। उन्होने ठढ से बचने के लिए अपने सिर और परो मे कपडे लपेट रखे थे। उनके हाथ और बढी हुई दाढी वाले चेहरे इतने काले हो गये थे मानो वे सीधे चिमनी से निकलकर आ रहे हो।

एक जगह उन्होने अपने आगे इतालवी सैनिको का एक जत्था भी देखा। यह जत्था पूर्व से होकर पश्चिम जानेवाली सडक पर चला जा रहा था। यह सडक उसी फौजी सडक को काटती थी जिसपर ओलेग और उसके साथी चल रहे थे।

कई इतालवी सैनिक कन्धो पर उल्टी बन्दूके रखे चले जा रहे थे। वे बन्दूको को उनकी नलियो के सहारे पकडे हुए थे। बहुतो के पास तो बन्दूकें भी न थी। गर्मी का लबादा पहने हुए एक अफसर सिर पर कोई ऐसी चीज पहने था जो न फोरेज-टोपी थी, न चोटीदार फौजी टोपी। इसे उसने बच्चो के पाजामे से सिर पर बाध रखा था। वह एक गधे पर

विना जीन वे वैठा था और उसके बडे बडे बूट जमीन को छू रहे थे।
गम और दक्षिणी जलवायु वे इस निवासी की नाक से टपकनेवाला बूंद
ऊपरी आठ तक पहुचते पहुचते जम गयी थी। यह एक ऐसा मजदार
प्रतीकवादी तमाशा था कि ओलेग और उसके साथी एक दूसरे का आर
देखकर ठहाका मारकर हस पडे।

युद्ध ने बहुत-से नागरिको को गृहविहीन कर दिया था। व सडका पर
दिखाई पड जाते थे। अत पीठ पर सफ़री थैले बाधे इन दो लडको और
तीन लडकिया की ओर किसी का भी ध्यान न गया। वे बराबर अपन
रास्ते पर बढते रहे।

ये सब दृश्य और तमाशे देखकर उनका मूड बढिया हो गया था।
यौवन को खतरे की परवाह नही रहती। ये साहसी युवक-युवतिया अपनी
कल्पना में अभी से मोर्चे की पक्तियो के उस ओर पहुच चुके थे।

नीना फेल्ट के जूते पहने थी। अपने सिर पर उसने कनटोप पहन
रखा था, जिसके अन्दर से उसके घुघराले बालो की भारी भारी लटें उसके
गम कोट के कालर पर गिर रही थी। चलने से उसके गालो पर लाली
आ गयी थी। ओलेग निरन्तर उसकी ओर देखता रहता था और जब दोनो
की आखें चार होती थी तो वे मुस्करा देते थे। सेर्गेई और वाल्या तो एक
मौके पर बर्फ़ के गोले बना बनाकर एक दूसरे पर फेंकने लगे थे और एक
दूसरे के पीछे भागते हुए इतनी दूर निकल गये थे कि उनके साथी बहुत
पीछे छूट गये थे। उस दल में ओल्या ही सबसे बडी थी। वह गहरे रग
के कपडा में थी और चुपचाप चल रही थी। उन दो जोडो के बीच वह एक
सरलहृदया मा जैसा व्यवहार कर रही थी।

वे एक दिन और एक रात तक दुबोवोई की खेतिहर बस्ती में रहे।
उन्होने मोर्चे की गतिविधि के सबध में भी बडी सतर्कता से पूछ-ताछ की।
युद्ध में अपग हुआ एक व्यक्ति—उसका एक बाजू कट गया था—अपनी

टुकडी से बिछुड जाने के बाद पडोस में बस गया था। उसने उन्हे यह सलाह दी कि वे और भी उत्तर में द्याच्किना गाव की ओर चले जाय।

इस गाव तथा पास-पडोस की खेतिहर बस्तियों मे रहकर उन्होने कुछ दिन काटे। इस अवधि मे वे जमना के फौजी अड्डो, और तहखानो में छिपकर रहनेवाले ग्रामीणा के बीच घूमे फिरे। इस समय वे मोर्चे के बिलकुल निकट थे। गोला की धमक बराबर उनके काना मे पडती रहती था। रात में वे तोपा के मुह से निकलती आग भी देख सकते थे। जमन अड्डो पर बराबर बमबारी हो रही थी और यह साफ दिखाई पडता था कि सोवियत सेना के दबाव से मोर्चा भरभरा रहा था क्याकि इस समय इस इलाक़े में जहा कही भी जमन फौज की टुकडिया नज़र आती, सभी का मुह पश्चिम की ओर ही होता।

हर सैनिक ओलेग और उसके साथिया को कनखिया से देखता था। गाव वाल भी, बिना यह जाने-समझे कि वे कैसे लोग है, उन्हे अपने घरा में ठहराने से डरते थे। इस क्षेत्र मे घूमते रहना या यही रह जाना खतरनाक था। फिर पाच लोगो के दल के लिए मोर्चा पार करने का तो सवाल ही न उठता था। एक बस्ती में एक किसान औरत ने उन्हे इस तरह घूरा माना वह उनकी दुश्मन हो। और जब रात हुई तो गम कपडे पहनकर बाहर निकल गयी। ओलेग जग रहा था। उसने अपने साथिया को जगाया और सब के सब बस्ती से निकलकर खुली स्तेपी की ओर चल दिय। नाद के मारे उनकी आखें उठनी नही थी, किन्तु कही पड रहने का भी ठिकाना न था। इसके अलावा हहराती हवा का मुकाबला करना तो उनके लिए बड़ा कठिन लग रहा था। पिछले रोज से ही तेज़ हवा चलने लगी थी। उन्होने अपने को इतना निस्सहाय, इतना परित्यक्त कभी भी न अनुभव किया था। अन्तत ओल्या बाल उठी जो उम्र में सब से बड़ी था—

विना जीन के वठा था और उसके वडे वडे बूट ज़मीन को छू रहे थे। गम और दक्षिणी जलवायु के इस निवासी की नाक से टपकनेवाली बूदें ऊपरी ओठ तक पहुचते पहुचते जम गयी थी। यह एक ऐसा मजेदार प्रतीकवादी तमाशा था कि ओलेग और उसके साथी एक दूसरे की ओर देखकर ठहाका मारकर हस पडे।

युद्ध ने बहुत-से नागरिको को गृहविहीन कर दिया था। वे सडको पर दिखाई पड जाते थे। अत पीठ पर सफरी थैले बाधे इन दो लडको और तीन लडकिया की ओर किसी का भी ध्यान न गया। वे बराबर अपने रास्ते पर वढते रहे।

ये सब दृश्य और तमाशे देखकर उनका मूड वढिया हो गया था। यौवन को खतरे की परवाह नही रहती। ये साहसी युवक-युवतिया अपनी कल्पना मे अभी से मोर्चे की पक्तियो के उस ओर पहुच चुके थे।

नीना फेल्ट क जूते पहने थी। अपने सिर पर उसने कनटाप पहन रखा था, जिसके अन्दर से उसके घुघराले वालो की भारी भारी लटें उसक गम कोट के कालर पर गिर रही थी। चलने से उसके गाला पर लाली आ गयी थी। ओलेग निरन्तर उसकी ओर दखता रहता था और जब दोना की आखें चार होती थी तो वे मुस्करा देते थे। सेर्गेई और वाल्या तो एक मौक़े पर वफ के गोले बना बनाकर एक दूसरे पर फेंकने लगे थे और एक दूसरे के पीछे भागते हुए इतनी दूर निकल गये थे कि उनके साथी बहुत पीछे छूट गये थे। उस दल में ओल्या ही सबसे बडी थी। वह गहरे रग के कपडा में थी और चुपचाप चल रही थी। उन दो जोडा के बीच वह एक सरलहृदया मा जसा व्यवहार कर रही थी।

वे एक दिन और एक रात तक दुवावोई की खेतिहर बस्ती में रहे। उन्होने मोर्चे की गतिविधि के सबध में भी वडी सतकता स पूछ-ताछ की। युद्ध में अपग हुआ एक व्यक्ति—उसका एक वाजू कट गया था—अपनी

टुकडी से बिछुड जाने के बाद पडोस मे बस गया था। उसने उन्हे यह सलाह दी कि वे और भी उत्तर में इयाच्किनो गाव की ओर चले जाय।

इस गाव तथा पास-पडोस की खेतिहर बस्तियो मे रहकर उन्होने कुछ दिन काटे। इस अवधि में वे जर्मनो के फौजी अड्डा, और तहखानो में छिपकर रहनेवाले ग्रामीणा के बीच घूमे फिरे। इस समय व मोर्चे के विलकुल निकट थे। गोला की धमक बराबर उनके काना मे पडती रहती थी। रात में वे तोपा के मुह से निकलती आग भी देख सकते थे। जर्मन अड्डो पर बराबर बमबारी हो रही थी और यह साफ दिखाई पडता था कि सोवियत सेना के दवाव से मोर्चा भरभरा रहा था क्याकि इस समय इस इलाक़े में जहा कही भी जर्मन फौज की टुकडिया नजर आती, सभी का मुह पश्चिम की ओर ही होता।

हर सैनिक ओलेग और उसके साथियो को कनखिया से देखता था। गाव वाले भी, बिना यह जाने-समझे कि वे कैसे लोग है, उन्हे अपने घरा में ठहराने से डरते थे। इस क्षेत्र में घूमते रहना या यही रह जाना खतरनाक था। फिर पाच लोगो के दल के लिए मोर्चा पार करने का तो सवाल ही न उठता था। एक बस्ती मे एक किसान औरत ने उन्हे इस तरह घूरा मानो वह उनकी दुश्मन हो। और जब रात हुई तो गर्म कपडे पहनकर बाहर निकल गयी। ओलेग जग रहा था। उसने अपने साथियो को जगाया और सब के सब बस्ती से निकलकर खुली स्तेपी की ओर चल दिये। नीद के मारे उनकी आखे उठती नही थी, किन्तु कही पड रहने का भी ठिकाना न था। इसके अलावा हहराती हवा का मुक़ाबला करना भी उनके लिए बडा कठिन लग रहा था। पिछले रोज से ही तेज हवा चलने लगी थी। उन्होने अपने को इतना निस्सहाय, इतना परित्यक्त कभी भी न अनुभव किया था। अन्तत ओल्या बोल उठी जो उम्र में सब से बडी थी—

"म जा कुछ कहने जा रही हू, उसका तुम लाग बुरा न मानना," वह बोली। उसन आखे उनकी ओर से हटायी और गाल का हवा स बचाने के लिए एक हाथ की आस्तीन उस पर रख ली। "हमारे जसे इतने बडे दल क लिए मोचा पार करना असभव है। और एक लडकी या औरत के लिए तो यह बिलकुल ही नामुमकिन है 'उसने इस आशा से ओलग और सर्गेई की आर देखा कि वे कुछ आपत्ति करेंगे, किन्तु वे न बाले। वह ठीक ही कह रही थी। "हम लडकिया का चाहिए कि व लडका का स्वतत्र रूप से काम करने दें," उसने दढता से कहा। नीना और वाल्या समझ गयी कि वह उन्हो के बारे में कह रही है। "नीना आपत्ति कर सकती है। पर याद रखना नीना, तुम्हारी मा ने तुम्ह मरे सुपुर्द किया है। हम फोकिनो गाव में चली जायेगी। वहा स्कूल के दिना की मेरी एक सहेली रहती है। वह हमे ठहरा लेगी, और हम वहा इन्तजार कर सकती है।"

यह पहला मौका था जब ओलेग कुछ न कह सका। सर्गेई और वाल्या भी चुप रह।

"म क्या आपत्ति करूगी? नही, म आपत्ति न करूगी," नीना न कहा और उसकी आखो मे आसू छलछला आये।

पाचो जन बिना कुछ कहे-सुने, वहा काफी दर तक खडे रह। व उदास थे, और आखिरी कदम उठाने मे झिझक रहे थे।

"आल्या ठीक कहती है," आखिर ओलेग बाला, "आखिर जब लडकिया क लिए आसान रास्ता है तो व जाखिम क्या उठायें। और यह भी ठीक है कि इस तरह हमारा काम भी आसान हा जायेगा। तत्वा तुम अपने रास्त ज जाओ," सहसा हकलाते हुए वह बाला। उसने ओल्या का गले से लगा लिया।

फिर वह नीना के पास गया और बाकी सब ने मुह फर लिय।

नीना उसकी छाती से चिपट गयी और उसके चेहरे पर चुम्बनो की वर्षा करने लगी। ओलेग ने भी उस गले लगाया और उसके ओठ चूम लिये।

"तु-तुम्हे याद है, मैंने इस बात के लिए तुम्हे कितना तग किया था कि तुम मुझे अपना गाल ही चूमने दो। याद है मने कहा था–'सिफ गाल पर, सिफ गाल पर?' तो अब, यहा एक दूसरे को चूमना हमारे भाग्य मे बदा था," वह फुसफुसाया और उसके चेहरे पर प्रसन्नता का बाल-सुलभ भाव छा गया।

"मुझे याद है। मुझे सब याद है, जितना तुम समझ रहे हो उस से भी ज्यादा मुझे याद हे मैं हमेशा तुम्हे याद रखूगी म तुम्हारा इतजार करूगी," वह फुसफुसायी।

ओलेग ने फिर उसे चूमा और उससे दूर हट गया।

कुछ कदम चल चुकने के बाद नीना और ओल्या ने लडका की ओर देखते हुए फिर हाथ हिलाये। उसके बाद वे आखो से ओझल हो गयी, और उनकी आवाज तक आनी बन्द हो गयी। हिम की पतली-सी पत बफ पर चल रही थी।

"और अब तुम दोनो क्या करोगे?" वाल्या और सेर्गेई की ओर मुडते हुए ओलेग ने पूछा।

"हम मिलकर मोर्चा पार करने की कोशिश तो जरूर करगे," अपराधी की तरह सेर्गेई बोला। "हम मोर्चे के समानान्तर चलते जायेंगे और हो सकता है कि हम किसी जगह उसे पार कर ले! और तुम?"

"मैं तो यही कही आजमाइश करूगा। यहा कम से कम मुझे पास-पडोस की जानकारी तो है," ओलेग ने जवाब दिया।

एक बार फिर सन्नाटा, अवसादपूण मौन छा गया।

"अरे प्यारे दोस्त, या मुह न बनाओ। इस म शर्माने की कोई बात

नही तन्तो ?" श्रोलेग बोला। सेर्गेई के दिमाग में कौन-से विचार घूम रहे थे, यह वह अच्छी तरह जानता था।

वाल्या ने श्रोलेग को सीने से लगाया। सेर्गेई भावुकता का प्रदर्शन करना नही चाहता था। उसने श्रोलेग से हाथ मिलाया, उसका कधा हल्के-से दबाया और इधर-उधर देखे बिना, आगे बढ गया। वाल्या उसके साथ हो जाने के लिए दौड पडी।

यह सात जनवरी की बात है।

उन्हे भी पता चल गया कि वे मोर्चे को पार करने में असमर्थ हैं। वे गाव गाव चलते रहे और आखिर कामेंस्क पहुच गये। वे लोगो को यही बताते कि वे भाई-बहन हैं और मध्य दोन के पास होनेवाले युद्ध-क्षेत्र में अपने परिवार से बिछुड गये हैं। लोगो को उनके लिए अफसोस होता और उन्हे मिट्टी के ठडे फर्श पर एक कोने में एक खाट मिल जाती। और दोनो, दुर्भाग्य पीडित भाई-बहन की भाति एक दूसरे की बगल में सो जाते। सुबह उठकर वे फिर चल पडते। वाल्या किसी भी जगह मोर्चा पार करना चाहती थी, किन्तु सेर्गेई यथार्थवादी था और मोर्चा पार करने के बिलकुल खिलाफ था।

आखिर उस लडकी ने समझ लिया कि जब तक वह अपने साथी के साथ रहेगी तब तक वह दुश्मनो की पक्ति पार न करेगा — बेशक अकेला सेर्गेई तो कही भी मोर्चा पार कर सकता है, पर शायद वह उसे खतरे में नही डालना चाहता।

"जानते हो यदि मैं अकेली होती तो मुझे किसी न किसी गाव में सिर छिपाने की जगह मिल गयी होती और जब तक यहा से मोर्चा न टूट जाता तब तक मैं वहीं इन्तज़ार करती," आखिर वह उससे बोली।

पर वह कुछ भी सुनने को तैयार न था।

फिर भी लडकी ने उसपर विजय पायी। अभी तक दोनो ने मिलकर

जितने भी काम किये थे, सभी में वह अगुआ रहा था और वह उसकी मातहती में रही थी। किन्तु निजी मामलो मे उसी की चलती थी। सेर्गेई ने कभी इस बात पर गौर न किया था कि वह उसके कितने अधिक कहने में था। इस समय वाल्या ने उसे समझाया कि वह लाल सेना की किसी टुकडी मे शामिल हो जाय, उन्हे बताये कि क्रास्नोदोन मे 'तरुण गार्ड' के सदस्यो पर कितने जुल्म हो रहे है, और टुकडी के साथ मिलकर साथियो को बचाय और स्वय उसकी भी सहायता करे।

"मैं कहीं पडोस में ही तुम्हारा इन्तजार करूगी," वह बोली।

दिन म वे दोनो बहुत थक गये थे। अत वाल्या रात मे गहरी नीद सोयी। पर जब वाल्या भोर से कुछ पहले ही जगी तो सेर्गेई जा चुका था। वह उससे आखिरी विदा लेने के लिए भी उसे जगाना न चाहता था।

इस प्रकार वाल्या अकेली रह गयी।

येलेना निकालायेव्ना ११ जनवरी की वह सद रात जिन्दगी भर न भूली। सडक की ओर खुलनेवाली खिडकी पर किसी ने धीरे-से दस्तक दी। उस समय सारा परिवार सो रहा था। यलेना निकोलायेव्ना ने तत्काल सुन लिया और एक क्षण मे समझ गयी कि उसका बेटा घर आया है।

ओलेग एक कुर्सी पर धम्म से बैठ गया। उसके गाल पाले से सुन्न हो चुके थे और वह इतना थक गया था कि अपनी टोपी तक न उतार सकता था। इस समय तक सभी जग चुके थे। नानी ने एक मामबत्ती जलायी और मेज के नीचे रख दी ताकि सडक पर से उसकी रोशनी न दिखाई दे। प्रतिदिन कई कई बार उसके यहा पुलिस वाले चक्कर लगाया करते थे। ओलेग पाले से जमी टोपी लगाये था। उसके चेहरे पर रोशनी पड रही थी। उसके गाल की हड्डियो पर काले काले दाग पड गये थे। वह सूखकर काटा हो गया था।

उसने मोर्चा पार कर लेने के कई असफल प्रयास किये थे किन्तु वह शस्त्रास्त्रो, टुकडियो और दस्तो की स्थिति की आधुनिक गतिविधि से परिचित न था। इसके अलावा, वह इतना बडा था और उसके कपडे भी इतने बडे और गहरे रंग के थे कि बिना किसी की निगाह पडे, उसका बर्फ पर रेंगकर निकल जाना असंभव था। नगर मे उसके साथियो पर जो तलवार लटक रही थी उसकी कल्पनामात्र से वह व्यथित हो उठता था। अंतत उसने विचार किया कि अब काफी समय बीत चुका है, और वापस नगर को लौटने मे कोई खतरा न होगा इस समय किसी का भी ध्यान उसपर न जायेगा।

"ज़ेम्नुखोव की कोई खबर है?" उसने पूछा।

"वही, पहले जैसा " मा ने उसकी आखे बचाते हुए जवाब दिया।

मा ने उसका कोट उतारने में उसकी सहायता की और टोपी उतार दी। घर में जलावन तक न था कि वह उसके लिए थोडी चाय ही बना देती। परिवार वाले एक दूसरे को देख रहे थे और डर रहे थे कि किसी भी क्षण, ओलेग को वही घर म गिरफ्तार किया जा सकता है।

"ऊल्या कैसी है?" उसने पूछा।

तत्काल उसे कोई उत्तर न मिला।

"ऊल्या गिरफ्तार हो गयी," उसकी मा ने धीमी आवाज में कहा।

"और ल्यूबा?"

"ल्यूबा भी "

उसके चेहरे का भाव तुरत बदल गया। वह कुछ देर तक चुप बैठा रहा, फिर बोला—

"आस्तोदोन बस्ती का क्या हाल है?"

इस यन्त्रण को और लम्बा नही किया जा सकता था।

"कौन गिरफ्तार नही हुआ, तुम्ह यह बताना अधिक आसान होगा," मामा कोल्या बोला।

उसने केन्द्रीय कारखाने मे मजदूरा के एक बडे दल की गिरफ्तारी की खबर सुनायी और बताया कि ल्यूतिकोव और वराकोव भी गिरफ्तार हो चुके है। कास्नोदोन मे किसी को भी इस बात मे सन्देह न था कि ल्यूतिकोव और वराकोव विश्वसनीय साथी थे, जिन्ह विशेष काम करने के लिए ही जमनो के बीच छाडा गया था।

ओलेग ने सिर लटका लिया और आगे कोई प्रश्न न किया।

परिस्थिति पर विचार कर चुकने के बाद ओलेग को तुरत, उसी रात, देहात में मरीना के रिश्तदारा के पास भेज दने का निणय कर लिया गया। मामा कोल्या उसके साथ साथ जाने को भी तैयार हा गया।

वे सुनसान स्तेपी से हाते हुए रोवेन्की सडक पर चलते रहे। तारे बफ पर हल्का नीला प्रकाश बिखेर रहे थे और वे उस विशाल भूप्रदेश पर दूर तक दख सकते थे।

कई दिनो तक, प्राय बिना खाये-पिये और आराम किये, ओलेग मारा मारा फिरता रहा था। उसे आराम करना जैसे नसीब ही न था। इसके अलावा, वह घर पर, दिल हिला देनेवाली खबर भी सुन चुका था। यह सब हाते हुए भी, वह अपने ऊपर नियन्त्रण रखे रहा। रास्ते में उसने मामा कोल्या से 'तरुण गाड' दल के समाप्त होने और ल्यूतिकोव तथा वराकोव की गिरफ्तारी के सबध मे सभी विवरण मालूम किये। उसने अपनी विपत्तिया भी मामा काल्या को सुनायी।

उन्ह पता ही नही चला कि यहा सडक हमवार नही थी, ऊची होती जा रही थी। वे ढलान के ऊपरी सिरे पर पहुच गये थे। यही से सडक सहसा नीचे उतरती थी। उनके कोई पचास गज आगे एक बडे-से गाव की धूमिल हद दिखाई पड रही थी।

"हम सीधे गाव की ओर बढ रहे हैं। हमें कुछ घूमकर चलना चाहिए," मामा कोल्या ने कहा।

वे सडक से उतर आये और गाव के बायी ओर का चक्कर लगात हुए चलने लगे। वे सबसे पास के मकानो से कोई पचास गज़ की दूरी पर चल रहे थे। सामान्यतया वर्फ गहरी नही थी, केवल कही कही वर्फ के ढेर लगे थे।

वे गाव को जानेवाली एक सडक पार ही करनेवाले थे कि सबसे पास के मकान से कुछ भूरी भूरी आकृतिया, उनका रास्ता काटती हुईं, उनकी ओर दौड पडी। वे दौडती जाती और फटी आवाज़ में जमन में चिल्लाती जाती।

मामा कोल्या और ओलेग घूम गये और सडक पर पीछे की ओर भागने लगे।

कमज़ोरी के कारण ओलेग दौडने में असमथ था। उसने समझ लिया था कि उसका पीछा किया जा रहा है। उसने अपनी सारी शक्ति बटोरी और भागा, किन्तु फिसलकर गिर पडा। आदमी उसपर टूट पडे और उसकी पीठ पीछे उसके हाथ मरोडने लगे। उनमे से दो मामा कोल्या के पीछे भी भागे और रिवाल्वर से कई गोलिया भी चलायी। पर कुछ ही मिनट वाद वे हसते हुए लौटे और उसे न पकड सकने पर गालिया वकने लगे।

ओलेग को एक वडे से मकान मे ले जाया गया, जहा कभी शायद ग्राम सोवियत का कार्यालय हुआ करता था, किन्तु अव वहा गाव के एल्डर का दफ्तर था। फश पर पुआल डाले सशस्त्र पुलिस के कुछेक सिपाही पडे सो रहे थे। अव ओलेग को पता चला कि वह और निकालाई निकोलायेविच चलत हुए सीधे जमन पुलिस थाने के पास चले आये थे। वहा मेज़ पर, चमडे के गहरे रग के एक केस में फील्ड-टेलीफान रखा था।

एक कारपोरल ने लालटेन की बत्ती वढायी और गुस्से से चिल्ला

चिल्लाकर ओलेग की तलाशी लेने लगा। सन्देह की कोई भी चीज न पाकर उसने ओलेग की जैकेट उतारी, और उसे जगह जगह टटोलने लगा। उसकी बडी बडी चम्मच के आकार जैसी उगलिया अपना काम बडी ही दक्षता और कायदे से कर रही थी। उह ओलेग का कोमसोमोल काड मिल गया और इसके साथ ही ओलेग ने समझ लिया कि अब उसकी घडी भी आ पहुची।

कारपोरल ने हाथ से उसके कोमसोमोल काड और सदस्यता के खाली अस्थायी कार्डों को ढका और टेलीफोन पर फटे लहजे मे कुछ कहा, फिर चोगा रखा और ओलेग को पकडकर लानेवाले सैनिक को कुछ आज्ञा-सी दी।

दूसरे दिन शाम के समय कारपोरल और एक सिपाही की रक्षा में ओलेग को एक स्लेज में विठाकर रोवेन्की ले जाया गया। यही सिपाही ड्राइवर का काम भी कर रहा था। रोवेन्की पुलिस तथा सशस्त्र पुलिस के हेडक्वाटर मे ओलेग को ड्यूटी वाले सिपाही के हवाले कर दिया गया।

ओलेग, कोठरी के अभेद्य अधकार मे घुटनो के चारा ओर बाह डाले अकेला बैठा था। यदि उस समय कोई आदमी उसका चेहरा देख पाता तो उसपर उसे शान्ति तथा दढता का भाव मिलता। वह नीना, अपनी मा, या अपनी गिरफ्तारी के मूखतापूण ढग की बात नही सोच रहा था। गाव के एल्डर के दफ्तर में और स्लेज गाडी पर यात्रा करते समय उसने ये सारी बात काफी समय तक साची थी। आगे क्या होना था इसपर भी वह साच विचार नही कर रहा था—वह इसे अच्छी तरह जानता था। वह शान्त और दृढ था, क्योकि वह जानता था कि दुनिया मे उसकी छाटी-सी जिन्दगी के दिन पूरे हो चुके हैं।

"अच्छी बात है, मैं सोलह का ही सही, पर इसमें मेरा क्या दाप कि मेरी जिन्दगी का रास्ता इतना छोटा निकला   भय काहे का? मौत

का? जुल्म का? मैं उनका सामना कर सकता हू। वेशक, मैं इस ढग से मरना पसन्द करता कि लागा के दिला में मेरी याद वनी रहती। पर मान लो मैं दुनिया की नजरा से दूर अधरे में मारा जाऊ—इस समय लाखा लोग ऐसे ही मर रहे हैं, मेरी तरह के लोग, जिनमें शक्ति है, जीवन के लिए प्रेम है। क्या मन कभी कोई एसा काम किया है जिसकी भत्सना की जा सके? मैंने कभी झूठ नही बोला, आसान रास्ता नही चुना। हा, कभी कभी मने क्षुद्रता दिखायी है,—शायद कमजोरी भी, लेकिन यह हृदय की दयालुता के कारण। लेकिन, ओलेग, सोलह वप का उम्र मे यदि मैंने ऐसा किया है ता इसे अपराध तो नही कहा जा सकता! जिस सुख का म अधिकारी था वह भी मुझे नसीव न हुआ। फिर भी मैं खुश हू। खुश हू इसलिए कि मैंने किसी के आगे घुटने नही टेके, गिडगिडाया नही, उल्टे मैंने मोर्चा ही लिया है। मा मुझे हमेशा अपना 'उडता हुआ उकाव' कहा करती थी। उसे अथवा मेरे साथिया को मुझपर जितना विश्वास था वह मैं वनाये रखूगा। मैं उस विश्वास के साथ गद्दारी न करूगा। मेरी मृत्यु उतनी ही पवित्र हा जितना मेरा जीवन था—मुझे अपने आप से यह कहते शम नही आती। ओलेग, तुम इज्जत के साथ मरोगे, इज्जत के साथ "

उसके चेहरे की रखाए समतल हो गयी। वह उसी ठढे और लसलसे फश पर पड रहा। उसकी टोपी उसके सिर के नीच थी। वह खर्राटे भरने लगा।

वह उस समय जगा जव उसे लगा कि कोई उसके पास खडा है। सवेरा हो चुका था।

गठीले वदन का एक बूढा उसके सामने खडा था। चेहरे पर दाग, वडी वगनी-सी नाक, शरीर पर कज्जाकी ओवरकाट, सिर पर पोलिश टोपी जो उसके वडे और खिचडी वालावाले सिर के लिए बहुत छोटी थी।

वह अपनी कीचडभरी आखो से ओलेग को घूर रहा था। कोठरी का दरवाज़ा उसके पीछे छिप-सा गया था।

ओलेग फर्श पर बैठ गया और साश्चय उसकी ओर देखने लगा।

"म सोच रहा था – यह कोशेवोई भी कैसा आदमी होगा? तो यह है वह आदमी – साप का बच्चा! बदमाश! मुझे अफसोस है कि गेस्टापो तुम्हे सीख देगा – हमारे साथ रहते तो आराम से कटती। म केवल खास खास लोगो को ही पीटता हू। तो तुम ऐसे दीखते हो! तुम तो दुब्रोव्स्की की तरह मशहूर हो। बेशक तुमने अपने पूश्किन को तो पढा ही होगा। अरे, साप के बच्चे! अफसोस कि तुम मेरे पजे मे नही फसे!" बूढा उसके ऊपर झुका और एक लसलसी आख नचाते तथा वोद्का से भरी सास ओलेग के चेहरे पर छोडते हुए बडे रहस्यपूर्ण ढग से बुदबुदाया – "तुम आश्चय कर रहे होगे कि म इतनी जल्दी क्यो आ गया! आश्चय कर रहे हो न?" उसने बडी घनिष्ठता तथा विश्वास के साथ आख मारी, "आज मै एक जत्था वहा, ऊपर, रवाना कर रहा हू!" उसने अपनी एक सूजी हुई उगली आकाश की ओर उठायी। "म अपने साथ एक नाई लाया हू, उनकी हजामत बनाने के लिए, क्योकि मै हमेशा ऐसे लोगो की पहले हजामत बनवाता हू," वह फुसफुसाया। फिर वह सीधा खडा हुआ, एक गहरी सास ली और अगूठा उठाता हुआ बोला, "हम सभ्य है। लेकिन तुम गेस्टापो के हाथ मे हो और म तुमसे ईर्ष्या नही करता। Au revoir!"* उसने अपनी सूजी हुई पुरानी उगली से अपनी टोपी की नोक छुयी और बाहर निकल गया। दरवाज़ा फटाक से बन्द हो गया।

जब ओलेग को एक ऐसी कोठरी में तब्दील किया गया जहा दूर

---

*खुदा हाफिज़।

दूर के और बिलकुल अपरिचित लोग भरे थे, तब कहीं उसे पता चला कि वह बूढा, रावेन्की पुलिस का चीफ, आर्लोव था, जो पहल एक देनीकिन अफसर हुआ करता था और अब एक बेरहम जल्लाद और क्साई था।

दो तीन घटा के बाद उसे पूछ-ताछ के लिए ले जाया गया। केवल गेस्टापो के अधिकारी ही उससे पूछ-ताछ करते थे। उनका दुभापिया था एक जमन कारपोरल।

जिस कमरे में उसे ले जाया गया था वहा जमन सशस्त्र पुलिस के कई अफसर मौजूद थे। सभी उसे बडे कौतूहल और आश्चय से देख रहे थे। कुछ ने तो उसे एसे घूरकर देखा मानो वे किसी बहुत बडे आदमी को देख रहे हा। बहुत-से मामलो मे ओलेग का ससार विषयक दृष्टिकोण अभी तक बाल-सुलभ था। इसी लिए सम्भवत वह इस बात की कल्पना भी न कर सका था कि 'तरुण गाड' की प्रसिद्धि कितनी दूर दूर तक फैल चुकी थी। और वह स्वय भी पौराणिक नायक की भाति बन गया था। और इसके दो कारण थे—एक तो स्तखोविच का विश्वासघात और दूसरी यह बात कि जमन इतने समय तक उसे पकडने मे असमथ रहे थे। एक लचीला जमन उससे सवाल करता था। लगता था उसके बदन में एक भी हड्डी नही। उसके चेहरे पर गहरे नीले रग के भयानक घेरे-से पडे थे जो उसकी प्राय काली काली पलका के कोना से शुरू होकर, आखो के नीचे नीचे और गालो की हड्डियो तक होते हुए, धब्बो के रूप में उसके धसे हुए कपोलो पर फल गये थे। उसे देखकर आदमी पर बडा अस्वाभाविक प्रभाव पडता था। वह ऐसा भयानक लगता था मानो किसी दु स्वप्न में उसे देख रहे हो।

ओलेग से कहा गया था कि वह 'तरुण गाड' दल के कार्यों के बारे में बताये और उसके सदस्यो और समथको के नाम गिनाये। इसपर उसने जवाब दिया था—

"अकेला मै ही 'तरुण गाड' का नेता हू और मेरे आदेशा स उसके सदस्या ने जो कुछ किया है उसके लिए अकेला म ही जिम्मेदार हू। अगर मुझपर किसी सावजनिक अदालत मे मुकद्दमा चलाया गया होता तो मने 'तरुण गाड' के कार्यो के विवरण दिये होते। किन्तु उन लोगो के सामने अपने दल के कार्यों की चर्चा करना बिलकुल बेकार समझता हू जो निरपराधिया तक का मौत के घाट उतारते ह," वह कुछ रुका, फिर चुपचाप अफसरा पर एक निगाह डाली, और बोला— "और फिर तुम सब भी तो मुर्दों ही की तरह हो, बिलकुल मुर्दों की तरह।"

बेशक वह जमन लाश जसा ही लग रहा था। उसने दूसरा सवाल किया।

"मुझे जो भी कहना था यह तुम लोग सुन ही चुके हो," ओलेग ने कहा और पलके नीची कर ली।

इसके बाद ग्रालेग को उस कोठरी मे डाला गया जहा गेस्टापो तरह तरह के जुल्म करते थे। और वहा उसपर एसे ऐसे भयानक जुल्म हुए जो न सिफ आदमी की बरदाश्त के बाहर ही थे, बल्कि जिनके बारे मे दिल रखनेवाला काई भी व्यक्ति कुछ नही लिख सकता।

ओलेग यह भयानक अत्याचार महीने के अन्त तक सहता रहा। उसे मौत के हवाले इसलिए नही किया गया था क्योकि इलाके के फेल्डकमाडाटुर मेजर जनरल क्लेर का इन्तजार किया जा रहा था। मेजर जनरल दल के लीडरो से स्वय पूछ-ताछ करने के बाद ही उनकी किस्मत का फसला करना चाहता था।

ओलेग को यह न मालूम था कि फिलीप्प पेत्रोविच ल्यूतिकोव का भी, फेल्डकमाडाटुर द्वारा पूछ-ताछ किये जाने के लिए, रावेन्की गेस्टापा के पास भेजा गया था। बेशक दुश्मन यह पता न चला सका था कि ल्यूतिकोव

नास्मोदोन खुफिया कम्युनिस्ट सघटन का भी लीडर है किन्तु उन्होंने यह समझ लिया था और अपनी आखो से देख भी लिया था कि उनके हाथो में जितने लोग भी पडे थे उन सभी मे ल्यूतिकाव ही सबसे महत्वपूर्ण आदमी था।

अध्याय २७

त्रिकोण के कानो की तरह तीन ओर से मशीनगनें पहाडियो के बीच के गड्ढे को छलनी कर रही थी। यह गढा दो कूबडोवाले ऊट की जीन जैसा दिखाई पड रहा था। गोलिया लसलसी बर्फ और कीच मे धसती हुई "ए यू ए यू" जैसी आवाज करती-सी लग रही थी। किन्तु सेर्गेई जीन के दूर किनारे तक पहुच चुका था और उसकी बाह पकडे हुए मजबूत हाथ उसे खाइयो मे घसीट रहे थे।

"तुम क्या करने जा रहे हो?" गोल आखावाले एक नाटे से सजट ने शुद्ध कुर्स्क उच्चारण में कहा—"तुम्हे शर्म नही आती। तुम रूसी लडके हो वे तुम्हे धमकिया देते रहे हैं, या फिर कुछ देने का वादा किया है उन्होने?"

"म एक दास्त हू, आप ही में से एक," घबराकर हसते हुए सर्गेई बोला, "मेरी जैकेट में कागज़ात सिले हुए है। मुझे अपने कमाडर अफसर के पास ले चलो। मेरे पास बहुत जरूरी खबर है।"

डिवीजनल चीफ आफ स्टाफ के साथ सेर्गेई रेलवे लाइन क निकट की एक छोटी-सी खेतिहर वस्ती के एक छोटे-से मकान में डिवीजनल कमाडर के सामने खडा था। इस वस्ती मे अकेला यही मकान वमो से अछूता बच रहा था। एक समय था जब यह बस्ती बबूल के पेडो की छाया में पडती थी किन्तु वमो और गोलो ने उन्हे धराशायी कर दिया था। यह डिवीजनल हेडक्वार्टर था, इधर मे कोई टुकडिया न गुज़रती थी

और मोटर यातायात रोक दिया गया था। पहाड़िया के पीछे होनेवाले युद्ध की गोलाबारी की निरन्तर सुनाई पडनेवाली आवाज को छोडकर, इस बस्ती और मकान के भीतर प्राय शान्ति थी।

"म केवल उसके कागज़ात से ही नही इसकी बाता से भी अपनी धारणा बना रहा हू, यह लडका तो सभी कुछ जानता है—स्थानीय भूगोल, भारी भारी तापा की स्थिति, और २७, २८, १७ नबर के चौकोर क्षेत्रो म रखी हुई तापें तक" चीफ आफ स्टाफ वाला और कुछ नम्बर और गिना डाले। "इस लडके से मिली बहुत सी सूचना हमारे खुफिया लोगा से प्राप्त सूचना से मेल खाती है। कुछ मामला में तो उसने और भी अधिक ठीक ठीक सूचना दी है। और हा, दुश्मनो ने नदी के तटो पर टैंकमार सीधी ढाल बना ली है। याद है?" चीफ बोला। वह युवा अफ्सर था, बाल घुघराले और कधो पर तीन पट्टियोवाला बिल्ला लगा था। समय समय पर उसके माथे पर बल पडते रहे और वह मुह के एक आर से हवा निकालता रहा। उसका एक दात दद कर रहा था।

डिवीजनल कमाडर ने सेर्गेई के कोमसोमोल काड तथा भद्दे ढग से छपे हुए एक कागज़ को जाच की जिसमें 'तरुण गाड' के कमाडर तुर्केनिच और कमीसार कशूक के हस्ताक्षरा सहित कुछ अन्दराज थे जिन्हे हाथ से भरा गया था। कागज़ इस बात का प्रमाण-पत्र था कि सेर्गेई त्युलेनिन क्रास्नोदोन नगर मे 'तरुण गाड' खुफिया सघटन के हेडक्वाटर का एक सदस्य है। उस काड और कागज की जाच कर चुकने पर डिवीजनल कमाडर ने ये दोना चीजे चीफ आफ स्टाफ को नही, जिससे वे चीजे उसे प्राप्त हुई थी, बल्कि, खुद सेर्गेई को लौटा दी और उसे सिर से पैर तक बडी दिलचस्पी के साथ देखने लगा।

"हू," डिवीजनल कमाडर बोला।

चीफ ग्राफ स्टाफ दद स तडप रहा था और मुह में एक ग्रार स हवा निकाल रहा था।

"इसके पास कुछ जरूरी सूचना है जो वह केवल ग्रापको देना चाहता है,' वह बोला।

इसपर सर्गेई ने उसे 'तरुण गार्ड' दल के बारे में वताया और कहा कि मेरा ख्याल है कि जेल में सडते हुए तरुणो की रक्षा के लिए डिवीजन तुरन्त ग्रागे वढेगा।

डिवीजन को ग्रास्नादोन तक वढाने की इस सामरिक योजना को सुनकर चीफ ग्राफ स्टाफ मुस्कराया। पर तभी दर्द से कराहा और ग्रपना एक हाथ ग्रपने गाल पर रख लिया। किन्तु डिवीजनल कमाडर जरा भी न मुस्कराया क्योकि वह डिवीजन को ग्रास्नादोन तक वढाने के प्रस्ताव को महज हवाई नही समझ रहा था।

"तुम कामेन्स्क से परिचित हो?" उसने पूछा।

"परिचित हू। किन्तु इस ओर से नही, दूसरी ग्रार से। म उधर से ही होकर यहा तक ग्राया हू"

"फेदोरेको!" कमाडर इतनी तेज ग्रावाज मे चीखा कि वह कमरे के वाहर रखे हुए कुछ सनिक वरतनो तक में प्रतिध्वनित हो उठी।

उपर्युक्त तीन व्यक्तियो के ग्रलावा प्रत्यक्षत कमरे मे ग्रौर कोई न था, फिर भी सहसा, एडिया चटकाता हुग्रा फेदोरेको, जसे सीधे ग्रासमान स उतरकर कमाडर के सामने खडा हो गया।

"यह रहा!" वह वोला।

"पहले इस लडके को वूट दो, फिर कुछ खाना, फिर किसी गर्म जगह मे तव तक सोने दो जब तक मै उसे न बुलाऊ!'

"वूट, खाना, सोना, जव तक ग्राप न बुलायें।"

"किसी गम जगह में " चेतावनी की उगली दिखाते हुए कमाडर ने हुक्म दिया। "गुस्लखाना तैयार है?"

"जल्दी तैयार हो जायेगा कामरेड जनरल!"

"तो फिर जाओ!"

सर्जेंट फेदोरेंको ने सेर्गेई के कधे मे दोस्ताना ढग से हाथ डाला और दोनो घर से बाहर निकल आये।

"कमाडर इन चीफ आ रहे ह," मुस्कराते हुए कमाडर बोला।

'यह भी अच्छा ही है!" स्टाफ-चीफ खुश हो गया और क्षण भर के लिए दात का दद भूल गया।

"अब हमे किलाबन्दी म जाना होगा। उन्ह गम कराने का कोई इन्तजाम जरूर कर लेना। वरना कोलोबोक* तुम्हे उल्टा टाग देगा," हसते हुए डिवीजनल कमाडर बोला।

इस बीच कमाडर इन-चीफ सो रहा था। डिवीजनल कमाडर ने उसे सनिको द्वारा दिये गये उपनाम 'कोलोबोक' से सबोधित किया था। कमाडर इन चीफ अपनी कमान चौकी पर था जो किसी मकान या बस्ती में न होकर पेडो के एक झुरमुट में किसी पुरानी जमन किलाबन्दी म बना ली गयी थी। यद्यपि सेना बहुत तेजी से आगे बढ रही थी, फिर भी कमाडर इन चीफ अपने इसी नियम को निभाये जा रहा था कि कमान चौकी कभी बस्ती में न हो। वह हर नयी जगह कमान चौकी उन्ही किलाबन्दियो में बनाता था जिन्ह छोड छोडकर जमन भाग जाते थे। और यदि ऐसी सारी किलाबन्दिया नष्ट हो चुकी होती तो वह अपने और

---

*कोलोबोक – छोटी गाल मटोल डबल रोटी। एक लोक-कथा मे *कोलोबोक बडी फुर्ती से सभी कठिनाइया पार करती हुई, और तरह तरह* के हिंसक पशुओ को चकमा देती हुई, पहाडो और मैदानो को पार करती जाती है।

अपने कर्मचारियो के लिए नयी खन्दके खुदवाता था, उसी तरह जिस तरह लडाई के शुरू के दिनो मे किया करता था। वह इस सिद्धान्त पर बडी दृढता से अमल करता था, क्योकि वह जानता था कि लडाई के आरंभिक दिनो में उसके बहुत-से प्रमुख सैनिक साथी इसी लिए हवाई हमलो में मारे गये थे कि उन्होने अपने लिए खन्दके खुदवाना बेकार समझा था।

सेर्गेई त्युलेनिन इस समय जिस डिवीजन मे मिल गया था इस डिवीजन की कमान, कमाडर-इन-चीफ के हाथो में आये बहुत समय न गुज़रा था। यह वही डिवीजन था, जिसे ठीक छ महीने पहले अपने कार्यो को इवान फ्योदारोविच प्रोत्सेको के छापामार दस्ते के साथ समन्वय स्थापित करके मिलकर कार्रवाइया करनी थीं। और जो जनरल इस समय कमाडर-इन-चीफ था, वह वही जनरल था, जिसने छ महीने पूर्व, डिवीजनल कमाडर के नाते, क्राम्नोदोन जिला पार्टी कमिटी के दफ्तर में प्रोत्सेको के साथ व्यक्तिगत रूप मे सभी कुछ तय किया था। इसके बाद उस जनरल ने पहले वोरोशीलोवग्राद की रक्षा मे, फिर कामेंस्क की रक्षा में और अन्तत जुलाई और अगस्त १९४२ के स्मरणीय पलायन के समय, एक कुशल 'रियरगार्ड' कारवाई मे नाम कमाया था।

कमाडर-इन-चीफ का एक सीधा-सादा और किसानी नाम था जो उसके बाप-दादा से चला आ रहा था। उपर्युक्त युद्धो के बाद यह नाम अन्य सैनिक नेताओ के साथ बडा मशहूर हो गया और उत्तरी दोनत्स और मध्य दोन के लोगो की जबान पर चढ गया। और अब, दक्षिण-पश्चिमी मोर्चे पर दो महीनो की लडाइयो के बाद उस नाम ने भी, स्तालिनग्राद के महान युद्ध मे नाम कमानेवाले सैनिक नेताओ के साथ साथ, राष्ट्रव्यापी ख्याति प्राप्त कर ली थी। 'कालीवोक' उसका नया उपनाम था, किन्तु वह स्वय इस नाम से बिलकुल अनभिज्ञ था।

कुछ मामलो मे यह नाम उसके अनुरूप भी था। नाटा-सा क़द,

चौडे कधे, चौडी छाती और गाल मजबूत, सरल रूसी चेहरा। उसकी वनावट से जरूर भारीपन नजर आता, किन्तु उसमें फुर्ती कट कूटकर भरी थी। उसकी छोटी छोटी आखें खुशी और मस्ती से छलकती रहती थीं। उसकी प्रत्येक गति म सफाई और फुर्ती थी। किन्तु 'कोलोबोक' नाम उसे उसकी बाहरी सूरत शक्ल के कारण नहीं दिया गया था।

परिस्थितिया की शृखला मे निकलकर अब वह उमी जमीन पर आगे वढ रहा था, जिसपर होकर वह जुलाई अगस्त के महीना में पीछे भागा था। उन दिना बडा भयकर युद्ध चल रहा था, फिर भी वह वडी आसानी के साथ दुश्मना के चगुल से छूटकर ऐसी दिशा में निकल गया था जहा शत्रु उसकी परछाइ भी नही देग सकता था।

इसके बाद वह उन सनिक टुकडियो मे शामिल हुआ, जिन्हाने वाद में दक्षिण-पश्चिमी मोर्चा कायम किया था। तत्पश्चात वह और उसके दूसरे साथी उस समय तक खाई-खन्दका में रहत रहे जब तक कि उनकी अदम्य दृढता ने दुश्मन का काप न ताड दिया। जब मौका आया तो वह और उसके साथी खन्दका से बाहर निकले। उससे पहले तो इस डिविजन की कमान हाथ में ली फिर उस सेना की, जिसने भागती हुई दुश्मन सेना का पहाडिया, और घाटिया सभी जगह पीछा किया था। उन्हाने दोन से चीर तक और फिर चीर स और आगे दोनेत्स तक वढने के समय हजारा कदिया को गिरफ्तार किया था और सैकडा तोपा पर कब्जा किया था। उसने दुश्मन की खास टुकडियो को जमीन चटायी थी और शत्रु के छितरे हुए दस्तो को इसलिए छाड दिया था कि दूसरी टुकडिया उनकी खबर ले।

ठीक ऐसे ही समय 'कोलाबाक' का परीकथा वाला नाम उसके सिपाहिया के दिलो से निकलकर उसपर चसपा हो गया। और वह परीकथा वाली डबल राटी की ही भाति बराबर आगे बढता रहा।

सेर्गेई ने जनवरी के मध्य में सोवियत सेना के साथ सम्पर्क स्थापित किया। इस समय जो परिवर्तन हुआ वह सोवियत सेना के पक्ष में था। सोवियत सेना ने वारोनेज, दक्षिण-पश्चिमी, दान, दक्षिणी, उत्तरी काकेशिया तथा वालत्राव और लेनिनग्राद मार्चों पर ज़बरदस्त हमले किये थे। तदनन्तर जर्मनों की फासिस्ट सेना को अन्तिम रूप से खदेड़ा और दुश्मन की टुकड़ियों को स्तालिनग्राद की ओर जानेवाले मार्गों पर घेरकर गिरफ्तार करने लगी। दो वर्षों से भी अधिक पुराना लेनिनग्राद का घेरा तोड़ डाला, और कोई छ सप्ताह के भीतर वारोनेज, कुस्क, खार्कोव, क्रास्नादार, रास्तोव, नोवाचेर्कास्क और वारोशीलावग्राद नगर आज़ाद कर लिये थे। सेर्गेई सोवियत सेना में तब पहुंचा जब, देकूल, ऐदार और ओस्काल – दानेत्स की तीन उत्तरी सहायक नदियों के साथ साथ, जर्मनों की रक्षा-पंक्तियों पर टैंकों से ज़बरदस्त हमला किया जा रहा था, जब कामेंस्क कन्तेमीरोव्का रेलवे पर मील्लेरोवो के इद गिर्द घेरा डालकर जर्मन सेना का मोर्चा तोड़ा जा चुका था और दो दिन पहले ग्लुबोकाया स्टेशन पर कब्ज़ा कर चुकने के बाद सोवियत सेना उत्तरी दानेत्स को पार करने की तैयारी कर रही थी।

डिवीजनल कमाण्डर सेर्गेई से बातचीत कर रहा था। इस बीच कमाण्डर इन चीफ सो रहा था। सभी कमाण्डिंग अफसरों की भांति वह भी आदतन सभी ज़रूरी तैयारियां तथा काम रात ही में कर लेता था जब ऐसी कारवाइयों से असबद्ध कोई भी व्यक्ति बाधक न हो सकता था और वह स्वयं सेना के कार्यों की व्यस्तता से मुक्त रहता था। इस समय सर्जेंट मेजर मीशिन अपनी कलाई पर लगी घड़ी पर, जो उसे विजयोपहार मिली थी, निगाह डालता हुआ सोच रहा था – जनरल को जगाने का वक्त हो गया। (सर्जेंट मेजर मीशिन पीटर महान की तरह ही भारी भरकम आदमी था जिसको, सेना के कमाण्डर इन-चीफ जनरल के

प्रति वही स्थान था जो सर्जेंट फेदारको का डिवीजन के जनरल के प्रति था)।

कमाडर इन-चीफ को कभी पूरी नीद नसीब न होती। इस दिन तो उस रोज से पहले ही जाग जाना था। यह एक सयोग की ही बात है— और ऐसे सयोग युद्धकाल मे प्राय देखने को मिलते हु—कि जो डिवीजन जुलाई मे उसकी कमान मे कामेस्क की रक्षा के लिए लडा था अब उसी को फिर से नगर पर अधिकार करना था। 'पुराने सनिको' मे से बहुत कम अब डिवीजन मे रह गये थे। उसका कमाडिग अफसर, जो अभी हाल ही मे एक जनरल बन गया था, उस समय एक रेजामेन्टल कमाडर था। वेशक अफसरा के बीच उसके जैसे कुछ 'पुराने सैनिक' अब भी मिल सकते थे किन्तु साधारण सनिका मे उनकी सख्या बहुत कम थी। डिवीजन के ९/१० सनिक ऐसे थे जो मध्य दान के किनारे किनारे के हमले से पहले उसके डिवीजन मे बदली करके रखे गये थे।

सर्जेंट मेजर मीशिन ने अन्तिम बार अपनी घडी पर निगाह डाली और उस तख्ते की ओर बढा जिसपर जनरल सा रहा था। यह साधारण-सा तख्ता था। जनरल को हमेशा नमी मे डर लगता था अत वह हमेशा अपना बिस्तर रेल के डिब्बे मे ऊपरी बथ की भाति, दूसरी मजिल पर ही लगवाता था।

जनरल एक करवट सा रहा था। उसके चेहरे पर उस स्वस्थ व्यक्ति जसा बाल-सुलभ भाव था जिसकी आत्मा निर्दोष, निष्कपट होती है। मीशिन ने जनरल को जगाने के लिए उस जोर स झकझोरा। किन्तु इससे उसकी योद्धाओ जसी नीद न टूटी। यह तो पहला कदम था। इसके बाद मीशिन हमेशा दूसरा कदम उठाता था। उसने एक हाथ जनरल की कमर में और दूसरा कधो के इद गिद डाला और उस बस ही सीधा बैठा दिया जस बच्चे का बिठाया जाता है।

जनरल चोगा पहने सो रहा था। वह पलक मारते जग गया और मीशिन की ओर ताकती हुई उसकी आंखें इतनी साफ थी मानो वह अभी अभी सोकर उठा ही न हो।

"धन्यवाद," वह बोला। वह बडी फुर्ती से बिस्तर से कूदा, अपने बालो पर हाथ फेरा, एक स्टूल पर बैठा और इधर-उधर नाई को देखने लगा। मीशिन ने उसके पैरो के पास एक जोडी स्लीपर रख दिये।

नाई, चमडे के बडे बडे बूट और अपने फौजी कोट पर बर्फ जैसा सफेद पेशबन्द पहने हुए, खंदक के रसोईघर वाले भाग मे खडा खडा साबुन का फेन तैयार कर रहा था। तब वह प्रेत की तरह चुपचाप कमांडर की बगल में आया, एक तौलिया उसके चोगे के कालर मे खोसा, और हल्के हल्के उसकी दाढी पर ब्रश से फेन लगाने लगा। रात भर मे ही उसके चेहरे पर ठूंठ जैसे काले, सख्त बाल उग आये थे।

कोई पन्द्रह मिनट के भीतर ही जनरल, पूरी वर्दी पहने और अपनी इकहरी जकेट के गले तक बटन लगाये अपनी मेज़ पर बैठ गया। उसका नाश्ता मेज पर लगाया जा रहा था और उसका ऐडजुटेंट लाल अस्तर वाले चमडे के एक बैग में से कुछ कागज़ात निकाल निकालकर उसके सामने रख रहा था। जनरल एक एक कर इन कागजों पर निगाह दौडाये जा रहा था। पहले कागज़ में अभी अभी प्राप्त एक रिपोर्ट थी जिसमें मील्लेरावा पर अधिकार कर लिये जाने की सूचना दी गयी थी, किन्तु वस्तुत जनरल के लिए यह कोई खबर न थी। वह जानता था कि निश्चय ही मील्लेरोवो पर रात में या सुबह कब्ज़ा हो जायेगा। फिर दैनिक मामलो की बारी आयी।

"इसका तो शैतान भी पता नहीं लगा सकता और अगर उन्होंने चीनी पर क़ब्ज़ा कर लिया है तो वे उसे अपने पास रखे रहें! सफ़ानोव को 'साहस के लिए' जो तमग़ा मिला है उसके स्थान पर उसे

'लाल सैनिक ध्वज' पदक दिया जाये। डिवीजनल स्टाफ के लोग शायद समझते हैं कि साधारण सैनिकों के लिए केवल तमगों की सिफारिश की जा सकती है, और अफसरों के लिए पदकों की! अभी तक उन्होंने उसे गोली से नहीं उड़ाया? यह तो फौजी अदालत न हुई, बल्कि 'खुली बातचीत'* के संपादक मण्डल जैसी कोई चीज लग रही है। उसे तुरन्त गोली मार दी जानी चाहिए वरना वे सभी फौजी अदालत के सामने आयेंगे। हुह! शैतान उसको संभाले 'मेरी प्रार्थना है कि आप मुझे तबादले का निमंत्रण दें' मैं खुद एक साधारण सैनिक रहा हूं, पर मुझे यह विश्वास है कि रूसी में ऐसी बात इस प्रकार नहीं कही जाती। क्लेपिकोव ने बिना पढ़े हुए ही इन कागजों पर दस्तखत मार दिये हैं। उससे कहो इसे अच्छी तरह पढ़े, उसकी गलतियां नीली या लाल पेंसिल से ठीक करे और खुद यह कागज मेरे सामने रखे! नहीं, नहीं, आज तुम मेरे सामने ढेरों कूड़ा-करकट ले आये हो। यह सब काम रुक सकता है," जनरल बोला और नाश्ते पर जुट गया।

कमांडर-इन-चीफ अभी कॉफी पी रहा था कि बैग लिये हुए एक जनरल उससे मिलने अन्दर आया। वह नाटे कद का आदमी था—गंभीर, चुस्त, उसकी प्रत्येक हरकत से संयम तथा यथार्थता का भास होता था। पीला-सा पड़ा हुआ उसका माथा कुछ ऊंचा उठा-सा, शायद इसलिए कि सामने उसका सिर गंजा था और बाल कनपटी पर महीन कटे थे। वह सैनिक अफसर कम, प्रोफेसर अधिक लग रहा था।

"बैठिये," कमांडर-इन-चीफ बोला।

स्टाफ-चीफ, ऐडजुटेंट द्वारा कमांडर-इन-चीफ के समक्ष रखे हुए कामों से अधिक जरूरी काम ले आया था। किन्तु, इन किसी भी काम को उठाने

---

*शान्तिपूर्व काल में बच्चों की एक पत्रिका।

स पहले उसने, मुस्कराते हुए, मास्को के एक अखबार का सबसे नया सस्करण उसके हाथा मे थमा दिया। यह अखबार हवाई जहाज द्वारा मोर्चे पर लाया गया था और उसी दिन सुबह सेना के भिन्न भिन्न हेडक्वाटरा को बाट दिया गया था।

इस पत्र मे उन अफसरा और जनरलो के नाम थे जिन्हे अभी सम्मानित और पदोन्नत किया गया था। इनमे से कई लोग स्वय उसी की सेना के थे।

सेना के लोगा की ही तरह की उत्कट अभिरुचि दिखाते हुए कमाडर-इन-चीफ न इन लोगा के नाम शीघ्रता से और ज़ोर जार से पढे। और जब कभी उसके सामने किसी ऐसे व्यक्ति का नाम आ जाता था जिसे वह सैन्य अकादमी से ही जानता था या जिसे युद्ध के दौरान में जानने लगा था, ता वह स्टाफ चीफ पर भी एक नजर डाल लेता था। उसकी यह नजर कभी कभी बडी सारगभित, कभी आश्चयचकित और कभी सदेहभरी-सी लगती थी। कभी कभी उसका चेहरा बच्चा की तरह खिल उठता खासकर जब इसका सम्बन्ध उसकी अपनी सेना से होता था।

उस सूची में उस डिवीजन के कमाडिग अफसर का नाम भी था, जो डिवीजन कभी 'कोलोवोक' के अधीन रहा था। कभी उपयुक्त स्टाफ चीफ भी उस डिवीजन मे रहा था। उस डिवीजनल कमाडर का पहले भी कई बार सम्मानित किया जा चुका था। इस बार भी उसे उसकी पिछली सवाओ के लिए सम्मानित किया गया था। हा, सम्बधित सिफारिश का सामान्य प्राधिकारिया से हाकर गुजरने में कुछ समय जरूर लग गया था। समाचारपत्रा में ता यह खबर अब छपी थी। "यह कौन-सा मौका है उसे खबर देने का—ठीक जब उसे रामेस्क पर अधिकार करना है!' कमाडर इन चीफ बाला, 'इस त वह घबरा जायगा।"

नही, बल्कि उसका उत्साह बढगा, मुस्कराते हुए स्टाफ-चीफ ने कहा।

"मैं जानता हूं, मैं तुम्हारी सारी कमजोरियां जानता हूं! आज मैं उससे मिलकर उसे बधाई दूंगा। चुवीरिन और खारचेंको को भी बधाई के तार भेज दो। और कूकोलेव को भी तार में कोई मैत्रीपूर्ण बात लिख देना। किन्तु उसमें औपचारिकता ज़रा भी न हो, बस दोस्ताना बात हो। मुझे सचमुच उसके लिए बड़ी खुशी है। मैं तो सोच रहा था कि व्याज़्मा कारवाई के बाद वह फिर कभी संतुलित हो भी सकेगा या नहीं," कमांडर-इन चीफ बोला और सहसा उसके चेहरे पर एक चतुरतापूर्ण मुस्कान बिखर गयी। "कंधे की पट्टियां कब तक आ रही हैं?"

"वे भेजी जा चुकी हैं," स्टाफ़ चीफ ने कहा और फिर मुस्करा दिया।

अभी कुछ ही पहले इस आशय का एक आदेश छपा था कि सैनिकों, अफसरों और जनरलों को कंधे की पट्टियां के बिल्ले दिये जायेंगे और इस आदेश में सारी सेना की दिलचस्पी थी।

डिवीजनल कमांडर ने तो केवल अपने स्टाफ़ चीफ से कहा ही था कि कमांडर इन चीफ आनेवाले हैं लेकिन यह खबर बिजली की गति से सारे डिवीजन में फैल गयी और उन लोगों के कानों में भी पड़ी जो दोनेत्स के समतल किनारे पर बर्फ और कीचड़ में लेटे हुए अपनी आंखें नदी के दाहिने किनारे और कामेंस्क की इमारतों पर गड़ाये हुए थे। इमारतों से धुए के काले काले बादल उठ रहे थे। नगर के ऊपर सोवियत बमवर्षक विमान बम बरसा रहे थे।

कमांडर इन चीफ अपनी कार में डिवीजन के दूसरे व्यूह की ओर बढ़ा और वहां उसकी मुलाकात खुद कमांडर से हुई। इसके बाद दोनों पैदल ही डिवीजनल हेडक्वार्टर की ओर बढ़े। रास्ते में उन्हें अलग अलग, या छोटी छोटी टोलियों में, सैनिक और अफसर दिखाई पड़ते और प्रत्येक यही चाहता कि न स्वयं वे ही अपने जनरल को देखें बल्कि वह भी उन्हें

देखे। उसे देखते ही वे बडी चुस्ती से एटेंशन खडे हो जाते ग्रार उनके चेहरो पर उत्सुकता ग्रौर मुस्कान झलकने लगती।

"स्वीकार करो कि ग्रभी एक ही घटा पहले तुम किलाबन्दी मे ग्राय हो। शैतान तुम्ह ले जाये। ग्रजी इसकी दीवालो तक से पसीना नही बह रहा है," क्माडर इन-चीफ बोला। उसने डिवीजनल कमाडर की चाल समझ ली थी।

"ठीक, ठीक कहू तो दो घटे पहले। ग्रौर् जब तक हम कार्मेस्क नही ले लेते इसे नही छोडेगे," डिवीजनल कमाडर ने क्हा। वह बडे ग्रादर के साथ कमाडर इन चीफ के सामने खडा हो गया। उसकी ग्राखो में चतुराईभरी मुस्काराहट झलक उठी ग्रौर उसके मुख का शात भाव माना यह कहता सा लग रहा था, "मै ग्रपने डिवीजन का सर्वेसर्वा हू ग्रौर ग्राप मुझे पूरी गभीरता के साथ किस बात के लिए फटकार बता सक्ते ह, यह मैं जानता हू, पर यह बडी मामूली बात है।"

कमाडर-इन-चीफ ने उसे उसके सम्मानित किये जाने पर बधाई दी। तभी एक उपयुक्त ग्रवसर मिलने पर डिवीजनल कमाडर ने बाता बाता में कहा –

"महत्त्वपूण मामलो पर बात करने से पहले यहा से कुछ दूर एक देहाती गुसलखाना है जो सही-सलामत है। हम पानी गम कर रहे ह। मेरा ख्याल है कि ग्राप बहुत ममय से नहा नही पाये हागे, कामरेड जनरल।"

"क्या सचमुच गुसलखाना है?" जनरल ने बडी गभीरता से कहा, "पर क्या पानी तैयार है?"

"फेदारका!"

तभी पता चला कि गुसलखाना काई शाम तक तैयार होगा। डिवीजनल क्माडर ने फेदारको पर एक निगाह डाली जिसका निश्चित ग्रथ यह था कि वह बाद मे उसकी ग्रच्छी तरह से खबर लेगा।

'आज शाम तक " कमाडर इन चीफ सोच रहा था कि शायद कोई चीज़ स्थगित की जा सकती है, या शायद बिलकुल रद्द की जा सकती है। तभी उसे कुछ याद आया कि चलते चलते उसने एक और काम करने का भी निश्चय किया था। "मै यह काम किसी दूसरे वक्त के लिए स्थगित कर दूगा," वह बोला।

सेना का स्टाफ-चीफ सेना भर में एक ऐसा सैनिक समझा जाता था जो ग़लती नही करता। उसके परामर्श से डिवीजनल कमाडर ने कार्मेस्क पर कब्ज़ा करने की अपनी योजना बनायी थी, जिसे इस समय वह कमाडर-इन-चीफ को समझा रहा था। कमाडर इन चीफ ने सब कुछ सुना, फिर असंतोष प्रकट करने लगा।

"यह कैसा त्रिकोण है नदी, रेलवे, नगर के बाहर की सीमाए— सभी पर क़िलाबन्दी है।'

"मुझे भी वही सन्देह हुआ था किन्तु इवान इवानोविच ने ठीक ही यह बताया कि "

इवान इवानोविच, सेना का स्टाफ-चीफ था।

"तुम वहा आगे बढते जाओगे और तुम्हे पीछे से फैलने की कोई जगह न मिलेगी। जितना ही तुम आगे बढते जाओगे, वे तुम्हारी तादाद कम करते जायेंगे," कमाडर-इन चीफ ने इवान इवानोविच के सवाल को सामने न लाते हुए कहा।

किन्तु डिवीजनल कमाडर जानता था कि इवान इवानोविच के विशेष अनुभव की सहायता से उसकी अपनी स्थिति मजबूत होती थी। इसलिए उसने फिर कहा—

"इवान इवानोविच की राय है कि दुश्मन सभवत इस बात की आशा नही करता कि उसपर इस दिशा से कोई सामने का आक्रमण किया जायेगा। वह यही समझेगा कि यह उसका ध्यान बटाने के लिए की गयी

एक कार्रवाई है। फिर हमारी गुप्त रिपार्टें भी इसी की पुष्टि करती हैं।"

"तुम जसे ही यहा से नगर में घुसोगे कि वे लोग सडका से और स्टेशन से नदी की बाढ की तरह तुमपर टूट पड़ेंगे, यहा "

"इवान इवानाविच "

कमाडर-इन-चीफ को लगा कि जब तक इवान इवानाविच नामक बाधा दूर नही की जाती तब तक वे किसी निष्कर्ष पर न पहुच सकेंगे।

'इवान इवानाविच गलती पर है," वह बाला।

कमाडर-इन चीफ ने अपना विचार, अपने चौडे हाथ और छोटी छाटी उगलिया के छोटे छोटे सारपूण इशारो से समझाना शुरू किया। वह नक्शा पर किसी काल्पनिक स्थल को लेकर बताने लगा कि चक्कर काटकर नगर को घेरना और एक बिलकुल ही भिन्न दिशा से उसपर सामने से हमला बोलकर उसपर कब्जा करना ठीक होगा।

डिवीजनल कमाडर का उस लडके की याद आयी जो उसी दिन सुबह नगर की बाहरी सीमा मे मोर्चा पार कर उस दिशा से आया था, जहा से कमाडर इन-चीफ प्रधान आक्रमण करना चाहता था। सहसा, बिना किसी प्रयास के, उसके मस्तिष्क में नगर पर आक्रमण करने की सारी योजना स्पष्ट हो गयी।

रात हाते हाते डिवीजनल हेडक्वाटर में सभी प्रमुख और निश्चयात्मक मामले तय हुए और रेजीमेंटा को उनकी सूचना दे दी गयी। कमाडर अब गुसलखाने में गये। यह सचमुच बडी विचित्र बात थी कि जहा कभी कोई छाटा-सा गाव रहा था, वहा का गुसलखाना अछूता छूट गया था।

पाच बजे सुबह डिवीजनल कमाडर और राजनीति विभाग का

उसका सहायक रेजीमेंटो की तैयारियो की जाच-पडताल करने के लिए दौरे पर निकले।

रेजीमेन्टल कमाडर, मेजर कोनोनेको की किलावन्दी मे रात भर कोई भी सोया न था। सारी रात, सीनियर अफसरो से लेकर जूनियर कमाडर तक सभी को आगामी आक्रमण के छोटे-से छोटे यहा तक कि व्यक्तिगत पहलू तक के सम्बन्ध मे आज्ञाए दी जाती रही। निश्चय ही ये सारे ब्योरे बहुत ही आवश्यक और निर्णयात्मक थे।

यद्यपि सारी आज्ञाए और व्याख्याए स्पष्ट की जा चुकी थी, फिर भी डिवीजनल कमाडर ने अपनी कार्यपद्धति के अनुसार वह सभी कुछ एक बार फिर दुहराया जो पिछले दिन कहा जा चुका था और मेजर कोनोनेको ने जो जो कारवाइया की थी उन सभी की जाच-पडताल की।

मेजर एक जवान आदमी था। मजदूर किस्म का एक विशिष्ट सैनिक। उसका चेहरा दुबला पतला किन्तु साहसी और फुर्तीला था। स्वेटर के ऊपर फौजी कमीज और कमीज के ऊपर रूइदार जैकेट और पतलून पहने हुए था। उसने अपना फौजी ओवरकोट निकाल फेंका था क्योकि उससे उसके चलने फिरने और काम करने मे बाधा पडती थी। इस समय वह सयम के साथ डिवीजनल कमाडर की बात सुन रहा था, हालाकि उसका सारा ध्यान उन्ही बातो की ओर न था क्योकि जो कुछ भी कमाडर को कहना था वह सभी कुछ जबानी जानता था। इसके बाद उसने स्वय जो कुछ भी किया था उसकी रिपोर्ट दी।

सेर्गेई को इसी रेजीमेंट मे रखा गया था। उसने भी डिवीजनल हेडक्वार्टर से लेकर कम्पनी कमाडर तक सभी से बात की थी। उसे एक टामी गन और दो हथगोले दिये गये थे और उसे आक्रमणकारी दल मे रखा गया था जिसे कार्मेल्स्क के पास के चौराहा से होकर सबसे पहले नगर मे घुसना था।

पिछले कुछ दिना से मामली-सा वर्फीला तूफान उस खुल और ऊमिल मेत्र में उठ रहा था। इस क्षेत्र में कामेंस्क के आसपास नाडिया थी। दक्षिणी वायु के कारण कुहरा बढ गया था। खुली जमीन पर जहा वर्फ गहरी न थी वह अब पिघलने लगी थी और सडको और मैदाना मे कीचड और पानी बहने लगा था।

वमा और गोला ने दोनेत्स के दोना किनारा पर वसे हुए समस्त गावा और खतिहर वस्तिया को गहरा नुक्सान पहुचाया था। सनिक टुकडिया पुरानी खदका, खाइया और खेमो मे या खुले आकाश के नीचे पडी थी, जहा वे आग तक न जला सकती थी।

आक्रमण के पहले सारे दिन नदी के उस पार क धुधलके म सारा नगर दिखाई पडता रहा—नगर काफी वडा था, वीरान सडका का जाल, मकाना की छता से ऊपर उठी हुई स्टेशन की पानी टकी, गिरजा की ध्वस्त मीनार, और कारखानो की कुछक चिमनिया जा अभी तक सही सलामत खडी थी। नगर के सीमा-क्षेत्रा और बाहर की पहाडिया पर जमना क छोटे छाटे दुगनुमा मकान आसानी से देखे जा सकते थे।

यह नगर अच्छी-खासी आबादी वाला था जिसे आजाद करान के लिए युद्ध शुरू होनेवाला था। युद्ध के कुछ ही पहले फौजी ओवरकाट पहने हुए सोवियत नागरिक को एक विचित्र-सी अनुभूति होती है। वह अपने का नैतिक रूप से बहुत उत्साहित महसूस करता है क्याकि वह, याने फौजी ओवरकाट पहने हुए वह आदमी, यह महसूस करता है कि उस किसी ऐसी चीज को आजाद कराने क लिए निकल पडना है जा उस बहुत प्रिय है। नगर के प्रति तथा सद तहखाना और नम खदका में छिप हुए उसके नागरिका क प्रति, माताओ और नन्हे नन्हे बच्चा क प्रति उसकी सहानुभति उमडती है और उस अपन दुश्मना पर क्रोध आता है क्याकि वह अपन अनुभव स जानता है कि उसका शत्रु दुना

ग्रौर तिगुनी ताउत स उसका सामना करेगा इसलिए कि वह, अपने अपराधो और उनके लिए उरा भविष्य में मिलनेवाले दड से पूर्णत अवगत है। उनका मस्तिष्क इस विचार से कुछ कुछ व्यथित रहता है कि उनके आगे मौत का खतरा है और काम कठिन है। और ऐसे कितने ही दिल होगे जो भय की स्वाभाविक अनुभूति से दहल उठते है।

किन्तु ऐसी अनुभूतिया कोई भी सनिक प्रकट नही कर रहा था। सभी खुश थे, चहक रहे थे, हसी मजाक कर रहे थे।

"एक बार जब 'कालाबाक' काम अपने हाथ में ले लेता है तो वह लुढ़कता-पुढ़कता ठीक जगह पर पहुच जरूर जाता है," उन्होंने कहा, मानो स्वय वे नहा, बल्कि खुद परी-कथा का प्रसिद्ध कालोबोक ही लुढ़कता-पुढ़कता नगर में पहुचने का था।

सेर्गेई जिस आक्रामक दल मे था वह उसी सर्जेंट की कमान म था जिसम वह मोर्चा पार करने के बाद पहले-पहल मिला था। वह नाटा, खुशमिजाज और फुर्तीला था। उसके पूरे चेहरे पर बारीक झुरिया थी और आखें नीली और बडी बडी। आखो में इतनी चमक थी कि वे जब तब रग बदलती-सी लगती थी। उसका नाम था कयूल्किन।

"तो तुम क्रास्नोदोन के रहनेवाले हो?" उसने सेर्गेई से पूछा। उसके चेहरे पर प्रसन्नता, पर कुछ कुछ अविश्वास का भाव झलक रहा था।

"शायद आप वहा हो आये हं?" सेर्गेई ने पूछा।

म वहा के रहनेवाले एक मित्र से मिला था—एक लडकी से," क्यूल्किन ने कुछ उदास होकर कहा, 'वह नगर से बाहर रहने जा रही थी। मने उसे सडक पर देखा और हम दोनो दोस्त बन गये वह सचमुच बडी खूबसूरत थी म क्रास्नोदोन से होकर गुजर रहा था।" वह कुछ रुका और फिर कहने लगा, "कामेस्क की रक्षा में भी मैंने भाग लिया था। नगर की रक्षा करनेवाले सभी लोग या तो

मार डाले गय थे या वन्दी वना लिय गये थे। सिवा मेरे और आखिर म यहा लौट आया। तुमने ये पक्तिया सुनी ह?" उसने वडा गभीरता स कविता-पाठ शुरू कर दिया—

हमल हुए हुआ हू घायल—
लकिन, अत्र तक सही-सलामत हू—
न एक है दाग वदन पर,
तीन वार घिर गया—कि वाला, शत्रु
फस गया—फास लिया ह!'
पर, तीनो ही वार निकल भागा हू वचकर!
विकट समय भी दख चुका हू—
हवा रही है आग उगलती
दायें वायें, नीचे ऊपर—
वाडा मे भी उलझ गया हू
पर, वेदाग सदा निकला हू चक्रव्यूह स!
अकसर चिर-पहिचान पथ पर
फौजो के कदमो से उडती धूल कि वादल घटा वनी है
और कि इस वादल ने मुझको ढाक लिया है—
दुश्मन फतवा देने लगे—'उखाडा पर कि, हमने!'—
प्राय वाले—'अरे, नेस्तनावूद कर दिया—
उसका नाम निशान मिट गया!'

"*यह कविता मेरे जैसे लोगो के लिए लिखी गयी है,*" वह दात दिखाते हुए वाला और सर्गेई को आख मारने लगा।

दिन वीता। रात आयी। इधर डिवीजनल कमाडर मेजर

कोनानको को सुपुर्द किये हुए कार्यो को उसके आगे फिर एक बार दुहरा रहा था, उधर वे सैनिक सो रहे थे जिन्हे हमले में भाग लेना था। सेर्गेई भी सो रहा था।

सुबह छ बजे उन्हे अर्दलिया ने जगाया। उन्हे एक एक जाम वोदका, एक एक कटोरा गोश्त का शोरबा और बाजरे का ढेर-सा दलिया दिया गया। फिर कोहरे, झाडियो और घास में लुकते छिपते वे अपने आक्रमण-स्थलो की ओर बढने लगे।

उनके पैरो के नीचे की जमीन बर्फ और कीचड से लसलसी हो रही थी। दो सौ गज के परे कुछ भी नही दिखाई पडता था। जैसे ही आखिरी दल दोनेत्स के किनारे पहुचे और लसलसी भूमि पर लेटे कि भारी तोप गरज उठी।

गोलाबारी बडे क्रम से हो रही थी किन्तु तोपे इतनी अधिक थी कि गोलाबारी और विस्फोटो की ध्वनिया मिलकर एक भयानक गर्जन पैदा कर रही थी।

क्यूल्किन की बगल में लेटे लेटे, सेर्गेई ने आग के लाल लाल गोले सिर के ऊपर से जाते हुए और दाहिनी ओर का कोहरा चीरते हुए नदी को पार करते देखे। कुछ गोले एकदम गोल थे तो कुछ दुमदार। उसने गुजरते हुए गोलो की सनसनाहट, दूसरे किनारे पर होता हुआ उनका विस्फोट और नगर में और दूर पर होनेवाले विस्फोटो की ध्वनिया सुनी। इन सभी ध्वनियो से वह और उसके साथी उत्साहित हो उठे थे।

जर्मन अपने गोले केवल उन्ही स्थानो पर फेंक रहे थे जहा, उनके ख्याल से फौजी टुकडिया जमी हुई थी। उन्हे जब-तब नगर की ओर से छ नलियोवाले मोर्टर के दगने की आवाज सुनाई पडती थी जिसे सुनकर प्राय क्यूल्किन कुछ भय से कह उठता था "आई ओई वह चला गोला।"

सहसा सेर्गेई के पीछे कही दूर से, भयानक गरज सुनाई पडी जो बढती बढती सारे क्षितिज तक फैल गयी। किनारे पर पडी हुई टुकडिया के सिरो के ऊपर एक भनभनाती हुई सी आवाज़ सुनाई दी और दूसरे किनारे पर, गोला के विस्फाट के साथ ही साथ, घना काला धुआ फल गया।

"कत्यूशा के मुह खुल गये ह," क्यूत्किन बोला। वह तनाव की स्थिति मे पडा था। उसका झुर्रीदार चेहरा सख्त और निमम दिखाइ पड रहा था। "अब एक ऐसा गाला और, और "

भनभनाहट की आवाज अभी दबी भी न थी और दूर पर कही विस्फाट अभी तक हो ही रहे थे कि सेर्गेई अपनी कम गहरी खाई में से उछलकर नदी पर जमी बफ पर दौडने लगा था। कोई आज्ञा दी गयी थी या नही यह उसने न सुना था। उसने तो क्यूत्किन को उछलते और भागते हुए देखा था और खुद भी भागने लगा था।

उसे लगा कि सैनिक बिलकुल नि शब्द, बफ पर से हाकर दौड रहे हैं। वस्तुत दूर के किनारे से उनपर गोलाबारी हो रही थी और लोग बफ पर गिर रहे थे। काला काला धुआ और गधक की महक, कुहरे मे से होती हुई, भागती हुई सेना की आर बढ रही थी। किन्तु सैनिका ने पहले ही समझ लिया था कि सभी कुछ ठीक ठीक किया गया है और उसका परिणाम भी सुखद ही होगा।

सहसा खामाशी छा गयी जिससे स्तभित हाकर जसे सेर्गेई एक गाले से बने हुए एक गड्ढे मे क्यूत्किन की बगल में लेट गया वहा उसे होश आया। क्यूत्किन भयानक तरह से मुह बनाता हुआ, ठीक अपने सामन अपनी टामी-गन किसी निशाने पर चला रहा था। सेर्गेई न कोई पचास फुट दूर एक अधपटी खाई में से एक मशीनगन की हिलती हुई नली दखी और वह स्वय भी खाई में गाली चलाने लगा। मशीनगन

चलानेवाले ने न तो सर्गेई का ही देखा और न क्यूत्किन को ही, वह ता किसी दूर की चीज़ का निशाना बना रहा था। दानो ने उसे फौरन मौत के घाट उतार दिया।

नगर उनकी दाहिनी ओर काफी दूरी पर था। उनके रास्ते पर प्राय कोई गोलाबारी नही हो रही थी। वे नदी तट से दूर, और दूर, स्तपी में बढते चले जा रहे थे। पर कुछ देर बाद, नगर से चलाये जानेवाले गोले स्तेपी में, उनकी प्रगति के सारे रास्ते पर पडने लगे।

तब कुहरे से दिखाई न पडनेवाली छोटी छाटी खेतिहर बस्तिया से, जिन्हे सेर्गेई अच्छी तरह जानता था, उन्होने मशीनगना और आटोमेटिक बन्दूको से होनेवाली गालाबारी की आवाज़े सुनी। वे एक गड्ढे में उस समय तब पडे रहे जब तक उनका हल्का तापखाना नही पहुच गया और खेतिहर बस्तियो पर सीधी गोलाबारी शुरू नही कर दी। अन्तत सनिको के दल, अपनी अपनी हल्की तापे लेकर बस्तियो मे घुस गये। सभी तोपची जैसे मतवाल हा रहे थे। तभी बटालियन कमाडर आया और सिगनलर एक गिरे हुए पक्के मकान के तहखाने मे टेलीफोन के तार दौडाने लगे।

इस समय तक उन्हे नगर के चौराहे की ओर बढने मे पूरी सफलता मिल चुकी थी। यही चौराहा उनकी इस साधारण कारवाई की मंज़िल था। यदि उनके पास टैंक होते ता वे न जाने कब इस चौराहे पर पहुच गये होत किन्तु इस बार टको का प्रयोग नही किया गया था, क्योकि दोनेत्स पर जमी बर्फ उनका भार सभालने मे असमर्थ थी।

जिस समय सेना ने फिर आगे बढना शुरू किया, उस समय पूरी तरह अधेरा छा चुका था। फिर, जसे ही दुश्मन ने गोलाबारी शुरू की कि बटालियन कमाडर को, जिसने आक्रमण-सम्बन्धी कारवाइया का सारा भार अपने ऊपर ले लिया था, अपनी टुकडिया की सहायता से हमला

करने के लिए मजबूर होना पडा, क्योकि प्रधान टुकडिया अभी तक बढ रही थी। सैनिक गाव मे घस गये और कयूरिकन की टुक्डी, मुख्य सडक पर मोर्चा लेती हुई, स्कूल की इमारत पर कब्जा कर लेने के लिए युद्ध करती रही।

स्कूल की ओर मे इतनी जबरदस्त जवाबी गोलिया चल रही थी कि सेर्गेई ने गोलिया चलाना बन्द कर दिया और मुह पिघलती बर्फ में लटका लिया। बाये हाथ की कोहनी के ऊपर एक गोली उसे छूकर निकल गयी थी किन्तु हड्डी पर जरब नही आयी थी। युद्ध की उत्तेजना मे उस पीडा तक का अनुभव न हो रहा था। आखिर जब उसने सिर उठाया तो देखा कि वह बिलकुल अकेला रह गया है।

बेशक, ऐसी परिस्थिति मे यही एक बात सोची जा सकती थी कि उसके साथी, गोलाबारी के दबाव के कारण, नगर की सरहद की ओर जाकर मुख्य सेना मे मिल गये है। किन्तु अनुभवहीनता के कारण सर्गेई उस निष्कर्ष पर पहुचा था कि उसके साथी मारे गये हैं। वह डर से काप उठा और रेंगता हुआ एक मकान के पीछे पहुचा और सुनने लगा। दो जर्मन उसके पास से भागते हुए निकल गये। उसे अपने दाहिने, बाये और पीछे जर्मनो की आवाजे सुनाई दे रही थी। पास मे होनेवाली गोलाबारी बन्द हो चुकी थी और अब गाव की चौहद्दी पर हो रही थी। अन्तत वह वहा भी ठढी पड गयी।

नगर के ऊपर, बहुत दूर, लाल रोशनी झिलमिला रही थी जो आसमान को तो नहा, लेकिन निरन्तर सघन होते हुए काले काले धुए को प्रकाशित कर रही थी। उसी दिशा मे भयानक बमबारी हो रही थी।

सेर्गेई जर्मनो द्वारा अधिकृत एक देहाती बस्ती के बीचोबीच पिघलती हुई बर्फ के ढेर पर अकेला पडा था—आहत, घायल।

अध्याय २८

मेरे दास्त! मेरे दाम्त! अब मै अपनी वहानी क सबसे दुखद पष्ठा पर आ रहा हू और वरवस मुझे तुम्हारी याद आ जाती है

काश कि तुम जानते होते कि जब म और तुम नगर के स्कूल मे पढने गय थे, उन दिना, यानी अपने वचपन के दिना म, मेर दिमाग में कितनी उथल-पुथल रहती थी। मरा घर तुम्हारे घर से कोई पतीस मील दूर था और जब म घर से निकला था तो मुझे इस बात का डर वरावर वना रहा था कि तुम मुझे न मिलागे, कि तुम पहल ही घर से निकल गये हागे—वेशक हम एक दूसरे से गर्मी का सारा मौसम न मिल पाये थे! इस डर से कि शायद तुम न मिला, म बेकरार हो रहा था। रात में देर से मेर पिता की गाडी ने तुम्हारे गाव मे प्रवेश किया और थका हुआ घाडा सडक पर धीरे धीरे चलता रहा। तुम्हारा घर आने से वहुत ही पहले मै गाडी से कूद पडा था। म जानता था कि तुम हमशा भूसे वाली अटारी मे सोते हो, और यदि म तुमसे न मिला तो इसके मान थे कि तुम जा चुके हा पर क्या तुम मरा इन्तजार किये विना कभी गये भी हो? मै जानता हू कि तुम्ह स्कूल मे देर से पहुचना मजूर था, पर मुझे अकेले छोडना मजूर नही हमन रात भर आखें बन्द नही का, भूसे की अटारी मे वठे वठे अपने नगे पर वाहर लटकाय रहे और वरावर वात करत रह और जब हमी न रुकती ता मुह पर हाथ रखकर उस दवाने की चेष्टा करते। मुगिया अपने पख फडफडाती रही। सूखी घास स मीठी मीठी वास आ रही थी और शरद के प्रात कालीन सूय ने वना के पीछे स उदय होकर सहमा हमारे चेहरा को प्रकाशित

किया। सिफ तभी हमारा ध्यान इस बात पर गया कि गर्मी के महीनो में हम कितने बदल गये है

मुझे एक अवसर की याद अभी तक बनी है। हम नदी म, घुटना घुटनो तक पानी मे खडे थे। तुमने मेरे सामने यह स्वीकार किया था कि तुम से प्रेम करते हो सच पूछो तो वह लडकी मुझे पसन्द न थी, किन्तु मैंने तुमस कहा था–

"प्रेम तुम करते हो, मैं नही! तुम सुखी रहा "

और तुमने हसकर कहा था–

"सचमुच किसी को गलत रास्त से हटाने के लिए आदमी का दोस्ती से भी हाथ धोना पडता है, किन्तु फिर भी क्या कोई दिल क मामलो में सलाह दे सकता है? कितनी बार गहरे से गहरे दोस्त भी, सद्भावना से, मुहब्बत के मामलो में दखल देते है, दो प्राणियो को परस्पर मिलाते है, अलग करते हैं, अथवा जिसे तुम प्यार करत हो उसके सबध मे कहनी-अनकहनी कहते है काश वे जानते होते कि इस प्रकार वे स्वय कितनी हानि पहुचाते है, कितने कीमती क्षणा मे जहर घोल देते है, ऐसे क्षणा में जो एक बार जाकर फिर लौटकर नही आते।'

और फिर मुये उस व्यक्ति 'न०' की याद आती है। म उसका नाम न लूगा। वह एक दिन मेरे पास आया और मुह बना बनाकर अपने दोस्ता क बारे मे, बडी लापरवाही के साथ, ऐसी वैसी बात बकने लगा– "फला फला, लडका फला फला लडकी की मुहब्बत मे इतना चूर है कि उसके पैर चाटता ह। और हा, यह बात तुम्हारे और मेर बीच की है– उस लडकी की उगलिया के नाखून बडे गन्दे रहत हैं। और जानते हो, फ़ला लडका पिछली रात एक दावत में इतनी पी गया कि उलटिया करने लगा–पर यह बात कही बाहर न जानें पाये। और फला लडका पुराने खरीदे हुए कपडे पहनता है, वह गरीब बनता है पर सचमुच

है मक्खीचूस। और म अच्छी तरह जानता हू कि उसे दूसरा के जेब से वियर पीने मे भी शम नही आती   किन्तु कही यह वात दूसरा से न कह देना "

और तुम उसकी ओर देखकर कहने लगते हो—
"सुनो जी   यहा से निकला तो, फौरन!"

"क्या माने   निकलो तो?" आश्चयचकित 'न०'   ने कहा।

"यही कि निकला यहा से   जिस आदमी का अपने साथियो की केवल पीठ ही नजर आती है, कभी चेहरा नजर नही आता, उससे ज्यादा घृणित कोई नही हो सकता। और फिर जो आदमी गप्पें हाक्ता है उसस बुरा हो भी कौन सकता है?"

इस सबके लिए मैंने तुम्हारी कितनी सराहना की थी! मुझे स्वय इसके वार में वैसा ही लग रहा था। किन्तु म शायद इतनी खरी खरी न सुना सकता

किन्तु सबसे अधिक मुझे गर्मी के उन दिना की याद आती है, जब यह समझ लिया था कि सिवा कोमसोमोल मे भरती होने के मेरे पास और कोई चारा नही है। उन दिना भी तुमसे बहुत दूर रह रहा था।

और तव हम शरद म, फिर हमेशा की तरह, उसी अटारी में मिले। उस समय मुझे लगा जैस मेरे प्रति तुम्हारे रुख मे कुछ अलगाव-सा आ गया है। साथ ही तुम्हारे प्रति अपने रुख में भी मुझे कुछ कुछ ऐसा ही लगा। हम वहा, अपने वचपन की ही तरह, अपने नग पैर झुलाते हुए चुपचाप वठे रहे। उस समय पहले तुम्ही वाले थे।

"शायद तुम मुझे न समझ सको, सभव है तुम इस वात के लिए मेरी भत्सना भी करा कि मन विना तुमसे परामश किये कोई निश्चय कर लिया था, किन्तु जब म उस गर्मी में विलकुल अकेला था उस समय मने

समय लिया था कि मेरे लिए कोई दूसरा रास्ता नहीं। जानते हो, मैने कामसामाल में भरती होने का निश्चय कर लिया है।"

"पर इसके माने होंगे—नये नये उत्तरदायित्व, नये नये दोस्त! फिर, मेरा क्या होगा?" मैने अपनी मित्रता की कसौटी पर कसने की दृष्टि से कहा था।

"हां,' तुमने उदास होकर जवाब दिया था। "निश्चय ही बात यही होगी। हां, यह बात अपने अपने मन की जरूर है किन्तु अच्छा तो यही होगा कि तुम भी उसी में भरती हो जाओ।"

मैं तुम्हें अधिक परेशान न कर सका। हमने एक दूसरे की ओर देखा और ठहाका मारकर हंस पडे।

फिर इसके बाद अटारी में बैठे बैठे हमने ऐसी अच्छी अच्छी बातें की थीं जो मुझे कभी न भूलेंगी। अटारी में हमारी यह आखिरी मुलाकात थी। वही अटारी थी, वही मुगिया, जब हम यह शपथ ले रहे थे कि हमने जो रास्ता चुना है उससे हम पीछे न हटेंगे और हमेशा एक दूसरे के गहरे दोस्त बने रहेंगे तो ऐन उसी वक्त एस्प वृक्षों के पीछे से सूर्य ने अपनी झलक दी थी।

दोस्ती! इस ससार में कितने लोग इस शब्द का उच्चारण करते हैं और उससे उनका अर्थ होता है शराब की चुस्कियां लेते हुए कुछ मीठी मीठी बातें करना तथा एक दूसरे की कमजोरियों के प्रति सहानुभूति रखना। इसका दोस्ती से क्या मतलब?

हम बार बार लडे झगडे थे, हमने एक दूसरे के गौरव पर भी चोट की थी और एक दूसरे से सहमत न होने पर एक दूसरे की भावनाओं पर भी आघात किया था। पर हमारी दोस्ती पर जरा भी आंच न आयी थी, वह तो आग में तपकर सोने जैसी खरी और इस्पात जैसी मजबूत निकली थी।

मैंने प्राय तुम्हारे साथ अनुचित व्यवहार किया था, पर जब मुझे अपनी गलती मालूम होती थी तो म उसे तुम्हारे आगे स्वीकार भी कर लेता था। बेशक म केवल इतना ही कह पाता कि म गलती पर था और तुम कहने लगते थे–

"परेशान मत हो, इससे कुछ हाथ न लगेगा। अब जब तुमने अपनी गलती मान ली है तो उसे भूल जाओ। ऐसी बात होती ही रहती ह। यह तो सघष का एक अग है।"

और फिर तुमने मेरी परिचर्या अस्पताल की सदय नस की भांति की, शायद मेरी अपनी मा से भी अधिक अच्छी तरह, क्योंकि तुम रूखे से और भावुकताहीन थे।

और अब मैं यह बताऊंगा कि मैंने तुम्हें किस प्रकार खोया। यह बात बहुत समय पहले की है, किन्तु न जाने क्या मुझे लगता है कि यह बात पिछली लडाई की नही इसी लडाई की है। म तुम्हें, झील से दूर, नरकला की झाडियो मे से खीचता हुआ लाया था। तुम्हारा खून मेरे हाथो पर ढरक रहा था। सूय निदयता के साथ जल रहा था। हमारे पीछे, नदी के किनारे शायद कोई ज़िन्दा न बचा था–तट की उस सकरी-सी, नरकला से ढकी पट्टी पर बेहद गोलाबारी हुई थी। मने तुम्हें घसीटा क्योंकि म कल्पना भी न कर सकता था कि तुम बचोगे नहा। तुम वहा, नरकटो की झाडियो के विस्तर पर पडे थे, तुम होश मे थ किन्तु तुम्हारे ओठ बहुत सूख गये थे। तुमने कहा था–

"पानी! मुझे कुछ पानी दो।"

वहा पानी न था। फिर हमारे पास लोटा या गिलास जसी भी कोई चीज न थी, वरना मैं झील से पानी ले आया होता। तभी तुमने कहा था–

"मेरा एक बूट उतार लो, सावधानी से। वे कहीं से भी फटे नहा ह।"

मने तुम्हारी बात समझ ली थी। मने तुम्हारा वह सनिक बूट उतारा। इसी बूट ने न जाने कितना रास्ता तय किया था। हम न जान कितने दिना तक लगातार चलते रह थे किन्तु कभी मोज़े बदलने की नौबत न आयी थी। मैंने बूट लिया और रगता रगता किनारे की ओर चला गया! मैं खुद प्यास से मर रहा था। बेशक, गोलाबारी के इस तूफान मे मैं स्वय पानी पीने के लिए वहा रुकने की कल्पना भी न कर सकता था। निश्चय ही यह एक चमत्कार रहा होगा कि म बूट में पानी भर सका और रेगता रगता लौट आया।

पर जब मैं तुम्हारे पास पहुचा तो तुम्हारे प्राण पखेरू उड चुके थे। तुम्हारा चेहरा शान्त था। तुम्हारा कद कितना बडा था, यह मन उसी दिन पहली बार देखा था। अकारण ही लोग यह नही समझते थ कि हम दोनो बहुत मिलत-जुलते थे। मेरी आखा से आसू झरने लगे। मुझे इतनी प्यास लगी थी कि सहन से बाहर हो रही थी। मने अपने ओठ तुम्हारे बूट से लगा दिये। यह हमारी सनिक मित्रता का रक्ष और कटु जाम था, जिसे म छलछलाती हुई आखो से पिये जा रहा था, पिये जा रहा था।

वाल्या मोर्चे के किनारे किनारे एक खेतिहर बस्ती से दूसरी की ओर चलती रही। उसे न सर्दी परेशान कर रही थी, न भय। वह थककर चूर हो चुकी थी, सर्दी से जकड चुकी थी और भेडिय की तरह भूखी थी। उसे प्राय राते खुली स्तेपी में बितानी पडती थी। जब मोर्चा और आगे बढ जाता, पीछे भागते हुए जमनो का रेला उसे उन जगहा के जाने को विवश कर देता, जिन्हे वह अपने बचपन से जानती समझती थी।

वह एक दिन दो दिन, एक हफ्ता, बराबर मारी मारी फिरती रही। क्यो फिरती रही यह वह स्वय न जानती थी। शायद वह अभी

तक मोचा पार कर लेने की आशा कर रही थी, या शायद सेगेंई को दिये अपने सुझाव में स्वय विश्वास करने लगी थी, जो उसने सिर्फ सेर्गेई को धोखा देने के लिए दिया था। सेर्गेई लाल सेना की यूनिट के साथ क्या नही लौटेगा? उसने वादा किया था–"डरो मत, म अवश्य लौटूगा।" और वह अपना वचन हमेशा निभाता था।

जिस रात कामेस्क मे लडाई शुरू हुई और धुए के घने घने बादलो के बीच रोशनी की चमक मीलो दूर से दिखाई दी, उस रात वाल्या को नगर से कोई दस मील दूर एक खेतिहर बस्ती मे जगह मिल गयी थी। वहा कोई जमन नही थे, फिर भी अधिकाश ग्रामवासियो की भाति, वाल्या की भी रात भर पलके न लगी थी। वह तो आकाश म उठनेवाली चमक देखती रही थी। कोई चीज थी जो उसे इन्तजार करने को विवश कर रही थी, इन्तजार करने को

दिन में कोई ग्यारह बजे गाव मे खबर आयी कि लाल सेना की टुकडिया कामेस्क में घुस आयी है, वहा जोरो की लडाई हो रही है और नगर के अधिकतर हिस्से से जमन भाग चुके ह। अब किसी भी समय, लडाई में हारा हुआ दुश्मन,–जो सब दुश्मनो स ज्यादा खूखार होता है– गाव से होकर गुजर सकता है। वाल्या ने फिर अपना थैला अपने कधे पर रखा और गाव छोडकर चली गयी। किसान महिला ने दया से द्रवित होकर उसके थैले मे रोटी का एक टुकडा रख दिया था।

वह निरुद्देश्य आगे बढती रही। बर्फ पिघल रही थी किन्तु हवा का रुख बदल जाने स सर्दी बढने लगी थी। धुध छन गयी थी और बर्फ से लदे हुए भिन्न भिन्न आकार के बादल आकाश में फल गये थे। वाल्या सडक के बीचोबीच रुकी और वहा बडी देर तक खडी रही। वह एक दुबली-पतली आकृति-सी लग रही थी। कधे पर थैला और टोपी के नीच स निकल निकलकर हवा मे लहराती हुई बालो की भीगी लटें।

गाव की एक गली मे पिघली हुई वफ और कीचड जमी थी। वह धीरे धीरे उस गली मे घुसी और नास्तादान की ओर चल दी।

इस बीच, सेर्गेई उसी बस्ती के एक दूरस्थ कोने पर बने आखिरी मकान की खिडकी खटखटा रहा था। उसका बाजू खून से सनी आस्तीन में से लटक रहा था। सेर्गेई के पास बन्दूक तक न थी।

नही इस समय मरना उसकी क़िस्मत में न लिखा था। वह उस गाव के बीचाबीच चौराहे के पास गीली और कीचडभरी सडक पर तब तक पडा रहा जब तक जर्मन खामोश न हो गये। यह आशा नही की जा सकती थी कि सोवियत सेनाए उसी रात फिर उस गाव में घुस आयेगी। उसे मार्चे से दूर और दूर हट जाना था। वह वर्दी में न था। उसने अपनी बन्दूक भी वही छोड दी थी जहा वह पडा था। दुश्मन के बीच से होकर निकलने का उसका यह कोई पहला मौका न था।

सुबह से कुछ ही पहले वातावरण में मनहूसियत छा गयी थी और कोहरा लटक आया था। ऐसे समय वह जख़मी बाह लटकाये बडी कठिनाई से रेलवे लाइन के उस पार रेग गया। उस समय बहुधा किसान घरों की मालिकिनें उठ जाती है और दिया जला देती है। किन्तु इस वक्त सभी गृहिणिया अपने अपने बच्चो के साथ तहखाना मे छिपी थी।

सेर्गेई रेलवे लाइन से कोई सौ गज दूर तक रेंगता गया, फिर उठा और चलता हुआ खेतिहर बस्ती तक जा पहुचा।

सुनहरे लटोवाली एक लडकी ने एक पुराने कपडे से पट्टी फाडी और उसकी बाह पर बाध दी। फिर अभी अभी कुए से लाये हुए पानी से उसकी जैकट की आस्तीन का खून धोया और उसपर राख रगड दी। घर के लोग डर रहे थे कि वही सहसा जर्मन न घुस आयें। इसी लिए उन्होने सेर्गेई को गर्म गर्म खाना न देकर रास्ते में पेट में डाल लेने को कुछ दे दिया।

सर्गेई रात भर सोया न था, फिर भी मार्चे के किनारे किनारे की बस्तियों में वाल्या की तलाश में निकल पडा।

जैसा दोनत्स स्तेपी में प्राय होता है, मौसम एक बार फिर सर्द हो गया। घनी बर्फ फिर गिरने लगी जो पिघलने का नाम तक न ले रही थी। फिर वह जमनी शुरू हो गयी।

एक दिन जनवरी के अन्त में सेर्गेई की विवाहिता बहन फेन्या बाज़ार से घर आयी। पर घर का दरवाजा बन्द था।

"अकेली हो क्या, मा?" सबसे बडे बेटे ने दरवाज़े के पीछे से पूछा।

सर्गेई मेज़ पर बैठा था। उसकी एक बाह मेज़ पर सधी थी और दूसरी नीचे लटक रही थी। वह हमेशा दुबला-पतला रहा था, किन्तु इस समय उसका चेहरा फक पड रहा था और वह झुका हुआ बैठा था। हा, बहन पर लगी हुई उसकी आखो में अभी तक पहले जैसी फुर्ती, पहले जसी चमक दिखाइ पड रही थी।

फेन्या ने उसे केन्द्रीय कारखाना मे हुई गिरफ्तारियो के बारे मे बताया और साथ ही यह सूचना दी कि 'तरुण गार्ड' के अधिकाश सदस्य जेल म ह। मरीना से उसने ओलेग कोशेवोई की गिरफ्तारी के बारे मे पहले ही सुन लिया था। सर्गेई ने एक शब्द भी न कहा। उसकी आखो से आग बरस रही थी।

'मै जा रहा हू, डरो नही," आखिर वह बोला।

उसे लगा जसे फेन्या उसके और अपने बच्चो के लिए बडी चिन्तित हो उठी है।

उसकी बहन ने उसकी बाह पर फिर से पट्टी बाधी और उसे औरतो के कपडे पहना दिये। फेन्या ने सेर्गेई के कपडो का एक बडल बनाया और धुधलका होते ही उसके साथ उसके घर की ओर चल दी।

उसके पिता को जेल की कोठरी मे जो यातनाए भुगतनी पडी

थी, उनके फलस्वरूप वे बिलकुल जर्जर हो चुके थे और अधिकतर बिस्तर पर ही पड रहते थे। उसकी मा किसी प्रकार चल फिरकर थोडा बहुत काम कर लेती थी। उसकी बहनें घर पर नहा थी। दोना बहनें, यानी दाशा और नाद्या—जिसे वह सब से अधिक चाहता था—मार्चे की दिशा में चली गयी थी।

सेर्गेई ने पूछा कि क्या वाल्या बोर्त्स के बारे में कुछ पता चला। इस काल मे 'तरुण गार्ड' के सदस्यो के माता पिता एक दूसरे के और भी निकट आ गये थे, किन्तु मरीया अन्द्रेयेव्ना ने अपनी बेटी के बारे में सेर्गेई की मा से कुछ भी न कहा था।

"तो वाल्या दूसरा के साथ नही है?" सेर्गेई ने दुखी होकर पूछा।

नही, वह जेल में न थी, यह बात वे लोग निश्चयपूर्वक जानते थे।

सेर्गेई ने कपडे उतारे और इस महीने में पहली बार अपने साफ-सुथरे बिस्तर पर लेटा।

दिया मेज़ पर जल रहा था। हर चीज़ ठीक वसी ही थी जैसी वह उसके बचपन से चली आ रही थी। किन्तु उसका दिमाग कही और था। बगल वाले कमरे मे लेटे हुए उसके पिता खास खासकर दीवाल हिलाये दे रहे थे। फिर भी, सेर्गेई के लिए कमरे में हर चीज़ अस्वाभाविक रूप से शान्त लग रही थी। वहा अब उसकी बहनो की चहल-पहल न थी जो पहले सुनाई पडा करती थी। सिफ उसका छोटा भानजा अपने बाबा के कमरे में रेंगता हुआ चल रहा था और तुतला तुतलाकर अपने आप से बात कर रहा था।

सेर्गेई की मा अहाते मे चली गयी थी। सेर्गेई का बूढे के कमरे म एक जवान औरत के जाने की आवाज़ सुनाई दी। यह औरत उन की पडोसिन थी। वह प्राय रोज़ आती थी, और सेर्गेई के माता पिता इतने सीधे थे कि उन्होने कभी यह तक न सोचा था कि आखिर उसके

रात रात भ्रान का कारण क्या है। सेर्गेई ने उसे बूढे से बातचीत करते सुना।

कमरे में रगते हुए बच्चे ने फर्श पर से कोई चीज़ उठायी और सेर्गेई के कमरे में रेग आया।

"मामा मामा" वह तुतलाया।

उस औरत ने तुरन्त कमरे में एक नजर डाली और सेर्गेई को देखते ही उसकी आखें चमक उठी। फिर उसने बूढे से कुछ मिनटो तक और बात की और आखिर घर से निकल गयी।

सेर्गेई ने करवट ली और सोने का प्रयत्न करने लगा।

आखिर उसके माता पिता सो गये। घर में अधेरा और सन्नाटा छा गया। किन्तु सेर्गेई फिर भी जग रहा था, उसके हृदय मे न जाने कितनी इच्छाए उमड घुमड रही थी

सहसा सामने के दरवाजे पर जारो की दस्तक हुई।

"दरवाजा खालो।"

अभी एक ही क्षण पहले जो अक्षय जीवनशक्ति उसे समस्त परीक्षाओं के बीच से होकर लिये जा रही थी वह जसे उसका साथ छोड रही थी। अब वह असहाय हो गया था। उसकी हिम्मत टूट सी रही थी। पर जस ही उसने दरवाजे पर खटखट सुनी कि उसके शरीर मे फुर्ती सी दौड गयी। वह चुपचाप बिस्तर से कूदा और खिडकी की ओर बढकर उसपर पडे हुए काले परदे का एक कोना उठा दिया। सब कुछ चादनी में नहाया लग रहा था। बर्फ की पृष्ठभूमि मे एक जमन सनिक की आकृति और उसकी छाया साफ साफ झलक रही थी। सैनिक बदूक तान खिडकी के पास खडा था।

माता पिता जगकर, डरे हुए उनीदी आवाज में फुसफुसाने लगे, फिर दरवाजे की खटखट सुनत हुए शान्त पडे रहे। इस समय तक

सेर्गेई एक हाथ की ही सहायता से कपडे पहनने का आदी हो चुका था। उसने अपना पतलून, कमीज़ और बूट पहने, किन्तु डिवीजन से प्राप्त फौजी बूटो में फीते न बाध सका। तब वह अपने माता पिता के कमरे में आ गया।

"कोई जाकर दरवाज़ा खोल दो, पर रोशनी न करना," उसने धीरे-से कहा।

किन्तु इस समय सारा मकान दरवाज़े पर पडती हुई ठोकरो की चोट से जैसे भरभराकर गिरा जा रहा था।

मा कमरे में भागने-दौडने लगी। उसे कुछ भी सूझ नही रहा था।

पिता धीरे-से विस्तर से उतरे और जिस ढग से चुपचाप लडखडाकर चले उससे सर्गेई का पता चल गया कि उनके लिए चलना-फिरना, उठना-बैठना कितना कठिन था। उसके लिए स्थिति कितनी विकट हो उठी थी।

"कुछ नही हो सकता, हमें दरवाज़ा खोलना ही होगा," बूढे न कुछ अजीब खनखनाती आवाज में कहा। सेर्गेई जानता था कि उसके पिता रो रहे हैं।

तब बूढा बैसाखो पटपटाते हुए गलियारे तक आये और पुकारकर बाले –

"बस एक मिनट, अभी आ रहा हू।"

सेर्गेई चुपचाप अपने पिता के पीछे खिसक आया।

मा पाव घसीटती हुई गलियारे म आयी, और लोह की कुडी पर हाथ रखा। सद हवा का एक झाका-सा आया। पिता ने बाहरी दरवाजा खाला और एक पल्ला थाम हुए एक तरफ़ खडे हो गये।

तीन आकृतिया एक के बाद एक दरवाज़े स होकर अधरे गलियारे में आयी। आखिरी व्यक्ति ने पीछे से दरवाजा बन्द कर लिया और एक शक्तिशाली टार्च की रोशनी न सारा गलियारा रोशन कर दिया। प्रकाश

की किरण पहले मा पर पडी, जो सायवान में खुलनेवाले दरवाज़े पर खडी थी। सेर्गेई जिस जगह एक अधेरे कोने में खडा था, वही से उसने देख लिया कि दरवाज़ा आधा खुला है। उसने समझ लिया था कि यह काम उसके लिए उसकी मा ने किया था। किन्तु तभी टार्च की रोशनी पिता पर और उनके पीछे छिपे हुए उनके बेटे, सेर्गेई पर पडी। सेर्गेई ने यह आशा न की थी कि वे गलियारे में टार्च का प्रयोग करगे, फलत उसे विश्वास था कि जब वे पिछले कमरे से होकर गुजरेंगे तो वह अहाते मे खिसक जायेगा।

दो व्यक्तियो ने सेर्गेई की बाह पकडी। उसकी घायल बाह मे इतनी पीडा हुई कि वह ज़ोरो से चीख उठा।

व उसे कमरे म घसीट लाये।

"बुत की तरह खडी मत रहो। रोशनी जलाओ।"

सोलिकोव्स्की मा पर भौक पडा। पर मा के हाथ इतने ज़ोरो से काप रहे थे कि वह बहुत समय तक दिया न जला सकी। सोलिकोव्स्की ने अपना लाइटर जलाया। एक एस० एस० सैनिक और फेनबोग सेर्गेई को पकडे हुए थे।

'उन्ह देखते ही मा राने लगी और उनके पैरो पर गिर गयी। अपने गोल, झुर्रीदार हाथो से मिट्टी का फश रगडने और उनकी ओर रगने लगी। बूढा बसाखी के बल झुका हुआ सिर से पैर तक कापता रहा।

सोलिकोव्स्की ने घर की तलाशी ली। त्युलेनिन के मकान की एक से अधिक बार तलाशी ली जा चुकी थी। सनिक ने अपने पतलून की जेब से एक रस्सी निकाली और वह सेर्गेई के हाथ उसकी पीठ पर ले जाकर बाधने लगा।

– "यह मेरा इकलौता बेटा है उसे छोड दो बाक़ी सब कुछ ले लो गाय, कपडे-लत्ते "

भगवान जाने उसने और क्या क्या कहा   सेर्गेई को उसके लिए इतना दुःख हो रहा था कि वह रोने राने को हो रहा था। वह इस डर से बोल भी न रहा था कि कही उसके आसू न ढुलक पडें।

"ले जाओ इसे," फनबोग ने सैनिक को कहा।

मा ने फेनबोग को रोकने का प्रयत्न किया किन्तु उसने उसे बूट से ठुकरा दिया।

सैनिक ने सेर्गेई को धक्का देकर आगे किया और दरवाजे की ओर बढा। फेनबोग और सोलिकोव्स्की पीछे हो लिये।

"विदा मा, विदा पिताजी," सिर घुमाते हुए सेर्गेई बाला।

मा फेनबोग पर झपटी और अपने हाथा से, जो अब भी मजबूत थे, उसकी पीठ पटपटाने लगी।

"कसाइयो!" वह चीखी, "तुम्हारी सजा मौत नही है   आने दो जरा हमारे सनिको का!"

"अच्छा   ता तू फिर वही जाना चाहती है, अच्छी बात है!" सालिकाव्स्की गरजा और, लडखडाती हुई आवाज मे वूढ की गिडगिडाहट के बावजूद, उसे उसी हालत मे, अर्थात् जिस पुरान कपडे में वह सोया करती थी उसी कपडे मे, घर स बाहर घसीट लाया। वूढ को उसके पास शॉल और कोट फेंक दने का भी मुश्किल मे ही मौका मिल सका।

•

अध्याय २६

सर्गेई को मारा-पीटा गया फिर भी वह चुप रहा। उसके घायल बाजू में बेहद दद हो रहा था, फिर भी उसके मुह स उफ़ तक न निकली। हाथ पीछे बध हाने पर भी जब फेनबाग न उसे ऊपर का

उठाया तो भी वह चुप ही रहा। और जब फेनबोग ने उसके घाव में सलाख घुसेडा तो उसने दात भीच लिये।

उसकी सहनशक्ति बडे गजब की थी। उसे काल-कोठरी मे डाल दिया गया था, किन्तु वह यह जानने के लिए बराबर दीवालो को ठकठकाता रहा कि उसके पडोसी कौन कौन है। वह पजो पर खडा हुआ और यह देखने के लिए छत की एक दरार की जाच करने लगा कि वह उसे चौडा कर सकता है, उसका कोई तख्ता हटा सकता और बाहर कैदखाने के अहाते में निकल सकता है या नही। यदि उसे कोठरी के बाहर निकल जाने का रास्ता मिल जाता तो वह पूरे विश्वास के साथ भाग सकता था। वह बैठा और उन कमरो की खिडकियो का क्रम याद करने की कोशिश करने लगा जिनमें उससे पूछ-ताछ की गयी थी, उसपर जुल्म किया गया था। वह यह याद करने की कोशिश करने लगा कि बरामदे से अहाते को जानेवाले दरवाज़े मे ताला लगा था या नही। काश, उसकी बाह घायल न होती। उसे यह विश्वास नही हो रहा था कि उसकी सारी उम्मीदो पर पानी फिर चुका है। दानेत्स पर तोपखाने की गरज साफ, पालाभरी रात मे स्वय कोठरियो तक मे सुनाई पड रही थी।

सुबह उसका सामना वीत्या लुक्याचेंको से हुआ।

"नही मै यही जानता था कि यह कही पास ही मे रहता था, पर मैंने उसे देखा कभी नही," वीत्या लुक्याचेंको बोला और उसकी गहरी और विनम्र दृष्टि सेर्गेई पर पडी और हट गयी। अकेली उसकी आख ही सजीव-सी लग रही थी। सेर्गेई कुछ न बोला।

सैनिक वीत्या लुक्याचेंको को हटा ले गये और कुछ मिनटो बाद सालिकोव्स्की सेर्गेई की मा को ले आया।

उन्होने ग्यारह बच्चो की मा, उस बूढी मा, के कपडे फाडे और उसे खून से सने हुए तख्त-पोश पर लिटाकर उसपर, बेटे की आखो

के सामने ही, बिजली के तारा का हटर बरसाने लगे। सेर्गेई ने मुह नही फेरा। उसने मा पर हटर गिरते हुए देखे और चुप रह गया।

इसके बाद मा के सामने उसपर मार पडी और वह कुछ न बाला। फेनबाग क्रोध से पागल हो उठा। उसने मेज पर से लोहे की एक सलाख उठायी और सेर्गेई के दूसरे बाजू की काहुनी तोड दी। सर्गेई सफेद पड गया और उसके माथे पर पसीना निकल आया।

"लो, मेरी तो गत बन गयी," वह बोला।

उसी दिन वे उस सारे दल को भी कैदखाने में ले आये जिसे क्रास्नोदोन की खनिक बस्ती में गिरफ्तार किया गया था। उनमे से अधिकाश अब चलने फिरने में भी असमथ हो गये थे। उन्हे हाथ पकडकर घसीटा गया और उन कोठरिया में भर दिया गया जिनमें पहले ही लोग कीडे-मकोडा की तरह भरे हुए थे। कोल्या सुम्स्कोई अभी तक चल फिर सकता था, किन्तु हटरा की चोट से उसकी एक आख निकाल दी गयी थी। जो तोस्या येलिसेयेंको आकाश में उडते हुए कबूतरा को देखते ही खुशी से चीख उठती थी, वही अब केवल पेट के बल लेट सकती थी। अन्दर लाने के पहले उसे लाल लाल अगीठी पर सेका गया था।

जैसे ही कैदी लाये गये कि एक सशस्त्र पुलिस का सिपाही लडकियोवाली कोठरी मे आया और ल्यूबा को ले गया। ल्यूबा तथा दूसरी सभी लडकियो को विश्वास था कि उसे मौत के घाट उतारने के लिए ले जाया जा रहा था। उसने अपनी सहेलिया से विदा ली और बाहर निकल गयी।

किन्तु उसे प्राणदड नही दिया जा रहा था। प्रादेशिक फेल्दकमाडाटुर मेजर-जनरल क्लेर के आदेशा से उसे रोवेन्की ले जाया जा रहा था। फेल्दकमाडाटुर स्वय उससे पूछ-ताछ करना चाहता था।

उस दिन कसकर पाला पड रहा था और खामोशी छायी थी।

कदिया को पासल दिये जाने का दिन था। कुल्हाडी की खटखट, कुए में बाल्टी की ठनठन, राहगीरा के पैरो की आहट, धूप और वफ से प्रकाशित शान्त वायुमडल में दूर दूर तक सुनाई पडती थी। येलिज़वेता अलक्सेयेव्ना और ल्युद्मीला कैदखाने में हमेशा साथ ही साथ पासल ले जाती थी। दोना ने खाने का वडल वनाया, वोलोद्या द्वारा अपने अन्तिम पत्र में मागा गया तकिया लिया और वफ पर वनी हुई पगडडी पर हाकर एक वडे खुले मैदान से होती हुई कदखाने की लम्बी इमारत की ओर चल दी। कदखाने की इमारत की दीवाल सफेद थी और छत पर वफ जमी थी और इस तरह आस-पास के वातावरण से एकाकार हो उठी थी। इमारत का साये में पडनेवाला आधा भाग कुछ नीला पड गया था।

मा और वेटी इतनी दुवली हो गयी थी कि इस समय वे हमेशा से ही अधिक एक जैसी लग रही थी और उनके वहनें होने का आसानी से भ्रम हो सकता था। मा जो इतनी मुह फट्ट और तेज़-तरार हुआ करती थी, इस समय वात वात पर घवरा रही थी।

कैदखाने के वाहर औरतो की भीड लगी हुई थी। उनके पासल अभी तक उनके हाथ में थे और वे कैदखाने की ओर वढने का कोई प्रयत्न न कर रही थी। इससे और उनकी आवाज़ो से येलिज़वेता अलेक्सेयेव्ना और ल्युद्मीला को लगा कि मामला गभीर है। जमन सतरी औरतो की भीड पर कोई ध्यान न देता हुआ हमेशा की तरह ड्योढी के पास खडा था। भेड की खाल की पीली जैकेट पहने हुए एक पुलिस वाला डयाढी की सीढियो की रेलिग पर बैठा था। वह किसी के भी पासल न ले रहा था।

कौन कौन-सी औरत वहा मौजूद थी, यह देखने के लिए येलिज़वेता अलेक्सेयेव्ना और ल्युद्मीला को अपने इद-गिद निगाह डालने की कोई आवश्यकता न रह गयी थी क्योकि वे सब रोज़ ही मिला करती थी।

ज़ेम्नुख़ोव की मा नाटे कद की एक बूढी-सी औरत थी। वह अपन आगे एक बडल और पासल थामे ड्योढ़ी की सीढ़िया के सामने खडी था।

"थोडा-मा खाना ही ले जाओ " वह गिडगिडा रही थी।

"काई ज़रूरत नही। उमे जितने खाने की ज़रूरत हागी हम देंग," विना उसकी ओर देखे पुलिस वाले ने कहा।

"उसने मुझसे एक चादर मागी थी।"

"आज उसे वढिया विस्तरा मिलेगा।"

येलिज़वेता अलेक्सेयेव्ना ड्योढी तक गयी और रखाई से पूछने लगी-

"तुम हमारे पासल क्यो नही ले रहे हो?"

पुलिस वाले ने उसकी ओर काई ध्यान न दिया।

"हमें कोई जल्दी नही। हम यहा तव तक रहेगी जव तक कोई हमें जवाव देने नही आता," येलिज़वेता अलेक्सेयेव्ना ने औरतो की भीड पर निगाह डालते हुए कहा।

अत वे वही खडी रही। आखिर सहसा उन्ह अन्दर, कदखान के अहाते में ढेरो लोगो के कदमो की आहट और किसी के फाटक खालन की आवाज़ सुनाई दी। औरते ऐसे मौको पर कोठरिया के अहाते के सामने पडनेवाली खिडकियो पर निगाह डालने से न चूक्ती थी। कभी कभी उनकी निगाह कोठरियो मे अपने वेटे-वेटियो पर भी पड जाती थी। औरता की भीड फाटक की वायी ओर दौड पडी। तभी सर्जेंट वोल्मन और उसका एक दस्ता वाहर निकला और औरतो को तितर वितर करन लगा।

औरते इधर उधर हट गयी, पर फिर लौट आयी। बहुत-सी तो चिल्ला चिल्लाकर रोने भी लगी।

येलिज़वेता अलेक्सेयेव्ना और ल्युद्मीला कुछ दूर हटी और चुपचाप सब कुछ देखती रही।

"ग्राज उह मौत के घाट उतारा जायेगा," ल्युदमीला बोली। "मैं तो नावा से यही मनाती हू कि वह ग्रडिग रहे, इन कुत्ता के ग्रागे काप नहा, उनके मुह पर थूके," यलिज़वेता ग्रसरोयेव्ना बोली। उसकी ग्रावाज घुट रही थी ग्रौर उसकी ग्राखें भयानक रूप से चमक रही थी।

इस बीच उनके बच्चे ग्रपने जीवन की सबसे ग्रन्तिम ग्रौर सब से सकटपूर्ण परीक्षा म होकर गुजर रहे थे।

वान्या जेम्नुख़ोव मिस्टर बृक्नेर के ग्रागे लडखडा रहा था। उसके चेहरे से खून टपक रहा था। उसका सिर ग्रगहाया की तरह एक ग्रोर झुक गया था, किन्तु वह उसे ऊपर उठाये रखने की पूरी कोशिश कर रहा था ग्रौर ग्राखिर वह ग्रपने इस प्रयत्न में सफल हुग्रा, ग्रौर चार हफ्ता की खामोशी के बाद पहली बार बोला—

"तुम नही कर सकते, नहा कर सकते न?" वह बोला, "तुम नही कर सकते! तुमने कितने ही देशा को हथिया लिया है तुमने इज्जत ग्रौर सचाई को ताक पर रख दिया है फिर भी तुम नही कर सकते तुम इतने मजबूत नही हो!"

ग्रौर वह उन्हा के सामने हस पडा।

उस दिन रात को देर मे दो जमन सिपाही ऊल्या को उसकी कोठरी म लाये। उसका चेहरा पीला पड गया था ग्रौर उसकी लटे फश पर लुढक रही थी। उन्होंने उसे दीवाल पर पटक दिया। वह कराह उठी ग्रौर करवट लेकर पट के बल लेट गयी।

"प्यारी लील्या," उसने बडी इवानीखिना से कहा, "मेरी पीठ पर स ब्लाउज उठा दो—बडी जलन है।"

लील्या स्वय मुश्किल से ही हिल सकती थी, पर उसने ग्राखिर तक, नस की तरह, दूसरा की-परिचर्या की। उसने खून स सना हुग्रा ब्लाउज

धीरे-से उलट दिया और तभी भय से सिहर उठी और रोने लगी—ऊल्या की पीठ पर खून से सना हुआ पाच कोनावाला एक सितारा जगमगा रहा था।

क्रास्नोदान के लोग उस रात को तब तक न भूलेंगे जब तक कि इस पीढ़ी का आखिरी नामलेवा कब्र मे नही पहुच जाता। डूबता हुआ चाद तिरछा लटका हुआ था। यह असाधारण रूप से स्वच्छ था, जगमगा रहा था। कोई भी व्यक्ति खुली स्तेपी मे अपने इद गिद मीलो दूर तक देख सकता था। पाला हड्डी मे चुभता-सा लग रहा था। उत्तर में दोनेत्स नदी पर रोशनी की जगमगाहट दिखाई पड रही थी और युद्ध की गरज, कभी तेज और कभी मन्द पडती हुई, सुनाई पड रही थी।

कैदियो के हित-दोस्तो, सगे-सबधियो की उस रात पलके तक न लगी थी। व लोग भी जग रहे थे जिनका उनसे कोई रिश्ता न था। सभी जानते थे कि उस रात 'तरुण गाड' के सदस्यो को प्राणदड दिया जायेगा। वे अपने दियो के आस-पास, अथवा घुप अधेरे में, अपने सद कमरो में बठे हुए थे। किसी किसी वक्त उनमे से कोई बाहर निकल जाता और बडी देर तक बाहर खडा चीख पुकार, लारियो की गडगडाहट या बन्दूकें दगने की आवाजें सुना करता।

कोठरियो में भी कोई न सोया था, सिवा उन लोगो के जिन्हे इतनी मार पडी थी कि बेहोश हो गये थे। आखिर में जुल्म और सख्ती जिन 'तरुण गाड' के सदस्यो पर की गयी थी, उन्होने बुरगोमास्टर स्तात्सको को कैदखाने मे आते हुए देख लिया था। सभी जानते थे कि कदियो को मौत के घाट उतारने से पहले बुरगोमास्टर कैदखाने में आता था क्योकि मौत के दड के लिए उसके हस्ताक्षर की जरूरत पडती थी।

दोनेत्स मे होकर आती हुई युद्ध ध्वनि कोठरियो में प्रवेश कर रही थी। करवट के बल आधी लेटी हुई ऊल्या ने सिर दीवाल के सहारे रखे

हुए, बगल वाली कोठरी मे छोकरा को, दीवाल ठकठकाकर यह खबर दी—

"सुन रहे हो, लडको, सुन रहे हो न? हिम्मत रखो हमारे आदमी आ रहे है। जो होना हो, हो हमारे आदमी आ रहे हैं "

गलियारे मे फौजी बूटो की पटापट सुनाई दी। दरवाज़े फटाक से खुल रहे थे। कदियो को गलियारे में निकाला गया और कदखाने के अहाते के बजाय, मुख्य द्वारा से होकर सडक पर ले जाया गया। अपने अपने ओवरकोट या गम जैकेटे पहनकर बैठी हुई लडकिया गम टोपिया पहनने और शॉल बाधने में एक दूसरे की मदद करने लगी। आन्ना सोपावा फश पर निश्चेष्ट पडी थी। लील्या ने किसी प्रकार उसे कोट पहनाया। शूरा दुब्रोविना ने अपनी प्यारी सहेली माया की सहायता की। कुछ लडकियो ने अपनी अन्तिम टिप्पणिया घसीटी और अपने उतारे हुए कपडो मे खोस दी।

ऊल्या को आखिरी पासल में अन्दर पहनने के नये कपडे भेजे गये थे। वह अपने मैले कपडो का बडल बनाने लगी कि सहसा उसकी आखो मे आसू भर आये। वह उन्ह रोक न सकी और अपनी सिसकिया पर काबू पाने के लिए अपना मुह खून से सने हुए कपडा में छिपाकर कई क्षणा तक निश्चेष्ट बैठी रही।

उन्ह चादनी में नहाये खुले मैदान में लाकर दो लारियो मे भरा जाने लगा। सबसे पहले वे स्तखोविच को लाये और उसे चटके से लारी मे धकेल दिया। इस समय वह पूरी तरह असहाय और बेसुध हो रहा था। 'तरुण गाड' के बहुतन्से सदस्य ता चलने तक से मजबूर हो रहे थे। उन्हाने अनातोली पोपोव को बाहर निकाला। उसका एक पैर काट डाला गया था। जेन्या शेपेल्योव और रगोजिन वीत्या पेत्रोव को साधे रहे। उसकी आखें निकाल दी गयी थी। वोलोद्या ओस्मूखिन का दाहिना हाथ काट डाला गया था, फिर भी वह बिना किसी की सहायता से चल फिर सकता था। तोल्या ओर्लोव और वीत्या लुक्याचेंको वान्या जेम्नुखोव को साधे रहे।

उनके पीछे घास के तिनके की तरह हिलता हुआ सेर्गेई त्युलेनिन चला आ रहा था।

लडकिया और लडको को अलग अलग लारिया में भरा गया।

सैनिको ने लारिया के तख्ते चढा दिये और खुद भी उनके ऊपर से कूदकर ठसमठस भरी लारियो में चढ गये। एन० सी० ओ० फेनबाग पहली लारी के ड्राइवर के पास बैठ गया। दोनो लारिया सडक से होती हुई खुले मैदान को पार करती चली गयी और बच्चो के अस्पताल और वोरोशीलोव स्कूल से होकर गुजर गया। पहली लारी मे लडकिया भरी थी। ऊल्या, साशा बोन्दरेवा और लील्या गाने लगी

बेरहम हमलावरो ने किस तरह तुमको सताया,

अत में तुम ने वीर-गति पायी

दूसरी लडकियो ने भी सुर मे सुर मिलाये। पीछे की लारी में बैठे हुए युवक भी गा उठे। उनके सुर शान्त, पालेदार हवा मे दूर तक गूजने लगे।

अपनी बायी ओर का अन्तिम मकान छोडती हुई, लारिया खान न० ५ को जानेवाली सडक पर हो ली।

सेर्गेई लारी की पिछाडी से सटा हुआ, मानो पालेदार हवा को प्यासे की तरह पिये जा रहा था। वह सडक पीछे रह गयी जो नवनिर्मित गाव की ओर जाती थी। शीघ्र ही लारिया खड्ड को भी पार करनेवाली थी। नही, सेर्गेई जानता था कि वह अपनी योजना पूरी करने में बडा कमजोर था। किन्तु अनातोली कोवल्योव के बदन में अब भी ताक़त थी। इसी लिए उसके हाथ पीठ पर बधे थे। वह सेर्गेई के सामने फर्श के तख्तो पर झुका हुआ था। सेर्गेई ने उसे सिर लगाकर कुरेदा। कोवल्योव ने अपने इर्द गिर्द देखा।

"अनातोली, हम खड्ड पर पहुच ही रहे है," सेर्गेई ने फुसफुसाकर कहा और लारी की एक तरफ़ देखते हुए सिर हिला दिया।

मनातानी न पीछे रगा और अपने बंधे हुए हाथा रा झलारने लगा। सेर्गेई न अपने दाता से गाठ खालना शुरू किया। वह इतना कमजार था कि लारी के सहारे दम लेन के लिए उस कई बार रुकना पडा। उसके माथे स पसीना बहन लगा। किन्तु वह उसी तरह जुटा रहा माना खुद अपनी ही आजादी के लिए संघर्ष कर रहा हा। आखिर गाठ खुल गयी। मनातानी अपने हाथ पीछे ही रखे रहा, हा उन्ह थाडा हिला-डुला जरूर लिया।

प्रतिशोधी उठ रहा कि ममता नही जानता
शक्तिवान है वह तुममे भी औ' मुझसे भी!

लडके-लडकिया गा रह थे।

लारिया खड्ड में उतरने लगी थी। सामने की लारी दूसरी ग्रार चढने ही वाली थी। दूसरी भी घरघराती और फिसलती हुई चढने लगी थी। मनाताली लारी के पीछे तख्त पर खडा हा गया। सहसा वह पलक मारते कूदा और बर्फ का रौंदता हुआ खड्ड पार करता हुआ भागने लगा।

एक क्षण के लिए वहा खलबली-सी मच गयी किन्तु तब तक लारिया ढाल पर चढ चुकी थी। मनाताली निगाहा से दूर हो चुका था। सनिक इस डर से लारी स न कूदे कि उन्ह दूसरा क भाग जाने का भय था। वे लारी में से ही अलल-टप्पू गालिया बरसाने लगे। फेनवाग ने गालियो की आवाज़ सुनी, लारी राकी और बाहर निकल पडा। दोना ही लारिया एक दूसरे के पास आ गयी। फेनवाग अपनी जनानी आवाज मे कोसने लगा।

"भाग गया- भाग गया " सेर्गेई जैसे विजय के उल्लास में चिल्ला उठा। फिर वह क्रूर से क्रूर शब्दा म गालिया दन लगा, किन्तु ऐसे मौके पर सेर्गेई के मुह स निकलती हुई गालिया भी पवित्र सकल्प जैसी लग रही थी।

खान न० ५ का इजनघर अब दिखाई पडने लगा था। एक विस्फोट ने उसे नीचे से नष्ट कर दिया था, फलत वह एक ओर को तिरछा हो गया था।

तरुण लोग अन्तराष्ट्रीय गीत गाने लगे।

लारिया मे से निकालकर उन्ह खानो के पास बने गुसलखाने की सद इमारत मे ले जाकर ब्रुक्नेर, वाल्डेर और स्तात्सेका के आने तक रखा गया। सिपाही उन लोगो के कपडे और जूते उतारने लगे जिनके कपडे और जूते अच्छी हालत में थे।

'तरुण गार्ड' के सदस्यो को अन्तिम रूप से विदाई अभिवादन करने का अवसर दिया गया। क्लावा कावल्योवा वान्या के बगल मे बठी हुई अपना हाथ बराबर उसके माथे पर रखे रही। वह अन्त तक उसके साथ रही।

उन्ह छोटे छोटे दलो में ले जाकर, एक एक कर खान के गहरे गड्ढे मे ढकेल दिया गया। जो लोग बोलने मे समथ थे उनके पास दुनिया को वह पैग़ाम दने का समय मिल गया था, जो वह उसके लिए छोड जाना चाहते थे।

जमनो को भय था कि कई दजन लोगो के एक साथ गड्ढे में ढकेले जाने की वजह से शायद सबके सब न मरे, अत उन्होने उनपर कोयले के दो वैगन ऊपर से झोक दिये। किन्तु आह-कराह कई दिन बाद तक भी सुनाई पडती रही।

हाथो में हथकडी पहने फिलीप्प पेत्रोविच ल्यूतिकोव और आलेग कोशेवोई फेल्दकमाडाटुर क्लेर के सामने खडे थे। जब तक वे रावेन्की में गिरफ्तार रहे तब तक यह न जान सके कि वे एक ही क़दखाने में हैं। किन्तु आज सुबह उन्ह साथ साथ लाया और बाधा गया और उनसे इस

भाशा में पूछ-ताछ की गयी कि वे सारे सुफ़िया सघटन का—अकेले जिले ही में नहीं, वरन प्रदेश भर में—पर्दाफ़ाश करेंगे।

उन्ह क्यो बाधा गया था? जब तक उन्ह बाधा न जाता था तब तक जमन उनसे डरा करते थे। दुश्मन भी यही दिखाना चाहता था कि इन दोना न सुफ़िया सघटन में जा जो काम किया है वह उससे अवगत है।

ल्यूतिकाव के सिर के सफेद बाल खून स सने थे, खून जमकर सूख चुका था। उसके फटे हुए कपडे उसके विशाल शरीर के घावो मे चिपक गये थे और उसकी एक एक हरकत उसे असह्य पीडा पहुचा रही थी। किन्तु उसने किसी भी प्रकार इस पीडा का आभास न हाने दिया। निमम अत्याचारा और भूख से उसका शरीर सूख गया था। उसके चेहरे की जो सुदृढ रेखाए उसकी जवानी में इतनी स्पष्ट थी कि उसकी महान मानस शक्तिया का परिचय देती थी वही इस समय बहुत अधिक गहरा गयी थी। उसकी आखें हमेशा की तरह शान्त और कठोर थी।

आलेग की दाहिनी बाह ताड दी गयी थी। अब वह एक आर लटक आयी थी। उसके चेहरे में ता काई खास तबदीली नही आयी थी, हा उसकी कनपटी के बाल जरूर सफेद पड गये थे। गहरी सुनहरी बरौनिया के नीचे की उसकी बडी बडी आखें पहल से अधिक स्वच्छ थी।

इस प्रकार वे फेल्दकमाडाटुर क्लेर के सामने खडे रहे। दोना ही जनता के नेता थे—एक बूढा था दूसरा जवान।

फेल्दकमाडाटुर क्लेर लागा की जान ले लेकर बडा कठोर हा गया था। इसके अतिरिक्त कुछ करने की उस में योग्यता भी नही थी। उसने उनपर बडे निमम अत्याचार किये, किन्तु उन्ह तो जैसे किसी चीज़ की भी अनुभूति न होती थी—उनकी आत्माए उन अनन्त ऊचाइया तक पहुच चुकी थी, जहा तक मानव की महान सृजनशील आत्मा ही पहुच सकती है।

इसके वाद दोनो का अलग अलग किया गया और ल्यूतिकाव को क्रास्नोदोन जेल मे भेज दिया गया। केन्द्रीय कारखाने के मामले की जाच अभी पूरी न हुई थी।

खुफिया रूप से काम करनेवाले साथी वन्दियों की मदद करने म असमथ थे, कारण, जेल पर भारी पहरा रहता था और नगर मे दुश्मन की भागती हुई फौजो के सिपाही भरे पडे थे।

फिलीप्प पेत्रोविच ल्यूतिकाव, निकालाई वराकोव और दूसरे साथिया का वही अजाम हुआ जो 'तरुण गाड' के सदस्या का हुआ था—उह भी खान न० ५ के गहरे गडढे मे ढकेला गया।

ओलेग कोशेवोई का ३१ जनवरी की दोपहर को रोवेन्की में गाली मारी गयी। उसका शरीर, उसी दिन गोली से मौत के घाट उतारे गये अय साथियो की लाशा के साथ ही एक ही गडढे में दफना दिया गया।

उन्हाने ७ फवरी तक ल्यूबा शेव्त्सोवा पर इस प्रयास मे अत्याचार किया कि किसी प्रकार उसस कोड और वायरलेस ट्रान्समिटर मिल जाय। गोली से मारे जाने के पहले किसी प्रकार उसने अपनी मा का यह पुर्ज़ा भेज दिया था—

"प्रणाम मा, तुम्हारी वेटी ल्यूवा धरती मा की गोद मे समान जा रही है।"

जिस समय दुश्मन उसे गोली मारने के लिए जा रहे थे उस समय वह अपना एक प्रिय गाना गा रही थी—

'वहा मास्को के उन विस्तृत मैदाना में'

एस० एस० राटेनफ्यूरर उसे गोली से उडाने लिये जा रहा था। वह चाहता था कि ल्यूवा झुककर गाली गदन के पिछले भाग पर खाये। किन्तु उसने घुटनो पर झुकने से इनकार किया और गोली चेहरे पर खायी।

अध्याय ३०

वाया तुर्केनिच और ओलेग के इस्तेमाल के लिए पोलीना गेग्रागियेव्ना को पता दते समय ल्यूतिकोव ने उसे यह भी समझा दिया था कि वह यह वात उन लोगा को न वताये कि उस पते पर कौन रहता है। वह जानता था कि मार्फा कोनियेंको, जिसके पास ल्यूतिकोव उन दोना को भेज रहा था, प्रोत्सेको अथवा उसकी पत्नी को उनके आने की सूचना दे देगी। फिर वे अपने आप ही समझ लगे कि इन 'तरुण गाड' के नेताग्रा का इस्तेमाल कैसे किया जाय।

इस सबसे अधिक गुप्त पते को ग्रालेग और तुर्केनिच का वता देने का ल्यूतिकोव का निश्चय इस वात का प्रमाण था कि उसे इन दोना में कितना विश्वास था, कि वह उनकी कितनी कद्र करता था, कि उसे उनकी कितनी चिन्ता थी।

यद्यपि पोलीना गेग्रोगियेव्ना ने ग्रोलेग को यह वात न वतायी थी कि ल्यूतिकोव उसे और वान्या तुर्केनिच को कहा भेज रहा है, फिर भी वान्या ने यह ज़रूर समझ लिया था, कि उन्हे छापामारा के पास भेजा जा रहा है।

'तरुण गाड' दल के सदस्या मे सिर्फ वह और मोश्कोव ही प्रौढ थे। वान्या तुर्केनिच और उसके साथियो के लिए अपने मित्रा की गिरफ्तारी एक वहुत वडी चोट थी। उसकी सारी मानसिक शक्तिया अकेले इसी एक समस्या पर केंद्रित हो गयी कि उन लोगा को किस प्रकार आज़ाद कराया जाय। किन्तु, अपने साथिया से भिन्न, तुर्केनिच ने घटनाग्रा का वास्तविक दृष्टिकोण से देखा था। वह अपन दास्ता की मदद करने के विचार को व्यावहारिक रूप से समझ रहा था।

अपने मित्रो को छुडाने का सबसे छोटा रास्ता छापामारो का रास्ता था। तुकनिच जानता था कि सोवियत सेनाए वोरोशीलोवग्राद प्रदेश में घुस गयी है और अब आगे बढ रही ह, कि क्रास्नोदोन मे सशस्त्र विद्रोह की तैयारिया हो रही है। उसे इस बात में जरा भी सन्देह न था कि सैनिक अनुभव होने के नाते उसे भी एक दस्ता, अथवा दस्ता तैयार करने का मौका दिया जायेगा। उसने बिना किसी सकोच के उस पते का इस्तेमाल किया जो ओलेग ने उसे दे रखा था।

उसने यह समझ लिया था कि सम्भवत- समस्त सशस्त्र पुलिस प्रशासन और पुलिस के थाने उसके नाम से परिचित थे, इसी लिए उसन अपने साथ किसी प्रकार का परिचय-पत्र रखने का खतरा न उठाया। उसके पास ऐसे भी कोई कागजात न थे जिनमे उसका कुछ और ही नाम टका होता, और ऐसे कागजात प्राप्त करन के लिए समय भी न था। वह अपन साथ किसी प्रकार के कागज़ात लिये बिना उत्तर की ओर चल पडा। बचपन से ही उसकी बायी कलाई पर उसके नाम का प्रथमाक्षर गोदा हुआ था अतएव उसने उसी नाम से चलने का निश्चय किया था, पर उसने अपना उपनाम त्रपीविन रख लिया।

वह कठिन परिस्थिति मे पड गया था। अपनी सूरत शक्ल अथवा उम्र से वह ऐसा आदमी भी न लगता था, जो जमन पक्तिया के पीछ पीछे, बिना किसी कागज़-पत्र अथवा काम धधे के और खास कर मार्च के बिलकुल निकट, घूमते रहते ह। उसने सोचा था कि अगर वह गेस्टापो या पुलिस के हाथा में पड जायेगा तो उनसे यही सफाई देगा कि वह रोस्ताव-प्रदेश स्थित ओल्खोव रोग स लाल सिपाहिया के डर से उस समय भागा था जब उनके टैंक उसकी खेतिहर बस्ती में घुस आये थे। इसी लिए उसे अपने साथ कागज़-पत्र लाने का मौका न मिला था—ऐसी सफाई से उसकी जान बचने स अधिक कुछ भी न हो सकता था। लकिन इसका

नतीजा यह होगा कि उसे जर्मन सेनाओं के पीछे पीछे काम करना पड़ेगा या फिर जर्मनी भेज दिया जायेगा।

वान्या, उन गावों या पुरवों को छोड़ता हुआ, जहा उसे पुलिस के हाथों पड़ जाने का सन्देह रहता था, बराबर रात दिन चलता रहा। वह सड़कों पर, या स्तेपी को पार करता हुआ, हमेशा वही रास्ता पकड़ता जहा वह अपने को अधिक से अधिक सुरक्षित समझ सकता था। जब उसे यह सन्देह होता कि लोगों का ध्यान उसकी ओर जाने का डर है तो वह दिन में कहीं पड़ जाता और रात भर चला करता। खास कर जब कभी वह पड़ा रहता और पेट खाली होता तो उसके पैर प्राय जम जाया करते। मानसिक कष्टों ने उसकी आत्मा तक को फौलाद बना दिया था। शरीर से वह ऐसे किसी भी जवान रूसी कामगार की तरह कठोर लग रहा था जो देशभक्त युद्ध के अनुभवों से होकर गुजरा हो।

इस प्रकार वह मार्फा कोनियेंको के घर पहुच गया।

गाव भर में दुश्मनों की टुकड़िया रह रही थी – उसके अपने मकान में भी और दवीदोवो, मकाराव यार आदि पास-पड़ोस की खेतिहर बस्तियों में भी। उत्तरी दोनेत्स के दोनों तटों के साथ साथ प्रतिरक्षा की मजबूत चौकिया बना दी गयी थी। ये चौकिया वोरोशीलोवग्राद प्रदेश के उत्तरी और दक्षिणी भाग के बीच इतनी प्रभावकर विभाजन रेखा की तरह थी कि मार्फा और प्रोत्सेंको के बीच सम्पर्क स्थापित करना प्राय असम्भव हो गया था। अगर सम्पर्क सम्भव भी होता तो भी अब उसकी कोई आवश्यकता न रह गयी थी। वोरोशीलोवग्राद प्रदेश के उत्तरी जिलों के छापामार दस्ते लाल सेना की यूनिटों के निकट सम्पर्क में काम कर रहे थे और उन यूनिटों की कमान में लड़ रहे थे न कि प्रोत्सेंको की मातहती में। दक्षिणी जिलों के दस्ते फरवरी के मध्य में ही मोर्चे के प्रसार क्षेत्र के अन्दर आ सके थे। वे अब परिस्थिति के अनुसार काम कर रहे थे। प्रोत्सेंको उनसे बीसियों मील

दूर था, अतएव उन परिस्थितियो को समझने-बूझने में असमर्थ था और इसी लिए छापामार दस्ता की कारवाइया का सचालन नही कर सकता था।

प्रात्सका बेलावोद्स्क दस्ते के साथ सबद्ध था। इस दस्ते ने गोरादीस्चो गाव का अपना अड्डा त्याग दिया था क्योकि गाव पर अब जर्मनो का अधिकार था। दस्ते का कोई स्थायी अड्डा न था और वह सोवियत कमान के निर्देशो के अनुसार जर्मन सेना के पृष्ठ भाग में काम कर रहा था। मार्फा का प्रात्सेको अथवा उसके पति से कोई सम्पर्क न रह गया था। उसका कोर्नेई तीखोनोविच से या मित्याकिस्काया दस्ते के अन्य किसी भी व्यक्ति से कोई सम्पर्क न रह गया था। इस दस्ते ने स्वय अपना अड्डा छोड दिया था—मित्याकिस्काया जिला जर्मनो के हाथ में था जो वहा किलेबन्दी कर रहे थे। येकतेरीना पाव्लोव्ना प्रात्सेको पिछले कुछ समय से वोरोशीलोवग्राद में रह रही थी और उसके साथ किसी भी प्रकार का सम्पर्क सभव न था। ऐसे ही समय वान्या तुर्केनिच, मार्फा के घर पहुचा।

वान्या और मार्फा का एक दूसरे से मिलना इसी लिए सम्भव हो सका कि वान्या ने पूरे साहस और सूझ-बूझ से काम लिया था। फिर यह भी खुशकिस्मती ही थी कि मार्फा ने उसपर, उसके शब्दो पर, विश्वास किया था, अगर्चे उसके पास अपने कोई परिचय-पत्र न थे और जो कुछ वह कह रहा था उसकी सच्चाई का पता चलाने का मार्फा के पास कोई साधन भी न था। मार्फा ने शुरू में उसकी शान्त, गभीर आखो की ओर कृत्रिम उदासीनता के भाव से देखा। उसके थके हुए और झुर्रियो से भरे दुबले-पतले चेहरे को देखते ही वडी प्रभावित हो उठी थी। झुर्रियो से उसके चरित्र की दृढता लक्षित होती थी। धीरे धीरे उसे वान्या की सैनिक चाल-ढाल और उसके विनम्र व्यवहार का भी परिचय मिला और उसने, तुरन्त और बिना गल्ती किये, उसपर उसी तरह विश्वास किया जैसे केवल स्लाव महिला ही कर सकती है। बेशक उसने

वाया को तुरन्त ही यह नही मालूम होने दिया कि वह उसपर भरोसा करती है, लेकिन फिर एक और चमत्कारपूण घटना घटी।

मार्फा के यह स्वीकार कर लेने पर कि वही मार्फा कानियेंका है, वान्या को गार्देई कानियेंका का नाम याद आ गया, जिसे युद्ध-बन्दी कैम्प से छुड़ाने से सम्बधित सारी दास्तान उसे वान्या ज़ेम्नुगाव और उन दूसरे लोगा ने बतायी थी जिन्होंने उस कारवाई में भाग लिया था। उसने मार्फा स पूछा, "क्या गार्देई आपका कोई रिश्तेदार है?"

"मान लो है तो क्या?" वह बोली और सहसा उसकी युवा आखा में एक चमक दौड गयी।

"उसे हमारे ही 'तरुण गाड' के छोकरो ने छुडाया था।" और उसने उसे सारी दास्तान सुना दी।

उसके पति ने उसे यह कहानी कई बार सुनायी थी। जिन छोकरों ने उसके पति को मुक्त कराया था उनके प्रति वह नारी-सुलभ और ममताभरा आभार कभी न प्रकट कर सकी थी, अब वही आभार उसने अकेले वाया तुर्कैनिच के आगे प्रदर्शित किया—शब्दा या मुद्राओ से नही, बल्कि उसे गोरादीश्ची के अपने सबधियो का पता देकर।

"वहा से मार्चा बिलकुल निकट है। वे लोग तुम्हे पक्तिया पार करने के लिए सारी जरूरी मदद देंगे," उसने वाया से कहा।

वान्या न हामी भरी। वह पक्तिया नही पार करना चाहता था किन्तु उन छापामारा से मिलना चाहता था जो सोवियत सेनाओ की मदद से अपनी कारवाइया मे लगे थे। मार्फा उस जिस क्षेत्र में भेज रही थी वहा वह उन छापामारा से शीघ्रता से मिल सकता था।

उन्हाने ये सारी बाते गाव में नही, एक पहाडी के पीछे खुले हुए स्तेपी में की। धुधलका बढ रहा था। मार्फा ने वादा किया कि वह किसी ऐसे आदमी को भेज देगी, जो उसे रात में दोनेत्स के पार ले जायेगा। वाया

के सकोच और आत्म गौरव ने उसे खाने के लिए मार्फा के आगे हाथ न फैलाने दिया। किन्तु मार्फा ऐसी चीजें भूलनेवाली औरत न थी। नाटे कद का एक बूढा–वही जिसने इवान प्रात्सको से कपडे बदल लिये थे–अपनी टोपी मे सुअर की कुछ चर्वी और कुछ सूखी हुई रोटिया ले आया था। उस बूढे बातूनी ने फुसफुसाते हुए वान्या को समझाया "मैं तुम्हे दानेत्स के पास न ले जाऊगा, क्योकि इस समय नदी पार कर सकने की हिम्मत रखनेवाला व्यक्ति अभी पैदा नही हुआ, और वह भी ऐसा जो अपने साथ किसी छापामार को ले जाये। पर मैं तुम्हे वह रास्ता जरूर दिखा दूगा जहा नदी पार करना सबसे आसान है और जहा से उसे कम से कम समय में पार किया जा सकता है।"

वान्या तुर्केनिच ने दानेत्स पार की। कुछ दिना बाद वह चूगिका गाव पहुचा जो गारोदीश्ची के दक्षिण मे कोई बीस मील दूर अलग-थलग क़स्बा था।

अब वह एक ऐसे क्षेत्र में था, जहा जगह जगह दुश्मन की किलेबन्दिया थी। उसने वहा बडे पैमाने पर जर्मन सेनाओ का आना-जाना देखा वहा के रहने-बसनेवालो से उसने पता चला लिया था कि चूगिका में एक छोटी-सी पुलिस चौकी थी और जर्मन और रूमानियाई दस्ते प्राय गाव से होकर गुजरा करते थे। उसे यह भी बताया गया था कि चूगिका, देकूल और कमीश्नाया नदियो के सगम के समीप, बसे हुए बोलोशिनो गाव से सबसे नजदीक था। सोवियत सेनाओ ने बोलोशिनो पर अधिकार कर लिया था। फलत वान्या ने किसी भी दशा में चूगिका पहुचने का निश्चय किया क्योकि उसका ख्याल था कि वहा के कुछ न कुछ ग्रामवासी तो सोवियत सेनाओ के सम्पर्क में होगे ही।

किन्तु इस मामले में वह बदकिस्मत साबित हुआ–उसे गाव के ठीक बाहर पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। उसे ग्राम परिषद के भवन में ले

जाया गया। वहा जमनो के लिए पुलिस वालो का काम करनेवाले रूसी नशे में चूर इतना बुरा व्यवहार कर रहे थे कि उसे बयान नही किया जा सकता।

वान्या के सारे कपडे उतार डाले गये, उसके हाथ-पैर बाधे गये और उसे एक तहखाने में डाल दिया गया जिसकी दीवाले सर्दी से बेहद ठण्डी हो रही थी। वह अपनी यात्रा, तरह तरह की यन्त्रणाओ और इस अन्तिम घटना से बुरी तरह पस्त हो चुका था और सर्दी से काप रहा था। उस दुर्गन्धपूर्ण तहखाने के मिट्टी के फश पर रेग रेगकर उसे एक जगह गन्दा सूखा कचरा पडा मिला और वह उसी पर पडकर सो गया।

उसकी नीद एक कार की आवाज़ से टूटी जो पीछे से बैक फाइर कर रही थी। उसे नीद मे ऐसा लग रहा था मानो बन्दूक से गोलिया छूट रही हो। इसके ठीक बाद उसे कई भारी भारी कारो के इजनो की आवाजें सुनाई दी। कार बाहर सडक पर खडी हो गयी। तुरन्त ही तहखाने की छत हिलने लगी, दरवाजा खुला और सर्दी की सुबह के प्रकाश मे वान्या ने देखा कि सोवियत सैनिक गहरे रग की मोटी जैकेटें पहने हुए, हाथो में टामी-गनें उठाये, कोठरी में प्रवेश कर रहे है। आगे आगे एक सर्जेंट था। उसने अपनी टार्च की रोशनी वान्या पर फेकी।

वान्या को उस सोवियत गश्ती टुकडी ने मुक्त किया, जो जमनो की तीन अधिकृत, सशस्त्र कारो पर, गाव मे घुस आयी थी। उसने वहा के सभी पुलिस वालो को गिरफ्तार कर उन्हे बाध लिया, इनके अलावा गाव में तैनात जमन सनिको की भी एक कम्पनी थी—एक अफसर, एक रसोइया, और पाच सैनिक। रसोइये ने खाना बनाना शुरू ही किया था कि जमन कार आ गयी। वह जरा भी न घबराया बल्कि एटेंशन होकर खडा हो गया, उसके ख्याल से कि शायद कारो मे चीफ अफसर आये हो। उसके गिरफ्तार होने के कुछ मिनट बाद उसने बडी खुशी से वह जगह

दिखायी जहा कम्पनी कमाडर सो रहा था। उसके पीछे पीछे सावियत टामी गनर थे और वह, सीका के वने वनावटी फेल्ट के वडे वडे वूटा में, आगे वढ रहा था। हा कभी कभी चतुरता से आख मारता और आठा पर उगली रखता हुआ कहता "श श श "

गश्ती यूनिट को पट्रोल की कमी के कारण अपनी मुख्य यूनिट में लौटना था। इस यूनिट के कमाडर, सीनियर लेफ्टिनेंट ने यह सुझाव रखा कि तुकनिच उन्ही के साथ जाय। किन्तु वाया ने यह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। स्थानीय लोग कार को घेरे खडे थे और लाल सेना को धन्यवाद देते हुए उनसे यह अनुरोध कर रहे थे कि वे गाव छोडकर न जाय। यही उनकी और तुर्कोनिच की वातचीत चल रही थी।

और इधर यह अजीव आदमी था कि इस जगह को छोडकर कही नही जाना चाहता था लोग? यहा वहुत लोग हैं। उसे जिन लोगो की जरूरत है, वे सव उसे यही मिल जायेंगे और हथियार? वस, शुरू शुरू में उन्हे जमन कम्पनी से मिली हुई वन्दूकें भर दे दो, वाकी का वे स्वय इन्तज़ाम कर लगे। केवल क्मीस्नाया में काम करनेवाली सावियत यूनिटो से उनका सम्पक स्थापित करवा दो

यह इवान ऋपीविन के उस छापामार दस्ते का आरभ मात्र था जिस ने वाद में सारे इलाके में वडा नाम पाया था। एक सप्ताह वाद इस दस्ते में काई चालीस व्यक्ति हो गये। उनके पास तोपखाने को छाडकर वाकी सभी किस्म के आधुनिकतम हथियार थे। उसने अपना अड्डा उस जगह वनाया था जो कभी अलेक्सान्द्रोवो गाव का डेरी फाम हुआ करता था और उस जिले की रक्षा करता था जिसके अन्तगत जमन मार्चे के निकटतम पृष्ठभाग मे, कई गाव आते थे। जमन उस इलाके से इवान ऋपीविन के दस्ते को कभी नष्ट न कर सके। अन्तत सोवियत सेनाए भी वहा आ गयी।

फिर भी वाया 'तरुण गाड' का न मुक्त कर सका। इस भाग का

मोर्चा २० जनवरी तक निश्चेष्ट-सा बना रहा। सोवियत सेनाए वही फवरी में उत्तरी दानेत्स का पार कर सकी और उसके किनार के एक बडे-से क्षेत्र पर फल गयी। किन्तु सबसे पहले उन यूनिटा ने नदी पार की थी, जो नदी के ऊपरी दूरस्थ क्षेत्रो—ग्रास्नी लिमान, इज्यूम और वलक्लेया में काय कर रही थी।

वान्या के अधिकारा 'तरुण गाड' के साथिया को कितनी निममता के साथ मौत के घाट उतारा गया या, इसके सबध में वान्या कुछ भी न जानता था। क्रास्नादोन की ओर सेनाए बढने में जितना विलम्ब हाता गया उसके हृदय की पीडा और व्यथा उतनी ही अधिक बढती गयी और उसकी कल्पना के सामने उसके साथिया का उतना ही स्वच्छ, उतना ही निष्कलुष चित्र उभरता गया। आखिर इन्ही साथिया के साथ ही तो कधे से कधा मिलाकर उसने वे महान काय किये थे। उन साथिया से वह हृदय से प्रेम करता था।

एक अवसर पर डेरी फाम पर दूध देने का काम करनेवाली कुछ लडकिया ने उसके एक आदेश का पालन करने में कुछ आनाकानी की थी और साफ साफ यह स्वीकार किया था कि उन्ह जमन फासिस्टो से डर लगता है। पर क्रमीविन ने—जो कभी वान्या तुर्केनिच था—उनपर क्रोध न करके सिफ यही कहा था—

"अरे लडकिया! तुम्हारा यह व्यवहार क्या सोवियत लडकियो की तरह है?"

फिर सब कुछ भूलकर उसने उन्हे ऊल्या ग्रोमोवा, ल्यूबा शेव्त्सोवा तथा उनकी अन्य सहेलियो के बारे में बहुत कुछ बताया। उन लडकिया पर इन सबका बडा अच्छा असर पडा। उन्हे अपने ऊपर शम आयी, पर साथ ही वान्या की आखा में सहसा खुशी की चमक देखकर वे चकित रह गयी। वान्या ने बात जहा की तहा रोक दी, विषय समाप्त करने के लिए हाथ

झटकारा और जो कुछ कहना था उसे विना कहे हुए ही वहा से चला गया।

फवरी मे, कही वान्या तुर्कनिच के दस्ते ने लाल सेना की एक यूनिट के साथ मिलकर उत्तरी दोनेत्स की लडाई लडते लडते, अन्तत क्रास्नोदोन में प्रवेश किया।

इस बीच भागती हुई जमन सेना जो भी दुष्टता और अत्याचार कर सकती थी उन सबका सामना क्रास्नोदान के लोगो ने किया। भागती हुई एस० एस० यूनिटो ने नगर निवासियो को लूटा, उन्हे उनके घर से निकाल वाहर किया और नगर तथा जिले की सभी वडी वडी इमारत, खाने और फैक्ट्रिया उडा दी।

लाल सेना के क्रास्नोदान और वारोशीलोवग्राद मे प्रवेश करने से कोई एक सप्ताह पहले ही ल्यूबा शेव्त्सोवा की मृत्यु हुई थी। १५ फवरी को सोवियत टको ने दुश्मन का मोर्चा ताडकर क्रास्नोदान में प्रवेश किया और उसके तुरन्त ही वाद नगर में सोवियत शासन की पुन स्थापना हुई।

खाना मे काम करनेवाले कई कई दिनो तक, खान न० ५ में से खुफिया लडाकुओ और 'तरुण गाड' के सदस्यो की लाशे निकालकर, नगर निवासियो की निगाहो के सामने धरती पर रखते रहे। लोगो की वहुत वडी भीड वहा खडी रहती। इन दिनो मृत सपूतो की माताए और पत्नियां गड्ढे के पास वरावर इस आशा मे खडी रही कि उन्हे अपने लाडलो और पतियो की विकृत लाशे ही मिल जाय।

ओलेग अभी तक जीवित ही था कि येलेना निकोलायेव्ना रोवेन्की पहुची। पर वह वेटे के लिए कुछ भी न कर सकी। ओलेग को तो यह भी न मालूम हो सका कि उसकी मा उससे इतनी निकट है।

और अव ओलेग की मा और उसके परिवार की आखो के सामने रोवेन्की के लोगो ने गड्ढो में से ओलेग और ल्यूवा की लाशें निकाली।

येलेना निकोलायेव्ना कोशेवाया को तो पहचानना तक मुश्किल हो

गया था। वह दुबली और बूढ़ी लगने लगी थी। उसके धंसे हुए गाल और आखें उन बडे बडे कष्टों की प्रतीक थीं जो दृढ़स्वभाव लोगों को विशेषतया भयाक्रांत रख देते हैं। वह पिछले कुछ महीनों से अपने बेटे के कामों में हाथ बटाती रही थी। उसके बेटे की दर्दनाक मौत ने उसे मार्मिक पीड़ा पहुंचायी थी। किन्तु इन्हीं व्यथाओं ने, उसकी आध्यात्मिक शक्तियों को जगा दिया था और, उसे अपने व्यक्तिगत दुख से, बहुत ऊपर उठा दिया था। ऐसा लग रहा था कि उसकी आंखों के सामने से तुच्छ दैनिक जीवन का वह परदा उठ चुका था, जिसने उसकी आत्मा से मानव प्रयास, संघर्ष, उत्साह और उत्तेजना के संसार को छिपा रखा था। अब वह अपने बेटे के चरण चिह्नों पर चलकर इस संसार में प्रवेश कर चुकी थी और उसके सामने जन-सेवा का विशाल पथ प्रशस्त था।

इन्हीं दिनों जर्मनों का एक और अपराध प्रकाश में आया—पार्क में खान-कर्मचारियों की क़ब्र खोदी गयी। उनमें सभी लाशें खड़ी हुई दशा में मिलीं—पहले सिर दिखाई दिये, फिर कंधे, फिर धड़ और अन्तत हाथ-पैर। इनमें वाल्को, शुल्गा, पेत्रोव और उस औरत की भी लाशें थीं, जिसके हाथ में बच्चा था।

खान नं० ५ से निकाली गयी 'तरुण गार्ड' के सदस्यों और उनके बुजुर्ग साथियों की लाशों को दो कब्रों में रखा गया, जो पारस्परिक बन्धुत्व की परिचायक थीं।

लाशें दफनाने के समय क्रास्नोदोन खुफिया संगठन और 'तरुण गार्ड' के सभी जीवित सदस्य उपस्थित थे—इवान तुर्केनिच, वाल्या बोर्त्स, जोरा अरुत्युन्यान्त्स, ओल्या और नीना इवान्त्सोवा, रादिक यूर्किन आदि।

तुर्केनिच की यूनिट क्रास्नोदोन के बाहर मिऊस नदी की ओर बढ़ गयी थी किन्तु उसे कुछ समय के लिए छुट्टी दे दी गयी थी ताकि वह मौत को गले लगानेवाले अपने अभिन्न मित्रों को अन्तिम अलविदा कह सके।

वाल्या वाल्स, कामेस्क के निकट जहा थी, वही से वह अपने घर लौट आयी। इसके बाद उसकी मा ने उसे वोरोशीलावग्राद में उसकी महेलियो के साथ रहने के लिये भेज दिया। जब लाल सेना ने नगर में प्रवेश किया तो वाल्या वही पर थी।

सेर्गेई लेवाशाव भी जीवितो के ससार में न बचा था। उसे उस समय मार डाला गया था जब वह मोर्चा पार करने का प्रयत्न कर रहा था।

स्त्यापा सफानोव भी मौत को गले लगा चुका था। वह कामेंस्क के उस भाग में था जिसपर आक्रमण की पहली ही रात को लाल सेना का कब्जा हो चुका था। वह लाल सेना के एक दस्ते में शामिल हो गया था और लडते लडते मारा गया था।

लारी से कूदने के बाद अनातोली कोवल्योव को कुछ समय तक नवनिर्मित गाव के एक मजदूर ने अपने घर छिपाये रखा। उसका शक्तिशाली शरीर इतनी बुरी तरह कट-फट गया था कि सारा शरीर ही एक बडा-सा घाव लग रहा था। उसके घावो पर मरहम पट्टी किये जाने की कोई सम्भावना न थी। उसे केवल गर्म पानी से धोकर एक चादर में लपेट दिया गया था। वह कई दिनो तक छिपा रहा किन्तु उसे अधिक समय तक छिपाये रखना भी तो खतरे से खाली न था। वह अपने उन सबधियो के यहा रहने चला गया जो दोनवास के एक भाग में रह रहे थे। यह भाग अभी तक आजाद न हुआ था।

इवान प्रोत्सेंको और उसका दस्ता भागते हुए जर्मनो के आगे आगे बढता उनसे उस समय तक मोर्चा लेता रहा जब तक कि लाल सेना ने वोरोशीलावग्राद पर अधिकार न कर लिया। यहा प्रोत्सेंको की भेंट अपनी पत्नी कात्या से हुई — गोरोदीश्ची के बाहर उनके बिछुडने के बाद पहली बार।

प्रोत्सेंको के आदेश से कार्नेई तीखोनोविच के निर्देशन में, छापामारो के एक दस्ते ने मित्याकिन्स्काया के निकट पत्थरो की एक खान के गढे

में से वह प्रसिद्ध 'गाज़िक' कार खोद निकाली। कार ठीक दशा में थी। उसकी पेट्रोल की टकी भरी थी बल्कि पेट्रोल का एक फालतू टीन भी उसी में रखा था। यह कार उसी युग की तरह अमर लग रही थी जिसने उसे जन्म दिया था।

इवान प्रोत्सेको और कात्या 'गाज़िक' पर त्रास्नोदान आये। रास्ते में उन्होंने गार्दई कोनियेंको को कार में बिठाकर उसे उसकी पत्नी मार्फा के पास छोड दिया। वहा उन्हें मार्फा से, गाव मे जर्मनो के आखिरी दिनो की कहानी सुनने को मिली थी।

गाव पर सोवियत सेनाओ का कब्जा होने से एक दिन पहले मार्फा और वही बूढा देहाती, जो कभी कार्शेवाई दम्पति को अपनी गाडी मे ले गया था और जिसने प्रोत्सेको से अपने कपडे बदले थे, ग्राम्य परिषद की इमारत में गये थे। इसी इमारत में पुलिस वाले और दानेत्स के उस पार से भागकर आनेवाले जर्मन सशस्त्र पुलिस के सिपाही अस्थायी रूप से बस गये थे। वहा गाव वालो की भीड की भीड इस आशा में खडी हो जाती कि शायद उन्हें किसी सैनिक के मुह से इत्तिफाक से निकल जानेवाली यही खबर सुनने को मिल जाय कि लाल सेना कितनी दूर या कितनी निकट है। या शायद उन्हे भगोडे फासिस्टो की दशा देखने में मजा आता था।

मार्फा और बूढा देहाती वही खडे थे कि एक पुलिस अधिकारी बर्फ पर चलनेवाली एक घोडा गाडी पर वहा आया। उसने कूदकर, वहशियाना ढग से इधर उधर देखते हुए बूढे से पूछा—

"हर चीफ कहा है?"

बूढे ने उसकी आखो में आखें डालकर कहा—

"हर चीफ! लगता है कामरेड आ रहे है।"

पुलिस अधिकारी गालिया देने लगा था किन्तु इतनी जल्दी में था कि बूढे को मार भी न सका।

जमन, मुह में ग्रास चबाते हुए, जसे के तैसे इमारत से निकले और एक ही क्षण में वफ पर चलनेवाली गाडियो पर वठकर अपने पीछे वफ के वादल उडाते हुए भाग गये।

दूसरे दिन गाव में लाल सेना ने प्रवेश किया।

इवान फ्योदोरोविच प्रोत्सको और कात्या उन खुफिया लडाकुग्रा और 'तरुण गाड' के सदस्या की समाधि पर सिर झुकाने आये जिन्होने अपना जीवन होम किया था।

प्रोत्सेको को वहा एक और काम भी था — उसे क्रास्नोदोन कोयला ट्रस्ट तथा खाना की व्यवस्था ठीक करनी थी। इसके अलावा वह प्रौढ खुफिया कारिन्दो और 'तरुण गाड' के सदस्यो की मौत के भी सारे ब्योरे जानना चाहता था, और यह भी कि हत्यारे दुश्मनो का क्या हुआ।

स्तात्सेको और सोलिकोव्स्की किसी प्रकार अपने मालिका के साथ भाग गये थे, किन्तु परीक्षण-जज कुलेशोव को लागो ने पहचान लिया था। उसे रोककर सोवियत न्याय अधिकारिया के हवाले कर दिया गया था। उसी से यह पता चला था कि 'तरुण गाड' के साथ गद्दारी करने में वीरिकोवा और ल्यादस्काया का कितना हाथ था और स्तखोविच के वयान ने कितना काम किया था।

मत कम्युनिस्टो और 'तरुण गाड' के सदस्या की कब्रा पर उनके बचे हुए साथिया ने उनका बदला लेने का प्रण किया। उनकी कब्रो पर लकडी के अस्थायी स्तूप खडे कर दिय गये। प्रौढ खुफिया लडाकुग्रा की कब्र के स्तूप पर इन सभी वीरा के नाम अकित थे, जिनमें से सबसे ऊपर फिलीप्प पेत्रोविच ल्यूतिकोव और वराकाव के नाम थे। 'तरुण गाड' वाले स्तूप पर उन सभी वीरा के नाम थे जिन्हाने दल के निर्देशन मे लडते हुए मातृभूमि के लिए अपने प्राण निछावर किये थे। उनके नाम इस प्रकार हैं —

ओलेग कोशेवोई, इवान जेम्नुखोव, उल्याना ग्रोमावा, सेर्गेई त्युलनिन,

ल्युबोव शेव्त्सोवा, अनातोली पोपोव, निकोलाई सुम्स्कोई, व्लदीमिर ओस्मूखिन, अनातोली ओर्लोव, सेर्गेई लेवाशोव, स्तेपान सफ्रानोव, वीक्तोर पेत्रोव, *अन्तोनीना येलिसेयेको, वीक्तोर लुक्याचेंका, क्लाव्दिया कोवल्योवा,* माया पेग्लिवानोवा, अलेक्सान्द्रा बोन्दरेवा, वसीली बोन्दरेव, अलेक्सान्द्रा दुब्रोविना, लीदिया अन्द्रोसोवा, अन्तोनीना माश्चेंको, येव्गेनी मोश्कोव, लील्या इवानीखिना, अन्तोनीना इवानीखिना, बोरीस ग्लवान, व्लदीमिर रगोज़िन, येव्गेनी शेपेल्योव, आन्ना सोपोवा, व्लदीमिर ज्दानोव, वसीली पिरोज्होक, सेम्योन ओस्तापेंको, गेन्नादी लुकाशेव, अंगेलीना समोशिना, नीना मिनायेवा, लेओनीद दादिशेव, अलेक्सान्द्र शीश्चेंको, अनातोली निकोलायेव, देम्यान फोमीन, नीना गेरासिमोवा, गओर्गी श्चेरबकोव, नीना स्तार्त्सेवा, नदेज्दा पेत्ल्या, व्लदीमिर कुलिकोव, येव्गेनिया कीइकोवा, निकोलाई ज़ूकोव, व्लदीमिर ज़गोरुइको, यूरी वित्सेनोव्स्की, मिख़ाईल *ग्रिगोर्येव, वसीली बोरीसोव, नीना केज़ीकोवा, अन्तोनीना द्याचेंको,* निकोलाई मिरोनोव, वसीली त्काचोव, पावेल पलागूता, दिमीत्री ओगुर्त्सोव, वीक्तार सुब्बोतिन।

१९४३ – १९४५ – १९५१

पाठका से

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन सम्बन्धी आपके विचारा के लिए आपका अनुगृहीत हागा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमें वडी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है

२१, जूवोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत सघ।

'तरुण गार्ड' उपन्यास के दूसरे भाग के आरभ में गुप्त रूप से कारवाइया करनेवाले क्रास्नोदोन 'तरुण गार्ड' के सदस्य रूसी जनता, देश तथा पार्टी के सामने शपथ लेते हैं कि वे फासिस्टो द्वारा लोगो पर किये गये जुल्मो का बदला लेगे। पुस्तक मे ओलेग कोशेवोई, उल्याना ग्रोमोवा, सेर्गेई त्युलेनिन, ल्यूबा शेव्त्सोवा, इवान जेम्नुखोव तथा अन्य युवा लडको और लडकियो का चरित्र चित्रण बडी सजीवता से किया गया है। इनके वीरतापूर्ण सघर्ष, इनके निजी जीवन, इनके प्रेम, मैत्री-भाव तथा सहचारिता को बडे सधे हुए हाथो से चित्रित किया गया है।